



# अश्विन सांघी

अश्विन की  
पुस्तकों की  
**10 लाख**  
से ज़्यादा प्रतियां  
बिक चुकी हैं

# विष्णु का खज़ाना

अनुवाद: धीरज अग्रवाल

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास ( Novel ) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

( Motivational Book ) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

<https://t.me/hindilibrary>

<https://t.me/requestbookpdf>

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👉👉👉

[https://t.me/books\\_request](https://t.me/books_request)

English Books 📖📖

[https://t.me/Google\\_Ebooks](https://t.me/Google_Ebooks)

## विष्णु का खज़ाना

**अश्विन सांघी** का शुमार भारत के सबसे ज़्यादा बिकने वाले अंग्रेज़ी उपन्यासकारों में होता है। आपने भारत सीरीज़ में अनेक बेस्टसेलर (रोज़ाबाल लाइन, चाणक्याज़ चैंट, कृष्ण की, सियालकोट सागा, कीपर्स ऑफ़ द कालचक्र, द वॉल्ट ऑफ़ विष्णु) और जेम्स पैटरसन के साथ न्यूयॉर्क टाइम्स के दो बेस्टसेलिंग क्राइम थ्रिलर, प्राइवेट इंडिया (जो अमेरिका में सिटी ऑफ़ फ़ायर के नाम से बिका) और प्राइवेट डेल्ही (जो अमेरिका में काउंट टु टैन के नाम से बिका) लिखे हैं। आपने अन्य लेखकों के साथ सह-लेखन में 13 स्टेप्स सीरीज़ के तहत भाग्य, धन, अंकों, स्वास्थ्य और पालन-पोषण पर कई कथेतर किताबें भी लिखी हैं।

अश्विन को फ़ोर्ब्स इंडिया द्वारा अपने सेलेब्रिटी 100 में और द न्यू इंडियन एक्सप्रेस द्वारा अपनी कल्चर पॉवर लिस्ट में शामिल किया है। आप क्रॉसवर्ड पॉपुलर चॉइस अवार्ड 2012, आटा ग़लाटा पॉपुलर चॉइस अवार्ड 2018, डब्ल्यूबीआर आइकॉनिक अचीवर्स अवार्ड 2018, लिट-ओ-फ़ेस्ट लिटरेचर लीजेंड अवार्ड 2018 और कलिंग पॉपुलर चॉइस अवार्ड 2012 के विजेता भी रहे हैं।

आपने कैथीड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल, मुंबई, और सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई से शिक्षा प्राप्त की। आपने येल यूनिवर्सिटी से एमबीए में डिग्री हासिल की है। अश्विन मुंबई में अपनी पत्नी अनुष्का और पुत्र रघुवीर के साथ रहते हैं।

आप निम्न माध्यमों से अश्विन के साथ जुड़ सकते हैं:

- Website [www.sanghi.in](http://www.sanghi.in)
- Twitter [@ashwinsanghi](https://twitter.com/ashwinsanghi)
- Instagram [@ashwin.sanghi](https://www.instagram.com/ashwin.sanghi)
- Koo [koo.id/ashwin.sanghi](https://koo.id/ashwin.sanghi)
- Clubhouse [clubhouse.fm/ashwin.sanghi](https://www.clubhouse.fm/ashwin.sanghi)
- Facebook [fb.com/ashwinsanghi](https://www.facebook.com/ashwinsanghi)
- YouTube [youtube.com/ashwinsanghi](https://www.youtube.com/ashwinsanghi)
- LinkedIn [linkedin.com/in/ashwinsanghi](https://www.linkedin.com/in/ashwinsanghi)

## भारत सीरीज़ की प्रशंसा में

### रोज़ाबाल लाइन (2008)

“रोज़ाबाल लाइन में अश्विन सांघी ने डैन ब्राउन की शैली अपनाते हुए थ्रिलर के सारे मसाले मिलाए हैं—धर्मयुद्ध, एक्शन, एडवेंचर, रहस्य—और बड़ी दक्षता और सहजता से वे ऐसी कहानी बुनते हैं जो संस्कृतियों और महाद्वीपों, धर्मों और संप्रदायों से होकर निकलती है।” —द एशियन एज

“अश्विन सांघी की रोज़ाबाल लाइन एक ज़बर्दस्त थ्रिलर है जो मजबूर कर देता है कि हम अपने इतिहासों, अपनी आस्थाओं को फिर से जांचें।” —प्रीतिश नंदी

“अश्विन जब पाठक को विभिन्न दशकों में दुनिया की सैर पर ले जाते हैं तो धर्म, इतिहास और राजनीति के प्रति सांघी का रुझान स्पष्ट झलकता है। तुलनात्मक धर्म, खतरनाक रहस्यों और रोमांचकारी कथानक का मेल एक रहस्यपूर्ण उपन्यास रचता है।” —द स्टेट्समैन

“सांघी ने कामयाबी के फ़ॉर्मूले का सही इस्तेमाल किया है।” —द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

“सांघी धर्मशास्त्र की एक उत्तेजक, ज्ञानपूर्ण और दीप्तिमान दिशा की ओर संकेत करते हैं कि मेरी मैग्डेलीन के संप्रदाय की वास्तविक प्रेरणा भारतवर्ष की पावन त्रिदेवी-शक्ति है इस प्रकार कल्पनाशक्ति और षड्यंत्र रचने में वे डैन ब्राउन को भी पीछे छोड़ देते हैं।” —द हिंदू

### चाणक्याज़ चैंट (2010)

“अश्विन सांघी का बेहद दिलचस्प उपन्यास चाणक्याज़ चैंट आत्मालापों और अंगूठे में थामे जनेऊ जैसे कसे हुए वर्णनों से भरा है। दो कहानियां गंगा और यमुना की तरह बहती जाती हैं... यह एक द्रुत टैक्नीकलर रोमांच है।” —हिंदुस्तान टाइम्स

“मैं पूर्णतया रोमांचित हूँ। एक आनंदपूर्ण रूप से दिलचस्प और बांधकर रखने वाली किताब। ऐतिहासिक रिसर्च अत्यंत प्रभावशाली...” —शशि थरूर

“बांधकर रखने और तेज़ गति वाला यह उपन्यास वास्तव में डैन ब्राउन द्वारा स्थापित परंपरा का रोमांच है।” —पीपुल मैगज़ीन

“राजनीतिक रूप से तैयार करना और षड्यंत्र अश्विन सांघी के ऐतिहासिक थ्रिलर के मूल में है। खूनखराबा, मुक़द्दमेबाज़ियां, विश्वासघात, हत्याएं, हत्या की कोशिशें और वो सब कुछ जो इसे रोमांचक बनाता है।” —सकाल टाइम्स

“भारत में व्यापक प्रशंसा पाने वाली चाणक्याज़ चैंट एक राजनीतिक रोमांच है।” —बिज़नेस इंडिया

### कृष्ण की (2012)

“रसपूर्ण ऐतिहासिक रोमांचक या विचारपूर्ण विलक्षण गाथाएं केवल पश्चिमी जगत के लेखकों के दिमागों से ही क्यों उपजें? अश्विन सांघी भी धागे अच्छी तरह बुनना जानते हैं, और हर मोड़ पर आपको भौचक्का छोड़ जाते हैं। आश्चर्य नहीं कि उनकी किताबें बैस्टसेलर होती हैं!” —हिंदुस्तान टाइम्स

“कथानक आधुनिक संसार का है, लेकिन आप, ढेर सारे इतिहास और सस्पेंस भरी कहानी के साथ, बार-बार समय-यात्रा की उम्मीद कर सकते हैं।” —द टेलीग्राफ़

“वैदिक युग की एक वैकल्पिक व्याख्या जिसका षड्यंत्र और रोमांच दोनों के शौकीन खूब आनंद लेंगे।” —द हिंदू

“मैंने अभी अश्विन सांघी की कृष्ण की पूरी की। ज़बरदस्त कहानी और अविश्वसनीय रिसर्च। बेहद पसंद आई!” —अमीश त्रिपाठी

“सांघी ने वास्तविकता और कल्पना के बीच की रेखा को धुंधला दिया है और इतिहास और वैदिक युग को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।” —डीएनए

### सियालकोट सागा (2016)

“सियालकोट सागा समय और स्पेस के बीच बेतहाशा गति से दौड़ती हुई प्राचीन रहस्यों को खोलती और आधुनिक रहस्यों को दबा देती है।” —द हिंदू

“किताब दशकों और शताब्दियों पर पसरी हुई है, और फिर आधुनिक भारत तक पहुंच जाती है। यह ऐतिहासिक और थ्रिलर दोनों प्रकार के पाठकों के लिए आनंदमय साबित होगी।” —टाइम्स ऑफ़ इंडिया

“कुछ किताबें दिलचस्पी पैदा करने में समय लेती हैं जबकि कुछ किताबें पहले ही पन्ने से आपको बांधकर रखती हैं। सियालकोट सागा ऐसी ही किताब है और आरंभ से ही आपको खुद से जोड़ लेती है।”

—हिंदुस्तान टाइम्स

“इस किताब में कोई भी नीरस क्षण नहीं आता है। वास्तविकता तो यह है कि कहानी इतनी गति से आगे बढ़ती जाती है कि कई बार तो भौचक्का पाठक किताब को अलग रखकर सांस लेने को मजबूर हो जाता है।” —फ़ाइनेंसियल एक्सप्रेस

“सांघी ने एक शाहकार की रचना की है और हर पन्ना पलटने के साथ वे पाठकों की रुचि को बढ़ाते गए हैं।” —द पॉयनियर

### कीपर्स ऑफ़ द कालचक्र (2018)

“आप किताब तब तक नहीं छोड़ सकते, जब तक ये पहेली पूरी तरह हल न हो जाए।” —द फाइनेंसियल एक्सप्रेस

“लेखक ने जबरदस्त मसाला दिया है... चटाकेदार, जो अतीत और वर्तमान को हिलाकर रख देता है... इसमें एक भी पल बोरीयत का नहीं है।” —द संडे स्टैंडर्ड

“अश्विन सांघी की नई थ्रिलर में विज्ञान और अध्यात्म का मिश्रण है।” —इंडिया टुडे  
“विस्तृत कैनवास में फैला यह उपन्यास मिथक, इतिहास और दंतकथा को बुनता है।”  
—द हिंदू

“अश्विन सांघी का कीपर्स ऑफ़ द कालचक्र आपके हाथ में टिकटिक करता टाइम बम है। हर अध्याय में कोई नया ही सरप्राइज सर उठा लेता है।” —डेक्कन क्रॉनिकल  
“कीपर्स ऑफ़ द कालचक्र में सबकुछ है: राजनीतिक किरदार जो आपको वास्तविक नेताओं की याद दिलाते हैं, एक जटिल और उलझा हुआ प्लॉट, जो आपको अंत तक बांधे रखता है।” —हिंदुस्तान टाइम्स ब्रंच

### **द वॉल्ट ऑफ़ विष्णु (2020)**

“पुराण और विज्ञान के इस रहस्य के साथ, अश्विन सांघी ने भारत सीरिज की छठी किताब दी है। अश्विन की बाकी किताबों की तरह द वॉल्ट ऑफ़ विष्णु भी आपको इतिहास, पुराण, भौतिक, युद्धकल्याण की तकनीक, एआई और जैव-रसायन की रोमांचक दुनिया में ले जाती है।” —द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

“द वॉल्ट ऑफ़ विष्णु भी अश्विन की चिरपरिचित शैली में इतिहास, पुराण और विज्ञान की रोमांचक राइड है।” —द हिंदू

“एक रोचक और जिज्ञासापूर्ण थ्रिलर... लेखक की कहानी कहने की क्षमता और गहन रिसर्च की दाद देनी पड़ेगी।” —द न्यू इंडियन एक्सप्रेस

“सांघी की नई किताब में उनके पसंदीदा विषय, पुराण को इतिहास के साथ गूथकर एक जबरदस्त रोमांच प्रस्तुत किया गया है।” —हिंदुस्तान टाइम्स

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

# विष्णु का खज़ाना

अश्विन सांघी

अनुवाद

धीरज अग्रवाल



## स्पष्टीकरण

यह किताब एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएं या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक तरीके से उनका इस्तेमाल किया गया है। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोग है। ऐतिहासिक या धार्मिक घटनाओं के सटीक होने के संबंध में कोई दावा न तो किया गया है और न ही ऐसा माना जाना चाहिए। ऐतिहासिक, धार्मिक या पौराणिक पात्रों, घटनाओं या स्थानों का उपयोग हमेशा काल्पनिक तरीके से किया जाता है और स्वीकृत अभिलेख से कभी-कभी वे अलग भी हो सकते हैं।

## आभार

मेरे लिए अनेक लोगों से प्राप्त सहायता, जानकारी, मार्गदर्शन, प्यार और समर्थन के बिना अपनी किताबों को लिख पाना असंभव रहा होता। यहां उन कुछ लोगों के नाम हैं जिनके बिना यह किताब संभव नहीं हो पाती।

मेरे प्रकाशक हार्परकोलिन्स पब्लिशर्स—विशेष रूप से, अनंत पद्मनाभन और उदयन मित्रा, जिन्होंने यह सुनिश्चित किया कि यह किताब मेरे पाठकों तक जल्दी और कुशलतापूर्वक पहुंचे।

प्रीता मैत्रा, मेरी प्राथमिक संपादक, जो भारत सीरीज़ के संपादन में अपरिहार्य बनी हुई हैं; साथ ही कार्तिका वीके, दीप्ति तलवार, अशोक रजनी, अपर्णा गुप्ता, कार्तिक वेंकटेश और स्वाति दफ़्तुआर, जिनकी बारीक नज़र ने इस कहानी को अंतिम रूप दिया है।

रूपेश तलस्कर, मेरे प्रतिभाशाली इलस्ट्रेटर, जिन्होंने कहानी को पूरा करने के लिए नक्शे और चित्रों को बहुत सावधानीपूर्वक बनाया, और सेमी हेटेनलो, जिन्होंने हमें एक अदुभत तस्वीर देकर किताब को मुकुट पहना दिया।

बहुमुखी संगीतकार अमेया नाइक, जिन्होंने किताब के टेलर में इस्तेमाल किया गया मार्मिक संगीत तैयार किया, और उत्कृष्ट वीडियो ट्रेलर और सोशल मीडिया सपोर्ट के लिए ट्रिस्टस्टूडियो और ऑक्टोबज़ की टीम।

मेरे भाषण दौरों और इवेंट्स पर सलाह और जानकारीयों के लिए स्पीकइन की दीपशिखा कुमार और निजंश वर्मा। साथ ही, सिनेमा, टेलीविज़न और ओटीटी के माध्यम से मेरी कहानियों को अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचाने की दिशा में प्रयासों के लिए कलेक्टिव के आशू नायक और चिराग़ निहलानी।

मेरे माता-पिता, महेंद्र और मंजू सांघी, और मेरे भाई-बहन, विधि और वैभव, जिन्होंने हमेशा मुझे प्रेरित किया है कि मैं अपने सपनों को पूरा करूं। मेरी पत्नी अनुष्का और बेटा रघुवीर, जो मेरे लेखन के उद्यमों में मेरा सतत संबल रहे हैं। उनका बिना शर्त प्यार मेरे साथ नहीं होता, तो मेरी कोई भी किताब वजूद में न आ पाती। मेरी छोटी राखी-बहन फ़राह, जिन्होंने मुझे सिखाया है कि जीवन में हर चीज़ की व्याख्या नहीं की जा सकती और कुछ चीज़ों को समझे बिना ही छोड़ देना चाहिए।

गौतम पद्मनाभन, मेरे मित्र, फ़िलॉसफ़र और गाइड, जिन्होंने प्रकाशन के क्षेत्र में मुझे मेरा पहला ब्रेक दिया और इस कहानी सहित मुझे कई कहानियों के लिए प्रोत्साहित किया है।

स्वर्गीय रामप्रसाद और स्वर्गीय रामगोपाल गुप्ता, मेरे नाना और उनके भाई, जिन्होंने मुझे अपनी कहानियों और किताबों से प्रेरित किया था। उनके आशीर्वाद कभी मेरे कलम की स्याही को सूखने नहीं देते।

और अंत में लेकिन सबसे महत्वपूर्ण, माँ शक्ति, जिन्होंने मेरी कलम को धार दी। आपकी असीम अनुकंपा के लिए हार्दिक आभार।

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे  
हंसारूढाय धीमहि  
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्

हम उस ईश्वर को जानें जिसके चार मुख हैं/  
हम उस ईश्वर का ध्यान करें जो हंस पर सवार है/  
हम ब्रह्मा से प्रेरणा और प्रकाश देने के लिए कहते हैं।

ॐ नारायणाय विद्महे  
वासुदेवाय धीमहि  
तन्नो विष्णु प्रचोदयात्

हम उस ईश्वर को जानें जो जल पर विश्राम करता है/  
हम उस ईश्वर का ध्यान करें जो जीवन में व्याप्त है/  
हम विष्णु से प्रेरणा और प्रकाश देने के लिए कहते हैं।

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे  
महादेवाय धीमहि  
तन्नो रुद्र प्रचोदयात्

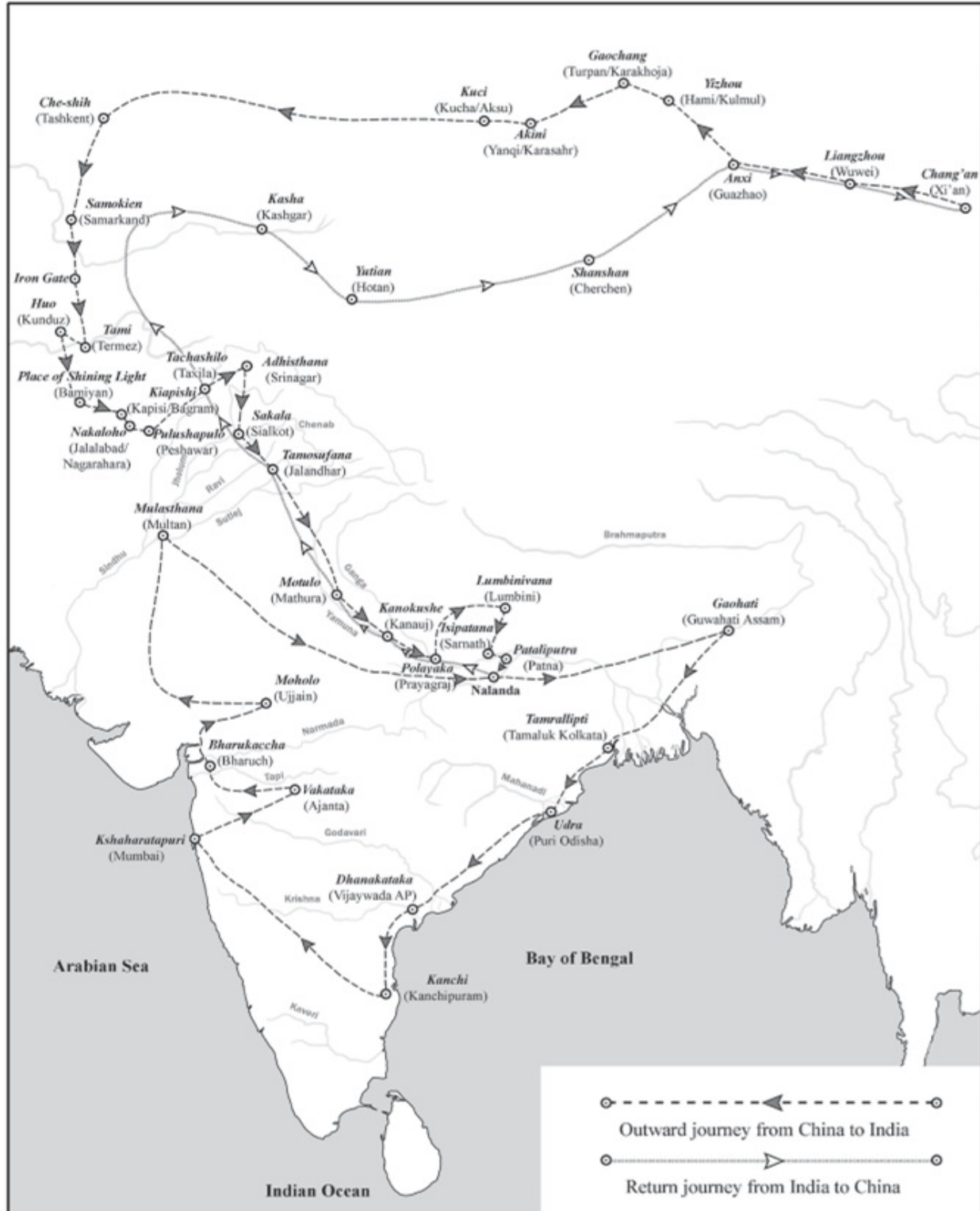
हम उस पुरुष को जानें जो सबसे शक्तिशाली है/  
हम देवताओं में सबसे महान महादेव का ध्यान करें/  
हम शिव से प्रेरणा और प्रकाश देने के लिए कहते हैं।

ॐ आंजनेयाय विद्महे  
महाबलाय धीमहि  
तन्नो हनुमान प्रचोदयात्

हम अंजना के पुत्र को जानें/  
हम उस देवता का ध्यान करें जिसके पास सबसे अधिक बल है/  
हम हनुमान से प्रेरणा और प्रकाश देने के लिए कहते हैं।

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

## ह्वेनसांग की यात्रा को दिखाने वाला नक्शा (627 से 645 ईस्वी)



1

जब भारतीयों की नज़र उन लोगों पर पड़ी तो वे डर से जैसे जम गए।

उस दिन मौसम बिगड़ा हुआ था। बर्फ़ीली हवाएं बादलों की गरज और बारिश के साथ मिलकर कानों में चीख रही थीं। 17 माउंटेन डिवीज़न के जवानों ने खुद को बुरी से बुरी स्थिति के लिए तैयार कर लिया था क्योंकि ओले बिलकुल गोलियों की तरह उनके चेहरे पर वार कर रहे थे।

14,000 फीट की ऊंचाई पर, डोकलाम का पठार हिमालय की गोद में बसे देश भूटान और उसके महाशक्ति पड़ोसी चीन के बीच की सीमा पर है। पठार के पश्चिमी हिस्से पर, बटांग ला और माउंट जिपमोची के बीच उसकी सबसे ऊंची चोटी स्थित है। वहां से दक्षिण-पूर्व में नीचे की तरफ पठार की ढलान जाती है, और आखिर में अमो चू नदी से मिल जाती है। सबसे ऊंचे और सबसे निचले बिंदुओं के बीच चौतीस वर्ग मील से थोड़ा ज़्यादा फैला यह पूरा इलाका चट्टानों से भरा पड़ा था, इसलिए इसका नाम पड़ा था डोकलाम यानी चट्टानी रास्ता।

चीनी लोग इसे एक अलग नाम से पुकारते थे: डोंगलांग। दरअसल, वे इस पर अपना दावा जताते थे। लेकिन पठार से होते हुए सड़क बनाने की उनकी कोशिशों ने भारत के साथ टकराव के हालात बना दिए थे, जो भूटान का पुराना मित्र और सहयोगी देश है। भारत जानता था कि डोकलाम से गुज़रने वाली सड़क से चीन को आसानी से भारतीय इलाके में घुसने की क्षमता मिल जाएगी। इसलिए चीन की ऐसी हर पहल को रोकना भारत के लिए लाज़िमी था।

चीनियों के साथ पहली मुठभेड़ काफी हद तक शांतिपूर्ण रही थी। कई हफ्तों तक एक-दूसरे को अपने तेवर दिखाने और फिर बातचीत की मेज़ पर आने के बाद, दोनों पक्ष अपने जवानों और मशीनों को बफर ज़ोन से बाहर निकालने पर राज़ी हो गए थे। लेकिन चीन की आज की ताज़ी हरकत बिलकुल अलग थी। यहां भूल या नादानी का कोई बहाना नहीं था। ड्रैगन आगे बढ़ रहा था।

भारतीय दस्ते के जवानों ने, जिनका साथ रॉयल भूटान आर्मी कॉर्प्स दे रही थी, सावधानी से अपनी ताक़त का हिसाब लगाया। डोकलाम का बचाव करने के लिए वे लोग बहुत ज़्यादा नहीं थे। वहां के माहौल का अभ्यस्त होने में लगने वाले वक़्त की वजह से सैनिकों की तादाद सीमित रहती थी। पठार पर आने वाले किसी भी सैनिक को ऊंचाई के हिसाब से तालमेल बैठाने में कम से कम पांच दिन लगते थे। और इतनी जल्दी नीचे से मदद के लिए अतिरिक्त सैनिकों को बुलाना नामुमकिन था।

भारतीय पक्ष के कमांडर ने सांस रोककर अपनी दूरबीन से देखा। उसे सिर्फ उजाड़, चट्टानों से ढकी ज़मीन दिख रही थी। उसने सोचा कि आखिर वे लोग लड़ क्यों रहे थे। ऐसा नहीं लगता था कि पत्थरों से ढकी हुई और दूर तक फैली हुई इस बंजर ज़मीन से बहुत ज़्यादा कुछ मिलने वाला था। उसे अपनी दूरबीन के ज़रिए कोई हलचल नहीं दिख पाई। लेकिन चीनी लोग वहां थे। उसके अंदर का सैनिक उसे लगातार बता रहा था कि वे लोग वहां मौजूद थे।

और फिर उसे वे लोग नज़र आ गए। साथ ही उसने खुद को पूरी तरह बेबस और डरा हुआ महसूस किया। एक हीरो किसी आम आदमी से ज़्यादा बहादुर नहीं होता, लेकिन वो पांच मिनट ज़्यादा देर तक बहादुर होता है, उसने खुद को याद दिलाया, हालांकि ऐसा उसकी जिंदगी में पहली बार नहीं हो रहा था।

डोकलाम में चीनी पक्ष की तरफ से जैसे सैनिकों की बाढ़ आ रही थी। खड़ी चट्टानें और गहरी खाइयां भी उन्हें रोक नहीं सकी थीं। वे आसानी से उन्हें लांघ रहे थे। ये सैनिक औसत चीनी कद-काठी के नहीं थे, ये असाधारण तौर पर लंबे और गठीले बदन के थे। उनकी मांसपेशियां उनके बख़्तर पर तनी हुई थीं। जैसे ग्रीक देवताओं को स्टेरॉयड दिया गया हो। भारतीय और भूटानी जवान कांप उठे जब उन्हें चीनी सैनिकों के चिल्लाने की आवाज़ आई, 'शा! शा! शा!'

सभी जानते थे कि इसका मतलब क्या है। मारो! मारो! मारो!

चीनी लड़ाके आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक साज़-सामान से लैस भी थे। उन सभी के पास रडार से लैस हेलमेट, हल्की लेकिन घातक असॉल्ट राइफलें, कलाई पर पहने जाने वाले कंप्यूटर-नेविगेशन सिस्टम, रात के अंधेरे में देख सकने वाले चश्मे और पूरे शरीर को ढकने वाले ओम्नीफोबिक (हर चीज़ से बचाए रखने वाला) बख़्तर थे। भारतीय और भूटानी सैनिक अपनी फौजी वर्दी में थे, और उनके पास सिर्फ आम राइफलें थीं।

पथरीली सतहों पर तीन फील्ड कैमरे लगे थे जो खामोशी से सारी हरकत रिकॉर्ड कर रहे थे और सैटेलाइट के ज़रिए वहां से कुछ सौ गज दूर भारतीय कंट्रोल रूम में उनका प्रसारण कर रहे थे।

रक्षकों ने अपनी हिम्मत जुटाई और युद्धघोष किया। 'भारत माता की जय!' वे कमज़ोर नहीं थे। इस इलाके की पहरेदारी करने वाले 17 माउंटेन डिवीज़न को ब्लैक कैट डिवीज़न भी कहा जाता था। वे उन सभी युद्धों में लड़े थे, जिनमें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से भारतीय सैनिकों ने हिस्सा लिया था। 1944 बर्मा कैंपेन और 1961 के गोवा मुक्ति संग्राम में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे आमतौर पर अमेरिकी युद्ध नायक जॉर्ज एस. पैटन के शब्दों पर यकीन करते थे: 'कोई बेवकूफ़ कभी भी बाहर जाकर और मरकर देश के लिए युद्ध नहीं जीता। उसने किसी और दूसरे बेवकूफ़ को उसके देश के लिए मरने देकर युद्ध जीता।'

लेकिन आज हालात उनके खिलाफ़ थे।

और इसके बाद जो हुआ वो बर्बरता से भरा था।

शुरुआती कुछ जवानों की जान किसी निशानेबाज़ या हथगोले या बंदूक की गोली ने नहीं ली थी। 17 माउंटेन डिवीज़न के सैनिकों को पीट-पीटकर या चाकू घोंपकर मार डाला गया था। चीनी सैनिकों ने बेहद तेज़ धार वाले का-बार सामरिक चाकुओं का इस्तेमाल किया। उन्हें ऊपर की तरफ काटने का प्रशिक्षण दिया गया था। यह सबसे असरदार तरीका था—बस ब्लेड की नोक को आदमी के पेट के निचले हिस्से में घुसा देना और फिर ऊपर की तरफ चीर देना। इसका मतलब था कि मारने वाले के हाथ

मरने वाले के खून और मांस में भोंग जाएंगे, लोकेन इससे चीनी सैनिकों को खून की प्यास और बढ़ गई।

भारतीय और भूटानी सैनिकों ने साथ मिलकर जवाबी कार्रवाई की। उनकी पहली योजना थी उन चीनी सैनिकों को मार गिराना, जो पठार को घेरने वाली चट्टानों से बंधी रस्सियों पर झूल रहे थे। हमलावर सर्कस के कलाबाजों की तरह एक जगह से दूसरी जगह छलांग लगा रहे थे, अपने साथियों को सुरक्षा देने के लिए गोलियां चला रहे थे और तबाही मचा रहे थे।

भारतीय जवानों ने चट्टानों से झूलती रस्सियों के मकड़जाल पर अंधाधुंध गोलीबारी की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। भारतीय गोलीबारी से कुछ चीनी लड़ाके घायल हुए, लेकिन उन्होंने खून का बहाव रोकने के लिए खासतौर पर तैयार टूनिकेट (खून का बहाव रोकने की मशीन) का इस्तेमाल भर किया और आगे बढ़ते रहे जैसे कि कोई चीज़ उनका रास्ता नहीं रोक सकती।

भारतीय फौज का कमांडर अपने विरोधियों की फुर्ती और रफ्तार देखकर चकित था लेकिन उसे इस बारे में सोचने का ज़्यादा वक़्त नहीं मिला, क्योंकि एक चीनी सैनिक ने उसकी तरफ अपना का-बार चाकू लहराया। कमांडर ने भी फुर्ती से बगल हटकर अपने विरोधी के चाकू के वार को बचाव किया और दनादन गोलियां दागने लगा। उसके हमलावर ने हवा में कई फीट ऊंची छलांग लगाते हुए गोलियों की बौछार को चकमा दे दिया। उसने हवा में ही ऊंचाई का फायदा उठाते हुए निशाना साधा और कमांडर के सिर पर गोलियां दाग दीं। भारतीय कमांडर ज़मीन पर गिर गया, उसके सिर के टुकड़े डोकलाम की पथरीली ज़मीन पर बिखर गए।

उस दिन यह किसी कल्लेआम से कम नहीं था। लेकिन अजीब बात थी कि चीनी सैनिकों की उस इलाके पर कब्ज़ा बनाए रखने में दिलचस्पी नहीं दिखी, जिसे अभी-अभी उन्होंने हथियाया था। हमला शुरू होने के ठीक नब्बे मिनट बाद, एक साफ़ संदेश में झगड़े को खत्म करने की घोषणा हुई। लगभग उसी तेज़ी से चीनी फौज डोकलाम से बाहर निकल गई, जिस तेज़ी से वे लोग दाखिल हुए थे। चीनी सैनिक आदिमानवों जैसी खुशी के साथ चीखते और छाती ठोकते हुए, कदमताल करते हुए वापस लौट रहे थे। उनके कदमताल की डरावनी गूंज से ज़मीन कांप रही थी।

बचे हुए भारतीय और भूटानी सैनिक लौटती सेना को घबराहट और हताशा के साथ देख रहे थे। अगर इलाका हड़पने का कोई इरादा नहीं था तो सौ से ज़्यादा लोगों की जान लेने का क्या मतलब था? या मुख्य हमला अभी बाकी था? वे अपने मारे गए साथियों के अवशेष इकट्ठा करने लगे, उनके शरीर थकान से झुके हुए थे। यह एक ऐसा दिन था जो 17 माउटेन डिवीज़न के इतिहास के सबसे बुरे दिनों में एक गिना जाएगा।

क्या वाकई में ऐसा था?

में बैठक कई घंटों तक चली थी। चोपस ऑफ स्टाफ कॉमेटी- सीओएससी- के सभी सदस्य कॉन्फ्रेंस रूम में मौजूद थे। सीओएससी के विशेष सलाहकार, जनरल जय ठाकुर ने हर सदस्य को खुद टेलीफोन करके बस इतना कहा था, 'उपस्थिति अनिवार्य है। अगर आप मरे नहीं हैं तब आपकी अनुपस्थिति के लिए कोई बहाना नहीं चलेगा। और अगर आप मर भी गए हैं, तब भी आने की कोशिश करें।'

एक घंटे से भी ज़्यादा समय तक कॉन्फ्रेंस रूम की तलाशी ली गई थी कि सुनने का कोई जासूसी उपकरण कहीं छिपा ना हो। सदस्यों को कहा गया था कि वे अपने मोबाइल फ़ोन बाहर जमा करा दें। सागौन की लकड़ी के चमचमाते साइडबोर्ड पर पानी की बोतलें, चाय और कॉफी के फ्लास्क, सैंडविच और बिस्किट रख दिए गए थे, ताकि बैठक के दौरान किसी भी अतिरिक्त कर्मचारी की ज़रूरत ना रहे। और साइडबोर्ड से मैचिंग वाले आर्ट डेको कॉन्फ्रेंस टेबल पर सैटेलाइट इमेज, ग्राउंड रिपोर्ट और बड़े-बड़े नक्शों वाले मोटी फाइलें रखी हुई थीं।

कश्मीर हाउस में मौजूद टीम की मुख्य ज़िम्मेदारी थी भारतीय सशस्त्र बलों की अलग-अलग शाखाओं के बीच काम का समन्वय करना। इसके सदस्य थल सेना, नौसेना और वायु सेना से लिए गए थे। इसके अलावा, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन, डीआरडीओ के भी प्रतिनिधि इसमें थे। दो महत्वपूर्ण मंत्रालयों, विदेश और रक्षा, के प्रतिनिधि भी इस बैठक में मौजूद थे। इन दोनों के इनपुट सीओएससी के किसी भी फैसले के लिए अहम थे।

वैसे आमतौर पर सीओएससी का अध्यक्ष सबसे वरिष्ठ अधिकारी होता था, यह बात सभी को पता थी कि असली ताक़त विशेष सलाहकार, जनरल जय ठाकुर के हाथों में है। उनकी बात प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री, दोनों ध्यान से सुनते थे।

कमरे में मौजूद लोगों ने डोकलाम हमले की फुटेज देखी और सेना प्रमुख ने अपनी चिंताएं जताईं। लंबे-चौड़े चीनी लड़ाकों को भारतीय सैनिकों पर बिना किसी खास मेहनत के चाकुओं से हमला करते हुए, पतली रस्सियों के माध्यम से पहाड़ियों पर झूलते हुए और आसानी से बड़े-बड़े कदम लेते चीनी लड़ाकों के कैमरे में कैद दृश्यों को देखकर सभी स्तब्ध रह गए।

कमरे में चारों ओर तीखी प्रतिक्रियाओं को देखते हुए, सेना प्रमुख ने तुरंत उस भयानक वीडियो को बंद कर दिया। उन्होंने एक स्लाइड की तरफ इशारा किया जिसमें उस इलाके का एक नक्शा दिखाया गया था और लेज़र प्वाइंटर की मदद से सबसे दूर के उस बिंदु को दिखाया, जहां तक चीनी सैनिक पहुंच गए थे। उन्होंने गंभीर लहज़े में कहा, 'साफ़ कहूं तो, हमारे लिए सबसे ज़्यादा चिंता की बात यह है कि चीनी लोग अब सिलीगुड़ी कॉरिडोर पर कब्ज़ा करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने अब तक ऐसा नहीं किया है क्योंकि वे वापस लौट गए जिसकी वजह पूरी तरह हमारी समझ के बाहर है।'

आमतौर पर चिकन्स नेक के नाम से मशहूर, सिलीगुड़ी कॉरिडोर भारत के हिस्से वाली ज़मीन की एक पतली पट्टी है जो नेपाल, भूटान और बांग्लादेश के बीच आती है। कॉरिडोर का सबसे पतला बिंदु 16.7 मील से बस थोड़ा ज़्यादा चौड़ा है, और इस क्षेत्र पर चीनी कब्ज़े का मतलब बाकी भारत को उसके पूर्वोत्तर राज्यों: सिक्किम, असम,

अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, माणपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और मेघालय से काट देना होगा। ऐसा 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान वाकई में हुआ भी था। भारत ऐसा दोबारा होने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहता था।

कमरे में मौजूद लोगों ने कार्टोसैट सेटेलाइट से ली गई इलाके की तस्वीरों को देखा। इस क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताएं ऐसी थीं कि रेलवे और सड़क नेटवर्क को लगातार ज़मीन खिसकने और रिकॉर्ड-तोड़ बारिश से होने वाला नुकसान झेलना पड़ता था। ऐसे प्रतिकूल क्षेत्र के लिए मशीनों के मुकाबले इंसान कहीं ज़्यादा काम के थे।

‘आपका क्या सुझाव है?’ जनरल जय ठाकुर ने अपनी घनी सफेद मूंछों को थपथपाते हुए पूछा।

सेना प्रमुख ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, ‘हम ऐसे दुश्मन से नहीं लड़ सकते जिसे हम नहीं जानते।’

‘हम जानते हैं कि वे चीनी सैनिक थे,’ ठाकुर ने रुखेपन से जवाब दिया। ‘आप और ज़्यादा क्या जानना चाहते हैं?’

‘हां, हम जानते हैं कि वे कौन हैं, लेकिन वे हैं क्या?’ सेना प्रमुख ने अपनी बेसब्री को छिपाते हुए पूछा। ‘क्या ये आम सैनिक हैं? एंड्रॉयड हैं? मार्शल आर्ट एक्सपर्ट हैं? बंदर हैं? मैं तो तस्वीरें देखकर पता नहीं लगा सकता कि वे क्या हैं। और ऐसे डरावने और अजीब लोगों से लड़ने की उम्मीद भारतीय सैनिकों से कैसे की जा रही है?’

‘कोई कुछ कहना चाहता है?’ ठाकुर ने मेज़ के चारों तरफ बाकी सेनाओं के प्रमुखों की ओर देखते हुए कहा।

‘मेरे पास एक आइडिया है जिसे मैं पेश करना चाहूंगा,’ सेना प्रमुख ने सावधानी से जवाब दिया, उन्हें भारत के सर्वोच्च जासूसों में एक के साथ अपनी हालिया बातचीत याद आ गई थी।

‘वो भी सुन लेते हैं,’ ठाकुर ने चिढ़ भरे लहजे में कहा। ठाकुर की बेसब्री साफ़ दिख रही थी। उन्हें प्रधानमंत्री कार्यालय से काफी कुछ सुनना पड़ा था। आम चुनाव नज़दीक थे और ना सिर्फ़ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए, बल्कि राजनीतिक अस्तित्व के लिए भी किसी निर्णायक कार्रवाई की ज़रूरत थी।

‘अगर हम समझ जाएं कि हमारा सामना किससे है तब खतरे को बेअसर करने की हमारी क्षमता बढ़ जाएगी,’ सेना प्रमुख ने नपे-तुले लहजे में कहा।

‘और ऐसा करने के लिए आपका प्रस्ताव क्या है?’ ठाकुर ने पूछा।

‘हमें ताक़त से लड़ने के बजाय समझदारी से लड़ने की ज़रूरत है,’ सेना प्रमुख ने जवाब दिया। ‘हम पता लगाएं कि आखिर क्या चीज़ चीनी सेना को इतना ताक़तवर बनाती है। जब हमारे पास वह जवाब होगा, हम उनसे बेहतर मुकाबला कर सकेंगे। रोग को पहचानिए और आपको उसका इलाज मिल जाएगा। मेरा सुझाव है कि हम डीआरडीओ से एक नौजवान जासूस को लेकर आएँ जो हमारी मदद कर सके।’

‘क्या नाम है उसका?’ ठाकुर ने पूछा।

‘वो एक महिला है,’ सेना प्रमुख ने कहा और ठाकुर की प्रतिक्रिया का इंतज़ार करने

लगे।

ठाकुर की भौंहें चढ़ गईं। 'एक महिला?' उन्होंने ऐसे पूछा जैसे उन्हें यकीन ना हो रहा हो। ठाकुर के विचार से, महिलाएं पतियों की देखभाल करती हैं, बच्चे पैदा करती हैं, खाना बनाती हैं, साफ़-सफाई करती हैं और बिस्तर गर्म करती हैं। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। शायद उन्होंने चाणक्य को पढ़ा था: एक अच्छी पत्नी वह है जो सुबह में अपने पति की सेवा एक मां की तरह करती है, दिन में उसे एक बहन की तरह प्रेम करती है, और रात में एक वेश्या की तरह उसे खुश करती है। ऐसा नहीं कि इसमें से किसी भी चीज़ से ठाकुर को फर्क पड़ता था, जो एक विधुर थे, हालांकि समय-समय पर लंबे समय से चल रहे उनके अफेयर की बात दबी ज़बान से होती रहती थी।

'मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि हमारे लिए उससे बेहतर कोई नहीं है,' सेना प्रमुख ने कहा। 'वो स्वर्गीय कर्नल किशन खुराना की बेटी है।'

'इंडियन पीस कीपिंग फोर्स के हीरो?' ठाकुर ने पूछा। पल भर के लिए वो झिझके, जैसा कि कोई जवाब ढूँढ़ रहे हों। लेकिन महिला जासूस के पिता के नाम ने साफ़तौर पर एक बदलाव ला दिया था। ठाकुर के लिए, एक खराब वंशावली की भरपाई किसी भी स्तर का प्रशिक्षण, शिक्षा या अनुभव नहीं कर सकता था।

सेना प्रमुख ने हाँ में सिर हिलाया। 'उसका नाम है परमजीत खुराना। उसे यहां बुलाते हैं।'

### 3

विंग कमांडर परमजीत खुराना कॉन्फ्रेंस रूम के बाहर टहलते हुए अंदर बुलाए जाने का इंतज़ार कर रही थी। वो ठंड से कांप उठी। दिल्ली की सर्दियां ज़्यादा सर्द और गर्मियां भयंकर गर्म हो गई थीं। उसने अपनी दोनों हथेलियों को रगड़ा, और फिर उन्हें अपने कोट की पॉकेट में रख लिया। सत्यानाश हो इस ग्लोबल वार्मिंग का।

कोट की जेब में उसकी बंद मुट्ठियां उसकी घबराहट बता रही थीं। ऐसा हर दिन नहीं होता था कि किसी को सीओएससी की चर्चाओं में शामिल किया जाए। फ़ोन कॉल अप्रत्याशित थी और बेहद छोटी। 'जो भी कर रही हो, उसे छोड़ो और यहां तुरंत पहुंचो,' उसे कहा गया था।

'मुझे कहां आना है?' उसने पूछा था।

'तुम्हारे घर के बाहर एक कार और ड्राइवर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं,' उसे जवाब मिला था। 'खिड़की के बाहर देखो। किसी को बताने की ज़रूरत नहीं है कि तुम कहां जा रही हो।'

उसने पर्दों से झांककर देखा था और, उम्मीद के मुताबिक, उसके घर के बाहर की सड़क पर एक कार और ड्राइवर इंतज़ार कर रहे थे।

परमजीत—अपने दोस्तों के लिए पैम—भारत सरकार की एजेंसी, डीआरडीओ में काम करती थी। भारत भर में डीआरडीओ की बावन लेबोरेटरीज का एक नेटवर्क था। इनमें से हर लेबोरेटरी को वैमानिकी, संचार, हथियार और जीवन विज्ञान जैसे अलग-

अलग क्षेत्रों में रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास का जिम्मा दिया गया था। डीआरडीओ में 5,000 वैज्ञानिक और 25,000 सहायक कर्मचारी काम करते थे। पैम तेज़ दिमाग से भरे उस आसमान में एक चमकता सितारा थी, जिसे सिर्फ नौकरशाही के बादल घेर पाते थे। हर सरकारी विभाग की तरह, डीआरडीओ पर भी सरकारी बाबुओं की एक टीम का नियंत्रण था। पैम अक्सर मज़ाक में कहती थी कि डीआरडीओ के नौकरशाह ख़राब बंदूकों की तरह हैं: वे कभी काम नहीं करते और उन्हें फायर भी नहीं किया जा सकता (नौकरी से हटाया नहीं जा सकता)।

कश्मीर हाउस में बर्मा सागौन के फर्श पर चलते हुए पैम ने वेटिंग रूम की एक दीवार पर लगी तस्वीरों पर बेख़याली से नज़र दौड़ाई। अपनी-अपनी खास वर्दियां पहने सैनिकों के दलों को काले, उजले और सीपियां टोन की तस्वीरों में दिखाया गया था। सिख रेजिमेंट, गोरखा राइफल्स और मराठा लाइट इन्फैंट्री समेत मशहूर रेजिमेंट्स की तस्वीरें वहां सजाई गई थीं। ये वे लोग थे जिन्होंने मुश्किल वक्त में देश की अथक सेवा की थी, और देश के लिए अक्सर अपने परिवार की सुरक्षा, अपनी खुशियों और यहां तक कि अपनी ज़िंदगियों को कुर्बान किया था।

और तभी उसे अपने पिता की तस्वीर दिखी। उसकी मां हमेशा कहती थी कि पैम के गालों पर उसके पिता की ही तरह डिंपल पड़ते हैं। पैम ने उन्हें तब खो दिया था, जब वो मुश्किल से सात साल की थी। उसके पिता इंडियन पीस कीपिंग फोर्स – आईपीकेएफ – का हिस्सा थे, जिसे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1987 में श्रीलंका भेजा था, कथित तौर पर युद्धरत सिंहली और तमिल गुटों के बीच शांति स्थापित करने के लिए। इस कदम की कीमत गांधी को आखिरकार अपनी जान देकर चुकानी पड़ी थी, जब लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम – एलटीटीई—की आत्मघाती हमलावर ने एक चुनावी रैली के पहले उनके पैर छूने के साथ ही अपनी कमर पर बंधे एक किलोग्राम आरडीएक्स से खुद को उड़ा लिया था। इस धमाके में राजीव गांधी, कातिल और आसपास के पच्चीस लोगों की मौत हो गई थी। अंतिम संस्कार के लिए गांधी के शरीर का बहुत थोड़ा हिस्सा ही मिल पाया था।

कर्नल किशन खुराना लंका के गृहयुद्ध में बच गए थे, लेकिन 1990 में अपने दौरे से वापसी के वक्त उनकी असामयिक मौत हो गई, जब उनकी नाव श्रीलंका और भारत के बीच उथल-पुथल भरे पाक जलडमरूमध्य को पार कर रही थी, तभी ना जाने कहां से एक गोली आकर उन्हें लग गई। उनकी मौत ने पैम को तोड़ दिया था। पैम की मां ने तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अकेले ही उसका पालन-पोषण किया था। वेगावती ट्रस्ट नामक फाउंडेशन ने उन्हें सेना से मिलने वाली विधवा पेंशन के अलावा वित्तीय सहायता की पेशकश की थी। यह ज़िंदगी का मुश्किल दौर था, लेकिन अपनी मां के धैर्य और दृढ़ संकल्प को करीब से देखना पैम की शुरुआती शिक्षा का आधार बना था। जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, उसे एहसास हुआ कि उसके पास खुद को संभालने और सबसे अच्छा बनने पर ध्यान देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

पैम भारतीय वायु सेना में भर्ती हुई कई महिला कैडेटों में से एक थी। भारतीय वायु सेना सशस्त्र बलों की सबसे फीमेल-फ्रेंडली शाखाओं में से एक है। 1994 के बाद से महिला

पायलटों को शामिल किया जाने लगा था और उन्होंने शुरुआत में सहायता मिशनों में और बाद में लड़ाकू मिशनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पैम ने कई युद्ध क्षेत्रों में सहायता उड़ानें भरी थीं और काफ़ी तेज़ी से कामयाबी की सीढ़ियाँ चढ़ी थीं। बदकिस्मती से, एक रूसी मिग विमान से आखिरी मिनट में कूदने की वजह से उसके बाएं हाथ में फ्लेक्सर-टेंडन इंजरी (हथेली में चोट) हो गई थी। सर्जिकल मदद और फिज़ियोथेरेपी के बाद उसका हाथ तो चलने लगा था, लेकिन वो अब लड़ाकू पायलट के लिए ज़रूरी सख्त शारीरिक मानकों पर खरी नहीं उतरती थी।

सशस्त्र बलों और सिविल इंजीनियरों के बीच संपर्क स्थापित करने की उसकी अदुभत क्षमता की वजह से आखिरकार उसे डीआरडीओ में नियुक्ति मिली थी। ज़्यादातर लोगों के मुताबिक एक सैनिक टेक-सैवी नहीं हो सकता था। जबकि, पैम ने आगे जाकर मिसाइल गाइडेंस मेनू, डोन निगरानी डैशबोर्ड और हेलमेट-माउंटेड नेविगेशन कंट्रोल जैसे यूज़र-फ्रेंडली इंटरफ़ेस विकसित करने में अहम भूमिका निभाई।

पैम ने अपने पिता के फोटो फ्रेम के ग्लास में अपनी परछाई देखी। वो छत्तीस साल की थी लेकिन अपने छोटे बालों, चमकदार भूरी आंखों और गर्मजोशी भरी मुस्कान के कारण कम उम्र की दिखती थी। उसकी मुस्कुराहट ढेर सारे गम छुपा जाती थी; उसकी आंखों में उदासी के निशान देखे जा सकते थे। हालांकि उसका शरीर छोटा और पतला था, लेकिन जिम में रोज़ कसरत करने की वजह से उसमें ताक़त बहुत थी। वो अपने पिता की तस्वीर को देखती रही, उसकी अपनी परछाई उनके चेहरे के साथ घुल-मिल रही थी। मैंने आपको इतनी जल्दी क्यों खो दिया? क्या आप मुझे ऊपर से देख रहे हैं पापा? क्या आपको मुझ पर गर्व है?

उसे सागौन की लकड़ी के फर्श पर क़दमों की आहट सुनाई दी। उसने अपने बाल सही किए, अपने बैज को सीधा किया और घूम गई। 'कमिटी आपसे मिलने के लिए तैयार है,' सहायक ने उदासीन लहजे में कहा। उसका चेहरा भावहीन था, उसके नैन-नक्श मैडम टुसाड के मोम के पुतले की तरह थे। सहायक ने उसे भारी दरवाज़े तक पहुंचाया और उसे पैम के लिए खुला रखा। पैम ने एक गहरी सांस ली और कॉन्फ्रेंस रूम में प्रवेश किया।

उसने जनरल जय ठाकुर की सनक के बारे में सुना था। यह अफवाह थी कि एक बार वह भरी हुई राइफल के साथ अपने पर्सनल असिस्टेंट के पीछे सिर्फ इसलिए दौड़ गए थे क्योंकि उनके चमड़े के जूतों की चमक में उनका चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा था।

यह कैबिनेट की सबसे वरिष्ठ रक्षा सलाहकार परिषद के साथ पैम की पहली बैठक थी। और वो कमरे में अकेली महिला थी।

#### 4

जनरल जय ठाकुर ने पैम को कॉन्फ्रेंस टेबल के सबसे अंत में बैठने का इशारा किया। जब पैम ने अपनी जगह ली और एक असुविधाजनक कुर्सी पर आराम से बैठने की कोशिश की तो उसने महसूस किया कि सभी की निगाहें उस पर थीं।

ठाकुर ने सभी सरकारी कार्यालयों में धूम्रपान निषेध नीति की अनदेखी करते हुए

सिगरेट जलाई। किसी को उनसे बहस करने का साहस नहीं था। वो एक बड़ामेज़ाज शख्स थे, पूरी तरह से पुराने ख्यालातों के, और बिलकूल उस लहजे में बात करते थे जैसे ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की हो, हालांकि उन्होंने कभी उस प्रतिष्ठित संस्थान में कदम भी नहीं रखे थे। लोगों के बीच यह मज़ाक चलता था कि वो न केवल अपने जूते पहनकर सोते थे, बल्कि अंदर जाने से पहले अपने नौकर से उन पर पॉलिश भी करवाते थे।

समिति के पदेन सदस्यों के विपरीत, जो सशस्त्र बलों के प्रमुख थे या मंत्रालय के प्रतिनिधि, ठाकुर की कुर्सी प्रधानमंत्री की मर्जी पर टिकी थी। ठाकुर ने तेईस साल की उम्र में 1962 के भारत-चीन युद्ध में लड़ाई लड़ी थी, उन्हें 3,900 अन्य लोगों के साथ युद्ध बंदी के रूप में गिरफ्तार कर, तिब्बत में चोंग्ये मठ के पास एक युद्धबंदी शिविर में रखा गया था और आखिरकार वे सुरक्षित वापस आ गए थे। एक युद्ध नायक के रूप में तो नहीं, लेकिन निश्चित रूप से उन कई बहादुर सैनिकों में से एक के रूप में, जिन्होंने अपने राजनीतिक आकाओं की गड़बड़ी के बावजूद अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया था।

उनके लंबे अनुभव और देश के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को देखते हुए, किसी भी प्रधानमंत्री ने उन्हें कमिटी से रिटायर करने के बारे में कभी नहीं सोचा, भले ही वह उम्र के आठवें दशक में थे। आम राय थी कि सेना, नौसेना और वायु सेना को एकजुट रखने के लिए ठाकुर से अधिक योग्य कोई नहीं था। इसके अलावा, वो चीन के मुखर आलोचक थे। वो कई सालों से यह सुझाव दे रहे थे कि अब पाकिस्तान पर नहीं, चीन पर ध्यान केंद्रित किया जाए, लेकिन उनकी सलाह पर ध्यान नहीं दिया गया था। किसी और के ध्यान में आने से पहले ही उन्होंने पाकिस्तान और चीन के बीच मधुर संबंधों की भविष्यवाणी कर दी थी।

ठाकुर ने अलग-अलग सरकारों के माध्यम से लगातार दबाव बनाए रखा और सरकार को भारत-चीन सीमा पर किसी भी लापरवाही के प्रति लगातार आगाह किया। वह अक्सर चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के महान रणनीतिकार, चाणक्य का हवाला देते थे, जिन्होंने कहा था कि कर्ज अंतिम पैसे तक चुकाया जाना चाहिए और दुश्मन को अंतिम निशानी तक खत्म कर दिया जाना चाहिए। उन्हें इस बात का अफसोस होता था कि चीनियों ने चाणक्य का अर्थशास्त्र पढ़ा था, जबकि भारतीयों ने सुन जु की द आर्ट ऑफ वॉर को पढ़ने की जहमत नहीं उठाई।

ठाकुर ने सेना प्रमुख की ओर देखकर सिर हिलाकर इशारा किया, जिन्होंने पैम के लिए वही फुटेज दोबारा चलाया। फील्ड कैमरों में कैद नरसंहार को देखकर पैम को बेहद गुस्सा आ रहा था। दुश्मन सेना के पास न केवल भारी तादाद में सैनिक थे, बल्कि उनके पास ताक़त, ऊर्जा, चपलता, प्रशिक्षण और उपकरण भी ज्यादा थे। पैम को पता था कि भारतीय सेनाएं इन विशिष्ट चीनी कमांडो यूनिट से कोई मुकाबला नहीं कर सकतीं। सेना प्रमुख ने वीडियो विंडो बंद कर दी।

‘विंग कमांडर खुराना,’ ठाकुर ने पैम का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा।

‘जो, सर,’ पैम ने मशीन की तरह जवाब दिया और उनकी तरफ मुड़ी।

ठाकुर ने कहा, ‘हमें यह जानना है कि इन लोगों को कैसे प्रशिक्षित और सुसज्जित किया जा रहा है। लेकिन उससे ज्यादा अहम, हमें उनकी कमजोरियों, अगर कोई है, को जानने की ज़रूरत है। हमें यह भी जांचना चाहिए कि क्या इसी तरह की तकनीक हमारे अपने लोगों के लिए तेज़ी से खरीदी जा सकती है। चीनियों को जो फायदा मिल रहा है, उसे कम करना ही होगा।’

‘क्या हम बफ़र ज़ोन से आगे उनके कैंप्स को खत्म करने के लिए एयर फ़ोर्स का इस्तेमाल करने पर विचार कर सकते हैं?’ पैम ने पूछा।

‘बिलकुल नहीं। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की वायु सेना 1996 से चौथी पीढ़ी के लड़ाकू विमान खरीद रही है। हमारा अनुमान है कि ऐसे विमानों की संख्या करीब 700 है, जिसमें घातक Su-30 MKK बहुउद्देश्यीय लड़ाकू जेट भी शामिल हैं। दूसरी ओर, हमारी वायुसेना पर अभी भी मिग-21 और -23 जैसे दूसरी और तीसरी पीढ़ी के विमानों का भारी बोझ है, जो चलन से बाहर हो चुके हैं। एयर फ़ोर्स की ताक़त में चीन हमसे कहीं आगे है। अगर वे हमारे खिलाफ़ इस ताक़त का इस्तेमाल करने से बच रहे हैं, तो उन्हें ऐसा करने के लिए उकसाना मूर्खतापूर्ण होगा। 1962 में हमारे पास उनसे ज्यादा मज़बूत एयर फ़ोर्स थी और हमने मूर्खतापूर्वक इसका उपयोग करने से परहेज़ किया। इस बार हमें उल्टी गलती नहीं करनी चाहिए।’

ठाकुर के मिग के जिक्र से उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन की यादें ताज़ा हो गईं जब पैम को विमान से कूदने के लिए मजबूर होना पड़ा था क्योंकि उसके विमान में खराबी थी।

ठाकुर ने कहा, ‘हालांकि भारतीय जनता जानती है कि डोकलाम में झड़पें हुई हैं, लेकिन यह कोई नहीं जानता कि नरसंहार कितना हुआ है। यहां तक कि जोश से भरे समाचार चैनल भी हाल की घटना को झड़प बता रहे हैं। हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि चीनी भी इसे कम महत्व दे रहे हैं। ऐसा लगता है कि चीनी राष्ट्रपति को तनाव बढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं है।’

‘क्यों?’ पैम ने पूछा। ‘फिर पहले हमला क्यों किया गया?’

ठाकुर ने समझाया, ‘चीन में भारत की तरह ही अलग-अलग कैंप हैं। जो भी हो, अगर नरसंहार की बात सार्वजनिक की गई, तो यह हमारे सशस्त्र बलों और देश के लिए भी मनोबल गिराने वाला होगा।’

‘इतनी बड़ी ख़बर को कोई कैसे छिपा सकता है?’

‘डोकलाम के अलग-थलग होने की वजह से हम लड़ाई से जुड़ी कई बातों को छिपाने में कामयाब रहे हैं। गोपनीयता की शपथ के तहत परिवारों को लाशें लौटाई जा रही हैं, जिसमें उनकी चुप्पी के एवज में उन्हें बड़ी आर्थिक मदद शामिल है। लेकिन मुझे आशा है कि आपको एहसास होगा कि वक्त की क्या अहमियत है। हम चाहते हैं कि आप यह पता लगाएं कि हम ज़मीन पर चीन की ताक़त की बराबरी कैसे कर सकते हैं—तुरंत।’

‘मैं डीआरडीओ में काम करती हूं। आप जानते हैं कि यह एक तकनीकी संगठन है,’ पैम ने जवाब दिया। ‘मुझे न तो इंटेलिजेंस सर्विसेज़ का सपोर्ट है और न ही पुलिस

रिसोर्सेज का। सर, कम से कम आपको मुझे दूसरी एजेंसियों से इंटेलेजेंस इनपुट दिलाने की ज़रूरत होगी। आप मुझसे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं अंधेरे में तौर चलाऊँ।’

वहां एक असहज सन्नाटा पसर गया। ठाकुर की बात कोई काटे, इसकी आदत उसे नहीं थी, वह भी अपने से आधे से भी कम उम्र की महिला से। उसके चेहरे पर गुस्से की लाली ने सबकुछ कह दिया, लेकिन यह लाली केवल पल भर रही।

‘आपको केंद्रीय जांच ब्यूरो में एक अस्थायी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जा रहा है। इसका मतलब है कि आपके पास पूछताछ के दौरान तलाशी और गिरफ्तारी की पुलिस जैसी ताकत होगी। लेकिन इस बात को हर हाल में छिपाकर रखा जाना चाहिए,’ ठाकुर ने तुरंत जवाब दिया। ‘आप इस बारे में किसी और से चर्चा नहीं कर सकतीं। जैसे ही कोई प्रासंगिक खुफिया जानकारी हम तक पहुंचेगी, हम उसे साझा करेंगे, लेकिन आप मानकर चलिए कि ज्यादातर वक्त आप अपने दम पर काम कर रही हैं। हर किसी को—और सच में हर किसी को—एक मुखबिर मानकर बर्ताव करें।’ यह बात आदेश के अंदाज़ में कही गई थी, सुझाव या गुजारिश की तरह नहीं।

पैम को एहसास हुआ कि ठाकुर का सावधानी बरतना पूरी तरह गलत नहीं था। हाल के वर्षों में खुफिया जानकारी लीक होने की काफ़ी खबरें आ रही थीं, और वे लोग एक और लीक बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, लेकिन उसने सोचा कि क्या उसे थोड़ी और छूट के लिए अपनी किस्मत फिर आजमानी चाहिए।

‘मैं कोई वैज्ञानिक नहीं हूँ,’ उसने पलटकर जवाब दिया। ‘मुझे प्रासंगिक तकनीकी विशेषज्ञों के साथ इन मुद्दों पर चर्चा करने की ज़रूरत होगी। मैं उनसे निकलने वाले डेटा का विश्लेषण कर सकती हूँ, लेकिन मैं वैज्ञानिक नहीं बन सकती। आपको मुझे एक टीम बनाने की अनुमति देनी होगी जिसके साथ मैं काम कर सकूँ।’

ठाकुर ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। ‘सही बात है। हमें पहले से नामों की एक सूची दे दीजिए—ऐसा ग्रुप जिसके भीतर यह बातचीत गुप्त रहेगी।’

पैम इस तरह की बेहद ज़रूरी जांच में नौकरशाही की निरर्थकता के बारे में भी अपनी दलील रखना चाहती थी, लेकिन उसने अपने कदम पीछे खींच लिए। उसने मन ही मन सोचा, अपने हथियारों का इस्तेमाल समझदारी से करें और कार्रवाई करने से पहले इंतज़ार करें, लेकिन अगर ज़रूरी हो तो कार्रवाई के लिए तैयार रहें।

## 5

बीजिंग शहर के तियानमेन चौक के पूर्वी हिस्से में एक विशालकाय इमारत में चीन की नेशनल पुलिस कमांड स्थित थी। उसके बगल में एक इमारत थी जिसकी सुरक्षा चौबीसों घंटे भारी हथियारों से लैस पुलिस करती थी। जो भी अनजान शख्स कुछ सेकंड से ज्यादा देर तक घूमता दिखता था, उसे या तो भगा दिया जाता था या हिरासत में ले लिया जाता था।

अंदर जाना और भी मुश्किल काम था। अंदर या बाहर जाने के लिए व्यक्ति को पूरे

शरीर के स्कैन समेत कई स्तरों की सुरक्षा जांच से गुजरना पड़ता है। सभी दरवाज़ों पर बायोमेट्रिक स्कैनर थे, जो हर प्रवेश और निकास को दर्ज करते थे।

इमारत के केंद्र में, एक लिफ्ट की मदद से पहुंचा जा सकता था जो ज़मीन की गहराई में पांच मंज़िल तक उतरती थी। यहां एक उच्च तकनीक वाली लेबोरेटरी थी, जो भूकंप, बाढ़ और परमाणु विस्फोटों से बच सकती थी। इमारत की बुनियाद कॉइल स्प्रिंग्स पर बनाई गई थी ताकि सबसे तेज़ कंपन को भी बर्दाश्त किया जा सके। कंक्रीट के खंभे, बीम और दीवारें कई फीट मोटी थीं, जो किसी भी प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा का सामना करने के लिए तैयार की गई थीं। बाढ़ आने पर तुरंत पानी निकालने के लिए बड़े टर्बो पंप हमेशा तैयार रहते थे। पूरी इमारत पर धातु के मज़बूत जाल के एक फ्रेम पर एक इंच का प्लास्टर किया गया था, और इसे आग से बचाने की हर तैयारी से लैस बनाया गया था।

हालांकि, इमारत के अंदर पूरी शांति थी। एक शांत वातावरण-नियंत्रण प्रणाली तापमान को आरामदायक 22 डिग्री सेल्सियस पर रखती थी। एयर-सर्क्युलेशन सिस्टम सुनिश्चित करता था कि बासी हवा बाहर निकल जाए और ऑक्सीजन का स्तर ऊंचा रखा जाए। नकली रोशनी बाहरी वातावरण की तरह रखी जाती थी ताकि वहां काम करने वालों के शरीर की अंदरूनी प्रणाली कई दिनों और घंटों तक सीधे सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आए बिना भी सामान्य रखी जा सके। 2 लाख वर्ग फीट में फैली मुख्य लेबोरेटरी के अलावा वहां स्लीपिंग पॉड, एक 24/7 कैफेटेरिया, एक लाइब्रेरी, जिम, स्विमिंग पूल, शांवर और एक जनरल स्टोर थे। यह सब इसलिए ताकि कर्मचारियों को किसी भी चीज़ के लिए बाहर जाने की ज़रूरत न पड़े।

कांच की दीवार वाले एक सेक्शन के अंदर, एर्किन चोंग नाम का एक वैज्ञानिक एक बख्तरबंद दीवार के पीछे एक रोबोट को नियंत्रित करने के लिए टच-सेंसिटिव जॉयस्टिक इस्तेमाल कर रहा था। एर्किन की उम्र चालीस के आसपास थी और वह घबराया हुआ दिख रहा था, अपने हाथ की पहुंच में आने वाली हर चीज़ को वह बेचैनी से इस्तेमाल कर रहा था। वह बड़ी होली-स्टाइल के अपने मोटे चश्मे और पीछे की तरफ किए बालों के साथ एक दुबले-पतले पढ़ाकू शख्स की छवि में फिट बैठता है। उसकी शर्ट की जेब से कई रंगीन पेन निकले हुए थे।

एर्किन जिन टीमों के साथ काम करता था, उनमें से एक का नाम था ADAM- एडेप्टेबल डिज़ाइन आर्टिफिशियल मैनुपावर। एर्किन अपने रोबोट को अलग-अलग अभ्यास करा रहा था और एक-एक करके चेकलिस्ट पर आइटमों को हटाता जा रहा था—लेफ्ट किक, राइट किक, लेफ्ट जैब, राइट जैब, अपरकट, बैक फ्लिप, जंप, लीप, बेंड, क्लाइंब, रॉल... सूची लंबी थी। उसने रोबोट की तरफ देखा और ठंडी सांस ली। उसके घुटने घबराहट से कांपने लगे। प्रगति अच्छी थी, लेकिन ADAM को पर्फेक्ट बनाने में कई साल लग जाएंगे।

कुछ साल पहले चीनी राष्ट्रपति ने मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में रोबोट क्रांति का आह्वान किया था। इससे उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से गतिविधियों में तेज़ी आई। चीन ने एक साल के भीतर 87,000 औद्योगिक रोबोट जोड़ लिए, जो यूरोप और अमेरिका के

संयुक्त आंकड़ों से थोड़ा ही कम था। एपल के आईफोन बनाने वाली मुख्य कंपनियों फॉक्सकॉन ने जानबूझकर अपने कर्मचारियों की संख्या एक तिहाई कम कर दी थी क्योंकि इसने 'फॉक्सबॉट्स' तैनात किए थे जो स्प्रे, प्रेस, असेंबल, डिसअसेंबल, वेल्ड, पैकिंग और सामान की टैकिंग कर सकता था। मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में रोबोटिक विकास की तेज़ रफ़्तार ने डिफेंस सेक्टर में इसके इस्तेमाल के दरवाज़े खोल दिए थे। इसके नतीजे में गुप्त अनुसंधान सुविधा बनाई गई। रोबोट गुलाम थे और ज्यादातर बड़ी सभ्यताएं गुलामों की मेहनत के दम पर विकसित हुई थीं। रोबोटों को छुट्टियों की ज़रूरत नहीं थी; उन्हें किसी तनख्वाह की ज़रूरत नहीं थी और उनका मूड कभी बदलता नहीं था। लेकिन एर्किन को कड़वी सच्चाई पता थी। इंसानों की नकल करने वाली मशीन बनाना असाधारण रूप से मुश्किल था। इंसानों से मशीनों की नकल करवाना इससे कहीं आसान काम था।

रिसर्च टीम अपने काम में लगी रही, इस बात से अनजान कि इमारत के खंभों और बीम को जोड़े रखने वाले बड़े-बड़े काले बोल्ट उन पर नज़र रख रहे थे। अगर उन्होंने थोड़ा करीब से देखा होता, तो पता चलता कि हर बोल्ट में एक सूक्ष्म कैमरा लगा था। वहां ऐसी कोई जगह नहीं थी जो निगरानी में ना हो। सुविधा के हर हिस्से पर लगातार निगरानी रखी जा रही थी और हर गतिविधि को रिकॉर्ड किया जा रहा था।

एर्किन ने जॉयस्टिक नियंत्रण बंद कर दिया और बॉडी सेंसरों को एक्टिवेट कर दिया। टीम का एक नौजवान सदस्य आगे बढ़ा और एर्किन ने उसके शरीर पर कई सेंसर बांध दिए। आदमी अलग-अलग काम करने लगा। रोबोट ने लगभग साथ-साथ, उनकी नकल की। बीच-बीच में, एर्किन अपने कंसोल पर एक 'बूस्ट' बटन दबाता था, और रोबोट इंसानी हरकत को तेज़ कर देता था, बिल्कुल किसी वीडियो गेम की तरह जो किसी अवतार की गतिविधियों में टर्बो चार्ज जोड़ देता है।

'ठीक है, चलो वॉयस मोड आजमाएं,' एर्किन ने बॉडी सेंसर बंद करते हुए कहा। रोबोट ने पहले की ही तरह अच्छा प्रदर्शन किया, हर कमांड को पूरी तरह से समझा और उसे बिना किसी कमी से अच्छी तरह पूरा किया।

एर्किन ने एआई मोड पर स्विच किया। रोबोट ने गतिविधियों के पहले भाग को अच्छी तरह से पूरा किया। लेकिन फिर इसने अचानक काम करना बंद कर दिया। एर्किन ने रोबोट को ठीक करने के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक पल्स भेजने के लिए अपने कंट्रोल यूनिट का इस्तेमाल किया। और फिर मशीन खराब हो गई। यह लगभग गुस्सा जताने जैसा था। उसने अपनी मुठ्ठियों से दीवार पर मारना शुरू कर दिया, हर वार से कमरा हिल जाता। जब उसके वार के मनचाहे नतीजे नहीं निकले, तो रोबोट ने उस इलेक्ट्रॉनिक दरवाज़े पर लात मारना शुरू कर दिया जो उसे एर्किन से अलग करता था।

एर्किन ने जल्दी से बिजली की सप्लाई काटकर रोबोट को निष्क्रिय कर दिया और मन ही मन कोसने लगा। यह ग्यारहवीं बार था जब बग सामने आया था। उसने सुधार का हर तरीका आजमा लिया था, यहां तक कि कोड के महत्वपूर्ण हिस्सों को दोबारा लिखा भी था, लेकिन कुछ भी काम नहीं कर रहा था। सिर अपने हाथों में लेकर वह चुपचाप

बैठा रहा और सोचने लगा कि वह बुज़ांग को क्या रिपोर्ट करेगा। उस पर पहले से ही नतीजे दिखाने का भारी दबाव था। पिछली ब्रीफिंग में, बुज़ांग ने काम में तरक्की न होने पर सज़ा के तौर एर्किन को री-एजुकेशन कैंप में भेजने की धमकी भी दी थी। लेकिन एर्किन को पता था कि यह एक खोखली धमकी थी। उनकी दो सबसे बड़ी गुप्त परियोजनाओं के बारे में जितना वह जानता था उतना कोई और नहीं जानता था। एर्किन की अनुपस्थिति में, बुज़ांग क्या तरक्की करेगा? एर्किन ने इस जाल में फंसने के लिए खुद को कोसा।

वह खड़ा हुआ और हल्के और लहराते हुए मोशन का इस्तेमाल करते हुए ताई ची के कुछ मुव्स किए। उसके दिमाग में अपने-आप साफ़ होने लगा कि उसे क्या करना था। ताई ची खत्म करने के बाद, वह उन बग्स की बाकायदा समीक्षा करने लगा, जिन्हें उसने पिछले दिन ठीक किया था।

उसे उम्मीद थी कि वह दोनों परियोजनाओं में से कम से कम एक को पूरा कर सकेगा। अगर ADAM नहीं तो शायद EVE।

## 6

पैम ने अपने टेबलेट पर फुटेज को सौवीं बार देखा। हर बार जब उसने इसकी समीक्षा की, तो उसे यकीन हो गया कि वे लोग इंसानों से नहीं लड़ रहे थे। चलो, वे इंसान नहीं हैं/लेकिन फिर, वे हैं क्या?

राजाजी मार्ग पर डीआरडीओ भवन में उसका एक छोटा सा ऑफिस था। वो अपनी मेज़ पर बैठी और उसके ऊपर रखे पिन-अप बोर्ड को देखने लगी। बोर्ड में सामान्य चीज़ें थीं—एक टाइम प्लानर, याद दिलाने वाली पोस्ट-इट नोट्स और कुछ तस्वीरें। उसने एक तस्वीर देखी जिसमें थाईलैंड में एक सेमिनार में प्रतिभागियों का एक समूह एक बौद्ध मंदिर के सामने खड़ा दिख रहा था। उसने स्टॉ हैट और सनग्लासेज़ लगा रखे थे। उसके बगल में नेवी ब्लू टी-शर्ट और सफेद गोल्फ़ कैप पहने एक आदमी उसके कंधों पर हाथ रखकर खड़ा था। मार्क रिचर्ड्स।

तभी पैम के दिमाग में जैसे कोई आइडिया आया। मेरा भरोसेमंद आदमी है मार्क/यह जांच वास्तव में उसकी मदद से आगे बढ़ सकती है।

मार्क सेंटर फॉर बायोइंजीनियरिंग, टेनिंग एंड टेरेन (सीबीटीटी) नाम की एक कंपनी का प्रमुख था। सीबीटीटी, डीआरडीओ और इज़रायल की AXTech के बीच एक ज्वाइंट वेंचर था। AXTech दुनिया की सबसे बड़ी रक्षा प्रौद्योगिकी कंपनियों में एक थी जिसका मुख्यालय तेल अवीव में था।

भारत और इज़रायल के बीच रिश्ते इस वजह से संवेदनशील और महत्वपूर्ण थे कि भारत इज़रायल के सैन्य उपकरणों का सबसे बड़ा खरीदार था। लेकिन यह रिश्ता बाकी दुनिया से छिपाकर रखा जाता था ताकि इस्लामिक देशों के साथ भारत की दोस्ती बरकरार रहे। सीबीटीटी चुपचाप काम करती थी और अपने कर्मचारियों को कभी भी इस बारे में बात करने की अनुमति नहीं देती थी कि वे क्या करते थे। कई वरिष्ठ अधिकारियों को तब पद छोड़ने के लिए कहा गया था जब उन्होंने असावधानी

दिखाई। AXTech के चेयरमैन का कहना था, 'अगर एक मछली भी अपना मुंह बंद रखे तो वह परेशानी में नहीं फंसेगी।' अक्लमंदी बेहद ज़रूरी थी।

एक ही टेक्नोलॉजी सेमिनार और सम्मेलन में भाग लेने के दौरान पैम और मार्क दोस्त बन गए थे। ये दोनों, अलग-अलग तरीकों से, डीआरडीओ से जुड़े हुए थे। मार्क मरीन रह चुका था, साथ ही सीआईए के लिए भी काम कर चुका था, और अपने कार्यकाल के दौरान थाईलैंड, कंबोडिया, चीन और वियतनाम में काम कर चुका था। उसके करियर ने उसकी शादी पर बुरा असर डाला था, जो आखिरकार तलाक पर जाकर खत्म हुई थी। और फिर आखरी झटका लगा जब उसे ल्यूकेमिया से पीड़ित होने का पता चला था।

लेकिन मार्क एक योद्धा था। यहां तक कि कीमोथेरेपी के कई दौर से गुजरने के दौरान भी, वह नर्सों के साथ मज़ाक किया करता था। 'आज आप कैसे हैं, मिस्टर रिचर्ड्स?' स्लोअन-केटरिंग की खूबसूरत नर्स पर्दे खोलते वक्त उससे पूछती थी।

'मैं कल बेहतर हो रहा था,' वह जवाब देता, 'लेकिन आज मैं एक नर्स के लिए रुक गया हूं।' कहने की ज़रूरत नहीं है, मार्क अंत में पूरी तरह से ठीक हो गया और उस खूबसूरत नर्स के साथ डेट पर भी गया।

कुछ महीने बाद, उसे AXTech ने एक टेक्नोलॉजी कंपनी का नेतृत्व करने के लिए चुना जो लड़ाई के मैदान में सशस्त्र लड़ाकों के लिए कामयाबी की संभावनाएं बढ़ा सकती थी। वेस्ट प्वाइंट से इंजीनियरिंग की डिग्री, युद्ध के अनुभव और भू-राजनीति की गहरी समझ के कारण मार्क इस पद के लिए उपयुक्त आदमी था।

मार्क AXTech के उस पहले इंटरव्यू को कभी नहीं भूलता था। उन्होंने उसके बारे में जो दस्तावेज़ इकट्ठे किए थे, वे दो इंच मोटे थे; उसके बारे में दरअसल ऐसा कुछ भी नहीं था जो वे पहले से नहीं जानते थे। उन्हें मेरा इंटरव्यू लेने की ज़रूरत ही क्यों है? उसे आश्चर्य हुआ था। लेकिन उसे जल्द ही एहसास हुआ कि इंटरव्यू उसे AXTech में शामिल होने के लिए एक मार्केटिंग पिच था।

AXTech के सबसे बड़े ग्राहकों में भारतीय सशस्त्र बल थे, जिसमें 14 लाख सक्रिय कर्मचारी और 21 लाख रिज़र्व कर्मचारी थे। नई नौकरी का मतलब था नई दिल्ली जाकर बसना, और उसके डॉक्टर उसकी सेहत पर शहर की प्रदूषित हवा के असर को लेकर चिंतित थे। लेकिन यह बिल्कुल वैसा ही बड़ा बदलाव था जिसकी मार्क को तलाश थी। वो अपने अतीत को पीछे छोड़ने के लिए बेचैन था, वो सबकुछ भूल जाना चाहता था जो उसने किया था, और जो भी घटनाएं हुई थीं, यहां तक कि उन भयानक बुरे सपनों को भी भूल जाना चाहता था जो उसे सोते समय परेशान करते थे। उसने इस ऑफर को तुरंत मान लिया।

मार्क की अगुवाई में, सीबीटीटी एक ऐसे विशाल समूह में बदल गया जिसने मानव-मशीन संपर्क और प्रिडिक्टिव एनालिटिक्स और ऑटोमेशन के सभी क्षेत्रों में विस्तार किया। इसमें ऐसे उत्पाद शामिल थे जो ज़मीन, समुद्र और हवा में लड़ाई में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का फायदा उठाते थे। भारत जैसी उभरती शक्ति के लिए

केवल 'सेक्सो' और ठोस प्रासांगिकता वाली प्रौद्योगिकियों के बीच अंतर करने की मार्क की सहज क्षमता ने उसे सीबीटीटी का अभिन्न अंग बना दिया। वह अक्सर अपने सहकर्मियों से मज़ाक करता था कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकसित करना आसान था लेकिन कुदरती इंसानी मूर्खता का मुकाबला करना कहीं ज़्यादा मुश्किल था।

पैम ने ग्रुप फोटो को फिर से देखा और झिझकते हुए अपने डेस्क पर रखे फ़ोन की तरफ हाथ बढ़ाया। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि मार्क की शख्सियत लुभावनी थी। सुनहरे बालों और एथलेटिक कद-काठी वाले मार्क की उम्र करीब पचास साल थी। उसने कछुए की सीप का चश्मा पहन रखा था। उसने अपनी कई एक जैसी नेवी ब्लू टी-शर्ट में से एक पहनी थी, करीब-करीब स्टीव जॉब्स की यूनिफॉर्म की तरह। एक साल पहले पैम और मार्क की मुलाकात गोवा में एक कॉन्फ्रेंस में हुई थी। उनकी उम्र में तेरह साल के अंतर की कोई अहमियत नहीं रह गई थी क्योंकि उन दोनों की पसंद कमोबेश हर स्तर पर मिलती थीं। कॉन्फ्रेंस की आखिरी शाम दोनों ने बहुत ज़्यादा शराब पी और फिर जोश से भरी रात एक-दूसरे के साथ बिस्तर पर बिताई। दोनों इस बात पर राज़ी हुए थे कि इस मुलाकात को भूलकर आगे बढ़ेंगे ताकि किसी तरह की जटिलता से बचें रहें। उन दोनों को अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ने की ज़रूरत थी, लेकिन पछतावे की भावना बनी रही। यह साफ़ नहीं था कि यह पछतावा एक साथ बिताए वक्त के लिए था या उसके बाद रास्ते अलग करने के लिए। पैम तय नहीं कर पा रही थी कि मार्क को फ़ोन करना सही था या नहीं। उसने मार्क का नंबर डायल किए बिना हैंडसेट पकड़े रखा। क्या मुझे फ़ोन करना चाहिए?

उसकी कोहनी उसके टैबलेट की स्क्रीन को छू गई। हमले का वीडियो फिर से चलने लगा। अगर मैंने इसका पता नहीं लगाया, तो यह नरसंहार दोहराया जा सकता है। उसने अपना मन बना लिया। व्यक्तिगत भावनाओं को आड़े नहीं आने देना चाहिए। ठाकुर की स्वीकृति या अस्वीकृति के बावजूद उसे मार्क की मदद की ज़रूरत थी। और इस बात की परवाह किए बिना कि यह उसकी ज़िंदगी में क्या मुश्किल ला सकती है।

## 7

जब पैम गुड़गांव में सीबीटीटी की इमारत में पहुंची, तो लॉबी सुरक्षा गार्डों से भरी हुई थी। वो मेटल डिटेक्टर से गुज़री और फिर इलेक्ट्रॉनिक छड़ी से उसकी जांच की गई। लिफ्ट तक पहुंचने में उसे पूरे दस मिनट लग गए।

पंद्रहवीं मंज़िल पर कदम रखते हुए, पैम ने पॉलिशड कंक्रीट टाइल्स, चमचमाते स्टेनलेस स्टील फर्नीचर, गहरे रंग की लकड़ी और मॉडर्न आर्ट की दुनिया में प्रवेश किया। यहां की चकाचौंध मन पर हावी होने वाली थी। उसने सोचा, यहां झाड़ू रखने वाली कोठरी भी शायद मेरे ऑफिस से बड़ी है।

मार्क की सेक्रेटरी रिसेप्शन के पास उसका इंतज़ार कर रही थी। वह एक मोटी महिला थी जिसके बाल कसकर जूड़े में बंधे थे। वह पैम को एक लंबे कॉरिडोर से अपने साथ

वहां तक ले गई, जहां एक कोने में बड़ा सा कॉन्फ्रेंस रूम था, और उस कमरे से बिज़नेस डिस्ट्रिक्ट के दूसरे चमचमाते टॉवरों का शानदार नज़ारा दिखाई देता था। 'वो जल्दी ही आपके साथ होंगे,' सेक्रेटरी ने जाते हुए दरवाज़ा बंद करते-करते कहा।

मार्क एक मिनट से भी कम समय में आ गया। शुरुआत में जो भी हिचकिचाहट थी, वह उसके स्नेहपूर्ण आलिंगन और कैजुअल बर्ताव से तुरंत दूर हो गई। पैम ने राहत महसूस की। उसे यह जानकर अच्छा लगा कि मार्क ने उस रात को पीछे छोड़ दिया था। वे मैज के सामने एक-दूसरे से समकोण बनाते हुए बैठ गए जबकि सेक्रेटरी उनके लिए पानी और कॉफी लाकर रख गई।

'मेरी खुशकिस्मती है। तुम्हारा यहां आना कैसे हुआ?' मार्क ने पूछा, उसके चेहरे पर सच्ची मुस्कान थी। यह साफ़ था कि वो उसे देखकर खुश था।

'मैं तुम्हें बता दूं कि मुझे तुम्हारे साथ इस बारे में चर्चा नहीं करनी चाहिए, मार्क,' पैम ने कहना शुरू किया। 'मामला अत्यंत गुप्त है। अभी तक मेरे पास तुम्हारे साथ जानकारी साझा करने के लिए ज़रूरी मंजूरी नहीं है।'

'तुम कहो तो मैं कमरे से बाहर चला जाऊं?' मार्क ने मज़ाक किया। पैम के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। 'आह, तो फिर, मामला गंभीर है,' मार्क ने कहा। 'ठीक है, भरोसा रखो। कोई भी जानकारी बिना तुम्हारी मंजूरी के इस कमरे से बाहर नहीं जाएगी।'

पैम ने अपना टैबलेट निकाला और मार्क के लिए वीडियो चलाया। 'यह कहां हो रहा है?' मार्क ने पूछा। 'डोकलाम?' यह सार्वजनिक जानकारी थी कि डोकलाम में झड़पें हुई थीं। जो बात आमतौर पर लोगों को पता नहीं थी, वह थी वहां हुआ नरसंहार।

पैम ने कहा, 'मैं इस बात की पुष्टि या खंडन नहीं करना चाहूंगी। मैं बस इतना चाहती हूं कि तुम हमलावरों पर नज़र डालो। मैं उनके डील-डौल, ताक़त और फुर्ती से चकित हूं। क्या ये सामान्य मानव सैनिक हैं, या हम किसी और चीज़ का सामना कर रहे हैं?'

मार्क ने फुटेज को कई बार देखा। 'क्या तुमने मोशन कैप्चर के बारे में सुना है?'

'तुम्हारा मतलब एनिमेटेड फिल्मों से है?' पैम ने पूछा।

'हां,' मार्क ने कहा। 'यह मानव अभिनेताओं की गतिविधियों को रिकॉर्ड करने और फिल्मों में डिजिटल पात्रों में जान फूंकने के लिए उस जानकारी का उपयोग करने का एक तरीका है। प्रभावी रूप से, एनिमेटेड पात्र किसी जीवित अभिनेता की हरकतों की नकल करता है।'

'इसका उस वीडियो से क्या लेना-देना है जो मैंने तुम्हें अभी दिखाया?' पैम के मन में उलझन थी।

'यहां सीबीटीटी में, हमने इस प्रक्रिया को उलटने का एक तरीका ढूंढ़ लिया है। हम ऑन-स्क्रीन पात्र की हरकतों को देख सकते हैं और फिर उनकी नकल किसी आदमकद डमी से करवा सकते हैं। डमी—जिसकी खासियत इंसान जैसी है—की गतिविधियों को मापकर हम आपको बता सकते हैं कि क्या ये काम आम इंसानी कोशिश के दायरे में हैं।'

‘शानदार,’ पैम बुदबुदाई। ‘तो इस फुटेज का रिवर्स मोशन कैप्चर करके, तुम मेरे सवाल का जवाब दे सकते हो?’

मार्क ने हां में सिर हिलाया। ‘हमने हाल ही में एल्गोरिदम का एक सेट विकसित किया है जो इस तरह के सवाल का सटीक जवाब देने के लिए लाखों-करोड़ों गणनाएं कर सकता है। क्या हम इसे आजमाएं?’

उसने खड़े होकर पैम के लिए दरवाज़ा खोलकर रखा। वे गलियारे से होते हुए लिफ्ट तक वापस चले गए जो उन्हें पंद्रहवीं मंज़िल से अठारहवीं मंज़िल तक ले गई। मार्क ने एक रिकॉर्डिंग स्टूडियो की तरह दिखने वाले टेक्नोलॉजी सुईट का दरवाज़ा खोलने के लिए अपनी हथेली स्कैनर पर रखी। एक दीवार पर ढेरों स्क्रीन थीं जो हाई-एंड सर्वरों के समूह से जुड़ी हुई थीं। कंसोल के अंत में इनपुट और आउटपुट के लिए टर्मिनल थे। स्क्रीनों के पीछे एक कमरा था जिसमें कई तरह के आदमकद डमी थे जिन्हें टर्मिनलों से एक्टिवेट किया जा सकता था।

मार्क ने कमरे के एकमात्र तकनीशियन को बाहर भेज दिया। पैम को राहत मिली कि वे उन लोगों की तादाद नहीं बढ़ा रहे थे जिन्हें लूप में रखने की ज़रूरत थी। मार्क ने पैम के टैबलेट से वीडियो को एक स्क्रीन पर स्टीम किया और डीबी73 नाम के एक डमी को उन मूव्स की नकल करने के लिए एक्टिवेट किया। यह डमी वीडियो के पात्रों से सबसे ज़्यादा मिलता-जुलता था। पास की एक स्क्रीन पर डमी रिवर्स मोशन कैप्चर की नकल करते हुए दिख रहा था।

टर्मिनल स्क्रीन पर टॉर्क, विस्थापन, वेग, त्वरण, पावर और मोमेंटम की कई रीडिंग थीं। पैम को यह अजीब सी संख्याओं के एक समूह जैसा लग रहा था, लेकिन मार्क उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहा था। ‘मैं संख्याओं को समझाने के लिए तकनीशियन को बुलाऊंगा,’ उसने इंटरकॉम उठाते हुए कहा। ‘खुशकिस्मती से हमें उसके साथ फुटेज साझा नहीं करना पड़ेगा।’

तकनीशियन वापस आया और टर्मिनल पर बैठ गया और बिना किसी प्रतिक्रिया के संख्याओं का अध्ययन करने लगा। ‘क्या आपने कभी वीडियो गेम खेला है?’ उसने संख्याओं को घूरते हुए मार्क से पूछा।

‘ज़रूर,’ मार्क ने उत्तर दिया।

‘फ़ोर्टनाइट?’

‘इसके बारे में सुना है,’ मार्क ने कहा। ‘आजकल शहर का हर बच्चा इसे खेलता नज़र आता है।’

‘खेल में, आपके पास हर खिलाड़ी के लिए “पावर लेवल” नाम की एक चीज़ होती है। इससे तय होता है कि आप किस तरह के मिशन कर सकते हैं, आप कितने मज़बूत होंगे और यहां तक कि अलग-अलग मिशनों पर आपको कैसा अनुभव होगा। युद्ध पर आधारित दूसरे खेलों में आपके पास चीट कीज होती हैं जो एक साधारण किक या मुक्के को ज़्यादा ताक़तवर बना सकती हैं।’

पैम को समझ नहीं आ रहा था कि वह बताना क्या चाह रहा था। ‘तो?’ उसने पूछा।

तकनीशियन ने कहा, 'मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जब कोई लड़ाका अपने प्रतिद्वंद्वी को किक मारता है, तो हम जानते हैं कि शरीर से संपर्क होते समय निचले पैर का कोणीय त्वरण (एंगुलर एक्सलरेशन) अधिकतम होना चाहिए। अगर हम इन संख्याओं से मिल रहे कोणीय वेग (एंगुलर वेलोसिटी), कोणीय त्वरण (एंगुलर एक्सलरेशन), जड़ता के द्रव्यमान क्षण (मास मोमेंट ऑफ इनर्शिया), कोणीय संवेग (एंगुलर मोमेंटम) और गति की सतह (प्लेन ऑफ मोशन) को देखें, तो वे सभी इंसानों की तरह दिखती हैं।'

'तो इन लड़ाकों की हर हरकत इंसानों से मेल खाती है?' मार्क ने पूछा। तकनीशियन ने कहा, 'हां, लेकिन बहुत ज़्यादा बढ़ाई हुई, जैसे कि किसी तरह का टर्बो-बूस्ट उन्हें दिया गया हो। उनके एक्शन में एकाएक ज़्यादा ताक़त का संचार मार्शल आर्ट का अभ्यास करने वाले अनुभवी लोगों के दायरे से कहीं आगे जा रहा है।' पैम ने मार्क की तरफ देखा। उसने बेबसी से कंधे उचकाए। वे किसी समाधान के करीब नहीं पहुंच पाए थे।

## 8

भारत की खुफिया एजेंसी, रिसर्च एंड एनालिसिस विंग के मुख्यालय में, रॉ प्रमुख ने अपने डेस्क पर फ़ोन उठाया। 'जया, क्या तुम मुझसे मिल सकती हो?' उन्होंने हैंडसेट में कहा जब उनकी नज़र अपनी खिड़की से बाहर मध्य दिल्ली में लोधी रोड पर लगे पेड़ों की चोटी पर थी।

वेंकट तिरुमला कुमारमंगलम को कभी भी उनके पूरे नाम से बुलाया नहीं गया क्योंकि यह काफ़ी लंबा नाम था। रॉ और सरकार तथा खुफिया हलकों के लोग उन्हें बस वीटीके कहते थे। ज़्यादातर दस्तावेज़ों में, उनका जिक्र 'सेक्रेटरी-आर' के तौर पर होता था, जो दरअसल इस पद के महत्व को पूरी तरह दिखाता नहीं था। पदनाम में 'आर' का अर्थ था 'रिसर्च', और 1968 में आर.एन. काव ने जबसे एजेंसी की स्थापना की थी, तब से रॉ के हर प्रमुख को यही अजीब और साधारण पदनाम दिया जाता था।

वीटीके अपने काम में अनुभवी थे, जिन्होंने एजेंसी के साथ इक्कीस साल से अधिक समय बिताया था। यह बिल्कुल मुमकिन था कि आप उनके कमरे में जाएं और उन पर आपकी नज़र ना पड़े, लेकिन वो जिस तरह का काम करते थे, उसके हिसाब से यह उनके फायदे की बात थी। उनका शरीर पतला-दुबला लेकिन मज़बूत था और उनके बाल कई साल पहले शायद काम के तनाव की वजह से सफेद होने लगे थे। वो हमेशा खाकी पतलून और सफ़ेद कमीज़ पहनते थे, यहां तक कि तब भी, जब वो प्रधानमंत्री से मिलने के लिए जाते थे। उनकी नाक पर एक मोटा चश्मा लगा हुआ था, जिससे यह पक्का हो जाता था कि कुछ भी उनकी नज़र से न छूटे।

वीटीके का जन्म तमिलनाडु के कोडागराई गांव में एक गरीब किसान के घर हुआ था। वो नज़दीकी सरकारी स्कूल तक पहुंचने के लिए हर दिन तीन घंटे पैदल चलकर जाते थे और फिर तीन घंटे वापस आने में लगते थे। उनके दृढ़ संकल्प का पता जब ज़िला कलेक्टर को लगा तो उन्होंने उनकी शिक्षा का जिम्मा उठाने के लिए कदम उठाया।

वीटीके ने अपना करियर भारतीय पुलिस सेवा में एक अधिकारी के रूप में शुरू किया था और फिर उन्हें राँ में एक युवा एजेंट की तरह नियुक्त किया गया था। अपने करियर के दौरान उन्होंने कराची, बीजिंग और माँस्को जैसी चुनौतीपूर्ण विदेशी राजधानियों में काम किया था।

राँ की स्थापना 1968 में केवल 250 लोगों के साथ की गई थी, लेकिन तबसे इसका विस्तार लगभग 8,000 एजेंटों तक हो गया था। लेकिन इसके कर्मचारी और बजट एक रहस्य बने रहे। वीटीके सीधे प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करते थे। दरअसल, राँ का ढांचा किसी एजेंसी की तरह नहीं, बल्कि कैबिनेट सचिवालय की एक शाखा की तरह बनाया गया था। इसका मतलब यह था कि राँ संसद के प्रति जवाबदेह नहीं थी और सूचना के अधिकार अधिनियम के दायरे से बाहर थी। जनता को इसकी जानकारी नहीं थी, लेकिन राँ का गुप्त संबंध अपने शुरुआती दिनों से ही इज़राइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के साथ था। वीटीके ने अपने शुरुआती दिनों में तेल अवीव में एक प्रशिक्षण कार्यकाल पूरा किया था।

अपने दरवाज़े पर दस्तक सुनकर उन्होंने ऊपर देखा। अंदर आने वाली महिला, जया राँय, राँ की पुरानी सदस्य थी। उसकी उम्र पचास साल के आसपास थी, लेकिन सुबह के योग और उसके बाद लोधी गार्डन में एक घंटे की सैर के कारण वो अविश्वसनीय रूप से फिट थीं। उसके पीछे की तरफ कसकर बांधे हुए बाल उसे एक सख्त स्कूल टीचर जैसा लुक दे रहे थे। वह वीटीके के सामने रखी कुर्सियों में से एक पर बैठ गई।

जया का जन्म एक बौद्धिक और अकादमिक विचारधारा वाले बंगाली परिवार में हुआ था। नई भाषाएं सीखने की प्रवृत्ति ने उसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन स्कूल से ऑनर्स के साथ ग्रेजुएट बना दिया। 1990 के दशक में दो शोध पत्रों ने उसे तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की नज़रों में ला दिया था, जो स्वयं बहुभाषी थे। समझौतों, भाषणों और अंतरराष्ट्रीय संधियों के प्रारूप तैयार करने से जुड़े काम में मदद के लिए युवा जया को जल्द ही प्रधानमंत्री कार्यालय में शामिल कर लिया गया था। जब वह राव के अधीन काम कर रही थी तभी वीटीके की नज़र उस पर पड़ी।

उन्होंने प्रधानमंत्री से गुज़ारिश की थी कि जया को प्रधानमंत्री कार्यालय से जाने दें और फिर जया राँ के लिए काम करने आ गई थी। यह एक अच्छा फैसला था। पिछले कुछ दशकों में, उसे दुनिया भर के अलग-अलग भारतीय दूतावासों में राँ को जानकारी पहुंचाने वाले कर्मचारी की तरह तैनात किया गया था, जो अब गुप्त कार्रवाई और खुफियागिरी की कला और विज्ञान में पूरी तरह से प्रशिक्षित हो चुकी थी। फिलहाल, वह चीन और दक्षिण पूर्व एशिया डेस्क की प्रमुख थी।

वीटीके ने जया से कहा, 'प्रधानमंत्री कार्यालय ने संपर्क किया है। वे चाहते हैं कि आप डोकलाम हमले की जांच में पैम खुराना की मदद करें। उसे जो भी मदद चाहिए, कृपया उसे दें।' उन्होंने एक पतला फ़ोल्डर जया की तरफ बढ़ाया।

'पैम खुराना?' जया ने फ़ोल्डर को पलटते हुए पूछा। 'कर्नल किशन खुराना की बेटी?'

वोटों के ने हमों भरते हुए सिर हिलाया। 'इसमें रिसर्च और टेक्नोलॉजी के मुद्दे शामिल हैं, इसलिए राँ के बजाय डीआरडीओ के किसी व्यक्ति को इस मामले को अगुवाई करने की ज़रूरत है। पैम बेस्ट लोगों में से है।'

जया ने गले में पहने लॉकेट से खेलते हुए सहमति में सिर हिलाया। वह समझ नहीं पा रही थी कि उनके विभाग को ये काम क्यों नहीं सौंपा गया। राँ की चीन और दक्षिण पूर्व एशिया डेस्क इसे संभालने में पूरी तरह सक्षम थी। जया का मानना था कि खुफियागिरी का जिम्मा प्रोफेशनल लोगों को ही दिया जाना सबसे अच्छा था। बेशक, इसके विपरीत पक्ष में वे लोग थे जो मानते थे कि 'इंडियन इंटेलीजेंस' शब्द ही अपने आप में एक विरोधाभास था।

जया ने लॉकेट से खेलना बंद किया और पूछा, 'कोई खास प्रोटोकॉल भी है क्या?' 'तुम केवल मुझे रिपोर्ट करो,' वीटीके ने जवाब दिया। 'कुछ भी लिखकर मत देना। पैम खुराना जो कुछ भी मांगती है और जो कुछ तुम उसे देती हो, उसके बारे में मुझे बताती रहना। याद रहे कि इस मामले की निगरानी पीएमओ खुद कर रहा है। वो बूढ़ा शैतान जनरल जय ठाकुर मेरी गर्दन पर चढ़ा हुआ है और हर दूसरे वाक्य में प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री का नाम लेता रहता है।'

जया के मुंह से सिर्फ एक असहज सी हंसी निकली, उसने और कोई टिप्पणी नहीं की। राजनीति से दूर रहना हमेशा अच्छा रहता है। उसने कई अच्छे एजेंटों को सत्ता के खेल में कुर्बान होत देखा था। वह खड़ी हुई, अपने कागज़ात इकट्ठे किये और चली गई।

वीटीके ने नीचे अपनी मेज़ की तरफ देखा। उस पर दो मोबाइल फ़ोन पड़े थे। उनमें से एक में एक मोबाइल स्क्रीनबलर (एक तरह का एन्क्रिप्शन डिवाइस) लगा हुआ था। उन्होंने स्क्रीनबलर वाला फ़ोन उठाया और एक नंबर डायल किया।

'हैलो?' उन्होंने कहा। 'हमें मामले की प्रगति पर बातचीत करनी है।'

## 9

मार्क और पैम उसके ऑफ़िस ब्लॉक से निकलकर पड़ोस के स्टारबक्स में पहुंचे। जाड़े की ठंडी हवा ताज़गी भरी लग रही थी। यह एक डेट की तरह महसूस होने लगा है, मार्क ने सोचा, फिर उसने तुरंत इस विचार को मन से हटा दिया। जो कुछ भी हुआ वह अतीत में हुआ था। उनमें से किसी को भी वहां वापस जाने की ज़रूरत नहीं थी।

वे अपने फूड के साथ दो सीटों वाली विंडो टेबल पर बैठ गए। रेस्तरां की गर्माहट में अच्छा महसूस हो रहा था। पैम ने खाना शुरू कर दिया। वो बहुत भूखी थी। 'क्या तुम्हें लगता है कि चीन डॉइडस की इंजीनियरिंग में कामयाब हो गया होगा?' पैम ने अपने मुंह में ग्रिल्ड चिकन सैंडविच की बड़ी बाइट के बीच से पूछा।

मार्क ने उसकी तरफ देखा, उसके होठों पर एक फीकी मुस्कान थी। पैम के ऊपरी होठ पर ब्रेडक्रम्स और मेयो लग गया था। उसमें बच्चों जैसी कुछ तो बात थी। मार्क ने सोचा, कोई तो वजह है कि मुझे तुमसे प्यार हो गया था, पैम खुराना।

मार्क ने खुद को संभाला और पैम के सवाल पर वापस लौटा। उसने जवाब दिया, 'यह

इस पर निभर करता है कि “ड्रॉइड” को तुम्हारी पारेभाषा क्या है। यह शब्द वास्तव में स्टार वार्स फ्रैंचाइज़ के लिए गढ़ा गया था और समय के साथ वैज्ञानिक शब्दावली में शामिल हो गया है। मैं मान रहा हूँ कि तुम कुछ हद तक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लैस रोबोट की बात कर रही हो।’

‘हां, बिलकुल,’ पैम ने कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि चीनी वहां तक पहुंच गए हैं?’

‘मुमकिन है,’ मार्क ने ध्यान से जवाब दिया। ‘चीन के सबसे ज़्यादा मशहूर और बेहद सम्मानित वैज्ञानिकों में से एक, एर्किन चोंग—जो हाल तक स्टैनफोर्ड में आरएएस और एआई में महत्वपूर्ण रिसर्च कर रहे थे—को चीनी अधिकारियों ने लालच देकर बीजिंग वापस बुला लिया है।’

‘आरएएस और एआई?’

मार्क ने अपने फ़ोन पर एक फ़ाइल एक्सेस की और उसे पैम को दे दिया। ‘इसे पढ़ो,’ उसने कहा। यह अमेरिकी कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस के तैयार दस्तावेज़ का एक हिस्सा था।

ऑटोनॉमी: आज्ञादी का वह स्तर जो इंसान किसी सिस्टम को किसी दिए गए काम को अंजाम देने के लिए देता है।

रोबोट: एक पावर्ड मशीन जो सीधे इंसानी नियंत्रण, कंप्यूटर नियंत्रण या दोनों की मदद से काम के एक सेट को अंजाम देने में सक्षम है।

रोबोटिक एंड ऑटोनॉमस सिस्टम (आरएएस): किसी रोबोटिक एलिमेंट, किसी ऑटोनॉमस एलिमेंट या दोनों के साथ सिस्टम का वर्णन करने के लिए एक ढांचा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई): फैसले लेने समेत उन कामों को करने के लिए कंप्यूटर सिस्टम की काबिलियत जिनके लिए आमतौर पर इंसानी समझ की ज़रूरत होती है।

पैम ने मार्क की तरफ देखा। ‘मुझे बताना चाहते हो कि एर्किन चीन वापस क्यों गए हैं? यह अजीब है, क्योंकि वो स्टैनफोर्ड में थे।’

मार्क ने कहा, ‘चीनियों के अपने तरीके हैं। अगर इसके पीछे पैसा वजह नहीं होगा तो कोई और जानकारी होगी जिसका वे फायदा उठा सकते हैं। और उनकी एजेंसियां हर किसी की कमज़ोरियों को जानती हैं। वे जानते हैं कि किसी पर भी शिकंजा कैसे कसना है। ऐसा माना जा रहा है कि एर्किन को चीन के प्रोग्राम्स में तेज़ी लाने के लिए लाया गया है।’

‘कौन से प्रोग्राम्स?’

‘दरअसल चीनियों के दो बड़े प्रोग्राम्स हैं,’ मार्क ने कूट के नूडल्स निगलते हुए कहा। पैम के मुकाबले उसकी खाने-पीने की आदतें ज़्यादा स्टाइलिश थीं। ‘एडम और ईव। एडम का मतलब है एडैप्टेबल डिज़ाइन आर्टिफिशियल मैनपावर। ईव का मतलब है एन्ज़ाइमैटिक वायबिलिटी इंजीनियरिंग। दोनों कार्यक्रम रक्षा क्षेत्र से जुड़े हैं, मैन्युफैक्चरिंग से नहीं।’

‘तुम्हें यह सब कैसे पता चला?’

‘बस यह मान लो कि मैं पहले सीआईए में था, लेकिन मेरे दोस्त तब भी आसपास होते हैं जब मुझे उनकी ज़रूरत होती है।’ काश मैं तुम्हें सबकुछ बता पाता, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि तुम तब भी मुझे अपने आसपास देखना चाहोगी, मार्क ने सोचा।

‘क्या चीनी रोबोट प्रोग्राम अमेरिकी प्रोग्राम जैसा है?’ पैम ने पूछा।

‘सच पूछो तो नहीं। जब अमेरिकी सेना “रोबोट” शब्द का उपयोग करती है, तो उनका मतलब स्व-चालित टर्कों से लेकर पारंपरिक रूप से रोबोट के रूप में सोचे जाने वाली हर चीज़ से है। इन्हें रोबोट के बजाय ऑटोनॉमस सिस्टम्स कहना ज़्यादा सही होगा। चीनी प्रोग्राम अलग है क्योंकि इसमें आरएएस को एआई के साथ जोड़ने की कोशिश होती है।’

‘कैसे?’

‘उनका मकसद ऐसे ह्यूमनॉइड्स बनाना है जो युद्ध के लिए तैयार हों—ऐसे ह्यूमनॉइड्स जो युद्ध से जुड़े घातक फैसले ले सकें। लेकिन रक्षा हलकों में आम सहमति यह है कि वे ऐसी किसी भी चीज़ से कई साल दूर हैं। वे अपने दुश्मनों को लगातार डर में रखने के लिए चुनिंदा तरीके से गलत सूचनाएँ लीक करते हैं।’

‘क्यों? आप क्या कर रहे हैं, इसका खुलासा करने से क्या हासिल होगा?’

मार्क ने जवाब दिया, ‘सुन जू की द आर्ट ऑफ वॉर पढ़ो। इसका एक सबक है: जब आप मज़बूत हों तो कमज़ोर दिखें और जब आप कमज़ोर हों तो मज़बूत दिखें। युद्ध की सर्वोच्च कला शत्रु को बिना लड़े ही वश में करना है। चीनी बिल्कुल यही कर रहे हैं, दिमाग की लड़ाई लड़ रहे हैं। चीनी प्रयोगशालाओं के हवाले से बताई जा रही ज़्यादातर चीज़ें बेकार हैं।’

लेकिन क्या कोई ऐसा मान सकता है? पैम सोचने लगी क्योंकि उसके दिमाग में फिर से डोकलाम नरसंहार का ख्याल आ गया। उसने खुद को वर्तमान में वापस आने के लिए मजबूर किया। ‘सुपरह्यूमन इंजीनियरिंग,’ वो बुदबुदाई। ‘किसने कभी सोचा होगा कि हम भारत-चीन के संदर्भ में इस पर चर्चा करेंगे।’ वो पल भर रुकी। ‘मार्क, इसका पता लगाने में कौन मेरी मदद कर सकता है? मैं ह्यूमन इंजीनियरिंग के बारे में कुछ नहीं जानती।’

‘क्या तुमने डॉ. राजा राव के बारे में सुना है?’ मार्क ने पूछा।

‘कौन हैं ये?’

‘वो नब्बे साल के वैरागी हैं। वो चेन्नई के पास एक अकादमी में रहते थे, लेकिन उनके मौजूदा ठिकाने की जानकारी नहीं है। मुझे यह भी पक्का नहीं पता कि वो अभी भी जीवित हैं या नहीं, लेकिन अगर वो जीवित हैं तो उनका पता लगाना तुम्हारे लिए काम का होगा।’

‘खासकर राव ही क्यों?’ पैम ने पूछा।

‘सीधा-सीधा कहूं तो ह्यूमन इंजीनियरिंग के विषय में सबसे अधिक जानकार व्यक्ति वही हैं। सीबीटीटी की पैरेंट कंपनी, AXTech और कई दूसरी कंपनियों ने उन्हें बुलाने के लिए कई बार कोशिश की, लेकिन कोई कामयाब नहीं हुआ। अब उनकी इसमें कोई

रांचे नहीं रही, सलाहकार की हौसेयत से भी नहीं। शायद किसी चीज़ ने उन्हें वैरागी में बदल दिया है, लेकिन किस चीज़ ने, यह मुझे नहीं पता।'

पैम ने अपनी डायरी के एक पिछले पन्ने में राजा राव का नाम नोट किया। यह वही डायरी थी जिसे उसके पिता अपने नोट्स के लिए इस्तेमाल करते थे और यह उसकी सबसे बेशकीमती संपत्तियों में से एक थी। उनके लाइटर, पेन और हिप फ्लास्क (जेब में रखने की शराब की बोतल) के साथ, यह एकमात्र चीज़ थी जो कर्नल किशन खुराना के पास बची थी।

वो अक्सर चाहती थी कि वो उस डायरी के माध्यम से उनसे बात कर सके। वो उनकी सलाह और निर्देशन से कुछ कर सके।

## 10

मैं डोंगडु<sup>1</sup> में जिंग तू मठ के द्वार पर दढ़ता से खड़ा था। मेरे पैर सुन्न हो गए थे क्योंकि मैं वहां तीन दिनों से अधिक समय से खड़ा था, और वहां से हटने से इनकार कर चुका था। मैं गर्मी, भूख और डिहाइड्रेशन की वजह से गिरने की कगार पर था, लेकिन कुछ ऐसा था जिसने मुझे वहां जमाए रखा था।

हाल ही में यह ऐलान किया गया था कि जिंग तू—या प्योर लैंड—मठ में चौदह युवाओं की पढ़ाई का पूरा खर्चा सरकार उठाएगी।

हुआंग हे<sup>2</sup> की सहायक नदी लुओ के उत्तरी तट पर स्थित, यह मठ एक सुरम्य क्षेत्र में बना था, जो पहाड़ों और पहाड़ियों से घिरा हुआ था। यह ऐसा माहौल था जो बच्चों को पूरे दिन बाहर खेलने के लिए प्रेरित करता था, लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं था। मैं शांत, घर के अंदर रहने वाला, एकांत को पसंद करने वाला व्यक्ति था।

मैं उन चुनिंदा चौदह लोगों में शामिल होने के लिए बेकरार था, लेकिन मुझे पता था कि मेरी उम्र एक समस्या होगी। मैं, ह्वेनसांग, सिर्फ तेरह साल का था, और वहां दाखिले के लिए न्यूनतम आयु पंद्रह साल थी। ऐसी संभावना बहुत कम थी कि मठाधीश, झोंग शांगुओ, मेरे लिए नियमों में बदलाव करेंगे। हर उपलब्ध सीट के लिए सौ अभ्यर्थी पंक्ति में प्रतीक्षा कर रहे थे।

भोजन या पानी के बिना गेट के बाहर खड़े रहने से मुझे अपनी अब तक की ज़िन्दगी पर नज़र दौड़ाने के लिए काफी वक्त मिल गया था। मेरा जन्म साल 602 में चेनलियू<sup>3</sup> में हुआ था और मुझे नाम दिया गया था चेनहुई। चेनलियू डोंगडु में इस मठ के काफी करीब था और हेंनान प्रांत में स्थित था, जिसे अक्सर चीनी सभ्यता का उद्गम स्थल माना जाता है। प्रचुर, उपजाऊ मैदानों ने इस क्षेत्र को सबसे समृद्ध भूमि में से एक बना दिया। बेशक, समृद्धि के साथ उससे जुड़े जोखिम भी आते हैं। हुआंग हे अक्सर मैदानी इलाकों में बाढ़ लाती थी और फिर अपने साथ फसलें, घरों और लोगों को बहाकर ले जाती थी। यह विश्व का दोहरा चरित्र है; हर सकारात्मक चीज़ एक नकारात्मक चीज़ के साथ आती है।

मैं चार बेटों में सबसे छोटा था। जब मैं सिर्फ पांच साल का था तब मेरी मां की मौत हो

गई और कुछ ही वर्षों बाद मेरे पिता की भी मौत हो गई। मेरे माता-पिता दोनों ने मेरे साथ बिताए थोड़े से समय के दौरान मुझे भरपूर प्यार दिया। प्यार के अलावा, हमें भरपूर किताबें मिलीं। हमारा परिवार ऐसा परिवार था जो शिक्षा और ज्ञान को महत्व देता था। मेरे एक पूर्वज ईस्टर्न हान राजवंश के एक राजा के मंत्री थे। मेरे परदादा ने शांगडांग<sup>4</sup> के राज्याधिकारी के तौर पर काम किया था। मेरे दादा इंपीरियल एकेडमी में प्राध्यापक थे। मेरे पिता एक विद्वान कन्फ्यूशी थे, जिन्होंने जियांग्लिंग<sup>5</sup> के दंडाधिकारी के रूप में भी काम किया था। इस तरह, मेरे परिवार में उन पदों पर सम्राटों की सेवा करने की एक लंबी परंपरा थी जिनके लिए शिक्षा और बुद्धि की आवश्यकता होती थी। मैं बड़ा होकर काफी गंभीर और आत्मविश्लेषक हो गया। मेरा पसंदीदा काम था पढ़ना, खासतौर से प्राचीन ऋषि-मुनियों की रचनाएं। मैं बाहर खेल रहे अपने दोस्तों की आवाज़ पर ध्यान नहीं देता ताकि मैं लिखित शब्द के ज्ञान को आत्मसात कर सकूं। धर्मपरायणता, दयालुता, संस्कृति और सज्जनता हमारे घर की विशेषताएं थीं।

जब मैं बच्चा था, मेरे पिता ने दंडाधिकारी पद से इस्तीफा दे दिया और दरबार से दूर रहने का फैसला किया। हालांकि तब मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता था, लेकिन बाद में मुझे उनके कदम का महत्व समझ में आया। उस समय चिना<sup>6</sup> का राजनीतिक माहौल अशांत था। देश पर सुई राजवंश—चिन के उत्तराधिकारियों—का शासन था, लेकिन सभी को यह दिख रहा था कि इसकी उम्र ज्यादा नहीं होगी। साम्राज्य पर आंतरिक और बाहरी दबाव बहुत अधिक थे। इसे दूसरे राजवंश के लिए जगह खाली करनी ही थी। राजनीतिक उथल-पुथल से दूर रहने का मेरे पिता का फैसला समझदारी भरा साबित हुआ, क्योंकि सुई राजवंश को जल्द ही तंग ने उखाड़ फेंका। मेरे पिता की दूरदर्शिता की बदौलत हमारा परिवार तंग का दुश्मन कहलाने से बच गया।

मैं जिंग तू में दाखिले के लिए बेताब था। मैंने शाही दूत का ध्यान आकर्षित करने की कई बार कोशिश की, जिसे उसके लाल रेशमी हनफू से आसानी से पहचाना जा सकता था। इस वजह से वह नीले या काले जूट के कपड़े पहनी हुई भीड़ से अलग दिखता था। हम सभी आम लोगों के लिए यही नियम लागू होता था। लेकिन मेरी किस्मत खराब थी। तीन दिनों तक वहां खड़े रहने के बाद आखिरकार मैंने मामले को अपने हाथों में लेने का फैसला किया। मैंने पिछली गली में एक ऐसे दरवाजे का इस्तेमाल करके पहरेदारों को चकमा दिया जिसके बारे में ज्यादा लोगों को पता नहीं था, और फिर मैं परीक्षा हॉल की तरफ चला गया। मैंने देखा कि सैकड़ों लड़के एक जगह पाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे और मेरा दिल डूब गया। मुझे स्वीकार किए जाने का कोई रास्ता ही नहीं था।

जैसे ही मैं हार मानकर पीछे हटने वाला था, शाही दूत मेरे पास आया। मेरी जानकारी में लाए बगैर, वह पिछले कुछ दिनों से मुझ पर नज़र रख रहा था। उसने मेरी उम्र पूछी, जिसका मैंने सच्चा जवाब दिया। फिर उसने पूछा कि मैं इतने उत्साह से भिक्षु क्यों बनना चाहता हूं। मैं बिलकुल नहीं हिचकिचाया। मैं हमारे सम्राट और बुद्ध की सेवा में

‘डि सैन सू चुआन बनना चाहता हूं,’ मैंने जवाब दिया, फिर डरते हुए रुक गया, मुझे नहीं पता था कि मैंने क्या कह दिया था और इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। बस मैंने अपने पिता को अक्सर ऐसा कहते सुना था, कि चिना को अगले ‘डि सैन सू चुआन’ की ज़रूरत है। उन्होंने अपने मन से कभी समझाया नहीं।

शाही दूत घोड़े की नाल जैसी अपनी मूँछों के पीछे से मुझे देखकर मुस्कुराया, और अपनी पन्ना जड़ित अनामिका से अपने होंठ के ऊपर के बालों को ठीक करने लगा। वह कुछ मिनटों तक सोच में डूबा रहा। दरअसल, तब तक किसी ने भी उसे इतना साफ़ जवाब नहीं दिया था। मुझे बाद में पता चला कि वह मेरी विनम्रता, आत्मविश्वास और उत्साह से प्रभावित हुआ था। उसने भिक्षुओं से कहा कि वे मुझे बाहर नहीं रख सकते क्योंकि उसे मुझमें अपार संभावनाएं दिखी थीं। उसने उनसे मेरी उम्मीदवारी के मामले को अपवाद मानने की गुज़ारिश की।

आखिरकार, मेरी उम्र को मठाधीश ने नज़रअंदाज़ कर दिया और मुझे समिति में ले लिया गया, जिससे कई दूसरे योग्य उम्मीदवार निराश हो गए। मैं खुशी से पागल था। मेरा बड़ा भाई चेंगसु पहले से ही जिंग तू में एक भिक्षु था, और मैं अब उसके करीब हो सकता था।

मैं उस समय यह नहीं जानता था, लेकिन तब से मेरी यात्रा अकेले होने वाली थी, दोस्तों या परिवार के बिना। और इसकी शुरुआत हो भी चुकी थी।

## 11

मैं जिंग तू मठ के मुख्य कक्ष में बैठा था। आप सभी मेरे जैसे सैकड़ों भिक्षुओं का धीमा मंत्रोच्चार सुन सकते थे। पूरा कक्ष छतों पर लटके तेल के लालटेनों की हल्की चमक से नहाया हुआ था। धूप की सुखद सुगंध कक्ष में फैली हुई थी। समय स्थिर हो गया—अतीत, वर्तमान और भविष्य सभी एक एकल क्षण में समाहित हो गए।

हमारी दिनचर्या नीरस भी थी और कठिन भी। हम ध्यान और जप करने के लिए सुबह होने से पहले ही उठ जाते थे। इसके कुछ घंटों के बाद, हम समुदाय से भिक्षा इकट्ठा करने के लिए आस-पड़ोस में घूमते थे। हमें सिखाया गया था कि अहंकार को नष्ट करने के लिए भिक्षा मांगना आवश्यक है। फिर हम मठ वापस जाते, नाश्ता करते और स्नान करते। इसके बाद कुछ घंटों तक जप और ध्यान किया जाता। दोपहर का भोजन, दिन का आखिरी भोजन होता था और यह एक मौन कार्यक्रम होता था, जिसके बाद बौद्ध धर्मग्रंथों की पढ़ाई होती थी। रात की नींद के पहले शाम के कुछ घंटे फिर से ध्यान के लिए समर्पित होते थे। इस नियम में कभी बदलाव नहीं आया।

मुझे अद्भुत स्मरण-शक्ति का वरदान था, जिससे मुझे एक ही बार में लगभग सब कुछ याद हो जाता था। इसके लिए मैं अपने पूज्य पिता को धन्यवाद देना चाहता था। उन्होंने मुझे इतनी कम उम्र में किताबों से परिचित करा दिया था कि मैंने बहुत ही आसानी से पाठ्य सामग्री को ध्यान से पढ़ना और आत्मसात करना सीख लिया था। मेरे

लिए पाठ के अनुच्छेद और उन विशिष्ट पृष्ठों को याद रखना आसान था जिन पर वे मिल सकते थे।

एक दिन, जब मैं अपने गुरु द्वारा सुनाए गए हृदय सूत्र के छंदों को दोहरा रहा था, तो मैंने बदलाव करना शुरू कर दिया। यह स्वतः हुआ था; मैं आज तक नहीं समझ पाया कि मैंने ऐसा क्यों किया। गुरु ने मेरी लापरवाही पर मुझे अपनी आंखें दिखाईं। सामान्य भिक्षुओं को सीखने के मामले में अनुशासित होना होता था, लापरवाह नहीं।

बाद में, गुरु ने मुझे अपने कक्ष में बुलाया। मैं घबराया हुआ उनके सामने खड़ा था और फटकार का इंतज़ार कर रहा था। उनके चेहरे पर उदासीनता थी। लेकिन अचानक उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। 'अब मुझे एहसास हुआ कि तुम हृदय सूत्र का ठीक उसी तरह पाठ कर रहे थे जैसे मैंने एक महीने पहले छंदों का पाठ किया था, हालांकि वह पाठ दूसरे संस्करण से था। तुम्हारे पास अद्भुत स्मृति है, ह्वेन सांग। ऐसा लगता है कि कुछ भी तुम्हारी स्मृति से बच नहीं सकता।' मैं कृतज्ञतापूर्वक उनके सामने झुक गया।

पुरस्कार के रूप में, गुरु ने मुझे डोंगडू में श्वेत अश्व मंदिर देखने के लिए कुछ समय की छुट्टी दी। मैं बहुत खुश था। श्वेत अश्व कोई साधारण मंदिर नहीं था। इसका निर्माण पांच शताब्दियों से भी पहले सम्राट मिंग ने यिंदु के दो प्रतिष्ठित भिक्षुओं, कश्यप मतंगा और धर्मरक्षा, या शी मोटेंग और झू फलान, जैसा कि चीनी उन्हें कहते थे, के आगमन की स्मृति में किया था। वे अपने साथ कई बौद्ध सूत्र और मूर्तियां एक सफेद घोड़े (श्वेत अश्व) की पीठ पर लादकर लाए थे। उनके आगमन से पहली बार चीन में बौद्ध धर्म आया था। यह मंदिर हमारी भूमि पर बौद्ध धर्म का उद्गम स्थल था।

लेकिन ये दोनों भिक्षु आखिर यिंदु से इतनी दूर आए क्यों थे? ऐसी मान्यता थी, हान राजवंश के सम्राट मिंग ने एक सपना देखा था जिसमें उन्होंने एक आत्मा देखी जिसका शरीर सोने का था और जिसके सिर से प्रकाश की किरणें निकल रही थीं। सम्राट के बुद्धिमान लोगों ने उस आत्मा की पहचान बुद्ध के रूप में की। तब सम्राट ने आदेश दिया कि एक प्रतिनिधिमंडल बुद्ध की शिक्षाओं की तलाश में पश्चिम की ओर जाए। दूत अंततः इन दो भिक्षुओं को यिंदु से लेकर आए, जो अपने साथ अनुवाद और प्रसारण के लिए विभिन्न सूत्र लाए थे।

दोनों भिक्षु कई वर्षों तक मंदिर में सूत्रों का अनुवाद करने में व्यस्त रहे, उनकी सहायता के लिए एक टीम थी। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने छह ग्रंथों का अनुवाद किया, जिनमें से अंतिम बयालीस अध्यायों का सूत्र था, और उसी का अस्तित्व बचा रहा। सूत्र ने श्वेत अश्व मंदिर को प्रसिद्ध बना दिया; पूरे क्षेत्र से लोग वहां अध्ययन, प्रार्थना, ध्यान और उपदेश देने के लिए आते थे।

जब मैं विशाल, शांत मैदान से गुज़रा तो मैं खुशी से भर गया। देवदार के पेड़ों के बीच से हल्की हवा चल रही थी। द्वार के ठीक बाहर एक शांत तालाब था जिसमें मछलियां तैर रही थीं। मैंने मंदिर में प्रवेश करने के लिए तालाब पर बने पत्थर के पुल को पार

किया। द्वार के पूर्व और पश्चिम में यिन्दु के दो भिक्षुओं शी मोटेंग और झू फलान की समाधि थीं। वहां से, मैं स्वर्गीय राजाओं के कक्ष, महान बुद्ध के कक्ष, महावीर के कक्ष से होते हुए अंत में, मार्गदर्शन कक्ष में पहुंचा। इस कक्ष के केंद्र में भविष्य के हंसते हुए बुद्ध, मैत्रेय बैठे थे।

मैंने मैत्रेय के सामने एक अलंकृत कलश पड़ा देखा और उसकी सामग्री के बारे में पूछताछ की। भिक्षुओं में से एक, जिसने मुझे भ्रमण कराने की जिम्मेदारी ली थी, ने मुझे बताया कि यह कलश कई साल पहले महान यात्री फाह्यान लेकर आए थे और जल्द ही इसे माउंट सांग<sup>8</sup> के जंगलों में शाओलिन मंदिर में स्थानांतरित किया जाना था। उसे यह नहीं पता था कि कलश में क्या है, लेकिन उसे यह पता था कि इसकी पूजा सभी भिक्षु करते हैं।

मैंने फाह्यान के बारे में सुना था, इस बौद्ध भिक्षु ने वर्ष 399 और 412 के बीच यिन्दु तक पैदल यात्रा की थी। वो समुद्री मार्ग से चीन लौटे थे और कई बौद्ध ग्रंथों और खज़ाना लेकर आए थे, जिसमें वह कलश भी शामिल था जो अभी श्वेत अश्व मंदिर में था। मुझे इस कहानी ने प्रभावित किया था। उसी क्षण मैंने मन बना लिया कि मैं एक दिन बुद्ध की भूमि, यिन्दु जाऊंगा।

मंदिर के वृद्ध भिक्षुओं में से एक ने मुझे दंतहीन मुस्कान के साथ आशीर्वाद दिया। 'तुम क्या चाहते हो बेटा? अपने दिल से पूछो और मुझे बताओ,' उसने धीरे से कहा।

'मैं हमारे सम्राट और बुद्ध की सेवा में डि सैन सू चुआन बनना चाहता हूं,' मैंने उत्तर दिया।

सज्जन भिक्षु ने आशीर्वाद देते हुए मेरे सिर पर अपना हाथ रखा और फुसफुसाए, 'मैत्रेय ऐसा करें। शांत मन से जाओ, मेरे बेटे।'

## 12

मैंने वर्ष 615 से लेकर जिंग तू में तीन संतोषजनक वर्ष बिताए। दुर्भाग्य से, उसी समय चीन में गृहयुद्ध छिड़ गया। सुई राजवंश अपनी अंतिम अवस्था में था, जैसा कि मेरे पूज्य पिता ने अनुमान लगाया था। डोंगडू में दंगे हो रहे थे और मैं अपने भाई चेन्सू और अन्य भिक्षुओं के साथ पश्चिम की ओर भाग निकला।

आखिरकार चेन्सू और मैंने सी चुआनलू<sup>9</sup> के पहाड़ों में शरण ली, जहां मैंने अगले तीन साल कोंग हुई के मठ में बिताए। मैंने खुद को अभिधर्मकोष शास्त्र जैसे ग्रंथों के अध्ययन में लगा दिया और आखिरकार, वर्ष 622 में, मुझे एक भिक्षु के रूप में नियुक्त किया गया।

मैंने अगले कुछ वर्ष बौद्ध ज्ञान की तलाश में विभिन्न प्रांतों का दौरा करते हुए बिताए। मैंने जिन स्थानों का दौरा किया उनमें से एक यांगचेंग<sup>10</sup> में शाओलिन मंदिर था। शाओलिन का नाम शाओशी पर्वत से लिया गया है, जो सोंग शृंखला की सात चोटियों में से एक है। इसे एक सदी पहले यिन्दु के एक भिक्षु ने प्रसिद्ध किया था, जो कई वर्षों तक

एक गुफा के अंदर दीवार की ओर मुंह करके ध्यान में बैठा था।

शाओलिन के भिक्षुओं को सम्राट द्वारा विशेष भूमि अनुदान और विशेषाधिकार प्रदान किए गए थे। और सच कहा जाए तो वे इन सबके हकदार थे। मंदिर में जीवन कठिन था, और वे ऐसी स्थितियों में रहते थे जिनमें आराम नहीं था—ठीक वैसे ही जैसे मैंने जिंग तू मठ में किया था। वे सुबह होने से कई घंटे पहले उठते थे, पढ़ाई करते थे और फिर शारीरिक अनुकूलन की कठोर दिनचर्या का पालन करते थे। ये सब नाश्ते से पहले ही होता था। बचा हुआ दिन सुबह के कार्यक्रम का चक्रीय दोहराव होता था। शाओलिन में एक भिक्षु होने के लिए मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की शक्ति की आवश्यकता थी।

शाओलिन में, मैंने भिक्षुओं को दो कलशों को सम्मान देते हुए देखा। मुझे कई साल पहले श्वेत अश्व मंदिर की अपनी यात्रा की याद आ गई, जहां मैंने एक ऐसा ही कलश देखा था जिसे फाह्यान यिन्दु से लाए थे। भिक्षुओं ने खुलासा किया कि इनमें से एक शाओलिन की स्थापना के शुरुआती दिनों का था। दूसरा कलश वह था जिसे मूल रूप से श्वेत अश्व मंदिर में रखा गया था। इसे कुछ साल पहले शाओलिन में स्थानांतरित कर दिया गया था। जब मैंने पूछा कि कलशों में क्या खास है, तो उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें कांगज़ी कलश कहा जाता था, लेकिन केवल वरिष्ठतम गुरु ही जानते थे कि उनमें क्या था।

भिक्षुओं में से एक मेरी ओर मुड़ा और बोला, 'यदि आप कड़ा परिश्रम करें तो आप डि सैन सू चुआन बन सकते हैं।' जब मैं बच्चा था तब से मैंने इस शब्द का बार-बार इस्तेमाल सुना था, लेकिन भिक्षु के इसका उल्लेख इतने साधारण ढंग से मेरे लिए करते हुए सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं अब तक जान चुका था कि इस अभिव्यक्ति का प्रयोग चीन के भीतर हमेशा ही बड़े सम्मान और प्रशंसा के प्रतीक के रूप में किया जाता था। लेकिन वास्तव में इसका मतलब क्या था? डि सैन सू चुआन का क्या महत्व था?

वर्ष 625 में, मैं तंग साम्राज्य की राजधानी चांगआन<sup>11</sup> पहुंचा। चांगआन दुनिया के सबसे महान मध्ययुगीन शहरों में से एक था, जिसका क्षेत्रफल डाकिन<sup>12</sup> से छह गुना ज्यादा था। यह दस लाख से अधिक लोगों का शहर था, और इसमें बड़ी संख्या में विदेशी आबादी थी जो उत्तरी यिन्दु और केंद्रीय याङ्ग<sup>13</sup> से आई थी। कन्फ्यूशीवाद, ताओवाद, बौद्ध धर्म, नेस्टोरियन ईसाई धर्म, पारसी धर्म और मनिचैवाद अपनी-अपनी जगह बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। संगीत, कला, व्यंजन, धातुकर्म, कविता, गणित, भाषा विज्ञान और फैशन के इतने अच्छे प्रतिपादकों के एक साथ होने के कारण यह विश्व की संस्कृति और ज्ञान की राजधानी थी।

चांगआन में सुरक्षात्मक दीवारें थीं जो सोलह फीट से अधिक ऊंची थीं। विनिर्माण, व्यापार, प्रार्थना, सरकार, मनोरंजन और सामान्य जीवन जैसी विशिष्ट गतिविधियों के लिए क्षेत्र निर्धारित किए गए थे। शहर को 114 अलग-अलग दीवारों वाले ब्लॉक में एक आयताकार ग्रिड पर बसाया गया था। इसके चौड़े रास्ते और सड़कें उत्तर से दक्षिण

तक ग्यारह और पूर्व से पश्चिम तक चौदह थीं/ सभी सड़कें पेड़ों से घिरी हुई थीं और जल निकासी के लिए उनके साथ-साथ नालियां बनी हुई थीं/

शहर भर में माल की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने के लिए चांगआन में नहरों का एक नेटवर्क भी था/ दुनिया भर की कई राजधानियों में इसकी नकल की जाने वाली थी/ सरकारी और महल की इमारतें चारदीवारी से घिरी हुई थीं और इसमें विदेशी दूतों के दौरे के लिए क्षेत्र भी शामिल थे/ शहर के दक्षिण-पूर्व में एक दूर तक फैला हुआ उद्यान था जिसमें एक झील, कमल के फूलों से भरे कई तालाब, फूलों के बगीचे और मंडप थे/ शहर में कई उत्कृष्ट ऊंची इमारतें थीं - अधिकतर बौद्ध मंदिर और पगोडा/ और इसके मंदिर न केवल धार्मिक सेवाओं, अवशेषों की प्रदर्शनियों और धार्मिक उत्सवों का आयोजन करते थे, बल्कि गरीबों के लिए भोजन, सार्वजनिक स्नान और बीमारों के लिए दवा उपलब्ध कराने जैसी जनसेवा के काम भी करते थे/

चांगआन की भौतिक सुंदरता से विचलित होना आसान था, लेकिन मैं बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने के लिए दृढ़ था/ मैंने खुद को अंतहीन चर्चाओं और बहसों में डुबो दिया/ चांगआन में बहुत सारे महान बुद्धिजीवी थे/ और फिर, एक दिन, मेरी मुलाकात यिन्दु के एक अतिथि भिक्षु से हुई जो चीनी भाषा में पारंगत था/ उनका नाम था प्रभाकरमित्र/ मैं बुद्ध की भूमि से आए किसी व्यक्ति से मिलकर बहुत उत्साहित था/

प्रभाकरमित्र तीन बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद करने के लिए भाषाविदों की एक टीम के साथ काम कर रहे थे/ उनकी उम्र लगभग पैंसठ साल थी और उनके पास बांटने के लिए ज्ञान का खज़ाना था/ पहली बार, मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हुआ जिसने मूल ग्रंथों का अध्ययन किया था/

तब मुझे अनुभव हुआ कि मुझे यिन्दु जाना चाहिए ताकि मैं बौद्ध धर्म के वास्तविक सार के साथ-साथ इसके स्रोत ग्रंथों तक पहुंच सकूं/ शायद मैं रास्ते में डि सान सू चुआन भी बन सकता हूं, जैसा कि यांगचेंग के भिक्षुओं ने सुझाव दिया था/ प्रभाकरमित्र ने मुझे सलाह दी कि मैं बौद्ध शिक्षा के सर्वोच्च केंद्र नालंदा जाऊं और उस समय के सबसे महान बौद्ध विद्वान शीलभद्र के अधीन अध्ययन करूं/

प्रभाकरमित्र से मुलाकात के बाद मैंने संस्कृत सीखना शुरू किया, ताकि मैं धर्मग्रंथों को उनके मूल रूप में पढ़ सकूं/ मैंने तोखारी सीखने के लिए शहर के पश्चिमी बाज़ार जाना भी शुरू कर दिया, जो कि चीन के पश्चिम में तुर्फ़ान<sup>14</sup> जैसी जगहों पर बोली जाने वाली भाषा थी/

मैं अपने जीवन की वास्तविक यात्रा के लिए खुद को तैयार कर रहा था/

### 13

सुबह होने से ठीक पहले, एक फुटबॉल मैदान के आकार के खुले प्रांगण में, जॉकस्ट्रेप से थोड़ी बड़ी पोशाक पहने हुए सैकड़ों पुरुष कसरत कर रहे थे/ उनका ध्यान फुटवर्क

और हाथ की हरकतों पर था। उनके पास जो लाठियां थीं, वे बार-बार पानों में डुबाने और जोरदार पिटाई से कठोर हुए सरकंडों से बनी थीं। हालांकि इन लाठियों के अंदरूनी हिस्से अर्ध-छिद्रित कॉर्क की तरह थे, लेकिन जिस रफ्तार से उन्हें चलाया जा रहा था, उस वजह से वे घातक हथियार बन सकते थे।

चीन के हेनान प्रांत के डेंगफेंग काउंटी में यह गुप्त जगह जेल जैसी दीवारों के भीतर बंद थी। माउंट सॉन्ग की तलहटी में स्थित, यह जगह घने जंगल से घिरी हुई थी। कंटीले तारों की बाहरी परिधि यह सुनिश्चित करती थी कि बिना किसी की नज़र में आए किसी शख्स के लिए इस जगह की दीवारों तक पहुंचना करीब-करीब नामुमकिन बन जाए।

दीवारों के ऊपर बिजली के तार थे जो घुसपैठियों की जान तुरंत ले सकते थे। भूखंड के चारों कोनों पर निगरानी टावरों पर चौबीसों घंटे सुरक्षा गार्ड तैनात रहते थे। इस जगह गश्त करने वाले सभी सुरक्षाकर्मियों की जांच मिनिस्ट्री ऑफ स्टेट सिक्योरिटी (एमएसएस) करती थी। कई स्तरों की मंजूरी के बिना कोई भी इस परिसर में न तो आ सकता था और न ही यहां से बाहर जा सकता था। बड़े-बड़े फ्लडलाइट हर समय परिसर के हर कोने को रोशन करते थे, और एक क्लोज-सर्किट कैमरा सिस्टम पक्का करता था कि इस जगह के चप्पे-चप्पे की चौबीसों घंटे निगरानी की जाए। यह बताना नामुमकिन था कि कड़ी सुरक्षा बाहरी लोगों को अंदर आने से रोकने के लिए थी या अंदर के लोगों को बाहर जाने से रोकने के लिए।

हर प्रतिभागी अलग-अलग गतिविधियों में विशेषज्ञ था: छलांग, पीछे की तरफ मुड़ना, कलाबाज़ी खाना, हाथों के बल खड़ा होना और शरीर को घुमाना। वे मज़बूत थे और सजीले भी। उनकी दिनचर्या का सत्तर प्रतिशत पैरों की कसरत थी और तीस प्रतिशत में उन्हें अपनी मुठ्ठियों का उपयोग करना था। कसरत करने वाले लोगों के सामने एक मंच पर तीन लोग ड्रम बजा रहे थे, जो धीमा या तेज़ करने के संकेत के रूप में अपनी ताल में बदलाव ला रहे थे, उनके पर्कशन की आवाज़ को एक लय में हवा में लहराती हुई सैकड़ों लाठियों की आवाज़ काट रही थी। इस पूरे तमाशे में एक नाटकीय विशेषता थी।

भूखंड के उत्तरी हिस्से में एक विशाल आवासीय ब्लॉक था; इसके ऊपर एक दर्शक दीर्घा बनाई गई थी जिसका उपयोग शिक्षक प्रतिभागियों को देखने के लिए करते थे। पास के शाओलिन मंदिर के दो वरिष्ठ शिक्षक नवयुवकों के प्रशिक्षण दिनचर्या का प्रबंधन करने के लिए यहां रहते थे। शिक्षकों को उस घी की सुगंध आ रही थी जिसे उत्तर पश्चिम कोने में एक बड़ी कड़ाही में गर्म किया जा रहा था। पुरवा हवा की मदद से सुगंध उनकी तरफ आ रही थी। जैसे ही शिक्षकों ने अपने हाथ उठाए, ड्रम बजाने वाले रुक गये। कसरत करने वाले लोग अपने शरीर को तौलिये से पोंछते हुए कड़ाही वाले मंच की ओर चल पड़े। हर दिन, जड़ी-बूटियों के मिश्रण के साथ, सैकड़ों पाउंड मक्खन को जीवाणुहीन घी बनाने के लिए गर्म किया जाता था। पुरुषों ने एक अनुशासित कतार बनाई और सभी ने छह औंस तरल लेकर उसे पी लिया।

उनकी दिनचर्या कभी बदलती नहीं थी। सुबह होने से दो घंटे पहले उन्हें कसरत करने के लिए जगाया जाता था, उसके बाद घी का पेय दिया जाता था। फिर वे स्पा ब्लॉक में

जाते थे, जहां उनकी दैनिक शारीरिक जांच के अलावा उनकी तेल मालिश होती थी और मिट्टी का उबटन लगाया जाता था। इसके बाद वे नहाते थे और फिर उन्हें नाश्ते और दोपहर के खाने के बीच के किसी समय दिन का एकमात्र भोजन दिया जाता था: दाल, अंकुरित अनाज और सब्जियों का एक दलिया जो घी और कुछ हल्के मसालों में पकाया जाता था। एक घंटे के आराम के बाद, पुरुषों को एक घंटे के ध्यान, सांस से जुड़े व्यायाम और गहन एकाग्रता से जुड़ी गतिविधि से गुजरना पड़ता था। इसके बाद हाथ से लड़ने, बंदूकों का उपयोग करने, चाकू और भाला चलाने और शारीरिक सहनशक्ति बढ़ाने के लिए कई घंटों का प्रशिक्षण दिया जाता था। वे रात में पांच घंटे से भी कम समय तक सोते थे, लेकिन गहरी नींद में।

दोनों वरिष्ठ शिक्षकों ने पीली पोशाक पहनी थी, जिस पर उन्होंने सिन्दूरी शॉल लपेट रखी थी। उन्हीं शॉल पर उनकी मालाएं लटकी हुई थीं। ये दोनों शिक्षक बालकनी से देख रहे थे। उन्हें नतीजे देखकर खुश होना चाहिए था, लेकिन वे चिंतित दिख रहे थे। सारी गतिविधि देखते हुए ज्यादा उम्र वाले शिक्षक के माथे पर झुर्रियां गहरा रही थीं।

‘क्या हमें अधिकारियों से कुछ नहीं कहना चाहिए?’ कम उम्र वाले भिक्षु ने पूछा।

‘इससे कैसे मदद मिलेगी?’ उसके वरिष्ठ ने उत्तर दिया। ‘उन्होंने पहले ही अपना मन बना लिया है, और ऐसा कोई तर्क नहीं है जो उन्हें समझा सके। हम बस यह उम्मीद कर सकते हैं कि हम इन लोगों को खतरे से निपटने के लिए बेहतर ढंग से तैयार कर दें।’

‘कैसे?’ कम उम्र वाले भिक्षु ने पूछा।

‘छह चीजें सुधार ला सकेंगी- रिएक्शन टाइम का अभ्यास, तकनीक का दोहराव, बढ़ी हुई शारीरिक सहनशक्ति, हथियार अभ्यास, लयबद्ध संचलन और आहार। इससे वे कार्यक्रम के अवांछित दुष्प्रभावों से ज्यादा असरदार ढंग से निपटने के लायक होंगे।’

‘लेकिन क्या बेहतर योद्धा बनाना हमारा काम नहीं है? हम इन मासूम लड़कों के साथ ऐसा क्यों होने दे रहे हैं?’

युवा भिक्षु उन कार्यक्रमों से परिचित था जो शारीरिक जोड़ों के लचीलेपन में सुधार, आंतरिक अंगों को मजबूत करने, शरीर की ताकत बढ़ाने और ऊर्जा एकत्र करने पर केंद्रित थी। इसके बजाय, हम क्या कर रहे हैं? अवांछित रासायनिक परिवर्तनों से निपटने की तैयारी!

वरिष्ठ गुरु ने कहा, ‘लेकिन हम वही कर रहे हैं जो हमारे लिए करना ज़रूरी है। याद रखो, इन योद्धाओं के पास असीमित शक्ति है। उनकी भुजाओं का वजन केवल दस जिन्स है लेकिन वे एक ही प्रहार में 10,000 जिन्स वजनी वस्तुओं को उनकी जगह से हटा सकते हैं। हर योद्धा की भुजा एक सिर है; उसके पैर पूछ हैं। सिर्फ एक हरकत योद्धा का परिचय दे सकती है। वह किसी ड्रैगन से कम नहीं है, जो अपने शरीर के सभी हिस्सों से वार करने में सक्षम है।’

‘ऐसा ड्रैगन जो मरने वाला है क्योंकि हमने उसकी तरफ से यह फैसला कर लिया है,’ युवा भिक्षु ने आंखों में दर्द के साथ कहा।

वरिष्ठ भिक्षु ने उदासी के भाव से अपने सहकर्मों की तरफ देखा। उसने सोचा, वह वहीं कह रहा है जो मैं नहीं कह सकता।

## 14

महरौली के पास एक इलाका है जिसे संजय वन के नाम से जाना जाता है। दिन के दौरान, संजय वन एक सुखद पिकनिक स्पॉट है, लेकिन रात में, जब जंगल में खामोशी छा जाती है, तो यह डरावना हो जाता है। संजय वन के भीतर लाल कोट के खंडहर हैं, जो तोमर वंश के समय का किला था। खंडहरों के बीच एक मुस्लिम कब्रिस्तान है जिसमें बच्चों के शव हैं। ऐसा माना जाता है कि दफनाए गए बच्चे हर रात अपनी कब्रों से उठ जाते हैं और उनके हंसने और रोने की आवाज़ दूर तक सुनी जा सकती है। चौंकने की बात नहीं है कि बहुत कम लोग रात में इन जंगलों में जाते हैं। इसलिए यह जगह गुप्त मुलाकात के लिए आदर्श है—बशर्ते मिलने वाले का दिल कमज़ोर ना हो।

आधी रात को कार की दो जोड़ी हेडलाइटें धूल भरी सड़कों से होते हुए लाल कोट की दीवारों पर चढ़ गईं और एक पूर्व निर्धारित स्थान पर रुक गईं। दो शख्स अपनी-अपनी कारों से बाहर निकले और कई साल पहले किले की प्राचीर से गिरी एक चट्टान से बनी बेंच पर बैठ गए। पास में पीपल का पेड़ होने की वजह से वे पहले भी कई बार इस जगह पर आ चुके थे। स्थानीय किंवदंती यह थी कि एक प्रेत, जो लंबे बालों वाली और सफेद साड़ी पहने एक महिला थी, हर रात उस पेड़ से अपनी गर्दन लटकाए दिखती थी, और कई सदियों पहले हुई अपनी हिंसक मौत को दोहराती थी। बेशक, यह बिल्कुल बकवास था। अगर आप पहले ही मर चुके थे तो बार-बार खुद को क्यों मारना था?

दोनों शख्स जाड़े के भारी कोट पहने हुए थे। शेंगली ने सिगरेट जलाई और एक गहरा कस खींचा। 'शेंगली' एक छद्मनाम था, और इसे अक्सर खुफिया हलकों में दबी आवाज़ में लिया जाता था। कोई नहीं जानता था कि शेंगली कौन था, लेकिन हर कोई जानता था कि यह जासूस अपने काम में सर्वश्रेष्ठ था। इस बात को दोस्त और दुश्मन बराबरी से मानते थे। अब कई साल हो गए थे जब शेंगली सोने, हीरे या तेल से भी ज़्यादा कीमती उस बेहद मूल्यवान चीज़ का व्यापारी बन गया था: जानकारी। एक जासूस की ज़िन्दगी हमेशा जोखिम भरी होती थी, लेकिन शेंगली को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। ऐसे लोग भी थे जो पैसे, उत्साह या महत्वाकांक्षा के लिए जासूस बन गए, लेकिन शेंगली उनमें से नहीं था। शेंगली जासूस था आदर्शवाद की वजह से। गहरी आस्था रखने वाले लोग अक्सर अपने आदर्शों के लिए मरने को तैयार रहते हैं।

शेंगली के बगल में बैठा था एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी जो कई वर्षों से जासूस का हैंडलर था। अधिकारी ने कहा, 'पैम खुराना पर नज़र रखो और वो जो कुछ भी करती है, उसकी जानकारी मुझे देते रहो। मैं उसके द्वारा खोजी गई किसी भी चीज़ के बारे में भी जानना चाहता हूँ, इससे पहले कि वह जानकारी दूसरे स्रोतों के माध्यम से छनकर मुझ तक पहुंचे।'

शेंगली ने हामी भरते हुए सिर हिलाया और सिगरेट का धुआं छोड़ा। घना और जलन

पैदा करता धुआं कैमल नॉन-फिल्टर सिगरेट का था, जिसे शेंगली हमेशा पीता था। इसने दिल्ली की ठंडी हवा के साथ मिलकर सामान्य से अधिक गाढ़ा धुआं पैदा किया। इससे फेफड़ों का कैंसर होने की संभावना ज्यादा थी, लेकिन इस बात की संभावना और ज्यादा थी कि शेंगली उससे पहले ही ऊचूटी के दौरान मारा जाएगा। शेंगली को वास्तव में कोई परवाह नहीं थी। वर्षों में अपने जीवन को गिनें, अपने जीवन में वर्षों को नहीं। ऐसा किसने कहा था? जॉन लेनन? मोहम्मद अली? अब्राहम लिंकन? शेंगली ने आखरी नाम को सही जवाब माना।

दोनों ने जंगल से आती आवाज़ों को नज़रअंदाज़ कर दिया। जंगल की सामान्य आवाज़ों को सुपरनैचुरल बताना मूर्खता थी। और वे दोनों जानते थे कि इंसान भूतों से कहीं ज्यादा खतरनाक थे।

‘अगर उसे अपने पिता के बारे में पता चल गया तो क्या होगा?’ जासूस ने पूछा। ‘मेरा मतलब है, उसकी मौत की वजह और वे बातें जो वह जानता था।’

अधिकारी ने जवाब दिया, ‘इस बारे में फिक्र मत करो। उसकी मौत का ब्यौरा उसके साथ ही मर गया। यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अपना ध्यान भटकने न दें। हमें अपने मकसद को साफ़-साफ़ समझना ज़रूरी है: यह सुनिश्चित करना कि चीन और भारत के बीच रणनीतिक सैन्य दूरी बनी रहे। बदकिस्मती से, पैम खुराना इसे बदल सकती है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह किसी भी हालत में ऐसा न कर पाए।’

‘कैसे?’

‘हम पैम खुराना के ज़रिए उस जानकारी तक पहुंचें जिसकी भारत को ज़रूरत है। फिर हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि दो चीज़ों में से एक हो जाए। पहला, इसका इस्तेमाल हमारे चीनी मित्रों के फायदे के लिए हो। दूसरा, जानकारी नष्ट कर दी जाए ताकि भारत इसका इस्तेमाल न कर सके।’

‘एलएलएल का क्या?’ शेंगली ने पूछा।

लेनिनवादी लिबरेशन लीग, एक कट्टर वामपंथी गुरिल्ला संगठन था जिसका मुख्यालय नागालैंड के जंगलों में था। यह नक्सली संगठन भारतीय राज्य से लड़ने और उसे उखाड़ फेंकने के लिए प्रतिबद्ध था। ऐसे कई संगठनों की तरह, यह माओत्से तुंग की राजनीतिक विचारधारा से काफी प्रभावित था।

‘हम उनका इस्तेमाल सही समय पर करेंगे,’ अधिकारी ने जवाब दिया, वह शुक्रगुज़ार था कि उसके पास शेंगली जैसा संसाधन था। समान विचारधारा वाले लोगों से काम कराना बहुत आसान हो जाता था।

## 15

जनरल जय ठाकुर भारत के प्रधानमंत्री के आधिकारिक निवास और प्रमुख कार्यालय, 7 लोक कल्याण मार्ग के गेट पर अपनी चमकदार काली एंबैसडर से उतरे। सर्द सुबह के छह बजे रहे थे। प्रधानमंत्री सुबह पांच बजे अपनी बैठकें शुरू करने के लिए जाने जाते थे और अपने सभी सहयोगी स्टाफ को व्यस्त और सतर्क रखते थे।

बारह एकड़ के पारेसर में जाने के लिए केवल एक ही दरवाजा था। इस पारेसर में पांच बंगले थे जिनमें प्रधानमंत्री का आवास, एक अनौपचारिक बैठक कक्ष, एक सम्मेलन कक्ष और एक अतिथि गृह था। एक बंगले पर पीएम की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रहे स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप (एसपीजी) का कब्जा था।

केवल उन्हीं लोगों को अंदर जाने की अनुमति थी जिनका नाम आगंतुकों की सूची में था। इस नियम का कोई अपवाद नहीं था जब तक कि आप जनरल जय ठाकुर न हों। लेकिन ठाकुर को भी अपनी गाड़ी चेकप्वाइंट पर खड़ी करनी पड़ी और बाकी रास्ता पैदल चलना पड़ा। हालांकि अर्जुन, गुलमोहर और सेमल के पेड़ों से सुसज्जित लॉन से होते हुए जाना, और मोरों के साथ घूमना एक सुंदर सैर थी।

जब ठाकुर बंगला नंबर पांच की ओर बढ़े तो उनका स्वागत स्मार्ट सैल्यूट के साथ किया गया। इस विशेष बंगले का उपयोग प्रधानमंत्री अपने निवास और अनौपचारिक बैठक क्षेत्र के रूप में करते थे। सुरक्षा असाधारण रूप से कड़ी थी, एसपीजी और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के सदस्य हर रणनीतिक बिंदु पर तैनात थे। पूरा परिसर नो-फ्लाई ज़ोन था। पीएम के साथ ठाकुर की बैठकें साउथ ब्लॉक के बजाय हमेशा यहीं होती थीं।

बंगला नंबर पांच पर पहुंचने पर, ठाकुर की मुलाकात पीएम के निजी सचिवों में से एक से हुई, जो उन्हें अपने साथ एक छोटे गलियारे से ले जाने लगे, और आगंतुकों के कमरे को नज़रअंदाज़ करते हुए आगे बढ़े। नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट की पेंटिंग्स दीवारों पर सजी थीं। ठाकुर बमुश्किल नज़र डालकर चलते रहे, जबकि सचिव आगे बढ़े और बैठक कक्ष का दरवाजा खोल दिया। पीएम पहले से ही अंदर थे। वो सत्तर साल से बस थोड़े ही कम उम्र वाले आदमी के हिसाब से अविश्वसनीय रूप से फिट लग रहे थे।

ठाकुर के अंदर आते ही उन्होंने पूछा, 'क्या आपने काम शुरू कर दिया है?' कोई अभिवादन, शुभकामनाएं या शुरुआती छोटी-मोटी बातचीत नहीं हुई। दोनों स्थिति की गंभीरता को समझते थे।

'हां, सर,' ठाकुर ने जवाब दिया। 'असाइनमेंट पैम खुराना को दे दिया गया है।' जिसे आप चाहते थे। मुझे बाद में पता चला कि सेना प्रमुख ने उनकी सिफारिश इसलिए की थी क्योंकि आपने पहले ही उसका नाम आगे बढ़ा दिया था।

'इस बीच, क्या हमने चिकन नेक में अतिरिक्त सेना बुलाई है?'

'सेना पहुंच रही है। पानागढ़ से 59वीं इन्फैंट्री डिवीज़न, कलिम्पोंग से 27वीं माउंटेन डिवीज़न और रांची से 23वीं इन्फैंट्री डिवीज़न।'

'उपकरण और रसद?'

'हम जितना अच्छा कर सकते थे, उनमें सबसे अच्छा। लेकिन अगर चीनी फिर से अपने विशेष बलों का उपयोग करते हैं, तो हमें एक समस्या होगी,' ठाकुर ने जवाब दिया, उन्हें अपने विचार सीधे-सीधे रखने की आदत थी। यही वजह थी कि कई अलग-अलग राजनीतिक दलों की सरकारों ने उन पर भरोसा किया था।

‘तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?’

‘समय,’ ठाकुर ने जवाब दिया। ‘यह पता लगाने का समय आ गया है कि चीनी सैनिकों की ताकत से कैसे मुकाबला किया जाए। एक बार जब हम किसी दिशा में आगे बढ़ जाएं, तो फिर मैं पीछे नहीं हटना चाहता।’

प्रधानमंत्री ने हामी भरी। ‘हाथों की लकीरों में किस्मत जब आकर सब लिख जाएगी, फिर उसके बाद न दया-याचना, न होशियारी ही काम आएगी,’ उन्होंने उमर खय्याम की रुबाइयां पढ़ते हुए कहा। प्रधानमंत्री का पहला प्यार था शायरी, और यह उनकी अविश्वसनीय भाषण कला थी जिसने उन्हें राजनीति में खींच लिया था। वो एक मेडिकल डॉक्टर थे। लेकिन शायरी हमेशा से उनका शौक रही।

ठाकुर ने तारीफ़ करने का नाटक किया।

प्रधानमंत्री ने फ़ोन उठाया और अपने विदेश मंत्री को फ़ोन करते हुए कहा, ‘आपको थोड़ा समय देने का कोई तरीका खोजते हैं।’ मंत्री के अंदर आते ही उन्होंने ठाकुर को बाहर जाने का इशारा किया।

प्रधानमंत्री ने अंदर आए व्यक्ति से कहा, ‘पिछले साल ही चीन के राष्ट्रपति के साथ मेरी सार्थक मुलाकात हुई थी। इसकी संभावना नहीं है कि वो इसके पीछे हैं। भारत और चीन उभरती हुई महाशक्तियां हैं, और साथ मिलकर काम करना हमारे पारस्परिक हित में है।’

विदेश मंत्री हार्वर्ड से पढ़े-लिखे थे और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दो दशकों के अनुभव वाले राजनयिक रह चुके थे। उन्होंने अपने बॉस की सवालिया निगाहों से देखा। उन्होंने कहा, ‘चीन और भारत जाहिर तौर पर अलग-अलग हैं क्योंकि, भारत के विपरीत, चीन एक कमांड-कंट्रोल देश है जहां सर्वोच्च नेता हर चीज़ का फैसला करता है। लेकिन सच कहीं दूर है। जो होता है, ज़रूरी नहीं कि वही हो जो नेता चाहता हो। ऐसा लगता है कि यह आक्रामक रुख उसके भरोसेमंद शख्स बुज़ांग का किया-धरा है।’

‘क्या आपने इस नए चीनी हमले के बारे में अमेरिकी राजदूत से बात की है?’

‘राजदूत ने सामान्य बातें कीं लेकिन किसी तरह की कोई पेशकश नहीं की।’

‘अमेरिकी क्या चाहते हैं?’

‘सौदा। वे चिंतित हैं कि आप लड़ाकू विमानों के आगामी ऑर्डर के लिए रूसियों या फ्रांसीसियों की ओर रुख कर रहे हैं।’

‘वाशिंगटन डीसी में क्या समय हुआ होगा?’ पीएम ने अचानक पूछा।

मंत्री ने अपनी घड़ी की ओर देखा। ‘सर्दियों में वे साढ़े दस घंटे पीछे रहते हैं, इसलिए शाम के 7.30 बज रहे होंगे,’ उन्होंने जवाब दिया।

‘उन्हें फ़ोन करते हैं,’ पीएम ने पहले से कॉल शेड्यूल करने के सामान्य प्रोटोकॉल को तोड़ते हुए कहा। उन्होंने अपने निजी सचिव को फ़ोन करने के लिए कहा।

‘आप उनसे क्या कहेंगे?’

‘यही कि अमेरिकियों को लड़ाकू विमानों के लिए हमारा खरीद ऑर्डर मिल सकता है, बशर्ते तकनीकी ज़रूरतें और व्यापारिक शर्तें भारत के सर्वोत्तम हित में हों।’

‘और?’

‘अमेरिकी राष्ट्रपति चीन पर दबाव डालें कि वे अपना हमलावर रुख छोड़ें और झड़प से पहले की स्थिति पर लौट जाएं।’

‘इसके लिए चीनी क्यों राज़ी होंगे?’

पीएम ने कहा, ‘हम पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होते हुए चीन के वन-बेल्ट रोडवे पर अपना विरोध जताएंगे, लेकिन इसमें रुकावट नहीं डालेंगे। उस क्षेत्र पर हमारा वस्तुतः कोई नियंत्रण नहीं है। यह एक छोटी सी रियायत है, लेकिन इससे अमेरिकियों को चीनियों के सामने एक पेशकश रखने के लिए कुछ मिल जाएगा।’

फ़ोन बजा और पीएम ने जवाब दिया। ‘आपसे बात करके अच्छा लग रहा है, मिस्टर प्रेसिडेंट,’ उन्होंने कहा, और फिर अपने विचार उनके साथ साझा करने लगे।

मंत्री ने एक पैड पर कुछ लिखा और उसे पीएम की नज़र में लाने के लिए उनके सामने कर दिया। इस पर एक ही शब्द था। इंटरसेप्स।

प्रधानमंत्री ने हामी भरने के अंदाज़ में सिर हिलाया और फिर आखरी मुद्दा अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ उठाया। वो अमेरिकी, और खासकर नेशनल सिक्योरिटी एजेंसी के इंटरसेप्स तक एक्सेस चाहते थे। आखिरकार, एनएसए दुनिया भर में सबकी बातें छिपकर सुनने वाली सबसे बड़ी एजेंसी थी। हर दिन, इसके कंप्यूटर 1.7 अरब ई-मेल, फ़ोन कॉल और अलग-अलग संवादों को इंटरसेप्स और संग्रहीत करते थे।

‘मैं एनएसए से भारत से संबंधित चीनी संचार और गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखने के लिए कह रहा हूँ,’ अमेरिकी राष्ट्रपति ने एन्क्रिप्टेड फ़ोनलाइन पर आश्वासन दिया, यह शायद उन कुछ फ़ोनलाइनों में से एक थी जिस पर एनएसए नज़र नहीं रखती थी। राष्ट्रपति खुश थे कि आखिरकार उनके पास कुछ ऐसी चीज़ आ गई थी जिसकी तारीफ़ उनकी रक्षा लॉबी करती।

## 16

जब मैं चांग'आन में था तो एक रात मुझे एक ज्वलंत सपना आया। मुझे ब्रह्मांड के केंद्र में सुमेरु पर्वत के दर्शन हुए, जो सोने, चांदी, स्फटिक (क्रिस्टल) और पत्रा से बना एक पर्वत था और एक विशाल समुद्र से घिरा हुआ था। मैंने अपने आप को अखरोट के रंग के एक दुबले-पतले घोड़े की चमचमाती काठी पर सवार होकर पहाड़ की ओर बढ़ते हुए देखा। ज़मीन पथरीली और फिसलन भरी थी, इसलिए मेरा घोड़ा अक्सर फिसल जाता था। लेकिन जब भी मुझे लगता कि हम फिसलने या गिरने वाले थे, तो ऐन मौके पर कमल के विशाल फूल हमें सहारा देने के लिए खिल जाते थे।

मैं चौंककर उठा और मुझे महसूस हुआ कि यह सपना एक संदेश था: यिन्दु की यात्रा वास्तव में कठिन होगी, लेकिन अगर मैं दृढ़ रहा तो बुद्ध मुझे वहां पहुंचने में मदद करेंगे।

मैंने संदेश के हिसाब से काम करने का फैसला लिया। मैंने सम्राट ताइज़ोंग को यिन्दु की यात्रा करने की अनुमति के लिए एक याचिका दी। मैंने लिखा कि डि सैन सू चुआन

बनना मेरी हादिक इच्छा थी, जिसके लिए मैं यह यात्रा करना चाहता था।

मेरी याचिका बिना किसी कारण के तुरंत खारिज कर दी गई। लेकिन मेरे मित्रों और सलाहकारों के माध्यम से मुझे पता चला कि तंग साम्राज्य अभी भी बहुत नया था और इसकी सुरक्षा अनिश्चित थी। इसकी सीमाएं आवश्यक रूप से सुरक्षित रहनी थीं। इसके अलावा, साम्राज्य चाहता था कि अगर चांग'आन की रक्षा करने की आवश्यकता हो तो नागरिक आबादी शहर की दीवारों के भीतर ही रहे। उत्तर से तुर्कों के लगातार हमलों के कारण यह चुनौतीपूर्ण समय था।

मेरी मुश्किल और इसलिए बढ़ गई क्योंकि तंग शासकों को मेरे जैसे बौद्धों पर संदेह रहता था। हम बौद्धों ने पिछले सुई राजवंश के तहत अपार शक्ति हासिल कर ली थी - इससे तंग राजाओं को खतरा महसूस होता था। दरअसल, तंग राजाओं ने शुरू में इसी कथित खतरे के कारण बौद्ध धर्म के बजाय ताओवाद को बढ़ावा दिया था।

लेकिन वर्ष 627 की शरद ऋतु में, तंग साम्राज्य में असामयिक ठंड के कारण फसलें खराब हो गईं। नौ साल पुराना साम्राज्य इस वजह से भोजन की कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं था। चांग'आन के द्वार खोल दिए गए ताकि लोग साम्राज्य के उन क्षेत्रों में जा सकें जहां भोजन उपलब्ध था।

मैं स्वयं भी निकलने ही वाला था कि तभी कुछ अप्रत्याशित हुआ। मुझे सम्राट से व्यक्तिगत मुलाकात के लिए निमंत्रण मिला। मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। क्या वह मुझे मेरी यात्राओं से रोकना चाहते थे? क्या वह मेरे अनुरोध के कारण मुझसे नाराज़ थे?

मैं घबराहट के साथ ग्रेट ल्यूमिनस पैलेस के दरबार में दाखिल हुआ। महल, शहर के उत्तरी किनारे पर एक बहुत बड़े शिकार उद्यान के मैदान में बना था, जो दूर तक फैले फूलों के बगीचों और पानी से भरे ताल-तालाबों से घिरा हुआ था। इसके निर्माण या प्रबंध में पैसे की कोई कोताही नहीं बरती गई थी। मेरे जैसा गरीब संन्यासी कभी भी इतने ऐश्वर्य के बीच नहीं रहा था।

भव्य विशाल कक्ष में सम्राट बैठे थे और उससे गुज़रते हुए मैं केंद्रीय गलियारे से होते हुए सिंहासन की ओर बढ़ा। सम्राट ने शुभ माने जाने वाले पशुओं और ड्रैगन की कढ़ाई वाले हल्के पीले रेशम का एक उत्कृष्ट लोंगपाओ पहना हुआ था। उस एक परिधान को बनाने में चार मास्टर दर्जियों और कढ़ाई करने वालों को पूरे दो साल लगे होंगे; यह सम्राट का वैभव था।

मैं एक गोलाकार निशान तक पहुंचा जो बताता था कि मुझे कहां रुकना चाहिए। मैं ची-शू स्थिति में सम्राट के सामने घुटनों के बल बैठ गया, यह सुनिश्चित करते हुए कि मेरे हाथ और सिर जमीन को छू रहे थे, और तब तक उसी स्थिति में रहा जब तक सम्राट ने मुझे उठने को नहीं कहा। जब मैंने ऐसा किया, तो उन्होंने मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं झिझक के साथ कुछ फीट दूर रुक गया, लेकिन उन्होंने मुझे करीब आने का इशारा किया। आखिरकार, जब मैं उनके बगल में खड़ा हुआ, तो वो मेरे कान

में फुसफुसाए: 'केन शी हुआंग की मूर्खता समाधान मांग रही है।'

मैं इस पहेली का अर्थ जानना चाहता था, लेकिन सम्राट ने मुझे पीछे हटने का इशारा किया। जब मैं पीछे हट गया, तो उन्होंने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि मुझे चांग'आन छोड़ने की अनुमति थी, लेकिन चीन छोड़ने की नहीं। मुझे आदेश था कि सीमाओं के भीतर ही रहना था।

अगले ही दिन मैं प्रभाकरमित्र से मिला। मैं जानता था कि वही इकलौता व्यक्ति था जो मेरी गुप्त योजनाओं में मेरा मार्गदर्शन कर सकता था। प्रभाकरमित्र ने मुझे बताया कि यिन्दु के लिए दो रास्ते थे। एक पूर्व से होते हुए काफी खतरनाक समुद्री मार्ग था। इस मार्ग का उपयोग फाह्यान ने यिन्दु से अपनी वापसी यात्रा पर कुछ जोखिम उठाते हुए किया था।

दूसरा पश्चिम दिशा से भूमि मार्ग था, जो मुझे शियू<sup>LS</sup> से होते हुए यिन्दु तक ले जाता था। चूंकि इस मार्ग से व्यापार की जाने वाली मुख्य वस्तु रेशम थी, इसलिए इसे रेशम मार्ग कहा जाता था। इसका उपयोग फाह्यान ने यिन्दु जाने के लिए किया था।

वर्ष 260 के बाद से मुझसे पहले चौवन पुरोहितों ने रेशम मार्ग का उपयोग किया था, लेकिन उनमें से अधिकांश अपने गंतव्य तक पहुंचने में विफल रहे थे। सफल अभियान का सबसे अच्छा उदाहरण फाह्यान का ही रहा था, जो पांचवीं शताब्दी की शुरुआत में यिन्दु गए और तेरह साल बाद वापस लौटे। मैं उनके जीवन से इतना प्रेरित हुआ कि मैंने उनके पदचिह्नों पर चलने की शपथ ले ली।

एक दिन बाद मैंने अपने भाई चेंगसु को पीछे छोड़ा और चांग'आन के द्वार से बाहर निकल गया।

## 17

बलूत की मेज़ के पीछे दक्षिण की ओर तीन बड़ी खिड़कियों से व्हाइट हाउस का रोशनी में नहाया लॉन दिखाई दे रहा था। दफ्तर के उत्तरी छोर पर लगी अंगीठी में लकड़ियां चटकने की हल्की आवाज़ आ रही थी।

वॉशिंगटन डीसी में शीत लहर पिछले कुछ हफ्तों में भयंकर हो गई थी, और वेस्ट विंग के गरम और आरामदायक अंदरूनी हिस्सों में जाकर राहत मिलती थी।

राष्ट्रपति ने एन्क्रिप्टेड टेलीफोन के रिसीवर को अपनी डेस्क पर रख दिया और अपने राष्ट्रीय खुफिया निदेशक की ओर रुख किया। 'क्या हम इससे सही तरीके से निपट रहे हैं?' उन्होंने पूछा। 'हमें इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए कि भारत के साथ क्या होता है? वे अभी भी अपनी वैचारिक उलझनों से उबर नहीं पाए हैं और जब उन्हें सही लगेगा, वे हमारा साथ छोड़ देंगे।'

राष्ट्रीय खुफिया निदेशक राष्ट्रपति की इस तरह की जल्दबाज़ी को झेलने के आदी थे। उन्होंने कुछ कहने से पहले अपना जवाब अपने मन में बना लिया। 'हमारे लिए यह समझना ज़रूरी है कि चीनी भारत को लेबोरेटरी की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। एक बार जब वे वहां कामयाब हो जाएंगे, तो वे इस रणनीति को बाकी दुनिया में लागू करेंगे।'

हमें इस पर नज़र रखनी होगी। एक ओर बात याद रखें, राष्ट्रपति महोदय। एशिया में प्रभुत्व की चीनी रणनीति को संतुलित करने के लिए भारत हमारे काम आ सकता है।' 'चीन और भारत के बीच एकमात्र अंतर यह है कि चीन के पास वास्तव में एक रणनीति होती है,' राष्ट्रपति ने व्यंग्यपूर्वक कहा। 'भारत बस एक संकट से दूसरे संकट की ओर जाता रहता है। फिर, जब चीन उन्हें धमकाता है, तो वे स्कूली बच्चों की तरह दौड़कर हमारे पास आते हैं। और अगर हम उन्हें सात्वना नहीं देते हैं, तो वे रूस की बाहों में चले जाते हैं।'

राष्ट्रीय खुफिया निदेशक (डीएनआई) ने कहा, 'भारत, हमारी तरह एक अस्त-व्यस्त लोकतंत्र है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि चीन रक्षा पर भारत की तुलना में चार गुना ज़्यादा खर्च करता है। चीन के पास विमानों की संख्या दोगुनी, नौसैनिक जहाज़ों की संख्या तीन गुनी और परमाणु हथियारों की संख्या दोगुनी है। बेहद आक्रामक और प्रभुत्वशाली चीन लंबे समय में हमारे मकसद के अनुकूल नहीं होगा, राष्ट्रपति महोदय।'

'लेकिन भारत के पास परमाणु हथियार हैं। और जब परमाणु हथियारों की बात आती है, तो आपको बराबर होने की ज़रूरत नहीं है। दुश्मन की रक्षा प्रणालियों में सेध लगाकर कुछेक हथियार ही वहां पहुंचाने हैं, इतना ही उसे घुटनों पर लाने के लिए काफी है।' उन्होंने एक बड़े विस्फोट का संकेत देने के लिए अपने हाथों से एक बड़ा लेकिन हास्यास्पद इशारा किया।

डीएनआई ने जवाब दिया, 'आप सीमित युद्धों में परमाणु हथियारों का उपयोग नहीं कर सकते क्योंकि इसमें सुनिश्चित विनाश की तरफ बढ़ने का जोखिम होता है। चीनी जानते हैं कि भारत पारंपरिक युद्ध के जवाब में परमाणु हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेगा। इसीलिए वे सलामी रणनीति—टुकड़े-टुकड़े करके बड़े इलाके पर कब्जा करने की रणनीति—पसंद करते हैं जिसमें उन्हें बढ़त है।'

'सुपरह्यूमन रोबोट का इस्तेमाल करके?' राष्ट्रपति ने पूछा।

'इस वक्त कहना मुश्किल है कि वे चीज़ क्या हैं। सीआईए ऑपरेटिव्स इस बारे में पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इसमें मुश्किलें आ रही हैं।'

'क्या भारत और चीन में हमारे पैर जमे हैं?'

डीएनआई ने हां में सिर हिलाया। 'भारत में ऐसा करना ज़्यादा आसान है। वहां पैसे फेंकिए और आपके पास मंत्रियों, नौकरशाहों, वैज्ञानिकों और अधिकारियों का एक समूह सहयोग के लिए तैयार हो जाएगा। लेकिन चीन में ऐसा करना बेहद मुश्किल है।'

'क्यों?'

'जैसा कि आप जानते हैं, चीनियों ने पिछले दो वर्षों में हमारे तीस से ज़्यादा लोगों को मार डाला है या कैद कर लिया है। लापरवाही से भरे कम्युनिकेशन सिस्टम की वजह से एमएसएस ने इस सिस्टम को आसानी से हैक कर लिया था। हमारे सबसे अहम एसेट्स को खत्म करने में उन्हें सिर्फ चौबीस महीने लगे। डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेल्लिजेंस के तौर पर मेरे कार्यकाल का एक बड़ा हिस्सा सब्र के साथ वहां फिर से

एसेट्स को तैयार करने में बीता है।’

‘काम कहां तक पहुंचा है?’

‘हमने महसूस किया है कि चीन के भीतर सूचना के मौजूदा स्रोतों को खरीदना लगभग नामुमकिन है। ज्यादातर लोग जेल जाने या मौत की सजा से डरे रहते हैं। लेकिन नए स्रोत बनाना इतना मुश्किल नहीं है। हम इज़राइल के मोसाद से भी कुछ मदद ले रहे हैं, जिसकी चीन तक बेहतर पहुंच है। कुछ जगहों पर काम तेज़ी से चल रहा है। हमने पिछला साल खुद को फिर से एकजुट करने के लिए इस्तेमाल किया है। अगर हम कामयाब होते हैं, तो हमें इसके फायदे तेज़ी से देखने को मिल सकते हैं।’

राष्ट्रपति ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। ‘यहां फूट डालो और राज करो का कोई खेल?’ राष्ट्रपति के बड़बोलेपन ने उनकी समझ की कमी को छिपा दिया।

‘चीनी नेतृत्व में दो समूह साफ़ दिखते हैं। पहला समूह आदर्शवादी है और माओत्से तुंग की मान्यताओं पर भरोसा करता है। दूसरा समूह सुधारवादी है और डेंग ज़ियाओपिंग के आदर्शों को मानता है। हमें यही कार्ड खेलना होगा। मोसाद शिन्जियांग के यिनिंग में चीनी गुप्त जेल में एक अंदरूनी सूत्र तक पहुंचने की कोशिश में है।’

‘क्यों?’ राष्ट्रपति ने पूछा।

डीएनआई ने जवाब दिया, ‘हज़ारों लोग गुलाग की तरह की नज़रबंदी में हैं, लेकिन उनमें से कुछ कैदी हमारे लिए कीमती हैं।’

‘बढ़िया। मुझे सही मायने में भारतीयों की कोई परवाह नहीं है। उनसे मुझे खीझ होती है। लेकिन मुझे चीनियों से और भी ज्यादा नफ़रत है। केवल भगवान जानता है कि वे कब चुपचाप घुस आएंगे और अपने पीले हाथों से आपका गला काट देंगे। ऐसा लगता है कि वे हर जगह पहुंच जाते हैं।’

डीएनआई हंस पड़े हालांकि इस हंसी में थोड़ी घबराहट थी। उन्होंने चारों तरफ़ इस तरह देखा कि जैसे उन्हें लग रहा हो कि ओवल ऑफिस में उनकी बात तो रिकॉर्ड नहीं हो रही। आखिरकार, पूरे देश का जासूसी नेटवर्क उनके नियंत्रण में था। उन्हें इस बात से राहत महसूस हुई कि बातचीत पूरी तरह से ऑफ़ द रिकॉर्ड थी। अगर राष्ट्रपति की नस्लवादी टिप्पणियां सार्वजनिक हो गईं तो विदेश नीति के लिए संकट खड़ा हो जाएगा। ऐसा लग रहा था कि जैसे राष्ट्रपति जानबूझकर बारूदी सुरंगों के बीच चले जाते हैं। आश्चर्य यही है कि वो इन विस्फोटों से हमेशा सुरक्षित बच निकलते हैं।

लेकिन डीएनआई को यह भी एहसास हुआ कि राष्ट्रपति पूरी तरह से गलत नहीं थे। न जाने कितने पुराने वक्त से, चीनी लोग दूर-दराज के इलाकों में झांकने में कामयाब रहे थे। पश्चिमी देश मार्को पोलो की चीन यात्रा का काफी ढोल बजाते हैं, लेकिन वह अभियान ह्वेनसांग की भारत यात्रा के छह शताब्दियों बाद और फाह्यान की यात्रा के दस शताब्दियों बाद शुरू हुआ था।

पंद्रहवीं सदी की शुरुआत में, चीनी सम्राट योंगले ने 3,500 जहाज़ों के निर्माण का काम शुरू कराया था। इनमें से कुछ दुनिया के अब तक के सबसे बड़े जहाज़ थे। इस जहाज़ी बेड़े के नौ-मस्तूल वाले जहाज़ की लंबाई लगभग 400 फीट थी, जबकि प्रसिद्ध

अन्वेषक और नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस के जहाज़ सांता मारिया को लंबाई केवल 85 फीट थी। अगर बाद के चीनी सम्राटों ने समुद्री यात्रा की परंपरा को आगे बढ़ाया होता, तो स्पेन, नीदरलैंड, इंग्लैंड या पुर्तगाल के बजाय चीन को समुद्री यात्राओं को अंजाम देने वाला दुनिया का सबसे बड़ा देश माना जाता।

राष्ट्रपति ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा, 'हमें खुद को इन दोनों देशों की हरकतों से अपडेट रखना होगा क्योंकि दोनों में कोई भी अपनी टोपी में से खरगोश (चौंकाने वाला कदम उठा) निकाल सकता है।' उन्होंने अपनी मेज़ पर ह्यूमिडोर (सिगार को नम रखने का बॉक्स) खोला और कोहिबा, गोरखा, आर्टुरो फुएंते और रेगियस के सेलेक्शन में से ध्यानपूर्वक एक सिगार उठाया। उन्होंने उस सिगार को सराहना करने के अंदाज़ में सुंघा, फिर अपने लिए बर्बन (एक तरह की व्हिस्की) का एक शॉट तैयार किया। उन्होंने डीएनआई को भी साथ देने का इशारा किया, अच्छी तरह से जानते हुए कि यह पेशकश ठुकरा दी जाएगी।

'हम यह सुनिश्चित करने की कोशिश करेंगे कि वह खरगोश हमारा हो,' डीएनआई ने रहस्यमय ढंग से कहा, और जाने के लिए अपने कागज़ात इकट्ठा करने लगे।

राष्ट्रपति हाथ में सिगार और गिलास लेकर पूर्वी दरवाज़े की तरफ चल दिए जो रोज़ गार्डन में खुलता था। वह बाहर की ठंड से तो निपट सकते थे लेकिन व्हाइट हाउस की धूम्रपान निषेध नीति से नहीं। गोरखा के बगैर जैक डेनियल के पैग में वैसा स्वाद नहीं आता था।

'सुनिश्चित करें कि खरगोश ही नहीं, टोपी, छड़ी और जादूगर भी आपका हो,' उन्होंने दरवाज़ा खोलते हुए कहा। 'यही इकलौता तरीका है जिससे आप ड्रैगन पर काबू पा सकते हैं।'

## 18

डोकलाम युद्धक्षेत्र के हरेक सेक्टर को सीबीटीटी में मार्क की फॉरेंसिक टीम के अलग-अलग जांचकर्ता को सौंपा गया था। पैम के पास मार्क को रिकॉर्ड की गई लड़ाई का सटीक इलाका बताने के अलावा कोई रास्ता नहीं था, हालांकि उसने पहले इसे ढालने की कोशिश की थी। मकसद था किसी भी जैविक सामग्री—खून, बाल, फाइबर या ऊतक—को ढूंढना जो दुश्मन सैनिकों की पहचान करने में मदद कर सके। दूसरा मकसद था पैरों के निशानों की तस्वीरें लेना, इस्तेमाल किए गए खोखे, छोड़े गए गोला-बारूद या किसी अन्य सामान को इकट्ठा करना जिससे चीनी लड़ाकों के बारे में एक ब्यौरेवार जानकारी इकट्ठी की जा सके।

जब टीम ने चट्टानों से भरे मैदान को परीक्षण क्षेत्रों में बांटने के लिए कड़ी मेहनत से रस्सियों का ग्रिड बनाया, हवाएं तेज़ चलने लगीं। यहां से दूर, टोरसा नाला के पार दक्षिण की ओर फैली हुई चीनी सड़क दिखाई दे रही थी। अगर निर्माण जारी रहा होता, तो पीएलए ज़ोम्पेलरी रिज तक पहुंच गया होता, ऐसी जगह जहां से वो भारत के उत्तर-पूर्व इलाके के लिए बेहद अहम सिलीगुड़ी कॉरिडोर तक पहुंच जाता।

जांच के लिए आए लोग ECWCS - एक्स्ट्रीम कोल्ड वेदर क्लोदिंग सिस्टम (बहुत ज़्यादा

ठंड से बचने की पोशाक) से लैस थे। सीबीटीटी में ऐसी पोशाक को विकासेत करने और भारत में इनका उत्पादन शुरू होने तक देश में विदेश से ऐसे सामान खरीदने पर करोड़ों रुपए खर्च किए जाते थे। हर सीबीटीटी जांचकर्ता एक डिजिटल कैमरा, एक फॉरेंसिक लाइट सोर्स, एक मेटल डिटेक्टर, मार्कर इंडे, सबूत रखने के बैग और एक फॉरेंसिक टूल किट से भी लैस था।

लेकिन इस मामले में एक पेचीदगी थी और टीम यह बात जानती थी। जनरल जय ठाकुर को अभी भी यह जानकारी नहीं दी गई थी। पैम ने डीआरडीओ के अपने बॉस के रसूख का इस्तेमाल करते हुए इस इलाके तक पहुंच हासिल की थी जो बाहरी लोगों के लिए पूरी तरह से वर्जित था। पैम जानती थी कि जब ठाकुर को पता चलेगा तो वो अपना आपा खो देंगे, और देर-सबेर उन्हें इसका पता चलना ही था। लेकिन वह यह भी जानती थी कि एक बड़ा सबूत हासिल करने भर से काफी फर्क पड़ सकता है।

पैम का मानना था कि पहले से अनुमति मांगने की तुलना में बाद में माफ़ी मांगना आसान था। यह रणनीति आमतौर पर काम करती थी, हालांकि इसमें बदले की कार्रवाई होने के गंभीर जोखिम थे। दिल्ली में अपने ऑफिस में बैठकर, वह टीम की प्रगति पर नज़र रख रही थी।

सीबीटीटी के सभी जांचकर्मी अपराध स्थल दस्तावेज़ीकरण के विशेषज्ञ थे और गोली चलने के रास्ते से लेकर विमान दुर्घटना तक लगभग हर घटना को फिर से रचने में सक्षम थे। उन्हें आग्नेयास्त्र चलाने का प्रशिक्षण मिला था और वे सबूतों अनुसंधान और विश्लेषण में भी प्रशिक्षित थे। मार्क ने सीबीटीटी में एक इनहाउस टीम को नियुक्त करने पर ज़ोर दिया था क्योंकि मौजूदा युद्धक्षेत्रों से सबूतों की जांच भविष्य के इस्तेमाल के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने में बेहद उपयोगी होती थी। सुराग देने वाली सामग्रियों—जैसे मिट्टी, कांच, रेशे और बाल—में अक्सर बहुत सारी जानकारी होती है जिसे भविष्य में उपयोग के लिए इकट्ठा करके उनका विश्लेषण किया जा सकता है।

लेकिन सीबीटीटी जांचकर्मी आज खुश नहीं थे। ऐसा लग रहा था कि चीनियों ने पीछे हटने से पहले इस इलाके को साफ़ करने में बहुत सावधानी बरती थी। यह इलाका वैसे भी बहुत दूर तक फैला और जंगली था। जो कुछ भी बचा रहा होगा, उसे कुदरत ने दूर कर दिया होगा। न खून, न बाल, न ऊतक, न रेशा। सीबीटीटी टीम उम्मीद खो रही थी। और फिर, हालात बदतर हो गए। तेज़ हवाएं आंधी में बदल गईं। टीम छिपने के लिए भागी और भारतीय सेना के बनाए गए बंकरों में उसने शरण ली। उन्होंने अपना समय टिन के मग से गर्म चाय पीकर और ख़राब मौसम को कोसते हुए बिताया। उन्हें यह पता नहीं था, लेकिन यह आंधी एक हादसा नहीं बल्कि उनके लिए तोहफा लाने वाली थी।

आंधी थमने तक पूरे तीन घंटे बीत चुके थे। टीम अपने काम पर वापस लौटने में सफल रही, लेकिन तेज़ हवाओं ने उनके शुरुआती काम को तहस-नहस कर दिया था। उनके बनाए निशान गायब हो गए थे और बैग में रखे नमूने हवा में उड़ गए थे।

टीम इस बात से अनजान थी कि दिल्ली में पैम के पास जनरल ठाकुर का गुस्से भरा फ़ोन आया था। उनका गुस्सा इस्पात को पिघला सकता था। 'क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि मुझसे पूछे बगैर किसी को भी इस जांच में शामिल नहीं किया जाएगा?' वो गरज रहे थे। 'यह पूरी तरह से मेरी बात की अवहेलना है। तुम बिना अनुमति लिए उच्च सुरक्षा वाले निषिद्ध क्षेत्र में चली गई, और फिर मेरे कहे बिना एक रक्षा अनुबंध फर्म को इसमें शामिल करने का दुस्साहस भी कर लिया।'

पैम ने चुपचाप उनकी बातें सुनीं, उनके गुस्से का असर अपने दिमाग पर कम पड़ने देने के लिए उसने फ़ोन को अपने कान से कुछ इंच दूर रखा।

'मैं माफ़ी मांगती हूं, सर,' उसने तुरंत कहा। 'मैं टीम को तुरंत वापस बुलाती हूं।' उसने लाइन काट दी, इस उम्मीद में कि उसकी चाल कामयाब होगी।

उसने सैटेलाइट फ़ोन उठाया जिससे वह डोकलाम में फैक्ट-फाइंडिंग मिशन को वापस बुला सकती थी, लेकिन किसी चीज़ ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। उसने कुछ मिनट और इंतज़ार किया, इस दुआ के साथ कि टीम ऐसा नतीजा देगी जिससे ठाकुर को उसके अपराध को नज़रअंदाज़ करने के लिए पर्याप्त रूप से शांत किया जा सके।

डोकलाम में एक सीनियर जांचकर्मी खुशी से चिल्लाया। 'मुझे लगता है कि मुझे कुछ मिल गया है, दोस्तों!' उसके सहकर्मी सावधानी से उसके पास पहुंचे। एक चट्टान के नीचे से एक चमकीला नीला मेडिकल टूनिंग निकला हुआ था। बहुत ज़्यादा खून बहने पर धमनी या शिरा को तुरंत दबाने के लिए इसका इस्तेमाल युद्ध में सैनिक नियमित रूप से करते थे। यह साफ़तौर पर खून से सना हुआ था। उस पर जो रंग और निशान थे, वे भारतीय सेना के नहीं थे।

टूनिंग पहले दिखाई नहीं दिया था क्योंकि यह मिट्टी की एक मोटी परत के नीचे पड़ा था जो इसके ऊपर जम गई थी। काम बिगाड़ने वाली हवा ने ही अब काम बना दिया था। सीनियर जांचकर्मी ने तुरंत दस्ताने पहने हुए हाथों से खून से सना हुआ टूनिंग उठाया और उसे अपने थैले में रख लिया, और अगली खोज के लिए जाने की तैयारी करने लगा।

तभी बंकर के एक गार्ड के चिल्लाने की आवाज़ आई। 'जनरल ठाकुर लाइन पर हैं। उन्होंने हमें आपको तुरंत बाहर निकालने का निर्देश दिया है। ऐसा लगता है कि आपने आधिकारिक तौर पर घुसपैठ की है।'

## 19

कांचीपुरम में वेगवती नदी के किनारे इमारतों के एक बड़े, छोड़े जा चुके परिसर के भीतर बनी दरबान की एक छोटी सी झोपड़ी में, नब्बे साल का एक शख्स धीरे-धीरे अपना भोजन चबा रहा था। वह उस पीढ़ी से था जो अपने भोजन को बेहद एकाग्रता के साथ चबाने की अहमियत जानता था।

तमिलनाडु के कांचीपुरम की पहचान हमेशा से सीखने-सिखाने के स्थान की थी, लेकिन यह शहर अपने फूलों और हाथ से बुने हुए रेशमी कपड़ों के लिए अधिक

प्रासेद्ध था। शहर पर कई राजवंशों—पल्लव, चोल, पांड्या, विजयनगर राजाओं, गोलकुंडा सल्तनत और अंत में अंग्रेजों का शासन रहा। कांचीपुरम में अलग-अलग दौर के ढेरों हिंदू मंदिर थे। भगवान विष्णु के हिंदू अनुयायियों के लिए, कांचीपुरम मोक्ष प्राप्त करने के लिए सात सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक था। विष्णु को समर्पित 108 पवित्र मंदिरों में से पंद्रह कांची में स्थित थे। और भगवान शिव के अनुयायियों के बीच भी, कांचीपुरम तीर्थयात्रा के लिए एक पवित्र स्थल था।

वो बूढ़ा शख्स इडली, सांबर और नारियल चटनी के साधारण खाने का आनंद ले रहा था। भोजन, हमेशा की तरह, पूरे सलीके से पकाया और परोसा था उस शख्स की कुंवारी बेटी, पैसठ साल की अनु ने। पिता और बेटी अलग-अलग घरों में रहते थे, दोनों घर कुछ मिनट की पैदल दूरी पर थे, लेकिन वे हमेशा एक साथ खाना खाते थे।

‘हम कांची में ही क्यों रहते हैं?’ अनु ने पूछा। ‘अकादमी कई साल पहले बंद हो गई। अब हमारे लिए यहां कुछ भी नहीं है।’ वह जानती थी कि उसके पिता का जवाब वही होगा जैसा हमेशा होता था।

गर्म सांभर में इडली डुबोते समय डॉ. राजा राव अपनी बेटी की ओर देखकर प्यार से मुस्कुराए। ‘मैंने कांचीपुरम कभी भी सिर्फ अकादमी की वजह से नहीं चुना था, अनु। यह शहर हमें दक्षिण के सबसे महान राजवंशों में से एक, पल्लवों से जोड़ता है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए।’

‘लेकिन वह बहुत पहले की बात है, अप्पा,’ अनु ने कहा। ‘पल्लवों ने तीसरी शताब्दी में अपने साम्राज्य की नींव रखी और 600 वर्षों तक शानदार ढंग से शासन किया। लेकिन वह ग्यारह शताब्दी पहले की बात है। इसकी हमारे लिए प्रासंगिकता क्यों है?’

राव ने जवाब दिया, ‘कंबोडिया की वजह से।’

‘कंबोडिया?’

राव ने समझाते हुए कहा, ‘कांची एक प्राचीन वैश्विक नेटवर्क की महत्वपूर्ण कड़ी है। पल्लवों ने न केवल दक्षिण भारत बल्कि कंबोडिया पर भी शासन किया। कई सदियों पहले, एक पल्लव राजा खंबुजाराजा उस इलाके में गए जिसे अब कंबोडिया कहा जाता है। उन्हें एक खूबसूरत महिला ने टक्कर दी लेकिन अंत में राजा ने उसे हराया और फिर उससे शादी कर ली। जिस देश पर उन्होंने संयुक्त रूप से शासन किया उसे खंबुजादेसा कहा जाता था और उनके वंशजों को खमेर कहा गया। खंबुजादेसा को बाद में कंपूचिया और फिर कंबोडिया के नाम से जाना जाने लगा। दरअसल, तुम्हें इस कॉम्प्लेक्स के हर निर्माण में, जिसमें हमारी अपनी झोपड़ी है, कंबोडिया की वास्तुकला के कुछ अंश दिखेंगे। इस अंश में कॉर्बेल मेहराब, सजे हुए लिंटल्स और बेस-रिलीफ शामिल हैं।’

अनु चुपचाप, करीब-करीब पूरे ध्यान से सुन रही थी। वह जानती थी कि उसके अप्पा को उसे पुरानी कहानियां सुनाना अच्छा लगता था।

‘बहुत बाद में, छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में, पल्लव राजा सिम्हा विष्णु के छोटे भाई भीम ने एक राजकुमारी से शादी करने और कंबोडिया के राजा का सिंहासन हासिल

करने के लिए कंबोडिया की यात्रा की। उसे कई प्रांतेस्पर्धी दावों पर जीत हासिल करनी पड़ी। उसके सामने कई मुश्किलें आईं, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, वह सफल हुआ! इसके बाद कंबोडिया के सभी राजा अपने नाम के साथ पल्लव प्रत्यय वर्मन जोड़ने लगे। संस्कृत शब्द “वर्मन” का अर्थ होता है ढाल। आखिरकार, राजाओं का एक कर्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना भी था।

बातचीत थोड़ी देर के लिए रुकी जब अनु ने अपने पिता के कटोरे में कुछ और सांभर डाला। राव ने अनजाने में बातचीत का विषय बदलते हुए अपनी बेटी के खाना पकाने की तारीफ़ करते हुए कहा, ‘आज इडली एकदम सही बनी है।’

अनु ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘हमारे बैटर सप्लायर ने पहले से बेहतर काम किया है। श्रेय उसे जाता है, मुझे नहीं।’ अनु अपने पिता का बहुत आदर करती थी। जब अनु केवल तीन साल की थी, तब ब्रेन स्टोक की वजह से उसने अपनी मां को खो दिया था, इसलिए उसके अप्पा ने उसकी मां और पिता की दोहरी भूमिका निभाई थी।

‘और ऐसा नहीं कि ये संबंध एकतरफा थे,’ राव ने बोलना जारी रखा, इस बात से अनजान कि वह एक बार फिर विषय बदल रहे थे। ‘वर्ष 731 में, कांची के पल्लव राजा परमेश्वर वर्मन द्वितीय की बिना किसी उत्तराधिकारी के मृत्यु हो गई। कंबोडिया में भीम के वंशज, नंदी वर्मन द्वितीय को पल्लव सिंहासन पर बैठाने के लिए कांची लाया गया था। इस तरह देखो तो, पल्लव राजा कंबोडियन थे, बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह कंबोडियाई राजा पल्लव थे।’

‘लेकिन उस रिश्ते का हमारे यहां रुकने से क्या संबंध है?’ अनु ने अपनी बात पर ज़ोर देकर कहा। ‘अप्पा, आप गलत नहीं समझिए। मैं कांची में रहकर खुश हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि आपकी उम्र में चेन्नई जैसे बड़े शहर में रहना ज़्यादा बेहतर होगा। एक वजह मेडिकल भी है।’

राव ने अपनी बेटी की बात को मज़ाक में उड़ाते हुए कहा, ‘उम्र के बारे में बात मत करो। मेरा शरीर कई किशोरों से बेहतर स्थिति में है!’ अनु ने कोई बहस नहीं की। पिता और बेटी दोनों ही नौजवान लोगों के मुकाबले ज़्यादा सेहतमंद और तंदुरुस्त थे।

‘क्या भारत-कंबोडिया संबंध पल्लवों तक ही सीमित थे?’ अनु ने पूछा।

राव ने जवाब दिया, ‘दोस्ती चोल काल तक जारी रही। बारहवीं शताब्दी में, एक खमेर राजा, सूर्यवर्मन द्वितीय ने, मंदिरों के गौरवशाली शहर अंगकोर वाट का निर्माण किया। उस समय तक, भारत में पल्लवों का इलाका चोल साम्राज्य का हिस्सा बन गया था। जब चोल राजा कुलोत्तुंगा प्रथम चिदंबरम में प्रसिद्ध शिव मंदिर का निर्माण करा रहा था, तो सूर्यवर्मन द्वितीय ने उसे कंबोडिया से बेहद चमकीले पत्थर भेजे। इस प्रकार पल्लव वंश के शासन से हटने के काफ़ी समय बाद भी भारत और कंबोडिया के संबंध विकसित होते रहे।’

‘इससे अभी भी मेरे सवाल का जवाब नहीं मिलता। हम कांची से क्यों बंधे रहें?’

राव ने कहा, ‘एक दिन तुम समझ जाओगी। कांची-कम्बोज एक धुरी थी, कई महत्वपूर्ण विचारों की धुरी। मैं उन विचारों में से एक का संरक्षक हूँ।’

‘लोकेन क्या आप चेन्नई से वहाँ भूमिका नहीं निभा सकते?’

‘हर सवाल का जवाब तुरंत देने की ज़रूरत नहीं होती, मेरी बच्ची।’ राव ने अपना बायां हाथ अनु के हाथ पर थोड़ी देर के लिए रखा। ‘एक दिन तुम समझ जाओगी,’ उन्होंने दोहराया।

‘आप मुझ पर कभी गुस्सा नहीं होते या चिड़चिड़ाते नहीं हैं, अप्पा। चाहे मैं आपको कितना भी परेशान करूँ।’

राव ने अपने पसंदीदा तमिल कवि तिरुवल्लुवर को उद्धृत किया। ‘जब मीठे शब्द पास में हों तो कड़वे शब्दों का प्रयोग करना, पके फल प्रचुर मात्रा में होने के बावजूद कच्चे फल तोड़ने के समान है।’

## 20

भव्य चांग'आन से निकलने के बाद, मैं हेक्सी ज़ौलांग<sup>16</sup> से होते हुए चुपचाप यात्रा करता रहा, जो मेंगू घासभूमि<sup>17</sup> और जंगली किंघाई पठार<sup>18</sup> के बीच से गुज़रती है। यह गलियारा अंत में ताकेलामागन शामो<sup>19</sup> के मरुस्थल तक पहुंचता है। अधिकांश गलियारे पर तुर्कों का नियंत्रण था, और लूटपाट, हत्या या फिरौती के लिए अपहरण किए जाने का खतरा हमेशा बना रहता था। बुद्ध की कृपा से, मैं लगभग एक महीने बाद सुरक्षित रूप से लियांगझू<sup>20</sup> पहुंच गया।

तांग साम्राज्य और तुर्क लोग युद्ध के कगार पर थे, और लियांगझू एक ऐसे किले की तरह था जिसकी बड़े पैमाने पर सुरक्षा हो रही थी। सशस्त्र सैनिक सड़कों पर गश्त कर रहे थे, और आने-जाने के सभी महत्वपूर्ण रास्तों पर लगातार निगरानी रखी जा रही थी। तांग साम्राज्य के जासूसी नेटवर्क ने किसी भी संदिग्ध गतिविधि की रिपोर्ट करने के लिए निवासियों पर निरंतर निगरानी रखी थी। मेरे आने की सूचना भी ज़रूर दी गई होगी।

मुझे पता था कि मुझे लिआंगझू से अंक्शी<sup>21</sup> तक सफर करने की ज़रूरत होगी। अंक्शी रेंगिस्तान और रेशम मार्ग का प्रवेश द्वार था। दुर्भाग्य से, लिआंगझू में किसी को भी आधिकारिक अनुमति के बिना पश्चिम की यात्रा करने की अनुमति नहीं थी; मुझे जल्दी ही समझ आ गया कि स्थानीय प्रशासन से ऐसी कोई अनुमति नहीं मिलेगी। उनमें से कोई इतना मूर्ख क्यों होगा कि चांग'आन के आदेशों की अवहेलना करे?

मैंने लिआंगझू में एक महीने से कुछ अधिक समय तक अलग-अलग मंदिरों और सार्वजनिक समारोहों में व्याख्यान और धर्मोपदेश देते हुए बेसब्री से इंतजार किया। एक दिन मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा साधु मुझे निहार रहा था। उसके चेहरे पर झुर्रियां थीं, और उसकी चमड़ी चर्मपत्र की तरह पारभासी और पतली थी। वह मुझ पर नज़र रख रहा था और जब भी और जहां भी मैं बोलता था, वह सुनने के लिए मेरे पास आ जाता था। मुझे लगा कि वह लियांगझू का सबसे सम्मानित भिक्षु था और स्थानीय लोग उसका बहुत सम्मान करते थे।

एक दिन उसने मुझे इशारे से अपने पास बुलाया। मैंने सम्मानजनक दूरी बनाए रखी,

लेकिन उसने मुझे और करीब आने का इशारा किया। अंत में वह बूढ़ा आदमी मेरे कान में फुसफुसाया, 'तुम्हें अंक्शी तक पहुंचना होगा, रेगिस्तान शुरू होने से पहले वही आखरी जगह है जहां तुम सामान इकट्ठा करने के लिए रुक सकते हो।' मुझे समझ नहीं आया कि मैं कैसे प्रतिक्रिया दूं। वहां हर जगह जासूस थे और भिक्षु कोई अपवाद नहीं था; कहीं वह मेरी जांच तो नहीं कर रहा था, मेरा अपना इरादा जताने का साधारण सा काम मुझे जेल में डाल सकता था।

बूढ़ा आदमी अपने टूटे दांत दिखाते हुए मुस्कुराया। 'मुझ पर भरोसा करो बेटा। मैं जानता हूं कि तुम डि सैन सू चुआन बनने का लक्ष्य रख रहे हो, और मैं चाहता हूं कि तुम्हारा प्रयास सफल हो। मुझे अपना दोस्त समझो।' प्यार, राहत और समर्पण की भावनाएं मुझ पर हावी हो गईं और मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा। मैं मन ही मन जान गया था कि वह मुझे धोखा नहीं देगा।

फिर वरिष्ठ भिक्षु ने चुपचाप मुझे अपने दो शिष्यों के साथ अंक्शी के लिए रवाना कर दिया। हम रात में गुप्त रूप से यात्रा करते थे और पहचान से बचने के लिए दिन में छिपे रहते थे। अंधेरे में भी जब हम तांग साम्राज्य के किसी रक्षक गश्ती दल को देखते थे तो अक्सर रुक जाते थे और चट्टानों के पीछे या गुफाओं के अंदर छिप जाते थे। अगर हम पकड़े जाते, तो लिआंगझू के पश्चिम की यात्रा न करने के स्थानीय प्रशासक के आदेश की अवहेलना करने के लिए मौत की सज़ा होती।

आखिरकार हम तांग साम्राज्य की अंतिम सैन्य चौकी अंक्शी पहुंचे। मैं पहचाने जाने से बचने के लिए एक सराय में चुपचाप रुका रहा, जबकि मेरे दो साथी लिआंगझू लौट आए। मेरे ऊपर खालीपन और उदासी की भावना हावी हो गई। मुझे अपने मृत माता-पिता की याद आई। मुझे अपने बड़े भाई चेंगसु की कमी खलने लगी। मैं बिल्कुल अकेला महसूस कर रहा था और फिर मेरा एकमात्र साथी, मेरा घोड़ा, मर गया। डर और चिंता से परेशान होकर, मैं सोचने लगा कि क्या मेरे पास आगे की यात्रा करने के लिए मानसिक और शारीरिक शक्ति थी।

मामला और भी बिगड़ गया, जब लिआंगझू के जासूसों ने पश्चिम की यात्रा करने के मेरे इरादे के बारे में अंक्शी के ज़िला प्रशासक को जानकारी दे दी। एक शाम मेरे दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक हुई। मेरे सामने तीन हट्टे-कट्टे, डरावने पहरेदार खड़े थे। मुझे ज़िला प्रशासक के सामने उपस्थित होने का आदेश दिया गया था। मैंने सच में सोचा कि अब मेरे लिए सब कुछ खत्म होने वाला था।

सौभाग्य से, ज़िला प्रशासक धर्मपरायण व्यक्ति था। जब मैं उसके सामने खड़ा हुआ तो उसने पहरेदारों को वहां से चले जाने को कहा। हम कुछ मिनटों तक एक-दूसरे को देखते रहे और बमुश्किल कोई बातचीत हुई। फिर प्रशासक ने उसे दिए गए गिरफ्तारी वारंट को थामा और ध्यान से उसे फाड़ दिया। मुझे समझ नहीं आया कि क्या प्रतिक्रिया दूं। ऐसा लग रहा था जैसे बुद्ध यह सुनिश्चित कर रहे थे कि मेरे रास्ते की बाधाएं दूर हो जाएं। प्रशासक ने मुझे जल्दी से यहां से चले जाने की सलाह दी। उन्होंने चेताया, अगर

मैंने समय गंवा दिया तो वह मेरी आज़ादी का आश्वासन नहीं दे सकते। उन्होंने मुझे मेरी यात्रा के लिए एक मज़बूत सफेद घोड़ा भी दिया ताकि मैं जल्दी से अपने सफर पर जा सकूँ। मुझे अपने सौभाग्य पर विश्वास नहीं हो रहा था। कोई दैवीय शक्ति यिन्दु की मेरी यात्रा को संभव बना रही थी।

मैंने प्रशासक से वादा किया कि मैं एक दिन के भीतर चला जाऊंगा। जब मैं ताएर परिसर<sup>22</sup> की ओर गया तो वहां घुप्प अंधेरा था। इसमें राजा अशोक के सम्मान में एक मंदिर बना था, जिन्होंने बौद्ध धर्म को भारत से दूर-दूर तक फैलाने में मदद की थी। मंदिर परिसर बहुत बड़ा था, जिसमें एक विशाल पैगोडा था जिसके चारों ओर ग्यारह छोटे पैगोडा थे। बाहर की तरफ एक नगाड़ा टॉवर, एक घंटा टॉवर और भिक्षुओं के लिए आवास बने थे। मैं स्वर्गीय राजाओं के हॉल के अंदर चिंतन में चुपचाप बैठा रहा, और बुद्ध से प्रार्थना करता रहा कि वे मेरे मिशन का मार्गदर्शन करते रहें। मुझे नहीं पता था कि मुझ पर कोई नज़र रख रहा था।

कोई ऐसा जो बिना पलक झपकाए मुझे जान से मार सकता था।

## 21

बीजिंग में भूमिगत प्रयोगशाला के अंदर, सम्मेलन कक्ष में एक बैठक चल रही थी। कमरे की ज़्यादातर जगह एक नक्काशीदार और लाख की परत चढ़ाई हुई कॉन्फ्रेंस टेबल ने घेर रखी थी, जिस पर दस लोग बैठ सकते थे। हर सीट भरी थी। लंबी दीवारों में से एक पर एक भित्तिचित्र था जिसमें माओत्से तुंग को चीनी झंडे की लाल पृष्ठभूमि के सामने सैनिकों को सलामी देने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाते हुए दर्शाया गया था। मेज़ के सामने की दीवार पर मौजूदा राष्ट्रपति की तस्वीर लगी थी। बैठक की अगुवाई करने वाला शख्स तिहत्तर साल की उम्र का पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का जनरल था, लेकिन ज़्यादातर लोग उसे सम्मानजनक पदवी 'बुज़ांग' के नाम से जानते थे।

बुज़ांग चीनी राष्ट्रपति का सबसे भरोसेमंद आदमी था और पार्टी में उसकी प्रतिष्ठा ऐसे शख्स की थी जिसका डर लोगों के बीच सबसे ज़्यादा था। उसका रंग-रूप उसकी इस डरावनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला था; वह पूरी तरह से गंजा था, उसका चेहरा इस हद तक मुंडा हुआ था कि लगता था कि उस पर मोम लगाकर सारे बालों को हटाया गया था। उसके चेहरे पर केवल फू मांचू मुँछें और पतली भौहें थीं। वह हमेशा चीनी पीएलए की जैतून-हरी वर्दी पहने रहता था, और साथ में एक स्वैगर स्टिक रखता था। स्टिक बेंत से बनाई गई थी और इसका सिरा सजावट के तौर पर किसी धातु का बना था, जिस पर पांच कोनों वाला तारा उकेरा गया था—यह तारा पीएलए का प्रतीक चिह्न था। उसने उस स्टिक को अपने सामने मेज़ पर इस तरह रखा, जैसे कोई सख्त स्कूल मास्टर किसी शरारती छात्र को पीटने वाला हो।

उसके ठीक दाहिनी ओर स्टैनफोर्ड से पढ़ाई कर चुका इंजीनियर एर्किन बैठा था, जिसे ADAM और EVE कार्यक्रमों का नेतृत्व करने के लिए लाया गया था। बाकी आठ कुर्सियों पर एर्किन की टीम के सदस्य—सॉफ्टवेयर इंजीनियर, बायोटेक शोधकर्ता, रोबोटिक्स

विशेषज्ञ और आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस और इंटेलिजेंट डिज़ाइन के विद्वान बैठे थे।  
 एर्किन कार्यक्रम के दो पहलुओं को नियंत्रित कर रहा था; दोनों का मकसद अलग-अलग था। ADAM इंसानों की जगह मशीनों को लाने की कोशिश कर रहा था, जबकि EVE की कोशिश रासायनिक और तकनीकी रूप से, इंसानों को लड़ाकू मशीनों में बदलने की थी।

‘आपके काम में क्या तरक्की हुई है, मिस्टर चोंग? हुई भी है? या आपका पूरा प्रोजेक्ट साइंस फिक्शन तक ही सीमित रहेगा?’ बुज़ांग ने एक लाल कप से जैस्मिन टी का एक घूंट लेते हुए पूछा। चाय के कप पर एक सुनहरा ड्रैगन बना हुआ था। एर्किन ने अपने सामने रखी बॉटल से पानी का एक घूंट लिया। जब भी वह ऐसी किसी मीटिंग में बैठता था तो उसका गला सूखने लगता था। एयर कंट्रोल सिस्टम ने 22° सेल्सियस का आरामदायक तापमान और पचास प्रतिशत आर्द्रता बनाए रखी थी, लेकिन एर्किन को अपनी बांहों के नीचे पसीना आता महसूस हुआ। वह इस प्रोजेक्ट में फंसने के लिए खुद को कोसता था। लेकिन उसके पास कोई और रास्ता नहीं था।

एर्किन ने जवाब दिया, ‘बुज़ांग, एडम प्रोजेक्ट में थोड़ा समय लगेगा।’ हालांकि उसके सहकर्मियों ने उसे बिलकुल सच न बताने की सलाह दी थी। वह घबराहट में अपनी कलम नचाने लगा। ‘मैं ऐसे वादे नहीं करना चाहता, जिन्हें मैं निभा न सकूँ। सिस्टम हर समय सही ढंग से चले, इसमें हमारे सामने कई मुश्किलें आ रही हैं। बहुत सारे ऐसे बग (कंप्यूटर डिफेक्ट) हैं, जिनका पूर्वानुमान नहीं लग पाता। हर बार जब हम सोचते हैं कि हमने आखिरकार इसे सुलझा लिया है, तो एक नई समस्या सामने आ जाती है। मौजूदा एडम कार्यक्रम पर और ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है, और इन समस्याओं को हल करने के लिए ज़रूरी वक्त देना हमारे हित में है। डिबगिंग (कंप्यूटर हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर से गलतियों को पहचानने और हटाने की प्रक्रिया) के बिना असली युद्ध में ऐसी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना खतरनाक होगा।’

बुज़ांग गुस्से से लगभग भड़क उठा था लेकिन उसने कुछ गहरी सांसों लेकर खुद को शांत कर लिया। ‘और ईव का क्या? क्या तुमने नैनाबोलिक्स के अगले बैच को फ़िल्टर किया है?’ एर्किन की टीम पर नेचुरल एनाबोलिक्स के एडवांस्ड फॉर्मूलेशन को कृत्रिम तरीके से बनाने का जिम्मा था, जिसे आम बोलचाल में नैनाबोलिक्स के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा, ईव कार्यक्रम में सैनिकों को एडवांस्ड रडार-रेडी हेलमेट, सुपर-सेंसिटिव असॉल्ट राइफलें, सैटेलाइट नेविगेशन, इन्फ्रारेड विजन और आयनोजेल बोडी कवच से लैस करना शामिल था।

‘हां, बुज़ांग। लेकिन हमें नैनाबोलिक्स के अगले बैच के लिए और अधिक बमाहाओ और शिपो की ज़रूरत होगी। मेरे मन में सवाल है कि एक बार जब हमारे पास सामग्री खत्म हो जाएगी तो क्या होगा। ये दोनों चीज़ें स्टॉक में फिलहाल काफी कम हैं।’

‘क्या मैंने तुम्हें केवल अपनी दिक्कतें गिनाते रहने के लिए काम पर रखा था?’ बुज़ांग ने गुस्से भरी आंखों से पूछा। ‘मैं मानता था कि तुम रचनात्मक समाधान ढूँढ़ रहे होंगे। या अब यह स्टैनफोर्ड में पढ़ाया नहीं जाता? क्या तुमने एमसीपीएच1 रूट के बारे में सोचा?’

‘हां, बुज़ांग। मेरा मतलब है, नहीं, बुज़ांग,’ एर्किन हकलाने लगा। उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें बहने लगीं। उसने पसीना पोंछने के लिए एक टिश्यू लिया, फिर दोबारा बोलने की हिम्मत जुटाई। ‘एमसीपीएच<sup>1</sup> का रूट व्यवहारिक नहीं है। हमें इस प्रक्रिया को उल्टा देखने की ज़रूरत है। लेकिन, जैसा कि आप जानते हैं, मौजूदा फॉर्मलेशन में एक हिस्सा गायब है और इसकी गैर-मौजूदगी का मतलब है कि हम ज़िंदगियों के साथ खेल रहे हैं।’

बुज़ांग अब अपने गुस्से पर काबू नहीं रख सका। उसने अपनी स्वेगर स्टिक को कॉन्फ्रेंस टेबल पर ज़ोर से पटका। ‘इसकी चिंता तुम मुझे करने दो,’ वो चिल्लाया और घबराहट में एर्किन से उसके सामने खुली बोतल गिर गई। उसके सामने फैले कागज़ों पर पानी फैल गया। एर्किन ने जल्दी से उन्हें उठाया और पानी हटाने के लिए उन्हें झाड़ने लगा। बुज़ांग अपनी फौलादी आंखों से ये सारी कॉमेडी देखता रहा।

‘भारत के साथ सीमा पर जो हो रहा है वह सिर्फ एक प्रयोग है,’ उसने अंत में धीमी आवाज़ में कहा। ‘हमें चीन के वैश्विक प्रभुत्व को सुनिश्चित करने के लिए इस कार्यक्रम की ज़रूरत है। परमाणु हथियार, पनडुब्बियां और युद्धपोत प्रशिक्षित लड़ाकू हाथों का विकल्प नहीं हैं। हमने देखा है कि घने जंगलों में गुरिल्ला सैनिकों से लड़ते समय विमान और बम कितने बेअसर होते हैं। यहां तक कि दक्षिण चीन सागर में हमारे बनाए गए नए टापुओं को भी ADAM और EVE से मिलने वाली बेहद खास मैनुपावर की ज़रूरत होगी। क्या इस टीम में किसी को भी इस प्रोजेक्ट की अहमियत के बारे में पता नहीं है?’

बुज़ांग ने गहरी सांस ली। उसने अपनी स्वेगर स्टिक धीरे से मेज़ पर रख दी। वह सोचने लगा कि क्या कंबोडिया से कोई जानकारी आई थी। क्या उन लोगों को जिस चीज़ की ज़रूरत थी, वह मिल गई थी? अगर ऐसा था, तो इससे नाटकीय रूप से पूरे कार्यक्रम की दिशा बदल जाएगी। उसने तय किया कि वह इस अभियान के नेता, ली झू से बात करेगा। शायद उसके पास इस निराशावादी से बेहतर खबर होगी।

## 22

वे किसी तरह के हाउसिंग कॉम्प्लेक्स में पूछताछ के लिए बने एक सेंटर में थे। यहां नियमित रूप से पूछताछ से पहले कैदियों को लाया जाता था, पीटा जाता था और यातनाएं दी जाती थीं। कभी-कभी उद्देश्य पूरा होने के बाद उन्हें मार दिया जाता था। घर के पीछे एक गड्ढा था जिसमें क्षत-विक्षत लाशें फेंक दी जाती थीं। गिद्धों को डराने के लिए रिफ्लेक्टिव मिरर लगाए गए थे वरना वे गड्ढे के चारों ओर चक्कर लगाते रहते, हालांकि फिर भी कई गिद्ध वहां दिखते रहते। खाने में कीड़े और मक्खियां मिलना आम बात थी। कैदी अक्सर अपना खाना फेंक देते थे और गंदा खाने की बजाय भूखा रहना पसंद करते थे। बचे हुए खाने पर बड़े-बड़े चूहे तुरंत झपट पड़ते थे, जो वहां खुलेआम दौड़ते रहते थे।

मार्क सूजी हुई पलकों से उससे पूछताछ कर रहे शख्स को एकटक देखता रहा। तुम मुझे मार क्यों नहीं देते? मैं पहले से ही गिद्धों के लायक एक लाश बन चुका हूं। इस

लाश को खत्म क्यों नहीं कर देते? मेरा मांस किसी के लिए भोजन ही बन जाए। इससे पहले कभी भी मौत इतना सुंदर विकल्प नहीं लगी थी। मार की वजह से उसके चेहरे और हाथ-पैर सूज और छिल गए थे। उसने पेशाब से भीगा और मल से सना हुआ गंदा अंडरवियर पहना हुआ था। उसके चेहरे से पसीना टपकने लगा जब उससे पूछताछ करने वाला उसकी एक उंगली के नाखून के किनारे पर सरौता कसकर उसे खींचने लगा। मार्क दर्द से चीखने लगा।

अचानक वह चौंककर उठा।

हांफते हुए, मार्क ने खुद को भयानक सपने के पंजे से बाहर निकालने की कोशिश की। उसे लगा कि उसका दम घुट रहा था, मानो उसका सिर पानी में डुबाया गया वो ज़ोर-ज़ोर से खांसने लगा। पल भर बाद, दर्द कम हो गया। उसने डर के मारे इधर-उधर देखा और समझ नहीं पाया कि वो एक साफ-सुथरे कमरे में बिना किसी चूहे के आरामदायक बिस्तर पर क्यों था। उसकी कांपती उंगलियां नाइटस्टैंड पर रखे उसके चश्मे की तरफ बढ़ीं, और उसने बिस्तर के पास लगी घड़ी में समय देखा। सुबह के चार बजे थे। उसका सारा शरीर पसीने में सराबोर था।

हमेशा यही भयानक सपना दिखता था। वह बाईस साल का नौजवान था, जो घर के अंदर एक कुर्सी से बंधा हुआ था। पूछताछ करने वाला शख्स सरौता पकड़े उसके सामने खड़ा था। 'क्या मैं जो पूछ रहा हूं उसका सच-सच जवाब देने को तैयार हो?' वह आदमी मार्क के चेहरे पर अपनी बदबूदार सांस छोड़ते हुए कहता। जब मार्क इनकार कर देता तो यातना देना शुरू हो जाता। सोने नहीं देना, भूखा रखना, जल यातना, बिजली के झटके, सिगार से जलाना और नाखून उखाड़ना, कैदियों को तोड़ने के और भी कई 'रचनात्मक' तरीके थे। जो लोग इस जगह को चलाते थे वे मानसिक और शारीरिक यातना की रणनीति में विशेषज्ञ थे, जिन्होंने सबसे ज़िद्दी व्यक्ति की हिम्मत को भी तोड़ने के तरीके खोज लिए थे। अगर पृथ्वी पर कहीं नर्क था तो वह यहीं था।

मार्क खड़ा हुआ, बाथरूम में गया और अपना शरीर तौलिए से पोंछा। उसने खुद को आईने में देखा, इस बात से लगभग शर्मिंदा था कि वो अभी भी अपने भयानक सपने से कांप रहा था। क्या वो कभी इन दृश्यों से मुक्त हो पाएगा जो उसे परेशान करते थे?

उसने धुले हुए शॉर्ट्स और टी-शर्ट पहने और रेफ्रिजरेटर से पानी निकालकर एक प्यासे की तरह उसे गटक गया। भयानक सपने उसकी ज़िंदगी के एक ऐसे दौर में शुरू हुए थे जिसे वो भूलना चाहता था, लेकिन भूल नहीं पा रहा था। कुछ अनुभव तो इतने साफ़ थे कि उन्हें भूला नहीं जा सकता था। वो जानता था कि उसे अपने भयानक सपनों से छुटकारा पाना होगा। लेकिन कैसे? उसने सबकुछ आजमा लिया था: ध्यान, योग, गहन कसरत, हर्बल उपचार, मनोरोग की दवाएं, एक मनोचिकित्सक के साथ महंगे वीकली सेशन, यहां तक कि नशीली दवा भी, लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। गले में फंसे खाने के निवाले की तरह उसके भयानक सपने न तो उगले जा सकते थे और न ही निगले जा सकते थे।

मार्क अपने बेडरूम से होते हुए स्टडी में गया। उसने अपना लैपटॉप खोला और तीन-चरणों की प्रक्रिया के माध्यम से लॉग इन किया, फिर एक प्रोग्राम एक्टिवेट किया

जिससे उसके कंप्यूटर से होने वाली किसी भी तरह की बातचीत एंन्क्रेप्ट हो जाए। बैकग्राउंड में, उसका ऑपरेटिंग सिस्टम एक क्रिप्टो-श्रेडिंग प्रोग्राम चला रहा था, जिससे यह पक्का होना था कि कोई भी फोरेंसिक टीम कभी भी उसके कंप्यूटर की सामग्री तक नहीं पहुंच पाए। मार्क रिचर्ड्स सतर्क रहने वाला शख्स था। कई सालों के प्रशिक्षण ने यह सुनिश्चित कर दिया था। उसने एक ईमेल टाइप करना शुरू किया। सब्जेक्ट लाइन में लिखा था: 'पैम खुराना से संबंधित'।

## 23

दक्षिण भारत के कड्डालोर ज़िले में यह असाधारण रूप से गर्म दिन था। यहां चिदंबरम नटराज का उत्कृष्ट मंदिर था। मंदिर परिसर में जापानी पर्यटकों का एक समूह उत्साह के साथ अपने निकॉन कैमरे से तस्वीरें ले रहा था। उनमें से ज़्यादातर ने कीड़ों के डर से पुआल की बनी टोपी और चेहरे पर कपड़े के मास्क पहन रखे थे। उनमें से कुछ रूमाल से अपने चेहरे से पसीना पोंछ रहे थे।

नटराज मंदिर एक बहुत बड़ी इमारत थी, जिसमें बारीक नक्काशी किए हुए नौ द्वार और पांच विशाल कक्ष थे। एक कक्ष में तो 1,000 खंभे थे। यह मंदिर पचपन एकड़ भूमि पर बना था और तीसरे गलियारे में एक विशाल जल भंडार था। विस्मयकारी सुनहरी छत का निर्माण 21,600 स्वर्ण टाइलों के साथ 72,000 स्वर्ण कीलों से किया गया था। मंदिर निःसंदेह भव्य था, जिसे देखकर आंखों को एक अद्भुत आनंद मिलता था।

सैलानियों के ग्रुप का टूर गाइड साठ साल के आसपास का शख्स लग रहा था, और उसने खाकी बुशर्ट और पतलून पहनी थी। उसकी खिचड़ी घनी दाढ़ी और घनी मूंछें थीं, साथ ही उसने एक छोटी चोटी भी रखी थी। उसने टोपी और रे-बैन का काला चश्मा पहना था। वह एक साधारण टूर गाइड दिखता था, फिर भी उसमें कुछ अलग बात थी। उसकी टोपी, धूप का चश्मा, दाढ़ी और लंबे बालों के साथ, उसके चेहरे का बहुत कम हिस्सा वाकई में दिखाई दे रहा था।

'प्राचीन ग्रंथों से संकेत मिलता है कि यहां कई सदियों से एक मंदिर खड़ा था,' गाइड ने अपने ग्रुप को बताया। 'याद रखें कि चिदंबरम शहर चोल राजवंश की शुरुआती राजधानी थी, और यह संभव है कि इस परिसर की शुरुआती संरचनाएं उसी काल की हों। यह मंदिर शिव के नृत्य करते हुए रूप को समर्पित है, जिसे नटराज कहा जाता है।'

गाइड नटराज की त्रुटिरहित प्रतिमा के सामने रुक गया। 'नटराज आग के गोले से घिरे हुए हैं, जो चक्रीय ब्रह्मांड का प्रतीक है। अपने ऊपरी दाहिने हाथ में, उन्होंने डमरू धारण किया है जो समय का प्रतीक है। उनके ऊपरी बाएं हाथ में अग्नि है, जो सृजन और विनाश का प्रतीक है। उनकी दाहिनी बांह के निचले हिस्से में एक कोबरा लिपटा हुआ है, जबकि उनकी हथेली आराम की मुद्रा में है। यह निडर होकर उनके पास आने के लिए भगवान के निमंत्रण को दिखाता है। उनके माथे पर तीसरी आंख भक्तों को केवल बाहरी दृष्टि के बजाय आंतरिक ज्ञान से समझ विकसित करने के लिए प्रेरित

करती है। उनका दाहेना पेर एक राक्षस पर रखा है, जो अज्ञानता के राक्षस के अंत का संकेत देता है।’

अपने उत्साह में, गाइड ने सहज रूप से मूर्ति के समान मुद्रा बना ली थी। सैलानियों के समूह में कुछ सुगबुगाहट हो रही थी, जो साफ़तौर पर उसकी जानकारी से रोमांचित थे। कुछ सैलानी खुद को पंखा कर रहे थे। दक्षिण भारत के इस भाग में मौसम हमेशा गर्म और आर्द्र रहता था।

‘क्या आप जानते हैं कि इस मंदिर के बारे में और क्या खास बात है?’ गाइड ने नृत्य करते हुए शिव की मुद्रा को छोड़कर सीधे खड़े होकर पूछा। ‘अंदरूनी प्रांगण के भीतर सृजक भगवान ब्रह्मा और संरक्षक भगवान विष्णु, दोनों की मूर्तियों वाले मंदिर हैं। इस तरह, चिदंबरम ऐसे बेहद कम मंदिरों में से एक है जहां ब्रह्मा, विष्णु और शिव की हिंदू त्रिमूर्ति की एक साथ पूजा की जाती है।’

‘क्या आपमें से कोई कंबोडिया में अंगकोरवाट गया है?’ गाइड ने पूछा। कुछ हाथ ऊपर उठे; वे लोग अपने शिक्षक को खुश करने के लिए उत्सुक छात्रों की तरह लग रहे थे। ‘इस मंदिर का बड़े पैमाने पर विस्तार ग्यारहवीं शताब्दी में चोल राजा कुलोत्तुंगा प्रथम ने किया था। जब विस्तार का काम चल ही रहा था, अंगकोरवाट का निर्माण कराने वाले कंबोडिया के राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने अपने एक नौसैनिक जहाज़ से यहां कुछ अजीब सी चीज़ भेजी।’

‘क्या?’ एक पर्यटक ने पूछा।

गाइड ने जवाब दिया, ‘पत्थर का एक साधारण सा खंड, जिसे कंबोडिया के राजा नटराज मंदिर के निर्माण में शामिल करना चाहते थे। कुलोत्तुंगा के मंत्री हैरान थे। यह थोड़ा अजीब लग रहा था कि पत्थर का एक टुकड़ा उपहार के रूप में भेजा गया है। बहरहाल, उन्होंने खुशी-खुशी इसे मंदिर की पत्थर की दीवार की सामने की ऊपरी पंक्ति में शामिल कर लिया। और तो और, उन्होंने इसके बारे में जानकारी देने वाला एक शिलालेख भी खुदवाया।’

उसने तमिल शिलालेख का अनुवाद किया: ‘यह पत्थर, कम्बोज के राजा ने हमारे राजा को उपहार में दिया था, हमारे राजा के निर्देशों के अनुसार मंदिर के सामने के हिस्से में रखा गया था और बाद में मंदिर की पत्थर की दीवार में सामने की ऊपरी पंक्ति में लगाया गया था।’

गाइड ने पर्यटकों को पत्थर दिखाया, जिन्होंने उत्साहपूर्वक और तस्वीरें खींचीं।

## 24

मैं बुद्ध से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए ताएर मंदिर के विशाल कक्ष के अंदर चिंतन में बैठा था। मुझे पता ही नहीं चला कि मुझ पर नज़र रखी जा रही थी। जो अजनबी मुझे करीब से देख रहा था वह बंधा नामक यात्री निकला। उसने काले रंग के कपड़े पहने थे और मेल खाती पगड़ी बांध रखी थी। उसकी आंखें चंचल थीं, हमेशा इधर-उधर घूमती रहती थीं। लंबी दाढ़ी उसकी छाती तक पहुंच गई थी और अंत में एक छोटे से गुच्छे में

बंधी हुई थी।

वह झिझकते हुए मेरे पास आया। जब मैंने पूछा कि वह मुझसे क्या चाहता है, तो वह नीचे झुका और कहा कि वह एक सामान्य बौद्ध के रूप में शपथ लेना चाहता था। मैंने पहले शपथ लेने के लिए उसकी प्रेरणाओं को समझने का प्रयास किया। उसने कहा, 'मैं थक गया हूं, विद्वान गुरु। मैंने अपना जीवन एक निपुण यात्री और व्यापारी के रूप में बिताया है। लेकिन साथ ही, मैंने कई लोगों के साथ अन्याय भी किया है। कृपया मुझे सही रास्ते पर ले जाएं।' मैं उसकी प्रेरणाओं से पूरी तरह आश्चस्त नहीं था लेकिन मैंने उसे संदेह का लाभ देने का निर्णय किया।

मैं कुछ समय तक उसके साथ बैठा और उसे पांच प्रतिज्ञाएं लेने से पहले उनके बारे में समझाया। बंधा ने मेरे प्रतिज्ञा पढ़ने के बाद उन्हें दोहराया, 'एक, मैं हत्या नहीं करूंगा, दो, मैं चोरी नहीं करूंगा, तीन, मैं झूठ बोलने से बचूंगा, चौथा, मैं यौन दुराचार से दूर रहूंगा, पांचवां, मैं नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहूंगा।'

मैंने उसे आशीर्वाद दिया। बंधा प्रसन्न दिख रहा था। लेकिन उसे पूरा विश्वास नहीं था कि वह पांच प्रतिज्ञाओं का ईमानदारी से पालन कर पाएगा। उसकी आंखें हर जगह घूमती रहीं, मानो वह सोच रहा हो कि कोई हमारी जासूसी कर रहा होगा।

बंधा ने मुझे प्रतिज्ञा दिलाने के लिए धन्यवाद दिया और पूछा कि क्या वह इस उपकार का बदला चुका सकता था। मैंने उसे पश्चिम की यात्रा करने की अपनी इच्छा के बारे में बताया। आखिरकार, बंधा एक अनुभवी व्यापारी था जो संभवतः सभी प्रमुख व्यापार मार्गों से परिचित रहा होगा। वह निस्संदेह मेरे अभियान के शुरुआती हिस्से के दौरान काम का साबित हो सकता था। वह मुझे युमेन गुआन<sup>23</sup> और रेगिस्तान के पांच प्रकाशस्तंभों के पार ले जाने के लिए सहमत हो गया।

अगली सुबह, मैंने युमेन गुआन की ओर जाने वाली सड़क पर उसके आने का इंतज़ार किया। आखिरकार वह लाल-भूरे रंग के एक दुबले-पतले घोड़े के साथ आया। घोड़े के साथ-साथ एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति चल रहा था जिसने दरअसल तीस से अधिक बार रेगिस्तान की यात्रा की थी। बूढ़े आदमी ने मुझे मेरे सफेद घोड़े के बदले में अपना टूटी-फूटी काठी वाला कुपोषित घोड़ा देने की पेशकश की। कथित तौर पर उसका घोड़ा रास्ता जानता था और पानी के स्रोतों का सूंघकर पता लगाने में सक्षम था।

मुझे सुमेरु पर्वत वाला अपना सपना याद आ गया, जिसमें मैंने स्वयं को लाल-भूरे रंग के एक पतले घोड़े पर सवार होकर पवित्र पर्वत पर पहुंचते हुए देखा था। मैंने अपना अच्छा-खासा घोड़ा देकर उस दुबले घोड़े को ले लिया। बूढ़ा आदमी अपने लिए इस शानदार सौदे को लेकर जल्दी से चला गया। मुझे लग रहा था कि मुझे ठगा गया था, लेकिन मैं परेशान नहीं था। बुद्ध मेरी रक्षा करेंगे।

बंधा और मैं तुरंत अपनी यात्रा पर निकल पड़े। हम जल्द ही युमेन गुआन तक पहुंच गए, जो तांग साम्राज्य से ज़ियू जाने का प्रवेश द्वार था, और यह साम्राज्य की सीमाओं के बाहर स्थित था। इस पर कड़ा पहरा था, हर व्यक्ति, जानवर और गाड़ी को रोका

जाता था और जांच की जाती थी, चाहे वे अंदर आ रहे हों या बाहर जा रहे हों। 'युमेन' का अर्थ है 'जेड या हरिताश्म'; इस द्वार का नाम यहां से गुज़रने वाले ढेरों हरिताश्म लदे कारवां के कारण पड़ा। युमेन गुआन तकलेमागन शामो के रेगिस्तान में खुलता था। नेफ्राइट जेड को साम्राज्य के भीतर तैयार करने के लिए ज़ियू में स्थित खानों से लाया जाता था, और रेशम बाहर भेजा जाता था। इस विशेष मार्ग का उपयोग कई सौ सालों से किया जा रहा था।

द्वार पर माल से लदी ऊंट गाड़ियों की एक लंबी कतार थी जो अंदर या बाहर जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। बंधा ने बीमार होने का बहाना करके पहरेदारों का ध्यान भटका दिया। एक शानदार अभिनेता की तरह वह ज़मीन पर ऐसे लेटा हुआ था मानो वह गर्मी और निर्जलीकरण से बेहोश हो गया हो। पहरेदारों ने अपना ध्यान उसे दुरुस्त करने में लगा दिया, और उनका ध्यान भटकने से मुझे पैदल ही आगे बढ़ने का बेहद ज़रूरी मौका मिल गया।

बंधा मुझे से दर्रे के दूसरी ओर मिला, वह कुछ घंटों के बाद ठीक तरह से 'सेहतमंद' हो गया था। हमने आगे बढ़ने से पहले कुछ देर आराम करने का फैसला किया। मैं प्रार्थना में डूबा हुआ बैठा था, तभी मैंने अपनी आंख के कोने से बंधा को खंजर खींचे हुए अपनी तरफ आते देखा।

मैं निराश हो गया। अगर उसका अपने तरीके बदलने का कोई इरादा नहीं था तो उसने बौद्ध धर्म की शपथ लेने की जहमत क्यों उठाई? या क्या यह मेरा भरोसा हासिल करने की एक चाल थी? मैंने हिम्मत जुटाई और दिलेरी के साथ उसकी ओर मुड़ा। 'तुम मेरा खून क्यों बहाना चाहते हो? मेरे पास कोई कीमती सामान नहीं है और मुझे मारने से कुछ हासिल नहीं होगा। अगर तुम घोड़ा लेना चाहते हो, तो वह तुम ले सकते हो।'

'क्योंकि अब मुझे एहसास हुआ है कि आप अधिकारियों को सूचित कर सकते हैं कि मैंने आपकी सहायता की थी। अगर ऐसा होता है, तो मुझे गिरफ्तार कर लिया जाएगा और मौत की सज़ा दे दी जाएगी, जबकि एक पवित्र व्यक्ति मानकर आपको माफ़ किया जा सकता है,' बंधा ने जवाब दिया। मैं देख सकता था कि पश्चिम में रेत का एक भंवर उठ रहा था और मुझे बस कुछ समय निकालने की ज़रूरत थी। बंधा की आंखें इधर-उधर घूम रही थीं, मेरी आंखों पर उसकी नज़रें जमी थीं, इसलिए मैंने पश्चिम के घटनाक्रमों पर नज़र डालने से परहेज़ किया।

मैंने उससे कहा, 'मैं तुम्हें उस स्थान पर ले जा सकता हूँ जहां बेशुमार दौलत है। तुम्हें बस मुझे पांच प्रकाशस्तंभों के पार ले जाना है।'

उसकी आंखें चमक उठीं। उसके पीछे, पश्चिम से रेत उठती दिख रही थी। 'आप बस यूं ही कह रहे हैं,' उसने कहा। 'आप मुझे अपनी कहानी पर भरोसा करके चाल में फंसाना चाहते हैं।'

'बिल्कुल नहीं,' मैंने कहा। 'जब बुद्ध के वचन इस भूमि पर लाए गए, तो रास्ते में बहुत सारी संपत्ति बिखेरी गई थी। एक भिक्षु होने के नाते, मैंने सभी धर्मग्रंथ पढ़े हैं और उन

खज़ानों के बारे में जानता हूँ जिनका उनमें उल्लेख है। मैं झूठ नहीं बोल रहा था। मैं आध्यात्मिक खज़ानों की बात कर रहा था, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि बंधा को सांसारिक खज़ानों में ज़्यादा दिलचस्पी थी।

बंधा ध्यान से सुन रहा था। मैं लगभग देख सकता था कि उसके दिमाग में वह अपने विकल्पों को तराजू पर तौल रहा था। मैं मन ही मन उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था जब मैं उसे चौंका सकूंगा। यह क्षण बहुत जल्द आ गया।

जैसे ही आंधी आई, मैं कूदकर घोड़े पर सवार हो गया और पहले प्रकाशस्तंभ की ओर जाने लगा, जिससे बंधा के पास युमेन गुआन तक पैदल वापस जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। मैंने पीछे मुड़कर देखने की भी परवाह नहीं की।

मुझे पता था कि बंधा मेरे बारे में अधिकारियों को बता सकता था, लेकिन इससे वह खुद भी फंस जाता। मेरा मन कह रहा था कि वह अपने हालात को और नहीं बिगाड़ेगा। हां, अगर उसने मेरे बारे में शिकायत करने का फैसला किया, तो मैं कुछ नहीं कर सकता था। सम्राट के पास राज्य के बाहर भी मुखबिरों और जासूसों का एक बड़ा जाल था, और इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि मुझे चीन वापस नहीं भेजा जाएगा।

मुझे जोखिम उठाने होंगे। मैंने अपने मिशन को सफल बनाने में मदद के लिए बुद्ध से प्रार्थना की।

## 25

पैम अपने क्युबिकल में अपने पैरों को मेज़ पर टिकाकर बैठी थी। उसका टैबलेट उसकी गोद में पड़ा था। उसकी मेज़ पर कैंटीन की चाय के तीन कप पड़े थे, जो आधे पिये गए थे और बची हुई चाय जम चुकी थी। उसके टैबलेट पर डोकलाम फुटेज बार-बार चल रहा था। वो गिनती भूल गई थी कि उसने कितनी बार इसे देख लिया था, उन सुरागों की तलाश में जो दुश्मन के स्वरूप दिखा सकते थे। वो थक गई थी लेकिन उसने अपना ध्यान केंद्रित रखने के लिए खुद को तैयार किया।

उसे एक गाना याद आया जिसे उसके पिता तब सुनाया करते थे जब वो छोटी थी। वो उसे अपनी गोद में बिठाते, उसका सिर अपने कंधे पर रखते और गाते:

बा-मा-को-की-जू-का-लो

वी-नू-को-की-मू-पा-लो

सी-वा-को-की-सू-पा-लो

हा-नू-को-की-पू-दा-जो

वो निरर्थक गाने पर हंसती रहती। कभी-कभी उसके पिता उसे उठा लेते और शब्दों के साथ तालमेल बिठाकर झुलाते। यह उनका निजी मज़ाक था, जिसका हिस्सा उसकी मां नहीं थी। पैम उन दोनों के इस छिपे हुए रिवाज़ को लेकर बहुत संवेदनशील थी। एक बार, जब उसके पिता ने उसकी मां को खेल में शामिल करने की कोशिश की थी, तो वो पूरे दिन नाराज़ रही थी। हालांकि गाना निरर्थक था, लेकिन इसके शब्द कभी नहीं

बदले। आखेरकार, पैम ने भी इन शब्दों को सोख लिया और उनके साथ गाने लगीं। वह अब गहरी सोच में बैठी हुई गाना गुनगुना रही थी। ऐसा क्या था जो उन चीनी सैनिकों के बारे में जाना-पहचाना लग रहा था? वह समझ नहीं पा रही थी, लेकिन उसे महसूस हुआ कि उसने ऐसा पहले भी देखा था। उसने उन्हें पहले भी देखा था, लेकिन कहां? किसी फिल्म में? किसी विज्ञापन में? किसी वेब सीरीज़ में? टेलीविज़न पर? अपनी यात्राओं के दौरान? उसका दिमाग याददाश्त के साथ जूझता रहा लेकिन दुखद था कि उसे कुछ भी याद नहीं आया।

डीआरडीओ भवन में एक सम्मेलन हो रहा था और बाहर गलियारों में आगंतुकों का शोर ध्यान भटका रहा था। पैम ने अपने कान में ईयरफ़ोन लगा लिया। और फिर उसकी नज़र मेज़ पर उसके पिता की डायरी पर पड़ी। पैम ने डायरी उठाई, घिसे हुए चमड़े पर अपनी उंगलियां फिराई, सुनहरे उभरे शुरुआती अक्षरों पर विशेष ध्यान दिया। 'के.के.' किशन खुराना। जब भी वो अपनी उंगलियां वहां रखती तो उसे महसूस होता कि वो किसी तरह अपने पिता से जुड़ी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो वो उस दौर में वापस आ गई हो, अपनी उंगलियों से पिता के गालों को सहला रही थी, जो सैंडपेपर की तरह खुरदुरे थे।

उसने डायरी खोली और उसे पलटने लगी। एक पन्ने पर एक चिट्ठी के टुकड़े थे जो उन्होंने अपनी बेटी को लिखना शुरू किया था, जो उस समय सात साल की थी। 'भले ही मैं शारीरिक रूप से तुम्हारे साथ नहीं हूं, मेरी नन्हीं परी, याद रखना कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं। मैं हमेशा तुम पर नज़र रखता हूं।' पैम ने उस वाक्य को लाखों बार पढ़ा था।

पैम के पिता एक अच्छे नोट-लेखक थे, जो वाटरमैन फाउंटेन पेन से विचारों, टिप्पणियों और योजनाओं को ध्यान से लिखते थे। पैम जानती थी कि उसके पिता दिखने में अच्छे थे। उसने उनकी एक तस्वीर देखी थी जिसमें वो जैतून-हरे ज़िप्पो लाइटर के साथ अपनी पसंदीदा फोर स्क्वायर सिगरेट को स्टाइलिश तरीके से जला रहे थे। दूसरे में, वो अपने हिप फ्लास्क से ओल्ड मॉन्क रम का एक पेग बना रहे थे। लेकिन उनकी डायरी एक रहस्योद्घाटन थी। पौधों, मौसम और इलाकों की खासियतों पर नोट थे; सैन्य रणनीति, फायरिंग के लिए बंदूकों की दूरी और इलाके के स्केच मैप भी उसमें थे। कुछ पन्नों में उर्दू के दोहे और कविताएं भी थीं जो उन्होंने तब लिखी थीं, जब उनकी तैनाती पैम की मां से बहुत दूर होती थी। हर पेज में उनकी ट्रेडमार्क रॉयल-ब्लू स्याही में बड़े करीने से पेश किए गए नोट्स और स्केच थे।

पैम जिस पुराने अनुभव से गुज़र रही थी, वह उस चीज़ से जुड़ा था जिसे उसने पन्नों में देखा था। किसी चीज़ ने एक याद जगा दी थी। वो बेचैनी से डायरी के पन्ने पलटने लगी। चलो, सोचो, दिमाग लगाओ!

जब उसने आधे पन्ने पलट लिए तो उसकी नज़र एक चीज़ पर पड़ी। एक बहुत लंबे, हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति का रेखाचित्र जिसके चेहरे-मोहरे बंदर जैसे थे। यह उसके पिता के कई रेखाचित्रों में से एक था, लेकिन पैम को पता नहीं था कि जब उन्होंने इसे बनाया था तब वो कहां थे और क्या ये रेखाचित्र किसी असली शख्स पर आधारित थे। हो सकता है कि

उन्होंने अपनी कल्पना से किसी सुपरहीरो का डूडल बनाया हो।  
रेखाचित्र के सामने वाले पन्ने पर लिखा था:

सेलाजिनेला ब्रायोटेरिस

ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस हेक्सोजेज़ और प्रोटीन्स के खिलाफ 78% सुरक्षा

नेसस इफ़ेक्ट

क्या स्केच इसी नोटेशन से जुड़ा था? या क्या यह सिर्फ एक संयोग था कि दोनों चीज़ें आसपास थीं? आखिर नेसस प्रभाव क्या था? उसने गूगल पर इसके बारे में खोज की, लेकिन उसे सिर्फ एक एंटीवायरस प्रोडक्ट से संबंधित जानकारी मिले। वो केवल एक और नेसस के बारे में थोड़ा जानती थी, जो ग्रीक पौराणिक कथाओं का एक पात्र था। ऐसा कहा जाता था कि नेसस ने हेराक्लीज़ की पत्नी डियानिरा के साथ बलात्कार करने का प्रयास किया था। हेराक्लीज़ ने नेसस को मारने के लिए हाइड्रा-ज़हर वाला तीर चलाया और कामयाब हो गया था। लेकिन नेसस का संक्रमित रक्त किसी तरह हेराक्लीज़ तक पहुंच गया और उसे मार डाला था।

नेसस इफ़ेक्ट के नीचे एक कविता थी जिसका कोई मतलब नहीं निकल रहा था।

ऊपर से मर्द

और नीचे से प्लस

तीन बंदर

और बीच में चमक।

दूसरे पन्ने पर गायत्री मंत्र का एक संस्करण था, जिसमें अलग-अलग देवताओं की स्तुति की गई थी।

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे

हंसा रुद्राय धीमहि

तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे

वासुदेवाय धीमहि

तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे

महादेवाय धीमहि

तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।

ॐ आंजनेय विद्महे

महा बलाय धीमहि

तन्नो हनुमान प्रचोदयात्।

पैम ने फुटेज फिर से चलाया। अब उसे चीनी सैनिकों को भारतीय सैनिकों के पेट में उस्तरे जैसी धार वाले चाकू से वार करते हुए देखकर खास फर्क नहीं पड़ रहा था। उसने खुद को सैनिकों के शरीर से बहते खून, उनके चेहरों पर छाए दर्द को

नज़रअंदाज़ करने के लिए मजबूर किया। इसके बजाय उसने चीनों हमलावरों और उनकी कद-काठी, विशेषताओं और हरकतों पर ध्यान केंद्रित किया। इसमें कोई संदेह नहीं था। जब हमलावर क्रूरता से मुस्कुरा रहे थे, तो उनके मुंह खुले रहते थे और केवल निचले दांत दिखते थे। जब वे मारते थे, तो उनके होंठ सहज रूप से बंदरों या लंगूरों की तरह पीछे की तरफ खिंच जाते थे और निचले और ऊपरी दोनों दांत और मसूड़े दिखते थे। चीनी सैनिकों और स्केच में बनी तस्वीरों के बीच निश्चित रूप से कुछ समानताएं थीं।

## 26

मार्क और पैम रिसर्च टीम के इस्तेमाल वाले सीबीटीटी कॉन्फ्रेंस रूम के अंदर थे। सौ लोगों के लिए बने कमरे का इस्तेमाल सिर्फ तीन लोगों द्वारा किया जाना हास्यास्पद लग रहा था। लेकिन यहां मौजूद टेक्नोलॉजी बैकअप ने प्रेजेंटेशन को कहीं ज़्यादा असरदार बना दिया।

मार्क के कई वाइस-प्रेसिडेंट्स में से एक, लगभग तीस साल का एक नौजवान, भारतीय सैनिक के भविष्य के बारे में एक प्रेजेंटेशन दे रहा था। उसने एक महीने पहले सीबीटीटी की सीनियर मैनेजमेंट टीम के सामने यही प्रेजेंटेशन दिया था, लेकिन मार्क चाहता था कि वो पैम के लिए इसे दोहराएं। युद्ध की दुनिया में तकनीकी संभावनाओं के बारे में उसकी समझ जल्दी विकसित करने का यही सबसे तेज़ तरीका होगा।

प्रेजेंटेशन का शुरुआती हिस्सा जिन उत्पादों पर केंद्रित था, उनमें शामिल थे स्मार्ट कपड़े जिससे कोई सैनिक आंखों, रडार और इंफ्रारेड मीडियम से आसानी से दिखाई ना दे; कोनों के आसपास या खाइयों में लक्ष्य पर गोली चलाने के लिए हेलमेट पर एक बेहतर साइटिंग सिस्टम; एन्क्रिप्टेड रेडियो जो किसी यूनिट के सदस्यों को हैंड्स-फ्री कम्युनिकेशन की सुविधा देता है; और परमाणु, जैविक या रासायनिक युद्ध की स्थिति में लड़ाकों की सुरक्षा के लिए स्पेशल कवरेजिंग्स और एप्लिकेशंस।

पैम अभी भी फुटेज वाले चीनी लड़ाकों के बारे में सोच रही थी। उनके पास रडार से सुसज्जित हेलमेट, हल्के लेकिन घातक असाॅल्ट राइफलें, कलाई में पहने जाने वाले नेविगेशन सिस्टम, रात में देखने में मदद करने वाले चश्मे और ओमनीफोबिक बख्तर थे। अगर भारत ऐसी लड़ाई में कामयाब होने की उम्मीद करना चाहता था, तो उसे अपने सैनिकों को लड़ने के लिए सर्वोत्तम उपकरण देने की ज़रूरत होगी।

फिर वाइस प्रेसिडेंट अपने प्रेजेंटेशन के दूसरे हिस्से में गया। इसमें थर्मल सेंसिंग हेलमेट पर फोकस था जो सैनिक के अहम मेडिकल संकेतों को कंट्रोल सेंटर तक पहुंचाने के साथ-साथ उसकी किसी गंभीर चोट पर नज़र रख सकता था। यह एडवांस्ड एल्गोरिदम के साथ जुड़े इनर्शियल और विजुअल नेविगेशन सेंसर के माध्यम से खतरों का पता भी ऑटोमैटिक ढंग से लगा सकता था। यह सैनिकों को 3डी नेविगेशन भी दे सकता था, जहां मोबाइल नेटवर्क कमज़ोर थे या मौजूद नहीं थे।

इसके बाद रासायनिक विस्फोटकों के उपयोग के बिना प्रोजेक्टाइल दागने के लिए एक मैग्नेटिक फ्लक्स जेनरेटर का जिक्र आया। एक बार इसमें दक्षता हासिल हो जाए

तो प्रोजेक्टाइल बख्तरबंद वाहनों को भी भेदने में सक्षम होगा। लोकेन सबसे अच्छी चीज़ थी मशीनगन से सुसज्जित रोबोट, जो कंट्रोल सेंटर से मिले आदेशों के मुताबिक गोली दाग सकता था।

पैम ने सारी बातें धैर्य के साथ सुनीं। डीआरडीओ की कर्मचारी होने के बावजूद, उसे सीबीटीटी द्वारा विकसित की जा रही इन अत्याधुनिक तकनीकों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उसे विशेष रूप से हाइड्रोलिक-संचालित एक्सोस्केलेटन ने आकर्षित किया जिससे लड़ाकू सैनिक बिना थके भारी सामान ले जा सकते थे।

उसने टोकते हुए कहा, 'हमें क्या चीज़ रोक रही है? अगर हमारे पास ये सारी तकनीक हैं, तो हम इसे अपने सैनिकों को क्यों नहीं दे रहे हैं?'

मार्क और उसके वाइस प्रेसिडेंट ने एक-दूसरे को झेंपते हुए देखा। मार्क ने जवाब दिया, 'वही पुरानी भारतीय नौकरशाही। जब भी हम प्रस्ताव देते हैं, उन्हें छोटे-छोटे मुद्दों को वजह बनाकर कागज़ी कार्रवाई में उलझा दिया जाता है।'

'छोटे-छोटे कैसे मुद्दे?' पैम ने पूछा। वो नौकरशाहों के नियमों, विनियमों, प्रपत्रों, फाइलों और प्रक्रियाओं के ढेर में उलझाने वाले तरीकों से परिचित थी, जिनकी वजह से कोई काम आगे नहीं बढ़ता था।

'हास्यास्पद बातें,' मार्क ने जवाब दिया। 'जैसे, रोबोट पर नियमित लड़ाकू राइफलें क्यों नहीं लगाई जातीं? शरीर के तापमान की निगरानी करने वाले ईयरपीस के लिए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया से अनुमति क्यों नहीं ली जाती? यह सुनिश्चित क्यों नहीं किया जाए कि ऑटोनोमस व्हीकल ईंधन-उत्सर्जन मानदंडों को पूरा करें? ऊंचे पद पर बैठा कोई शख्स हमें अंधकार युग में बनाए रखने के लिए हर संभव कोशिश कर रहा है। इस बीच, चीनी हमसे बेहतर होते जा रहे हैं।'

## 27

पैम डीआरडीओ लौट आई और डॉ. राजा राव का पता लगाने में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। उसने ऐसे लोगों की एक सूची बनाई जो युद्ध प्रशिक्षण से जुड़ी उच्च-स्तरीय परियोजना में संभवतः शामिल हो सकते थे। जब इसका कोई नतीजा नहीं निकला तो उसे आश्चर्य नहीं हुआ। राव के बारे में किसी को पता भी नहीं था। अगर किसी को पता था भी तो वे सख्त रूप से चुप्पी साधे थे। राव के काम में इतना गोपनीय क्या है? वो सोचने लगी। उसने यह जानने के लिए मार्क को फ़ोन किया कि क्या राव के साथ उसका किसी तरीके का कोई भी संपर्क था।

मार्क ने जवाब दिया, 'जब सीबीटीटी को राव के साथ सहयोग करने में दिलचस्पी थी, तो हमारी पहुंच उनके डिप्टी, देव नामक किसी व्यक्ति से थी।'

'देव?' पैम ने पूछा। 'कोई उपनाम नहीं?'

'बस देव, जहां तक मुझे याद है। मुझे देखने दो कि क्या मेरे पास उस तक पहुंचने का कोई संपर्क-सूत्र है।' पैम ने मार्क को अपने कीबोर्ड पर टाइप करते हुए सुना। 'मेरे पास एक लैंडलाइन नंबर है, लेकिन पता नहीं कि यह अभी भी चल रहा है या नहीं।'

‘जो है, वही बताओ,’ पैम ने जवाब दिया और नंबर लिख लिया। उसने तुरंत रिवर्स नंबर सर्च किया और उसे दिल्ली में कनॉट प्लेस का एक पता मिला। अपना सामान एक थैले में रखने के बाद, वो पते की जांच करने के लिए बाहर निकली। यह एक छोटा सा कैफे निकला, जहां उस वक्त काफी हलचल थी। वो काउंटर पर गई और मैनेजर जैसे दिखने वाले शख्स से देव के बारे में पूछा।

जवाब आया, ‘इस नाम का कोई भी व्यक्ति यहां काम नहीं करता।’ मैनेजर ड्राँवर में छुट्टे पैसे गिनने में व्यस्त था।

‘शायद इस जगह के मकान मालिक को पता होगा?’ पैम ने कहा।

‘एक मिनट रुकिए,’ मैनेजर ने कहा। ‘यह जगह कॉफी शॉप बनने से पहले एक जिम हुआ करती थी और हम उसकी लैंडलाइन इस्तेमाल कर रहे हैं। जिम चलाने वाले शख्स का नाम देव था। बाहर लगे बोर्ड पर डीजी लिखा हुआ था। देव’स जिम।’

‘कोई तरीका जिससे मैं उस तक पहुंच सकूँ?’

‘मेरे पास ज़्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन मुझे इतना पता है कि वह एक सस्ते इलाके में चला गया है।’

पैम बाहर एक बेंच पर बैठ गई और गूगल पर ‘देव’स जिम’ खोजने लगी। उसने कीवर्ड में दिल्ली जोड़ दिया ताकि शहर के बाहर का कोई पता ना आए। गूगल ने पांच संभावित स्थान बताए।

उनमें से दो पड़ोस में थे जो कनॉट प्लेस से भी महंगे थे, इसलिए उसने उन पर विचार नहीं किया। बाकी तीन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अलग-अलग हिस्सों में थे। पैम को पता था कि उसका बाकी दिन सफर में निकल जाएगा। उसने अपनी कार छोड़कर मेट्रो लेने का फैसला किया। इससे वक्त बच जाएगा।

वो राजीव चौक स्टेशन की ओर गई और ब्लू लाइन का इंतज़ार करने लगी। जब ट्रेन आ गई, तो वह शुरुआती डिब्बों में से एक में जाकर बैठ गई। उसने उस व्यक्ति पर ध्यान नहीं दिया जो उसके साथ मेट्रो में दाखिल हुआ था और नोएडा सिटी सेंटर में उसके साथ ट्रेन से उतरा था।

इस देव’स जिम को उसकी शॉर्टलिस्ट से हटने में दस मिनट से भी कम वक्त लगा। इसका नाम होटल देवलोक के बेसमेंट में होने के कारण पड़ा था, यहां देव नाम का कोई शख्स नहीं था। मेट्रो की तरफ लौटते समय उसने ठंडी आह भरी। उसका अगला पड़ाव गुड़गांव में हुडा सिटी सेंटर था।

यह जिम पिछले जिम से कहीं ज़्यादा आलीशान था और एक स्मार्ट रिहायशी इलाके में था। तंग काली टी-शर्ट पहने और स्टीकड बालों वाली रिसेप्शनिस्ट पैम को देखकर मुस्कुराई, वो उसे मेंबर बनाने की तैयारी में थी।

‘क्या मैं देव से बात कर सकती हूँ?’ पैम ने पूछा। रिसेप्शनिस्ट ने निराशा के साथ अपने बाँस को बताने के लिए इंटरकॉम उठाया।

देव अपने ऑफिस से बाहर निकला और कुछ मिनट बाद डरावने दिखने वाले एक राँटवीलर के साथ रिसेप्शन एरिया में आ गया। कुत्ते ने संदेह से पैम को देखा और

गुराया, लोकेन उस पर झपटा नहीं। 'नोचे, सुल्तान,' देव ने आदेश दिया और कुत्ता आज्ञाकारी ढंग से अपने पेट के बल लेट गया।

देव की उम्र पचास के आसपास थी लेकिन डील-डौल बॉडी बिल्डर जैसा था। पैम ने तुरंत फिर से जांचा कि ये वास्तव में वही देव था, जो जिम चलाता था और जिसका फ़ोन नंबर वो टैक कर रही थी। वह जानकारी देने में थोड़ा कतरा रहा था। 'आप मुझे ढूंढने की कोशिश क्यों कर रही हैं?' उसने सावधानी से पूछा। 'आप कौन हैं?'

उसने अपना पूरा नाम नहीं बताया। 'आप मुझे पैम कह सकते हैं,' उसने चमकती मुस्कान के साथ कहा। 'मुझे वास्तव में आपकी मदद की ज़रूरत है, देव।' मैं कुछ ज़्यादा मक्खन तो नहीं लगा रही? उसने सोचा। 'मेरे संपादक ने मुझे डॉ. राव का पता लगाने का काम सौंपा है। अगर मैं सफल नहीं हुई तो मेरी नौकरी गई समझो।'

उसने बताया कि उसकी मैगज़ीन मार्शल आर्ट्स ट्रेनिंग पर एक फीचर करने के लिए डॉ. राव को ढूंढने की कोशिश कर रही थी। उसने अपना जादू चलाना शुरू किया, इस उम्मीद में कि देव उससे खुलकर बात करेगा। देव के रुख में काफ़ी नरमी भी दिखी। यहां तक कि कुत्ते के रुख में भी नरमी आ गई थी।

देव उसे अपने ऑफिस में ले गया और उसे पीने के लिए ग्रीन टी का ऑफर दिया। उसने अपने रॉटवीलर को चुपचाप बैठने का निर्देश देते हुए पैम के साथ अच्छे ढंग से बातचीत की। जिम की चमक-दमक देखकर पैम सोच रही थी कि देव ने ये सारे बढ़े हुए खर्च कैसे उठाए होंगे।

देव ने कहा, 'मैं एक समय राव का छात्र था। वो कुछ दशक पहले भारतीय सेना के लिए कांची में एक अकादमी चलाते थे, और अंत में मैं उनका डिप्टी बन गया। मैं उस समय लगभग बीस साल का था और मैंने अपनी किशोरावस्था उनके अधीन प्रशिक्षण में बिताई थी। अकादमी का उद्देश्य भारतीय विशेष बलों की युद्ध क्षमता को बढ़ाना था।'

'क्या अकादमी अभी भी चल रही है?' पैम ने पूछा। उसने देखा कि देव इसका जवाब देने में झिझक रहा था। 'मैं इस बारे में बात करने के लिए रात का खाना साथ में खाती, लेकिन मैं अगले कुछ दिनों के लिए बाहर जा रही हूँ,' पैम ने जल्दी-जल्दी कहा। उसने कागज़ की एक पर्ची पर अपना मोबाइल नंबर लिखा और देव को दे दिया। 'मुझे कॉल करें। मुझे वाकई में आपकी मदद की ज़रूरत है।'

देव ने पर्ची ली और मुस्कुराया। जिम तक अपने एकाकी जीवन को सीमित करना मुश्किल था। किसी महिला साथी के साथ डिनर अच्छा रहेगा। उसे अनु का ख्याल आया। कितने शानदार दिन थे वे।

पैम ने कहा, 'मेरी मैगज़ीन भविष्य के अंक के लिए आपके साथ एक फोटो शूट भी करना चाहेगी। इससे यहां आपका बिज़नेस काफ़ी हद तक बढ़ सकता है, हालांकि मैं ऐसा नहीं कह रही हूँ कि आपको इसकी ज़रूरत है।' पैम फिर मुस्कुराई, लेकिन वो देख सकती थी कि देव पर उसका जादू पहले से ही चल चुका था।

'सरकार बदल गई थी,' देव ने कहना शुरू किया। 'नई सरकार राजनीतिक रूप से

अपने आस्तित्व के लिए वामपंथी दलों के समर्थन पर निर्भर थीं। इस फासोलेटी को बंद करने के लिए वामपंथियों के माध्यम से गुप्त चीनी दबाव डाला गया, जिसमें सरकार में चीन से सहानुभूति रखने वालों ने भी मदद की। भारतीय नौकरशाही ने राव के साथ बुरा व्यवहार किया और उनकी फंडिंग रोक दी गई। तब से अकादमी बंद पड़ी है।

‘क्या वो अब भी वहीं रहते हैं?’ पैम ने पूछा। ‘क्या वो मुझे मिलेंगे?’

देव ने कहा, ‘जितना मैं उन्हें जानता हूँ, मुझे लगता है कि वो अभी भी अकादमी के मैदान में रहते होंगे। लेकिन उन्होंने कई साल पहले किसी से भी मिलना बंद कर दिया था, सिवाय अपनी बेटी को छोड़कर—जिनका नाम अनु है। सच कहूँ तो, मैं लंबे समय से उनसे संपर्क में नहीं हूँ और मुझे नहीं पता कि वो ज़िंदा हैं या मर गए।’

‘बेटी अनु उनके साथ रहती हैं?’

‘उम्मीद कम है,’ देव ने जवाब दिया। ‘लेकिन उनके घर एक-दूसरे के करीब थे। मुझे लगता है कि वो भी लगभग पैंसठ साल की हो रही होंगी। वो हर दिन उनके लिए खाना लाती थीं, लेकिन इसके अलावा, राव ने रिटायरमेंट के बाद एक वैरागी सा जीवन बिताया। मैं ऐसा ये मानकर कह रहा हूँ कि वो अभी भी जीवित हैं।’ देव के विचार फिर से अनु की तरफ चले गए। उम्र में दस साल का अंतर भी उन्हें एक-दूसरे से प्यार करने से नहीं रोक सका था।

बातचीत रुक गई थी। देव तय नहीं कर पा रहा था कि आगे कुछ कहे या नहीं। पैम उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उसे देखकर मुस्कुराई।

देव ने घबराहट में थूक निगली। ‘राव के बारे में ऐसी एक और चीज़ है जो आपको जानना चाहिए।’

## 28

मैं अब बिल्कुल अकेला था। मैं अपने दुबले-पतले घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा। मुझे बताया गया था कि युमेन गुआन को पार करने के बाद, मुझे पानी के झरनों के बगल में पांच प्रकाश स्तंभ दिखाई देंगे। स्तंभ ताकेलामगन शामो के रेगिस्तान की तरफ जाने वाली सड़क के किनारे हैं। पानी भरने के लिए मुझे उनमें से हरेक पर रुकने की ज़रूरत होगी, लेकिन कहीं भी रुकने से मुझे गार्ड द्वारा गिरफ्तार किए जाने या मारे जाने का खतरा भी होगा।

चिलचिलाती गर्मी न केवल ऊपर सूरज से, बल्कि उस रेत और बजरी से भी फैल रही थी, जिसे मैं पार कर रहा था। गर्मी इतनी थी कि आप इस पर अंडा पका सकते थे। इस कठोर मौसम में बहुत कम ज़िंदगियां बच सकती थीं। यहां तक कि अनुभवी यात्री भी इस विशाल रेगिस्तान में अपना रास्ता भूल सकते थे, और मुझे मनुष्यों और जानवरों के कई कंकाल मिले, जिनके शरीर के मांस गिद्धों और सूखी गर्मी ने साफ़ कर दिए थे।

अचानक हज़ारों भयानक योद्धाओं को अपनी ओर आते देखकर मैं भयभीत हो गया। वे अपने पसीने से तर घोड़ों पर सरपट दौड़ रहे थे, उनकी तलवारें और भाले तेज़ धूप में चमक रहे थे। लेकिन जैसे ही वे मुझ पर हमला करने वाले थे, वे गायब हो गए, उतनी

ही तेज़ी से गायब हो गए जितनी तेज़ी से वे प्रकट हुए थे। मैंने उन्हें देखने के लिए अपनी आंखें टेढ़ी भी कीं, लेकिन वे हवा में गायब हो चुके थे।

फिर मुझे एक कारवां दिखा, सामान से लदे ऊंट और खूबसूरत पोशाक पहने व्यापारी जो घोड़ों पर सवार थे। जैसे-जैसे वे करीब आते गए, मैंने उनका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की, लेकिन वे भी हवा में गुम हो गए। थकान और प्यास से मुझे रेगिस्तान की धूप में मतिभ्रम होने लगा था। असली और नकली में अंतर करना असंभव हो गया था। करीब-करीब किसी की जीवन यात्रा की तरह।

मैं अपने मन के शैतानों से जितना संभव था, उतना लड़ता रहा। लगभग पच्चीस मील के बाद, मैं पहले प्रकाश स्तंभ पर पहुंच गया। हालांकि मेरा गला सूख रहा था, फिर भी मैंने झरने से पानी लाने से पहले अंधेरा होने का इंतज़ार किया। मैंने पानी ऐसे पीया जैसे मैंने पहले कभी नहीं पीया था, मानो पानी मेरे शरीर की हर सूखी दरार में जा रहा था। मेरे शरीर ने कपड़े पर लगे तेल की तरह पानी की हर बूंद को सोख लिया। फिर मैंने अपने हाथ और चेहरे को धोया और अपनी त्वचा पर पानी के ताज़गी भरे स्पर्श का सुख लिया।

जब मैं अपना पानी का थैला भर रहा था, मेरे पास से सांय-सांय की आवाज़ के साथ तीर गुज़रने लगे। मुझे खोज लिया गया था। मैं चिल्लाया कि मैं बुद्ध के वचन को वापस लाने के मिशन पर निकला एक भिक्षु हूं, लेकिन एक और तीर मेरे घुटने को खरोंचते हुए निकला, जिससे खून बहने लगा। मैं चीखकर दिए जा रहे आदेशों को सुन सकता था, जिसके बाद लोगों के दौड़ने और धातु के टकराने की आवाज़ें आ रही थीं। मशालें जलाई गईं और गतिविधियां तेज़ हो गईं। मैं इतना थक चुका था कि दौड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। पल भर बाद, मैं सैनिकों की एक टुकड़ी से घिरा हुआ था, उनके हथियारों का निशाना मेरी ओर था।

मैंने उन्हें समझाने का प्रयास किया कि मैं एक भिक्षु हूं, शत्रु योद्धा नहीं, लेकिन मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और प्रकाश स्तंभ के सेनापति के पास ले जाया गया। मैं उसके सामने खड़ा था, भीगा हुआ और खून से लथपथ, डर और रात की ठंडी हवा से कांपता हुआ। उसने मेरे करीब आकर मेरा निरीक्षण किया। चमत्कारिक ढंग से उसके आचरण में अचानक परिवर्तन आ गया।

दरअसल प्रकाश स्तंभ का सेनापति, जिसका नाम वांगसियांग था, बौद्ध था। उसने मेरे और मेरे मिशन के बारे में पहले ही सुना था। उसे पश्चिम की यात्रा करने और डि सैन सू चुआन बनने के मेरे इरादे के बारे में भी पता था। ऐसा प्रतीत हुआ कि बौद्ध सूचना नेटवर्क कोई सामान्य नेटवर्क नहीं था। ये सब बुद्ध का आशीर्वाद था।

हैरानी की बात यह है कि वांगसियांग ने मुझे रेगिस्तान पार करने से रोकने की पूरी कोशिश की, और सुझाव दिया कि मैं इसके बजाय शाझोउ<sup>24</sup> के मठ में जाऊं। उसने कहा कि मेरी यात्रा यिझोऊ<sup>25</sup> के नखलिस्तान के लिए 300 मील की यात्रा होगी, जिसमें तपते रेगिस्तान से गुज़रना होगा और जीवित रहने की संभावना बहुत कम होगी। उसने

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास ( Novel ) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

( Motivational Book ) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

<https://t.me/hindilibrary>

<https://t.me/requestbookpdf>

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें   

[https://t.me/books\\_request](https://t.me/books_request)

English Books 

[https://t.me/Google\\_Ebooks](https://t.me/Google_Ebooks)

मुझे उन सभी लाशों और कंकालों की याद दिला दी जो मैंने रास्ते में देखे थे। उसने चेतावनी दी कि मेरे दुबले-पतले घोड़े का और मेरा अंत भी उन्हीं की तरह हो सकता है। दूसरी ओर, शाझोउ उत्तरी और दक्षिणी रेशम मार्गों के संगम पर था और कुछ ही दिनों में पहुंचा जा सकता था।

शाझोउ बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र था जहां एक हजार से अधिक गुफाएं भिक्षुओं के समृद्ध समुदाय के लिए मंदिर, ध्यान कक्ष, पुस्तकालय और निवास के रूप में काम आती थीं। कुछ गुफाओं में उत्कृष्ट ढंग से रंग-रोगन किया गया था और उन्हें तीर्थस्थल माना जाता था। कुछ को राजाओं और अमीर व्यापारियों द्वारा भी प्रायोजित किया गया था। मैं समझ रहा था कि वांगसियांग मुझे वहां जाने के लिए क्यों प्रेरित कर रहा था। यह मेरी भलाई के लिए उसकी वास्तविक चिंता थी। मैं घुटनों के बल बैठ गया और अपनी गर्दन उसके सामने कर दी। 'कृपया इसके बजाय मुझे मार डालिए,' मैंने कहा। 'मैं अपनी योजना अधूरी छोड़ने के बजाय मर जाना पसंद करूंगा।'

वांगसियांग को एहसास हुआ कि मेरा रास्ता बदलने की कोशिश करने का कोई मतलब नहीं था। उसने मेरे पास आकर मुझे खड़ा किया। फिर उसने मेरे संकल्प को तोड़ने की कोशिश करने के लिए माफी मांगते हुए मेरे सामने घुटने टेक दिए। फिर खड़े होते हुए, उसने अपने सैनिकों को निर्देश दिया कि वे मुझे भोजन और पानी दें। उसने स्वयं मेरे घावों की देखभाल की और फिर मेरे लिए रात भर आराम करने के लिए एक जगह की व्यवस्था की। अगली सुबह, उसने मुझे भोजन का एक पार्सल और एक अतिरिक्त बड़े चमड़े के पात्र में पानी दिया। इसके बाद उसने व्यक्तिगत रूप से मुझे सही जगह तक पहुंचाया जहां से मैं रेगिस्तान में अपनी यात्रा फिर से शुरू कर सकता था।

वांगसियांग ने मुझसे कहा कि पांचवें प्रकाश स्तंभ पर ना रुकूं क्योंकि इसकी कमान संभालने वाला अधिकारी अच्छा आदमी नहीं था और मुझे पकड़कर सम्राट के पास भेजने में उसे बहुत खुशी होगी। 'किसी भी परिस्थिति में वहां मत जाएं,' उसने चेताया, जब मैं और मेरा छोटा घोड़ा अपनी साहसिक यात्रा पर आगे बढ़े।

## 29

कंबोडियाई शहर सिएम रीप से पांच मील उत्तर में एक विशाल मंदिर परिसर स्थित है। अंगकोर वाट दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है और इसे बारहवीं शताब्दी में राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने हिंदू भगवान विष्णु के सम्मान में बनवाया था। यह दुनिया के सबसे अविश्वसनीय मानवीय उद्यमों में से एक है।

विशाल अंगकोर वाट परिसर के भीतर, चीनी शोधकर्ताओं और विद्वानों का एक समूह LIDAR (लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग) मैपिंग करने में व्यस्त था। यह कोई आसान काम नहीं था। अंगकोर वाट 400 एकड़ में फैला हुआ था—एक मंदिर से ज्यादा यह एक शहर था। खमेर में 'अंगकोर वाट' नाम का ही मतलब है मंदिरों का शहर। टीम को न केवल परिसर के विशाल आकार से जूझना पड़ रहा था, बल्कि इस तथ्य से भी जूझना

पड़ा कि हर दिन 50,000 से अधिक पर्यटक आते थे, जो अक्सर उनके निशानों, घेराबंदी और उपकरणों पर चढ़ जाते थे।

हालांकि यह विशालकाय वास्तुशिल्प चमत्कार विष्णु के सम्मान में निर्मित था, यह लंबे समय तक हिंदू पूजा स्थल नहीं रहा। सदी के अंत तक, बौद्ध धर्म के उदय और हिंदू धर्म के पतन के परिणामस्वरूप अंगकोर वाट एक बौद्ध केंद्र बन गया, और चमत्कारिक परिसर के इर्द-गिर्द नए मिथक विकसित हो गए। बौद्धों का मानना था कि अंगकोरवाट का निर्माण भगवान इंद्र के निर्देश पर एक ही रात में किया गया था। लेकिन मंदिर को देखने वाले किसी भी व्यक्ति को पता चल जाएगा कि इसे बनाने में शायद कई दशक लगे होंगे। उन्नीसवीं सदी तक, अंगकोर वाट उपेक्षा का शिकार, जर्जर और घास-फूस से ढका हुआ लगभग एक परित्यक्त स्थल बन गया था। इसे 1860 के आसपास फ्रांसीसी खोजकर्ता हेनरी मोहोट ने 'फिर से खोजा' था, जो इंडियाना जोन्स और टॉम्ब रेडर समेत कई हॉलीवुड फिल्मों के लिए प्रेरणा बने थे।

हालांकि, चीनी टीम इंडियाना जोन्स की तुलना में कहीं बेहतर तकनीक का इस्तेमाल कर रही थी। शुरुआती मैपिंग के लिए उन्होंने LIDAR लेज़र से लैस एक हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल किया था। LIDAR काफी हद तक रडार या सोनार की तरह काम करता था लेकिन रेडियो या ध्वनि तरंगों के बजाय लेज़र स्रोत से आने वाली सुसंगत प्रकाश तरंगों का इस्तेमाल करता था। उड़ान के रास्ते, ऊंचाई और हवाई गति को तय करने वाले एक प्रोग्राम किए गए शेड्यूल के साथ उड़ान भरते हुए, हेलीकॉप्टर ने हर सेकंड दस लाख पल्स भेजे। चीनियों ने हर दस फीट सर्वेक्षण क्षेत्र में सोलह लेज़र बीम इस्तेमाल किए। उनके LIDAR सिस्टम ने प्रकाश की तरंगों के निर्माण के हिस्से से टकराने और वापस परावर्तित होने में लगने वाले समय की गणना की। फिर इनमें से हर रीडिंग को पूरे परिसर के 3डी विज़ुअलाइज़ेशन में इकट्ठा किया गया। यह निस्संदेह अत्याधुनिक तकनीक थी।

लेकिन ज़मीन के नीचे का ब्यौरा पता लगाने में LIDAR की सीमाएं थीं। टीम अब शाफ्ट, सुरंगों और सीलबंद कमरों में भेजे गए रोबोटिक उपकरणों के माध्यम से जमा की गई तस्वीरों को अपने 3डी नक्शे के साथ जोड़ रही थी। जब उनका रोबोट मंदिर के पश्चिमी छोर के अंदर घुसा तो वे उत्साहित थे। लेकिन उत्साह तब निराशा में बदल गया जब पता चला कि यह खाली था। पिछले दिन, रोबोट ने एक कमरे का पता लगाया था जिसमें कुछ सामान था, लेकिन अंत में कुछ हासिल नहीं हुआ था। उनकी समस्याएं इस तथ्य से और भी बढ़ गई थीं कि 1970 के दशक के खमेर रूज शासन के दौरान अंगकोर वाट के कुछ हिस्सों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया था, जिसके नतीजे में मलबे से भरे गड्ढे बन गए थे, जिनसे गुज़रना मुश्किल था। कभी-कभी यह भूसे के ढेर में सुई खोजने जैसा हो जाता था।

शुरुआत में, संभावित गुप्त कक्ष के लिए साफ़-साफ़ विकल्प मंदिर ही था। उनकी टीम के नेता, ली झोउ, उजले बालों वाले विद्वान, ने पांच प्राथमिक टावरों की जांच करने में कई दिन बिताए थे। अंगकोर वाट को देवताओं के निवास स्थान मेरु पर्वत का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया था, और इसके पांच टावर मेरु की पांच चोटियों

को दिखाते थे। मंदिर के चारों ओर की दीवारें और खाई मेरु के आसपास की पर्वत शृंखलाओं और झीलें का प्रतिनिधित्व करती थीं। ली के विस्तृत सर्वेक्षणों ने अब तक अज्ञात जानकारी का खज़ाना तैयार कर लिया था जो शायद कई शोध पत्रों का विषय बन सकता था, लेकिन बुज़ांग ने उनकी टीम को यहां इसलिए नहीं भेजा था।

तुम मेरे साथ लुका-छिपी क्यों खेल रहे हो? ली सोचने लगा। किसी और समय मैं उन खोजों के बारे में कितना उत्साहित होता जो हमने की हैं। अपने शोध के दौरान, उन्होंने पाया था कि महेंद्रपर्वत, बेंग मीलिया, कोह केर और अंगकोर के लुप्त शहर सभी उन्नत जलमार्गों और सड़कों के माध्यम से जुड़े हुए थे। खमेर साम्राज्य उस समय दुनिया के सबसे बड़े शहरी केंद्रों में से एक रहा होगा, जिसमें अब तक की सबसे बेहतर जल प्रबंधन प्रणालियां थीं। लेकिन बुज़ांग को इसकी कोई परवाह नहीं थी। उसके लिए ली की खोज अब तक बेकार रही थी।

ली अपनी टीम के साथ अंगकोर वाट के बाहर कंप्यूटरों से भरे एक वातानुकूलित तंबू के अंदर बैठा था। टीम के सदस्यों में से एक ने उन स्थानों के बारे में एक प्रेजेंटेशन दिया जिनकी पहले ही जांच की जा चुकी थी। साथ में तस्वीरें भी थीं—पंद्रह फुट ऊंची दीवार, खाई, बलुआ पत्थर का रास्ता, सत्तर फुट ऊंची प्राथमिक मीनार की तस्वीरें।

प्रेजेंटेशन देने वाले ने कहा, 'पल्लव संबंध साफ़ है। पत्थरों की तराशी का काम पल्लव मंदिरों के समान ही है। हमने उनकी जांच करने की कोशिश की है और यहां तक कि उनके पीछे और उनकी दरारों में भी खोज की है।'

ली ने इस चर्चा को बीच में ही रोक दिया। उसे अभी-अभी बुज़ांग से फ़ोन पर फटकार मिली थी। 'बुज़ांग ने मुझसे यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि हम अपना मिशन चार हफ्ते के भीतर पूरा कर लें। हमारे पास अंगकोर के चमत्कारों पर आश्चर्य करने का समय नहीं है।'

टीम के बाकी सदस्यों ने सामूहिक रूप से ठंडी सांस छोड़ी। शोधकर्ताओं में से एक ने घबराहट के साथ कहा, '400 एकड़ जमीन पर खोज करने में कई साल लगेंगे, हफ्ते या महीने नहीं। यह हो ही नहीं सकता। हम उन स्थानों पर रोबोट भेजने की कोशिश में शामिल मेहनत देख चुके हैं जिन्हें LiDAR-मैप नहीं किया जा सकता है। यह नामुमकिन है! और हम मान रहे हैं कि हम केवल अंगकोर वाट तक ही अपना काम सीमित रखेंगे, अंगकोर के बाकी सैकड़ों मंदिरों को नहीं। हमने नोम क्रॉम, नोम बखेंग या नोम बोक जैसे मंदिरों के बारे में सोचा तक नहीं है।'

'हम शिकायत न करें,' ली ने जवाब दिया। 'हमें नतीजे देने होंगे। पूरे परिसर के बजाय हमें कुछ खास चिह्नित इलाकों पर काम करना चाहिए। हम किन विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं?'

ली की आवाज़ में दृढ़ता थी, लेकिन वह अंदर से चिंतित था। वह जानता था कि उसका जीवन खतरे में था।

मिट्टी की झोपाड़ियाँ और पहाड़ियों में खोदी गई गुफाओं में रहते थे। उनकी झोपाड़ियों में कोई दीवार नहीं थी और फर्श ताड़ के पत्तों से बनाया गया था। गुफाओं को लाल गेरू से रंगा गया था और सामुदायिक उत्सवों के लिए इनका इस्तेमाल किया जाता था। इस कबीले के सदस्य शिकारी थे, और जंगल उनकी जीविका का स्रोत थे। उन्हें इस बात पर गर्व था कि उनका बाहरी दुनिया से बहुत कम संपर्क था। जो उनके लिए ठीक भी था। वे दुनिया में नवपाषाण काल से पहले के आखरी बचे कबीलों में से एक थे, और बाहरी दुनिया से उनका लगातार संपर्क कई समस्याएं लेकर आ सकता था।

इंसानों के बजाय, जानवर उनके दोस्ते थे—हाथी, बाघ, तेंदुए, हिरण, काला हिरण, जंगली भैंस, भालू और लकड़बग्घे जो जंगल में घूमते-फिरते थे। वहां पक्षी भी थे: रंगीन कौवे, बुलबुल, बब्बलर, मैना, कौवे और यहां तक कि गिद्ध भी। कबीले के लोग हर जानवर की उपस्थिति का पता उसके मल, आवाज़ और गंध से लगाते थे। वे अपने आसपास के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की आदतों की गहरी जानकारी रखने के लिए प्रशिक्षित थे। यह लगभग वैसा ही था मानो उन्हें उस दुनिया से अलग नहीं किया गया जिसमें वे रहते थे। वे जंगल के साथ घुल-मिल चुके थे।

उनके भोजन में वो सब कुछ शामिल था जो जंगल उन्हें दे सकता था—मेवे, मछली, जामुन, जंगली शहद, खाने लायक छाल, नारियल, जंगली पौधे और शिकार। वे मछली पकड़ने के लिए धनुष जैसे भाले और बेलों से बुने गए मछली के जाल का इस्तेमाल करते थे। दुनिया से अलग-थलग होते हुए भी कबीले के लोग उत्कृष्ट योद्धा थे। उनके हथियारों में धनुष, तीर, गुलेल, चपटे धनुष, गदा और कठोर लकड़ी से बने भाले शामिल थे।

हज़ारों वर्षों में उनकी जिंदगी में कुछ भी नहीं बदला था। इसके बावजूद कि जंगल के आसपास के इलाकों में जमकर विकास हुआ था। इस मामले में उनके रक्षक थे सत्यमंगलम के बाघ। इन राजसी जानवरों के अस्तित्व की चिंता ने सरकार को पूरे क्षेत्र को संरक्षित वन अभयारण्य घोषित करने के लिए प्रेरित किया था। नतीजा यह हुआ कि बहुत कम बाहरी लोगों को इसमें जाने की अनुमति थी और जंगल फलता-फूलता रहा। समय-समय पर, वन अधिकारी बंदर जैसे अजीब जीवों को देखने की रिपोर्ट करते थे, लेकिन ड्यूटी पर शराब पीने के लिए उन्हें तुरंत फटकार लगाई जाती थी।

कबीले के हर सदस्य में जो समानता थी वह थी उनकी शारीरिक बनावट। उन सभी के कंधे और छाती चौड़ी, उभरे हुए बाइसेप्स और मांसल जांघें थीं। उनके लंबे बाल सूखे लताओं से बने हेडबैंड से बंधे रहते थे। वे कभी-कभी जानवरों की खाल या कमर के चारों ओर बेल की स्कर्ट के अलावा कोई कपड़ा नहीं पहनते थे। फेरिक ऑक्साइड से भरपूर खनिजों से मिलने वाले लाल गेरू से वे अपने चेहरे को लाल रंगते थे। यह रंग उनकी भारी भौंहों, लंबे, उभरे हुए चेहरों और बड़े दांतों और जबड़ों को प्रमुखता से दिखाने का काम करता था।

इकोलिकम कबीले का मुखिया था। वो निःसंदेह उनमें से सबसे सुंदर और सर्वोत्तम डील-डौल वाला था और अपने सिर पर मुकुट की तरह एक लता पहने रखता था। कबीले की परंपराओं में मुखिया का पद वंशानुगत नहीं था। उसने गठबंधन और

आक्रामकता का इस्तेमाल करके इस ऊंचाई पर पहुंचने को लड़ाई लड़ी थी। उसकी हैसियत अब इतनी हो चुकी थी कि वो इलाका तय करने, गश्त लगाने, साथी चुनने और लूट का बंटवारा करने जैसे मामलों में अंतिम फैसला सुनाता था। उसके नीचे कई और आदमी थे जो उसकी मंडली का हिस्सा थे और उसे सत्ता में बनाए रखने में मदद करते थे। लेकिन वो चुनौती देने वाले अगले शख्स को लेकर हमेशा सावधान रहता था। इकोलिकम अपने कबीले से ऐसी भाषा में बात करता था जिसमें केवल दस आवाजें थीं —सात व्यंजन और तीन स्वर। यह साधारण, कंठ से बोली जाने वाली भाषा थी जो कबीले के बाहर नहीं बोली जाती थी।

अभी उसने प्रार्थना में अपनी हथेलियां उठाई, उसका चेहरा सुबह की रोशनी में चमक रहा था। जैसे ही उसके हाथ आकाश की ओर बढ़े, उसने ऊपर की ओर छलांग लगा दी, उसके चौड़े कंधे लचीले हो गए और उसकी पीठ की मांसपेशियां लहरा उठीं और वो हवा में कई फीट ऊपर उछल गया। यह एक सहज उड़ान थी, और वो एक ऊंचे पेड़ की शाखा पर आराम से जा बैठा। कबीले के लोगों ने एक-एक करके उसका अनुसरण किया। जब वे सभी ज़मीन से ऊपर पेड़ों की चोटी पर पहुंच गए, तो उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर संकेत के लिए इकोलिकम की ओर देखा। उसके सिर से इशारा करने पर उन्होंने गाना शुरू कर दिया।

### 31

सदर बाज़ार की कम भीड़-भाड़ वाली गलियों में से एक में एक ऐसी दुकान थी जिस पर आसानी से नज़र नहीं जाती थी। यह दुकान इस बाज़ार के हिसाब से अजीब थी क्योंकि इसका मालिक पुरानी चीज़ों का कारोबार करता था, जिसकी उम्मीद यहां शायद ही कोई करता था। उसका नाम पैम को एक कॉमन फ्रेंड ने दिया था जिसने दुकान मालिक के भरोसेमंद होने की गारंटी ली थी। बाहर का बोर्ड इस हद तक टूट-फूट गया था कि उसे पढ़ना भी मुश्किल हो गया था। जैसे ही पैम अंदर आई, एक छोटी सी घंटी बज उठी, जिससे दुकानदार को किसी ग्राहक के अंदर आने की जानकारी मिल गई। पैम ने उसे अपना नाम बताया और वह आदमी पान से सने अपने दांत दिखाते हुए मुस्कुराया।

सदर बाज़ार भारत के सबसे बड़े थोक बाज़ारों में से एक था। इसमें कई छोटे बाज़ार थे, जिनमें से हर बाज़ार किसी खास कमोडिटी के लिए मशहूर था। अगर किसी को घरेलू सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, खिलौने, नकली आभूषण, कपड़े, चमड़े के सामान, स्टेशनरी, प्लास्टिक के बर्तन या फर्निचर खरीदना चाहता था, तो ये सारी चीज़ें सदर बाज़ार में खरीदी जा सकती थीं। यह महंगे ब्रांड के नकली सामान के लिए भी शानदार जगह थी, इसकी पतली और भीड़भाड़ वाली गलियों में फेरीवाले घूम-घूमकर यहां के वर्कशॉप में बनने वाले नकली लक्ज़री ब्रांड बेचने की कोशिश करते थे। सदर बाज़ार में कभी भी कोई उबाऊ पल नहीं होता था, यहां खाने-पीने की चीज़ें बेचने वाले घी या किसी कम गुणवत्ता वाले तेल में तली हुई मिठाइयां और नमकीन एक साथ आंख, नाक और जीभ सभी को उकसाते रहते थे।

मालिक ने उसे एक जजर स्टूल पर बैठाया और चमड़े का एक फ़ोल्डर खोला, जिसकी प्लास्टिक आस्तीन के अंदर अलग-अलग प्राचीन और मध्ययुगीन सिक्के थे। वह पैम को मन लुभाने वाली वेरायटी दिखाने के लिए पन्ने पलटने लगा। उसकी बेशकीमती संपत्तियों में से एक था ब्रिटिश इंडिया ट्रिन करेंसी सिक्का, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने वाले भारतीय सैनिकों को भुगतान करने के लिए बनाया गया था। फिर उसने पैम को 1939 का एक रुपये का सिक्का दिखाया। उसने गर्व से कहा, 'भारत में ढाला गया आखरी शुद्ध चांदी का सिक्का।' उसने रानी विक्टोरिया के दौर की सोने की मुहर दिखाने के लिए पन्ना पलटा।

‘मुझे इनसे भी पुरानी चीज़ चाहिए,’ पैम ने थोड़ी अधीरता से कहा। वह मेरा समय क्यों बर्बाद कर रहा है जबकि वह जानता है कि मुझे क्या चाहिए?

मालिक ने सिर हिलाते हुए हामी भरी। ‘सब्र रखें, मेमसाब,’ उसने कहा। ‘मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आपको वही मिले जो आप चाहती हैं। मुझ पर भरोसा रखें; मेरे पास सारी चीज़ें हैं।’ साफ़ था कि यह उसके लिए केवल एक कारोबार नहीं था। पुराने सिक्के जमा करना उसका जुनून था। उसे हर सिक्के की उत्पत्ति समझाने और उसके साथ जुड़े इतिहास के पहलुओं के बारे में बात करने में मज़ा आता था।

उसने राशि चक्र पर आधारित मुगल काल की मुहर को दिखाने के लिए एक और पन्ना पलटा। उलटे पन्ने पर, उसने रज़िया सुल्तान, नूरजहां और नागनिका के नाम पर जारी दुर्लभ सिक्कों पर अपनी उंगलियां आराम से फिराईं। उसने बुदबुदाते हुए कहा, ‘महिलाओं के नाम पर बहुत ज़्यादा सिक्के जारी नहीं किए गए। यही बात उन्हें इतना दुर्लभ बनाती है। मर्दों ने ज़्यादातर जगह पर कब्ज़ा कर लिया।’

अब भी ज़्यादा कुछ नहीं बदला है, पैम ने सोचा।

इसके बाद उन्होंने मालवा के शाहों द्वारा जारी किए गए अष्टकोणीय सिक्के, शाक्यों के आहत (ठप्पा मारकर चिह्न बनाए) सिक्के, गांधारों के चांदी के सातमान और पांच चिह्नों वाले मौर्य सिक्के देखे। उसके पास पांचाल, इंडो-सीथियन, पांड्य और बैक्ट्रियन सिक्के थे।

और फिर पैम को वह चीज़ दिख गई जिसे वो ढूंढ रही थी। उसने राहत की सांस ली। दुकानदार के पास उस चीज़ के लिए एक पूरा सेक्शन था। सीसा, तांबे और कांसे में ढले हुए, वे सिक्के गोल और चौकोर आकृतियों में थे। वे आकार में अलग-अलग थे, एक इंच के चार-दसवें हिस्से से लेकर एक इंच तक की चौड़ाई वाले। मालिक ने उसकी आंखों में उत्साह की चमक देखते हुए कहा, ‘सबसे छोटे का वजन लगभग आधा ग्राम है, जबकि सबसे बड़े का वजन लगभग दस ग्राम है।’ सिक्कों पर विभिन्न प्रतीक अंकित थे: बैल, शेर, स्वस्तिक, हाथी, जहाज़। ‘आपको ये कहीं भी नहीं मिलेंगे, ऑनलाइन या कहीं और। यहां तक कि दुनिया के सबसे बड़े संग्राहकों के पास भी ये नहीं हैं।’

‘आपके पास ये कैसे आए हैं?’ पैम ने पूछा।

वह हंस पड़ा। ‘अगर किसी में इच्छाशक्ति हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। हर बड़े

संग्रहालय का क्यूरेटर, संग्रहकर्ता और पुरातत्वावेद जानता है कि मैं सही सिक्के के लिए सही कीमत चुकाऊंगा।’

‘मुझे कैसे पता चलेगा कि वे नकली नहीं हैं?’ उसने पूछा, फिर अपनी जीभ काट ली। मालिक यह सुनकर सच में आहत दिख रहा था। उसने जल्दी से चमड़े का फोल्डर बंद कर दिया और पैम को चले जाने का इशारा किया। इतने दशकों में, किसी ने भी उसकी ईमानदारी या उसके सिक्कों के मूल-स्रोत पर कभी सवाल नहीं उठाया था।

पैम ने बार-बार माफ़ी मांगी। दुकान मालिक का गुस्सा शांत होने और फ़ोल्डर को फिर से खुलवाने में कुछ मिनट और लग गए। पैम ने उसके सामने आए सभी सिक्कों को देखा और एक को चुना। उसने कीमत पर जमकर मोल-तोल की। अगर वो ऐसा नहीं करती तो उस पर शक हो सकता था।

आखिरकार, एक कीमत पर सौदा तय हुआ। ‘ये कीमत देकर आप मुझे नुकसान पहुंचा रही हैं,’ मालिक ने कहा। ‘लेकिन आप एक अच्छी इंसान हैं, और मैं चाहता हूं कि आप और ज्यादा खरीदारी के लिए वापस आएं।’ पैम के पास उसे यह बताने की हिम्मत नहीं थी कि यह शायद उसकी पहली और आखरी मुलाकात थी।

पैम ने नकद भुगतान किया और सिक्का अपनी जेब में रख लिया। फिर वह मार्क के ऑफिस लौट आई। उसने मार्क से एक बहुत ही खास गुज़ारिश की, उसे पक्का यकीन नहीं था कि मार्क अपनी टीम से ऐसा करवा पाएगा या नहीं।

लेकिन पैम की किस्मत अच्छी थी।

‘ज़रूर,’ मार्क ने सिक्के को देखते हुए कहा। ‘यह काम बारीक है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं अपने लोगों से तुम्हारे लिए ऐसा करवा सकता हूं।’ वह उसे देखकर मुस्कुराया। पैम उस मुस्कुराहट को जानती थी क्योंकि वह कोई साधारण मुस्कुराहट नहीं थी। मार्क की आंखों में चमक थी और पैम को ठीक-ठीक पता था कि इसका मतलब क्या था। वो दूसरी ओर देखने लगी। वो दोबारा उसके चक्कर में नहीं पड़ने वाली थी। उनके रिश्ते में किसी और जटिलता की ज़रूरत नहीं थी। अतीत की बातें बीत चुकी थीं और उस अध्याय को ख़त्म कर दिया गया था।

जब पैम मार्क के ऑफिस से निकली, उसका फ़ोन बजने लगा। यह जनरल जय ठाकुर का फ़ोन था। वो चुपचाप खड़ी रही और उसका गुस्सा झेलती रही क्योंकि उसने सवाल किया कि पैम ने जय ठाकुर की सहमति के बिना मार्क के साथ मामले पर चर्चा क्यों की थी। पैम ने बिना किसी बहस के उसकी बात सुन ली। पूरा युद्ध जीतने के लिए किसी एक मोर्चे पर युद्ध हारना बेहतर था। सनकी बूढ़ा, उसने मन में सोचा।

### 32

पहली निगरानी मीनार के सेनापति वांगसियांग की सलाह पर मैं पांचवीं मीनार से बचकर निकल गया। इसके बजाय, मैं रेत की नदी, गशुन गोबी शामो,<sup>26</sup> में तीस मील दूर चला गया। मैं एक दिन के भीतर, रेगिस्तान के अंत में स्थित नखलिस्तान, जंगली घाड़ों के झरने<sup>27</sup> तक पहुंचने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन मैं मूर्ख था और मुझे यह

एहसास नहीं था कि रेगिस्तान की रेत अच्छे-अच्छे इरादों को पीछे धकेल सकती है। इस उजाड़ इलाके में घास का एक तिनका भी नहीं उगता था। वहां कोई झाड़ियाँ, जानवर या पक्षी नहीं थे। ऐसा लग रहा था कि वहां कोई जीवन ही नहीं था। और मैं अपना रास्ता भूल गया। रेत का हर टीला अगले टीले जैसा दिखता था। तेज़ गर्मी और कड़ी धूप के कारण ध्यान केंद्रित करना लगभग असंभव हो गया था। मैंने गर्मी, धूप और उड़ती रेत से बचाने के लिए अपने सिर, नाक और मुंह को स्कार्फ से ढक लिया, लेकिन किसी चीज़ से मदद नहीं मिल रही थी।

मेरी मुसीबतें और भी बढ़ गईं, जब बकरी की खाल का मेरा थैला ज़मीन पर गिर गया। मेरा कई दिनों का पानी पलक झपकते ही खत्म हो गया। मैं बस इतना कर सकता था कि पानी मिलने पर थैले को दोबारा भरने की उम्मीद में उसे रख लूं। निराशाजनक रूप से मैं रास्ता भटक चुका था। वांगसियांग और कई दूसरे लोगों की चेतावनियां मुझे डराने लगी थीं। मैं इतना ज़िद्दी क्यों हो गया था? मैंने उनकी सलाह पर ध्यान क्यों नहीं दिया? मैं इस झक्की उद्यम को शुरू करने के बजाय शाज़ोउ क्यों नहीं चला गया?

मैं वापस प्रकाश स्तंभों की ओर मुड़ गया, यह सोचते हुए कि अब मेरे पास कोई और विकल्प नहीं था। लेकिन फिर मेरे ऊपर अपराध की अपार भावना हावी हो गई। मुझे डि सैन सू चुआन बनने का अपना मिशन याद आया। मेरे दिमाग ने मुझे प्रकाश स्तंभों की दिशा में अपने कदमों को पीछे ले जाने के लिए कहा, लेकिन मेरे दिल ने ठीक इसके विपरीत कहा।

आखिरकार, मैंने अपने दिल की बात सुनी।

मुझे ठीक से याद नहीं कि मैं रेगिस्तान में कितने दिनों तक भटकता रहा। शायद पांच दिन, लेकिन ज़्यादा भी हो सकते थे। या कम। समय बीतने की गणना करने के लिए, आगे बढ़ने के लिए मेरे पास ज़्यादा कुछ नहीं था। मैं एक विशाल रेगिस्तान में था, मेरा गला सूख रहा था और भयानक भूख लगी हुई थी। ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरी त्वचा धूप में भुन गई हो। रात में, रेत से निकलती आग की लपटों से मैं भयभीत हो गया। मुझे बाद में पता चला कि वे रेत के नीचे सड़ती लाशों से उत्पन्न गैसों से लगी आग थीं। मुझे बताया गया कि उन्हें लाश वाली मोमबत्तियां कहा जाता था।

पांचवें दिन मैं ज़मीन पर गिर गया, आगे चलने में असमर्थ था और मैं बुद्ध से मुक्ति देने के लिए प्रार्थना करने लगा। ऐसा लग रहा था कि मेरी मांसपेशियों को लकवा मार गया हो। मेरे सिर में इतना तेज़ दर्द हो रहा था कि हर कदम मेरी खोपड़ी पर हथौड़े की तरह महसूस होता था। मैं रेगिस्तानी रेत पर लेटा हुआ अपनी ज़िंदगी से दूर जा रहा था, कभी होश आता तो कभी बेहोशी छा जाती, मैं बुद्ध से प्रार्थना कर रहा था कि मुझे मौत दें।

अचानक, एक ठंडी हवा ने मेरी त्वचा को छुआ। किसी के दुलार की तरह कोमल। मैं लड़खड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ और ठंडी हवा को अपने चेहरे पर महसूस किया। मुझमें जान लौटती महसूस हुई, जो कुछ और कदम चलने के लिए पर्याप्त थी।

मैं फिर चल पड़ा, लेकिन मेरा घोड़ा दूसरी दिशा में भटक गया। मेरे पास उसके पीछे जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

मैं असहाय था, और मैंने उस दुबले-पतले छोटे घोड़े को मुझे रास्ता दिखाने की अनुमति दी। यह मेरे द्वारा किया गया अब तक का सबसे अच्छा काम साबित हुआ। जल्दी ही मेरे सामने एक छोटा सा हरा नखलिस्तान था जिसके बीच में झिलमिलाता पानी था। मैं सोच रहा था क्या यह एक और मृगतृष्णा थी। क्या होगा अगर मैंने पानी पीने की कोशिश की और पता चले कि यह सब मेरी कल्पना थी? लेकिन फिर मैंने अपने घोड़े को पानी पीते देखा और मैं समझ गया कि यह कोई मृगतृष्णा नहीं थी।

मैं और मेरा घोड़ा काफी देर तक पानी पीते रहे। हमने ऐसे पिया जैसे हमने पहले कभी पानी का स्वाद नहीं चखा हो। और यह पानी मेरे लिए अब तक का सबसे मीठा पानी था। मैंने अपना पानी का थैला भर लिया। हमने थोड़ी देर आराम किया और जल्द ही फिर से अपने रास्ते पर थे। मैं हंस पड़ा; उस छोटे घोड़े ने मेरी जान बचाई थी, जो मेरा सफेद घोड़ा करने में असमर्थ होता। कभी-कभी सबसे अप्रत्याशित परिचित आपका रक्षक बन सकता है।

दो दिन बाद, हम यिजू के नखलिस्तान पहुंचे, जो बर्फ से ढके स्वर्ग के पर्वतों<sup>28</sup> की तलहटी के किनारे स्थित नखलिस्तानों की शृंखला में से पहला था। इन पहाड़ों के हिमनद का पानी ढलानों से नीचे उतरकर अंत में ताकेलमगन शामो के टीलों में चला जाता था। प्राकृतिक रूप से यह पानी रेगिस्तान की रेत में खो जाता, लेकिन यिजू के निवासियों ने भूमिगत चैनलों और कुओं की एक कुशल प्रणाली विकसित की थी जिससे वे इस पानी को इकट्ठा करते और फिर इस्तेमाल करते थे। इस प्रणाली ने उन्हें बाजरा, चावल, गेहूं, सेम, भांग, खरबूजे, अंगूर और यहां तक कि शहतूत के पेड़ बहुतायत में उगाने में मदद की। उजाड़ के बीच खेती के इस स्वर्ग को देखना प्रकृति का एक संपूर्ण चमत्कार था।

यिजू में, लंबी यात्रा की थकान दूर करने के लिए, मैं एक मंदिर में रुका जहां तीन चीनी भिक्षु रहते थे। वे अपनी मातृभूमि से किसी को देखकर बहुत खुश हुए और उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए। रास्तों के इन जैसे मठों से ही बुद्ध की शिक्षाओं ने चीन में प्रवेश किया था। भिक्षुओं ने मेरी इस तरह देखभाल की जैसे मैं परिवार का कोई बिछड़ा हुआ सदस्य था। उन्होंने मेरे घावों का इलाज करने और मेरे पैरों के छालों को ठीक करने के लिए जड़ी-बूटियों और दवाओं का इस्तेमाल किया। उन्होंने मुझे खरबूज खिलाए जितने मीठे खरबूज मैंने कभी नहीं खाए थे। मैं उनके आतिथ्य के लिए आभारी था और कुछ समय उनके साथ रुका।

लेकिन यिन्दु का रास्ता मुझे बुला रहा था।

मैंने यिन्दु के लिए उत्तरी मार्ग लेने की योजना बनाई क्योंकि यह घास के मैदान से होकर गुजरता था। मध्य और दक्षिणी मार्ग रेगिस्तानी इलाकों से होकर गुजरते थे। मैंने यात्रा के अगले चरण के लिए अपनी तैयारी शुरू कर दी, लेकिन गाओचांग<sup>29</sup> के एक

संदेश से मेरी योजनाएं बिगड़ गईं।

गाओचांग मध्य मार्ग पर स्थित एक साम्राज्य था। गाओचांग के राजा चाहते थे कि यिज़ू के पुजारी यह सुनिश्चित करें कि मैं उनके सामने उपस्थित होऊँ। संदेश अशुभ लग रहा था, और मुझे नहीं पता था कि क्या होने वाला था। राजा ने मुझे यिज़ू से लाने के लिए घोड़े भेजे थे।

मैंने अचानक अपने आप को सैनिकों की एक टुकड़ी से घिरा हुआ पाया, और सोचने लगा कि मैं राजा का अतिथि हूँ या बंदी।

### 33

पैम बैग पैक करने के लिए घर गई। अगली सुबह चेन्नई की उड़ान के लिए उसने जल्दी से कुछ कपड़े और ज़रूरी सामान अपने फौजी होल्डॉल में रख दिए, जबकि उसकी मां देखती रही और बड़बड़ाती रही।

‘ऐसी क्या ज़रूरत आ गई है कि तुम्हें तुरंत जाना है?’ उसकी मां ने बिस्तर पर खुली हुई डायरी पर नज़र डालते हुए पूछा। पैम बार-बार पन्ने पलट रही थी और अपने पिता के रेखाचित्रों को फिर से देख रही थी।

पैम ने जवाब दिया, ‘कोई है जिसका मुझे पता लगाना है। उनका अंतिम मालूम पता कांची का है, और निकटतम हवाई अड्डा चेन्नई है। एक कार मुझे चेन्नई से वहां ले जाएगी। यह लगभग दो घंटे की दूरी पर है।’

‘मुझे तुम्हारी चिंता है, बेटा,’ पैम की मां ने विचलित होकर कहा। ‘मैंने उस आदमी को खो दिया जिससे मैं प्यार करती थी, और अब तुम ही मेरे पास हो। मैं तुम्हें भी खोने का जोखिम नहीं उठा सकती। लेकिन तुम बिल्कुल उसके जैसी हो। बहादुर, मज़बूत और लापरवाह।’

पैम जो कर रही थी, वह रोक दिया। वो अपनी मां के पास गई और उसे गले लगा लिया। ‘मुझे कुछ नहीं होने वाला, मां। आप जीवन भर मेरे साथ फंसी रहोगी।’

उसकी मां मुस्कुराई। त्रासदी ने उन्हें उम्र से अधिक बूढ़ा बना दिया था, लेकिन पचपन साल की उम्र में भी वो एक बेहद खूबसूरत महिला बनी रहीं। उनका सुडौल शरीर, बेदाग रंग और रेशमी बाल उन्हें कुलीन दिखाते थे। कर्नल किशन खुराना के ज़्यादातर दोस्त उनसे ईर्ष्या करते थे क्योंकि उन्हें उनमें से सबसे अच्छी दिखने वाली पत्नी मिल गई थी। चूंकि वो उनसे नौ साल छोटी थीं, इसलिए कर्नल पर नियमित रूप से बहुत कम उम्र की महिला से शादी करने का आरोप लगाया जाता था।

पैम की मां ने कहा, ‘इतने सालों के बाद भी मुझे यकीन करना मुश्किल होता है कि वो अब मेरे साथ नहीं हैं। उस दिन सुबह ही मैंने उनसे मन्नार से नाव पर चढ़ने और रामेश्वरम के लिए रवाना होने से पहले बात की थी।’

‘तब उनके मन की स्थिति क्या थी?’ पैम ने पूछा। यह बातचीत वो अपनी मां से कई बार कर चुकी थी लेकिन कभी थकती नहीं थी। जब भी उसकी मां उस भयानक दिन की घटनाओं के बारे में बताती थी तो उसे कुछ अतिरिक्त जानकारी मिल जाती थी।

‘वो किसी बात को लेकर बहुत चिंतित थे। वो कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उन्होंने खुद को रोक लिया था। मैंने उनसे पूछा कि वो हवाई जहाज़ के बजाय नाव से क्यों जा रहे थे। उन्होंने कहा कि वो दिल्ली लौटने से पहले दक्षिण में कुछ दिन रुकना चाहते थे। मैं पूछने ही वाली था कि वो वास्तव में कहां रुकने की योजना बना रहे थे, लेकिन उन दिनों फ़ोन लाइनें बहुत खराब होती थीं और हमारा संपर्क कट गया। वही आखरी बार था जब मैंने उनकी आवाज़ सुनी थी। वो केवल पैंतीस साल के थे।’

पैम की मां ने थूक गटका। उस आखरी बातचीत के बारे में बात करते हुए इतने सालों बाद भी उनकी आंखें हमेशा नम हो जाती थीं।

‘वास्तव में उनके साथ हुआ क्या था?’ पैम ने पूछा। ‘आप कभी भी नहीं बतातीं।’

‘ऐसा इसलिए क्योंकि मुझे जो बताया गया वह भी आधा-अधूरा है। नौसैनिक नाव गोदी से निकलकर पाक जलडमरूमध्य की तरफ जा रही थी। तुम्हारे पिता डेक पर सिगरेट पी रहे थे। उस रास्ते पर भारतीय नौसेना के कई जहाज़ थे, लेकिन मौसम खराब था और बादल छाए थे। आसपास मछली पकड़ने वाले कुछ टॉलर भी थे। यह मुमकिन है कि उनमें से एक लिट्टे की कमान में रहा हो। तुम्हारे पिता को पता नहीं कहां से एक गोली आकर लगी। हमें अभी भी नहीं पता कि गोली कहां से आई। हम बस इतना जानते हैं कि यह जानलेवा था। उन्हें डॉक्टर के केबिन में ले जाया गया, जहां इलाज किया गया लेकिन कुछ ही मिनटों में उनकी मौत हो गई।’

पैम देख रही थी कि उसकी मां के आंसू छलकने वाले थे। ‘आपको कब पता चला?’ उसने आगे पूछा।

‘अगले दिन। उन लोगों ने तुम्हारे पिता के शव को दिल्ली भेजने से इनकार कर दिया और इसके बजाय मुझे चेन्नई ले गए, जहां मेरे पहुंचते ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। वह एक विद्युत शवदाह गृह में रखा हुआ एक बंद ताबूत था, इसलिए मैं उन्हें देख भी नहीं सकी। मुझे केवल उनकी राख मिली।’

‘इतनी जल्दी क्यों? क्या उन्होंने पोस्टमार्टम किया था?’

‘आमतौर पर सशस्त्र बलों का डॉक्टर ऐसा करता है, लेकिन पोस्टमार्टम के नतीजे मुझे कभी बताए नहीं गए,’ पैम की मां ने कहा, उनके गाल ताज़ा आंसुओं से भीगे हुए थे। ‘उन्होंने मुझे उनकी निजी चीज़ें देने की भी जहमत नहीं उठाई। सौभाग्य से, उन्होंने अपने एक दोस्त को अपनी डायरी, लाइटर, पेन और हिप फ्लास्क से भरा एक मनीला लिफाफा दिया था, और उससे कहा था कि अगर उन्हें कुछ भी होता है तो वह इन्हें मुझे दे दे। यह भी अजीब था, मानो उसे किसी प्रकार का पूर्वाभास हो गया हो।’

पैम ने उन कई मौकों को याद किया, जब उसने अपने पिता से जुड़ाव महसूस करने के लिए उनकी चीज़ों को छुआ था। वो शुक्रगुज़ार थी कि उन सामानों को बचा लिया गया था और वे उसके पास थीं। खासतौर पर डायरी।

‘आपको क्या लगता है कि सबकुछ इतने गुप्त तरीके से क्यों किया गया?’ उसने पूछा।

‘साजिश,’ उसकी मां ने पूरे यकीन के साथ जवाब दिया। ‘बहुत बड़ी साजिश। मुझे नहीं पता कि तुम्हारे पिता क्या जानते थे, लेकिन मेरा दिल मुझसे कहता है कि यही

जानकारी उनकी मौत की वजह बनी।’

पैम को पता नहीं था कि वो अपनी मां के शक का जवाब कैसे दे। वो बस यकीन करना चाहती थी कि एक बेहद व्यस्त युद्ध गलियारे में कहीं से अचानक आई एक गोली ने उसके पिता को मार डाला था। लेकिन उसकी मां के शब्दों में कुछ ऐसा था जो सच था। उसने अपने मन में चल रहे द्वंद्व को समझने की कोशिश की। वह रहस्य क्या हो सकता था?

लगभग उसके मन को पढ़ते हुए, उसकी मां ने जवाब दिया, ‘मुझे नहीं पता कि वह बड़ा रहस्य क्या था। तुम्हारे पिता एक अनुशासित सैनिक थे और उन्होंने कभी कोई ऐसी बात साझा नहीं की जो उन्हें नहीं करनी चाहिए थी। उनमें हर चीज़ को अलग-थलग रखने की बेजोड़ क्षमता थी। मुझे याद नहीं आता कि उन्होंने कभी मेरे साथ काम के बारे में कुछ साझा किया हो, न ही उन्होंने कभी अपने सहकर्मियों से परिवार के बारे में बात की हो। पैसे के मामलों में भी वो ऐसे ही थे। अगर सेना की पेंशन और वेगावती ट्रस्ट से सहायता नहीं मिली होती, तो मुझे नहीं पता कि हम कैसे काम चलाते।’

पैम ने अपने पिता की डायरी के रेखाचित्रों के बारे में सोचते हुए हामी भरी। बंदर जैसी विशेषताओं वाला वह व्यक्ति कौन था? क्या वह पुरुष था, स्त्री था या जानवर था? उसके पिता ने उस विशेष आकृति का रेखाचित्र क्यों बनाया था? और इसके साथ वे वाक्य क्या थे, जो बिना सोच-समझे लिखे लगते हैं? उसने अपने पिता की उस कविता को गुनगुनाया जिसका कोई मतलब नहीं निकलता।

बा-मा-को-की-जू-का-लो

वी-नू-को-की-मू-पा-लो

सी-वा-को-की-सू-पा-लो

हा-नू-को-की-पू-दा -जो

‘सावधान रहना, बेटा,’ उसकी मां ने कहा। ‘मुझे डर है कि तुम्हें भी कुछ हो जाएगा। कोई गैर-ज़रूरी जोखिम नहीं लेना।’

### 34

पैम ने चेन्नई के लिए उड़ान भरी और कैब से कांची के लिए रवाना हुई। मिलनसार ड्राइवर ने यह सुनिश्चित किया कि उसका सफर आरामदायक रहे, एयर कंडीशनिंग को बिल्कुल सही तापमान पर रखा और पीछे की सीट पर उसके लिए ठंडे मिनरल वाटर की एक बोतल रखी। पैम ने देखा कि उसने खाकी वर्दी पहन रखी थी, जो कैब वालों को पसंद थी और उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। गाड़ी चलाते समय उसने खुद को तेज़ रोशनी से बचाने के लिए धूप का चश्मा पहना हुआ था।

दिल्ली में ठंड के मुकाबले यहाँ मौसम काफी बदला हुआ था। शुक्र है, ड्राइवर बातूनी नहीं था, जो पैम के लिए ठीक था। हालांकि, वह अक्सर अपने रियर-व्यू मिरर में पैम को देखता रहता था। पैम ने उसे नज़रअंदाज़ किया।

एक बार जब वे कांची पहुंच गए तो उन्होंने वेगावती नदी के किनारे स्थित अकादमी

को और जाने का रास्ता लिया। उन्होंने वह सड़क ली जो नदी के समानांतर चलती थी और अंत में एक निजी रास्ते में बदल गई। यह रास्ता कई सालों से इस्तेमाल नहीं हो रहा था, और इसमें सड़क के मुकाबले गड़ढ़े ज़्यादा थे। जो ड्राइव कुछ मिनटों की होनी चाहिए थी उसमें करीब एक घंटा लग गया। पैम ने सोचा कि जिस तरह से कार हिल-डुल रही थी, उसे स्लिप डिस्क की दिक्कत ना हो जाए। लेकिन आखिरकार वे पहुंच ही गए।

यह पूरी तरह से जर्जर स्थिति में था। वहां केवल एक ही गेट था और उस पर ताला लगा हुआ था। गेट पर एक जंजीर पर 'अतिक्रमण निषेध' का एक पुराना बोर्ड लटका हुआ था, जिसमें संभावित घुसपैठियों को बाहर रहने की चेतावनी दी गई थी। गेट के नीचे जंगली घास और खरपतवार के जमावड़े से संकेत मिल रहा था कि इसे बहुत लंबे समय से नहीं खोला गया था। पैम ने ड्राइवर से कार को साइड लेन में पार्क करने और उसका इंतज़ार करने को कहा।

उसने घूम-घूमकर तलाशी ली कि वहां कोई कैमरा तो नहीं था। एक बार जब उसे यकीन हो गया कि वहां कोई कैमरा नहीं था, तो वो गेट की ओर बढ़ी और फुर्ती से उस पर चढ़ गई। उसे डर था कि यह उसके वजन से चरमराते हुए गिर जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दुखद रूप से यह साफ़ दिख रहा था कि इस भूखंड को कई साल, संभवतः दशकों पहले छोड़ दिया गया था। जब वो धूल भरे रास्ते पर चल रही थी तो वो तनाव में थी। उजाड़ और खाली जायदाद उसे हमेशा डराती थीं। उसके चारों ओर, मैदान कमर तक ऊंची घास-फूस से ढका हुआ था। वो सोच रही थी कि कितने सांप पैरों के नीचे रेंग रहे थे, और काश उसने किसी को साथ लिया होता।

यह एक बहुत बड़ा परिसर था। कक्षाएं, रसोई, शयनगृह, स्विमिंग पूल और जिम जहां कभी खूब हलचल रहती थी, अब पूरी तरह से शांत और खाली, सुनसान और धूल से भरे पड़े थे। थोड़ा आगे, पैम को एक ढहती हुई ग्रे रंग की इमारत दिखी, जो एक भयानक राक्षस की तरह दिख रही थी। यह मुख्य रिहायशी ब्लॉक था।

जब वो ब्लॉक की तरफ बढ़ी, उसके पैर कीचड़ से सन गए। जब वो पास पहुंची तो उसने देखा कि छत ढह गई थी। ऐसा लग रहा था कि इमारत में आग लगी थी; कुछ दीवारें अभी भी काली और दरारों से भरी थीं। खिड़कियां या तो टूटी हुई थीं या धूल और गंदगी की मोटी परत से ढकी हुई थीं। उन खिड़कियों के पीछे घोर अंधेरा था। वो अनायास ही सिहर उठी।

जैसे ही वह मुख्य प्रवेश द्वार की ओर जाने वाले बरामदे में पहुंची, उसे लकड़ी का एक मज़बूत दरवाज़ा मिला, जिस पर ग्रैफिटी की परतें थीं। दरवाज़े को जंग लगे ताले ने बंद कर रखा था, और कुछ मोटी छिपकलियां दरवाज़े के चारों ओर बनी ईंट की दीवार पर पहरा दे रही थीं। वो सोचने लगी कि क्या यहां जांचने लायक कोई चीज़ होगी। राव के इस जर्जर स्थान पर रहने की संभावना बहुत कम थी।

वहां झींगुरों के अलावा कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। निकटतम बस्ती एक मील से अधिक दूर थी। हर जगह कूड़ा-कचरा फैला हुआ था—रैपर, इस्तेमाल किए हुए कंडोम, सिगरेट और टूटी हुई बोतलें। यह स्थान शायद सेक्स और नशीली दवाओं के

इस्तेमाल की चाह रखने वाले किशोरों के लिए बेहतरीन था। पैम खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनकर तेज़ी से पीछे घूम गई। यह एक कुत्ते जितना बड़ा चूहा था, जो एक खाली मेटल कैन को लुढ़का रहा था। उसने राहत की सांस ली।

उसके पास उस जगह घुसने के लिए सीबीआई से कोई वारंट नहीं था, लेकिन हालात और ज़रूरत की वजह से नियमों को तोड़ा जाना ज़रूरी था। उसने एक चिकना पत्थर उठाया और उसे जंग लगे ताले पर दे मारा। इन प्रहारों की आवाज़ वहां फैले सन्नाटे को तोड़ रही थी। जंग की केवल एक परत ने ताले को वहां जमाए रखा था, इसे खोलने के लिए दरअसल ज़्यादा कोशिश की ज़रूरत नहीं थी। उसने दरवाज़े पर लात मारी और धीरे-धीरे अंदर जाती गई। मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं अकेली नहीं हूँ?

दशकों तक छोड़े रहने की वजह से हर जगह धूल की एक मोटी परत जमा दी थी। पैम ने चारों तरफ देखते हुए अपने चेहरे पर रूमाल रख लिया। वो एंटेंस लॉबी से गुज़री। उसके दाहिनी ओर एक दरवाज़ा था जो ऑफिस के छोटे कमरों की तरफ जाता था। उसके बाईं ओर एक दीवार थी जिसमें हुक लगे हुए थे, जिनका इस्तेमाल तस्वीरें या सर्टिफिकेट लगाने के लिए होता होगा। उसके सामने एक चौड़ा जीना था जिसकी सीढ़ियां ऊपर की मंज़िल तक जाती थीं। वो उसकी ओर बढ़ी और अपनी जगह पर रुक गई जब कबूतरों का एक समूह अचानक हवा में उड़ने लगा, उनके पंखों की फड़फड़ाहट ने उसे चौंका दिया।

उसने एक गहरी सांस ली और हिम्मत जोड़ते हुए सावधानी से सीढ़ियां चढ़ती रही, यह उम्मीद करते हुए कि वे टूटेंगी नहीं। वो पहली मंज़िल पर पहुंची और एक बड़े कमरे में चली गई जिसमें टूटे-फूटे बेडफ्रेम थे। कमरे के सबसे दूर वाले छोर पर एक प्लेटफॉर्म था जिस पर एक पुरानी कड़ाही थी जिसका इस्तेमाल उम्मीदवारों को उनका खाना परोसने के लिए किया जाता रहा होगा।

पूरी इमारत में प्रशिक्षुओं से भरपूर शयनकक्ष रहे होंगे। पैम को लगा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए थे क्योंकि उसे महसूस हुआ कि डरावनी ताकतें अभी भी वहां फंसी हुई थीं। उसे अपनी सांस की आवाज़ सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि उस बड़े कमरे के भीतर हर आवाज़ गूंज रही थी। उसे अपने पेट में जकड़न महसूस हुई।

अपने पीछे अचानक हलचल को महसूस करते हुए, पैम पीछे की तरफ घूमी। लेकिन उसे प्रतिक्रिया देने में एक सेकंड की देर हो गई थी।

उसके बाएं जबड़े पर लगे वार से वो बेहोश होकर, धड़ाम से ज़मीन पर गिर गई।

### 35

पैम ने धीरे से अपनी आंखें खोलीं और याद करने की कोशिश करने लगी कि वो कहाँ थी। उसके सिर में हल्का दर्द उसे लगी चोट की याद दिला रहा था। वो अभी भी खाली पड़े शयनकक्ष के अंदर थी लेकिन फर्श पर एक साफ़ चादर पर लेटी हुई थी।

अपने ऊपर वो जंग लगी धातु की शहतीरों से बनी एक ऊंची छत देख सकती थी। वो जिस गंदे, टूटे-फूटे कंक्रीट के फर्श पर लेटी थी, उसकी दीवारों से ईंटें झांक रही थीं और टूटी हुई या गंदगी जमी हुई खिड़कियां थीं, जिन्हें उसने बाहर से देखा था। सिर के

ऊपर बड़ी ट्यूब्स और पाइप दिख रहे थे। इन्हें शायद ट्रेनिंग के दौरान कैडेटों के लिए ऊंचा ऑक्सीजन स्तर बनाए रखने के लिए लगाया गया था। उसके ऊपर एक पुराने बीम से तार के ज़रिए एक बल्ब लटका हुआ था।

सावधान न रहने के लिए पैम ने खुद को कोसा। उसने चारों ओर देखने के लिए अपना सिर घुमाया और एक लंबी महिला को अपने पास खड़ा पाया। अविश्वसनीय रूप से फिट और मज़बूत महिला पैम के साथ सीधे मुकाबले में आसानी से जीत हासिल कर लेती। लेकिन उसके व्यक्तित्व से एक अजीब तरह की शांति भी निकल रही थी।

‘तुम्हें नीचे गिराने के लिए मैं माफ़ी चाहती हूँ,’ महिला ने नरम लहजे में कहा, ‘लेकिन तुम घुसपैठ कर रही थी। तुम्हारे बेहोश होने के बाद ही मैंने तुम्हारी जेब में डीआरडीओ और सीबीआई के पहचान पत्र देखे। वह सिक्का भी।’

पैम ने कहा, ‘माफ़ी मुझे मांगनी चाहिए। मुझे यहां घुसना नहीं चाहिए था। मैं डॉ. राजा राव के ठिकाने का पता लगाने की कोशिश कर रही थी और मुझे बताया गया था कि उनका अंतिम पता यही था।’

‘मैं डॉ. राव की बेटी हूँ, अनु,’ महिला ने कहा। अपने सफ़ेद बालों के बावजूद वो आश्चर्यजनक रूप से एथलेटिक, हृष्ट-पुष्ट और ताक़तवर थी। उसने पैम की तरफ अपना हाथ बढ़ाया, जिसने आभार के साथ ज़मीन से उठने के लिए हाथ पकड़ लिया। पकड़ शिकंजे जैसी थी। ‘चलो बाहर चलते हैं,’ अनु ने कहा। ‘वहां अच्छा लगेगा।’

जब वे बाहर निकले, अनु ने पूछा, ‘तुम मेरे पिता को क्यों ढूँढ़ रही हो? तुम शायद जानती होगी कि वो किसी से नहीं मिलते। मैंने कई सालों से उन्हें किसी से भी मिलते नहीं देखा।’ भगवान का शुक्र है, वो ज़िंदा हैं, पैम ने सोचा।

अपनी चोट वाली जगह के दर्द को कम करने के लिए पैम ने वहां हाथ से सहलाया। अनु खेद के साथ मुस्कुराई। ‘यह एक कैरोटिड स्टाइक थी जिसके कारण तुम बेहोश हो गई,’ उसने समझाया। ‘इसमें कैरोटिड साइनेस तक चोट पहुंचाई जाती है, जो आपकी गर्दन के दोनों ओर, आपके जबड़े के थोड़ा पीछे होता है। चोट की वजह से दिमाग में अचानक ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिसके बाद आदमी बेहोश हो जाता है। कुछ ही मिनटों में सूजन कम हो जाएगी। एक बार फिर माफ़ी चाहती हूँ।’

‘आपने यह कहां से सीखा?’ पैम ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए पूछा।

‘मेरे पिता ने मुझे वो सारी चीज़ें सिखाई हैं जो मैं जानती हूँ,’ अनु ने सरलता से कहा। वे दोनों मुख्य द्वार की ओर चलने लगीं, उनकी आंखों को कड़ी धूप के साथ तालमेल बिठाने में थोड़ा समय लगा। वे ओलंपिक-साइज़ के एक टूटे-फूटे स्विमिंग पूल के पास से गुज़रे, जो अब एक गड़ढ़ा भर था जिसमें घास-फूस उग आई थी और ज़्यादातर टाइलें गायब थीं। एक तरफ एक जंग लगी मशीन पड़ी थी जिसके बड़े-बड़े पाइप पूल के किनारों में जा रहे थे।

‘वेव मशीन,’ अनु ने समझाया। ‘ट्रेनिंग में अलग-अलग तरह की ताक़तों से लड़ना सिखाया जाता था, जिनमें पानी की ताक़त भी शामिल थी।’

वे एक कीचड़ भरे रास्ते पर चल रहे थे जो बांस के झुरमुट से होकर गुज़रता था। ‘हम

अपना खुद का बांस फामे बनाए रखते थे क्योंकि केडेटों को टोनेंग के लिए लाठियों की ज़रूरत होती थी। हां, अब हम स्थानीय किसानों को उनकी कटाई करने देते हैं।’

‘वह क्या है?’ ऊपर जंग लगे नलों वाले बड़े-बड़े समानांतर पत्थर के ब्लॉकों की ओर इशारा करते हुए पैम ने पूछा।

‘हमारी लड़ाई में इस्तेमाल की जाने वाली लाठियां आमतौर पर बांस की होती हैं, लेकिन कभी-कभी हम सागौन या गुलाबी शाहबलूत की लकड़ी का भी इस्तेमाल करते हैं। चाहे कोई भी सामग्री हो, उसे मज़बूत करने के लिए उसे बार-बार पानी में डुबाना पड़ता है, फिर पत्थर पर पीटना पड़ता है। पत्थर के इन्हीं ब्लॉक्स पर लाठियां मज़बूत की जाती थीं।’

पैम वास्तव में उत्सुक थी। ‘बांस सुरक्षा के लिए काफी है?’

‘देखो, बांस की लंबाई इसे चलाने वाले की ऊंचाई पर निर्भर करती है,’ अनु ने जवाब दिया। ‘आदर्श रूप से, इसे अभ्यासकर्ता के माथे तक जाना चाहिए। सही ऊंचाई और सही हाथों में बांस का डंडा बेहद घातक हो सकता है। इस तकनीक को सिलंबम के नाम से जाना जाता है, यह एक प्राचीन मार्शल आर्ट है जिसकी उत्पत्ति इस इलाके में हुई थी जिसे अब हम तमिलनाडु कहते हैं। लेकिन इस जगह के बारे में इतनी जानकारी काफी है। क्या तुम मुझे यह बता सकती हो कि तुम किस कारण से अंदर आई?’

पैम ने अपनी परेशानी बताई। ‘सीमा पर चीनी हमलावरों के हाथों भारतीय सैनिक मर रहे हैं। हमें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि हमलावरों के अंदर इतनी ताकत, आकार या कौशल कहां से आया है। इकलौते शख्स जो इस बेहद गंभीर मुद्दे पर मेरी मदद कर सकते हैं, वो हैं आपके पिता। कृपया मुझे उनके साथ कुछ मिनट का समय दीजिए।’ वो जानती थी कि वो गुज़ारिश कर रही थी। ‘अगर वो तब भी चाहेंगे कि मैं चली जाऊं, तो मैं उनके फैसले का सम्मान करूंगी।’ वे दोनों उस मुख्य द्वार तक पहुंचीं, जिस पर पैम चढ़ चुकी थी, और वहां कुछ देर रुकी रहीं।

अनु ने सीधे पैम की आंखों में देखा। ‘मैं तुमसे केवल इतना वादा कर सकती हूं कि मैं अप्पा को तुमसे मिलवाने की कोशिश करूंगी। मैं इसकी गारंटी नहीं दे सकती कि वो मुलाकात करेंगे। मेरे साथ आओ।’

वे मुख्य द्वार के दाहिनी ओर पच्चीस कदम चले जब तक कि वे एक घने बाड़े तक नहीं पहुंच गए। बाड़े के भीतर एक छोटा विकेट गेट था जिसे अनु ने धक्का देकर खोल दिया। पैम को आश्चर्य हुआ कि अंदर जाते समय उसे यह कैसे नहीं दिखा। तब उसे एहसास हुआ कि गेट को बाड़े में इस तरह से बनाया गया था कि वह मुख्य सड़क और गेट से दिखाई नहीं देता था।

जल्द ही, वे एक लॉन पर खड़े थे जिसका रख-रखाव अच्छी तरह किया जाता था। इसके दाहिनी ओर चेट्टीनाड शैली में सागौन की लकड़ी से बनी एक छोटी सी झोपड़ी थी, जिसमें खंभों वाला एक बरामदा था। सामने के दरवाज़े पर बारीक नक्काशी की गई थी, लेकिन यह साफ़ था कि घर की देखभाल में कमी थी।

अनु दरवाज़े तक गई और खटखटाया, पैम उसके पास थी।

### 36

छह दिनों की पैदल यात्रा के बाद, मैं गाओचांग पहुंचा। सूखे और गर्म रेगिस्तानी रास्तों पर, यह एक थका देने वाली यात्रा थी, लेकिन इस बार मेरे दुबले-पतले घोड़े और मेरे पास पर्याप्त भोजन, पानी और लोगों का साथ था।

छठे दिन जब हम गाओचांग पहुंचे, तो अंधेरा हो चुका था। लेकिन राजा कुवेंताई ने सुंदर मंडप तक पहुंचने के मेरे रास्ते को रौशन करने के लिए सैकड़ों मशालधारियों की व्यवस्था की थी, जहां वे मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वो मुझसे ऐसे मिले जैसे मैं कोई सम्मानित अतिथि था और मुझे सम्मान के साथ ले जाकर बिठाया। पश्चिमी क्षेत्र—ज़ियू के नस्लीय चीनियों की सबसे बड़ी आबादी गाओचांग में थी—और राजा एक धर्मनिष्ठ बौद्ध थे। यह एक समृद्ध राज्य था क्योंकि चीन के रेशम और चाय और यिन्दु के मसाले और जवाहरात का व्यापार और आवाजाही यहीं से होती थी। इससे राजा को कर से मोटी कमाई होती थी। राजा भी उतने ही उदार थे, वो हर साल 9,000 राजकीय अतिथियों का स्वागत करते थे और उनका खर्च उठाते थे।

राजा मेरे बगल में बैठे; फिर उनकी रानी मेरे प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए मेरे सामने आई जो एक खूबसूरत और सुंदर ढंग से तैयार महिला थीं। उनके पीछे दासियों की कतार थी जिन्हें यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया था कि मैंने भोजन अच्छे से किया। इस बात का खयाल रखते हुए कि मैं शाकाहारी था, रानी ने सोच-समझकर दूध, चावल, शहद, बादाम, मेवों, फल, सब्जियों और बाजरे की रोटी की व्यवस्था कराई थी।

मेरे भोजन करने के बाद, राजा ने मुझे एक गद्देदार आसन पर बिठाया और मेरे बगल में बैठ गए। लंबी यात्रा के बाद मैं बहुत थक गया था, लेकिन मुझे शयनकक्ष में जाने देने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी। बुद्ध की शिक्षाओं पर चर्चा करते हुए, उन्होंने मुझे भोर तक जगाए रखा। आखिरकार, रानी ने उन्हें समझाया कि मुझे आराम की ज़रूरत थी। चार किन्नर मुझे एक सुंदर शयनकक्ष में ले गए, जहां मैं गहरी नींद में सो गया।

अगली सुबह जब मैं अपने कमरे से निकला, तो मुझे शहर का अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। दो वर्ग मील में फैला, यह तीन हिस्सों में बंटा था—एक बाहरी शहर, एक भीतरी शहर, और उसके अंदर शाही महल। नक्शा काफ़ी हद तक चांग'आन जैसा था, क्योंकि युवा कुवेंताई ने उस शहर में समय बिताया था और उसकी खूबसूरती से बहुत ज़्यादा प्रभावित थे। दरअसल, वो चीनी सम्राट के दरबार में गए थे और उन्हें बहुत से महंगे उपहार भेंट किए थे। गाओचांग शहर की दीवारें तीस फीट ऊंची थीं और पूरा शहर स्तूपों, मंदिरों, मठों, बगीचों और सुनियोजित घरों से भरा हुआ था। राजा ने मुझसे खासतौर पर बनाए गए एक मंडप में 300 अतिथियों को धर्मोपदेश देने का अनुरोध किया। मुझे मानना पड़ा।

अगले दिन, मैंने सम्राट को अतिथि सत्कार के लिए धन्यवाद किया और यिन्दु की यात्रा पर निकलने की इच्छा जताई, लेकिन उन्होंने मुझे ज़ोर देकर कुछ और दिन उनके अतिथि के रूप में रुकने के लिए कहा। मैं इस डर से मना नहीं कर सका कि कहीं उन्हें बुरा न लग जाए।

दस दिन बीत गए और अब मैं बेचैन हो रहा था। मैंने धीरे से यह बात उठाई, लेकिन राजा के पास मेरे लिए दूसरे विचार थे। वो चाहते थे कि मैं यिन्दु जाने का विचार छोड़ दूँ और उनके भरोसेमंद सलाहकार के रूप में उनके दरबार में शामिल हो जाऊँ। मैंने बड़े सम्मान के साथ मना कर दिया। आखिरकार, मैं अपने लक्ष्य से समझौता नहीं कर सकता था। उन्होंने मुझे रुकने के लिए ढेर सारा धन और खज़ाना देने की पेशकश की लेकिन मैं अडिग था। यहां तक कि उन्होंने अपनी सबसे वरिष्ठ उपपत्नी की बेटी के साथ मेरी शादी कराने का प्रस्ताव भी दिया अगर मैं संन्यास त्याग दूँ लेकिन मैं नहीं झुका। राजा ना सुनने के आदी नहीं थे, इसलिए वो बहुत गुस्सा हुए और आदेश दिया कि मुझे जबरन गाओचांग में रोका जाए। यहां तक कि उन्होंने मुझे एक कैदी के रूप में सम्राट ताइज़ोंग के पास लौटाने की धमकी भी दी।

मैंने अन्न और जल त्यागकर अनशन पर जाने का फैसला किया। सम्राट ने मुझसे ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। हर दिन वो और रानी खुद मेरे लिए भोजन लेकर आते और मुझे खाने-पीने के लिए मनाने की कोशिश करते लेकिन मैं मना कर देता। आखिरकार, तीन दिन बाद, मेरी सांस बहुत कमज़ोर पड़ गई, और राजा झुक गए, उन्हें लगा कि मुझे रोककर रखा तो वो मेरी मौत के लिए ज़िम्मेदार हो जाएंगे। उनके आश्वासन पर, मैंने पानी का घूंट लिया और थोड़ा सा भोजन किया। राजा के चेहरे पर राहत की लहर दौड़ गई।

अगले दिन, राजा और मैं एक बड़े चौकोर हॉल के अंदर बुद्ध की एक शानदार मूर्ति के सामने बैठे और उनके भरोसेमंद दरबारियों के सामने भाई होने की शपथ ली। इस प्रतिज्ञा का अर्थ यह था कि अब हम जीवन भर एक-दूसरे की रक्षा करने के लिए ज़िम्मेदार थे। उनकी प्रजा को धर्मोपदेश देने के लिए मैं कुछ और दिनों तक रुकने के लिए भी तैयार हो गया।

राजा ने मेरी तीर्थयात्रा के लिए मुझे मदद का वचन दिया और चार सक्षम भिक्षुओं को मेरे शिष्य के रूप में मेरे साथ जाने के लिए चुना। उन्होंने मुझे दस्ताने, चमड़े के जूते, नक्काब, तीस घोड़े और चौबीस नौकर दिए ताकि अपनी यात्रा के दौरान मैं आराम से रहूँ। साथ ही, उन्होंने मुझे सौ तोला सोना, 30,000 चांदी के टुकड़े और रेशम, साटन और टफेटा के 500 थान दिए। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मुझ पर महंगे उपहारों की बौछार क्यों की जा रही थी। आखिरकार, मैं सिर्फ एक साधारण भिक्षु ही तो था।

मैंने उनसे उनकी उदारता का कारण पूछा। उन्होंने जवाब दिया कि वो चाहते थे कि मैं अगले बीस सालों तक बिना कोई दान मांगे यात्रा कर सकूँ। सोना और चांदी यही सुनिश्चित करने के लिए थे। वो ये भी चाहते थे कि रास्ते में मिलने वाले दूसरे राजा भी

मेरी सहायता करें। साटन, रेशम और टफेटा उन राजाओं को भेंट करने के लिए थे। मैं रास्ते में जिन राज्यों से गुज़रने वाला था उनके लिए मेरे नए भाई ने 24 पत्र भी लिखे, जिसमें उन्होंने मेरे लिए सुरक्षित मार्ग और घोड़ों को बदलने का अनुरोध किया था। साथ ही, उन्होंने पश्चिमी तुर्की के महान खान के दरबार तक मुझे पहुंचाने के लिए अपने एक वरिष्ठ अधिकारी को नियुक्त किया।

गाओचांग के राजसी परिवार, भिक्षुओं और निवासियों ने मुझे भारी मन से विदा किया। मैं भी उन्हें छोड़कर उदास था, लेकिन मेरा लक्ष्य मुझे पुकार रहा था। निकलने से पहले मैंने राजा से वादा किया कि लौटते वक्त मैं गाओचांग में रुकूंगा। मुझे नहीं पता था कि मैं उनसे आखरी बार मिल रहा था।

### 37

मार्क अपनी कुर्सी पर आगे झुका और अपनी मेज़ पर रखे इंसुलेटेड बॉक्स को देखा। इसे थोड़ी देर पहले, डोकलाम से उसकी फॉरेंसिक टीम एक विशेष विमान में लेकर आई थी। गड़बड़ी के डर से उसने जल्दबाज़ी में अपनी मेज़ से कॉफी कप और पानी की बोतल हटाई थी।

उसके फ़ोन की लाइट जली, पैम का कॉल था। 'हां, सैंपल आ गया है,' उसने उसे आश्वस्त किया। 'मैं अपने सबसे अच्छे आदमी को काम पर लगाऊंगा। शुरुआती नतीजे आ जाएं तो मैं तुम्हें वापस फ़ोन करता हूं।' मार्क ने इंटरकॉम उठाया और अपने सबसे अच्छे फॉरेंसिक पैथोलॉजिस्ट को बुलाने के लिए लैब में फ़ोन किया।

'मुझे तुमसे कुछ बहुत ज़रूरी काम कराना है,' उसने उसे बॉक्स पकड़ाते हुए कहा। 'देखो कि क्या इस पर लगे खून से डीएनए प्रोफाइल निकालने की कोई संभावना है।' अगर कोई था जिसके काम पर मार्क भरोसा कर सकता था, तो वह यही आदमी था। इस पैथोलॉजिस्ट ने कई मौकों पर उसकी मदद की थी, खासकर जब वे सीमावर्ती क्षेत्रों में भारतीय सैनिकों के तनाव के स्तर का टेस्ट कर रहे थे। सैनिकों के ऊंचे तनाव की स्थिति में खून के कॉर्टिसोल स्तर को कम करने के लिए सीबीटीटी ने एक प्रायोगिक तकनीक विकसित की थी।

पैथोलॉजिस्ट ने इंसुलेटेड कूलर बॉक्स को खोला। अंदर एक पेपर बैग था। उसने बैग को उठाया, खोला और अंदर देखा। साफ़ था कि टूनिकेट को एक पेपर बैग में रखा गया था—जैसा कि आमतौर पर किया जाता था—ताकि खून सूख न जाए।

'खून अपेक्षाकृत ताज़ा लग रहा है,' उसने देखते हुए कहा। 'ऐसे में, कोशिकाएं अभी तक सुखी नहीं होंगी। मुझे नहीं लगता कि वे टूटी भी होंगी। अगर मैं सही हूं तो, सेरोलॉजिकल और मॉलिक्यूलर टेस्ट के साथ माइक्रोस्कोपिक टेस्ट भी मुमकिन होना चाहिए। मैं थोड़े समय में आपके पास लौटकर आता हूं।'

मार्क ने सिर हिलाते हुए हामी भरी।

पैथोलॉजिस्ट बॉक्स को अपने लैब में ले गया। कंक्रीट के अंदरूनी हिस्सों को चैनल ग्लास, मेटल पैनल और छेद वाली मेटल स्क्रीन से एक नई शकल दी गई थी। आइने

जिस तरीके से लगाए गए थे उससे लैब के चमकदार मेज़ और उपकरण धूप में नहाए लगते थे। लैब के एक तरफ की पूरी लंबाई में एक लंबी, सफेद, चमचमाती मेज़ थी। दूसरी दीवार के साथ अत्याधुनिक उपकरण—स्पेक्ट्रोमीटर, माइक्रोस्कोप, डीएनए सीक्वेंसर, थर्मल साइक्लर, सेंट्रीफ्यूज, इनक्यूबेटर, रोटरी इवैपरेटर और लायोफिलाइज़र रखे गए थे।

आर्टरी फोर्सेप की मदद से, उसने बैग से सावधानी से टूनिकेट निकाला और उसे एक बड़ी सिंगल-यूज़ डिश पर रखा। माथे पर लगे कैमरे से उसने वीडियो रिकॉर्डिंग शुरू की, उसने परीक्षण के लिए दाग और बिना दाग वाले मैटीरियल से छोटे हिस्से काटकर बाकी को एक सीलबंद और लेबल लगे लिफ़ाफ़े में रख दिया। उसने काटे गए हिस्से के एक छोटे भाग पर ल्यूमिनॉल छिड़का, लैब की लाइट बंद की और अंधेरा करने वाले पर्दों को गिरा दिया। जब लैब में पूरी तरह अंधेरा हो गया तो, टूनिकेट पर UV लाइट डालने से एक फ्लोरोसेंट चमक पैदा हुई। उसे पक्का भरोसा था कि ये खून था, लेकिन ल्यूमिनॉल झूठे पॉज़िटिव नतीजे देने के लिए जाना जाता था। उसे पुष्टि करनी होगी।

उसने खून का दाग लगे एक और छोटे हिस्से को एकज़ामिनेशन स्लाइड पर रखा और फेनोल्फथेलिन की एक बूंद डाली, उसके बाद हाइड्रोजन पेरोक्साइड की एक बूंद डाली। और यह हो गया, गुलाबी! लेकिन यह सीबीटीटी था, और अगर पूरी प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया तो मार्क भड़क जाएगा।

उसने टाकायामा क्रिस्टल टेस्ट के लिए एक सैंपल तैयार किया। उसने खून लगे नमूने वाली एक नई स्लाइड पर सावधानी से टाकायामा रिएजेंट डाला और उसे 115° सेल्सियस पर सुखाया। उसने अपने माइक्रोस्कोप से नतीजा देखा। उसे गहरे लाल, बेहद हल्के क्रिस्टल्स साफ़ दिख सकते थे। इसमें कोई शक नहीं था कि यह खून का ही दाग था। अब बड़ा सवाल यह था कि खून आया कहां से था।

डीएनए कोशिका के नाभिक के भीतर होता है। पहले चरण में उसे नाभिक को तोड़कर डीएनए मॉलिक्यूल को एक सॉल्यूशन में डालना होगा। उसके बाद वह कोशिका के बाकी पदार्थों और अवशेष में से उन कणों को अलग करने की कोशिश करेगा जो उसे चाहिए। उसने मैक्सवेल 16 नाम के एक ऑटोमेटेड सिस्टम को चुना जो करीब दो घंटे में काम पूरा कर देगा। सिस्टम के काम खत्म करने के इंतज़ार में उसने एक कॉफी ब्रेक लिया।

कुछ घंटों बाद, सैंपल मॉलिक्यूलर डुप्लिकेशन के लिए तैयार था। पॉलिमरेज़ चेन रिएक्शन के ज़रिए सिस्टम सैंपल डीएनए सीक्वेंस की लाखों नकल बना देगा। तब, कैपिलरी इलेक्ट्रोफोरेसिस का इस्तेमाल करके, वह सैंपल के लिए एक डीएनए प्रोफाइल तैयार करेगा।

लेकिन जैसे ही डीएनए के नतीजे आने लगे, पैथोलॉजिस्ट सोच में पड़ गया कि क्या उसने कहीं कोई गलती कर दी थी। उसने अपने सारे नोट फिर से जांचे, दिमाग में अपने सारे चरणों को फिर से दोहराया और वीडियो रिकॉर्डिंग चेक की। सभी प्रोटोकॉल का सही क्रम में पालन किया गया था, मिलावट की कोई संभावना नहीं थी। फिर भी सैंपल में गुणसूत्रों की संख्या अलग थी। ऐसा कैसे हो सकता था? उसने

मेनुअल प्राक्रेया का इस्तेमाल करके टूनेकेट से नए नमूने पर पूरी प्राक्रेया फेर से दोहराने का फैसला किया। उसने दूसरा हिस्सा काटा और उसे रासायनिक घोल में डुबोया। आगे बढ़ते हुए वह चरणों के बारे में सोच रहा था। यह एक लंबी रात होने वाली थी।

### 38

हेनान के डेंगफेंग काउंटी में अस्पताल के प्रवेश द्वार पर काली होंगकी लिमोसिन रुकी। कार को बुज़ांग के लिए महंगे चमड़े की सीटों और पॉलिश लकड़ी की सजावट के साथ कस्टमाइज़ किया गया था। प्रशिक्षण की जगह से अस्पताल तीस मिनट से भी कम दूरी पर था। दूसरे ग्रामीण चीनी अस्पतालों की तरह, यहां भी बहुत भीड़ थी। आधी-अधूरी मेटनेंस सुविधा और बदहाल उपकरणों के चलते इसका रख-रखाव भी खराब था।

गाड़ी से उतरने से पहले, किसी बदबू को दूर रखने के लिए बुज़ांग ने हथ्थे में बने चमड़े के खांचे से प्लैटिनम का एक छोटा जार निकाला, उसे खोला और अपनी मैनिक्चर की हुई उंगलियों से थोड़ा सा कपूर का बाम निकालकर अपनी नाक के नीचे लगाया। उसने अपनी स्वेगर स्टिक को मज़बूती से अपने एक हाथ में पकड़ा था।

उसके साथ एर्किन भी था। एक बंद दरवाज़े तक पहुंचने के पहले दोनों ने साथ में बड़ी लॉबी और रिसेप्शन को पार किया। बुज़ांग जहां से भी गुज़रता, कर्मचारी सावधान की मुद्रा में तनकर खड़े हो जाते लेकिन कोई भी उसके साथ नहीं गया। बुज़ांग ने अपना अंगूठा स्कैनर पर रखा और गेट खुल गया। वे एक गुप्त वॉर्ड में घुसे जिसमें सिर्फ सुरक्षा मंजूरी वाले कर्मचारी ही जा सकते थे। यहां तक कि चीन के राष्ट्रपति भी बुज़ांग के बिना इस जगह प्रवेश नहीं कर सकते थे।

गुप्त वॉर्ड एक नीरस जगह थी। दीवारें बोझिल ग्रे रंग में रंगी थीं और छत पर लगी तेज़ लाइटें ऐसी थीं जिनकी उम्मीद आप किसी जेल में कर सकते हैं। फर्श भी उतनी ही उबाऊ थी: अकल्पनीय, चिंतीदार टाइलों के लंबे ब्लॉक्स। नर्स और अर्दली भावहीन होकर अपना काम कर रहे थे, नमूने ले जाना, दवाएं पहुंचाना और मरीजों को संभालना। वॉर्ड की ओर जा रहे लंबे गलियारे के एक तरफ स्टील की बेंच थीं जिनका इस्तेमाल मरीज़ अपने अस्पताल के बिस्तर से ब्रेक लेने के लिए करते थे। दूसरा हिस्सा व्हीलचेयर में गाउन पहनकर बैठे मरीजों से भरा था।

बुज़ांग ने गलियारा पार किया और वॉर्ड में घुसा, उसके पॉलिश किए चमड़े के जूतों की खटखट उस वीरान जगह पर गूंज रही थी। एर्किन पूरे ध्यान के साथ कुछ कदम पीछे था। कॉमन वॉर्ड सौ बिस्तरों वाला एक बड़ा कमरा था। यह भी बाकी अस्पताल जितना ही नीरस और दयनीय था। इसकी इकलौती अच्छी खासियत ये थी कि यह बिल्कुल साफ़ था और उपकरण नए थे। लेकिन बदबू! बुज़ांग को अस्पताल में कीटनाशकों की बदबू से नफ़रत थी।

उसने अपनी नज़रें पूरे वॉर्ड में घुमाईं। वहां स्टील-फ्रेम वाले बिस्तरों की कई कतारें थीं जिन पर अस्पताल के धारीदार गाउन पहने कमज़ोर बूढ़े आदमी थे। जो लेटे नहीं थे वे

चलने की कोशिश कर रहे थे, उनकी आइवो डिप एक आज्ञाकारी पिंल्ले की तरह उनका पीछा कर रही थीं। एक कुबड़ा आदमी अपने बिस्तर से उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी रीढ़ ऐसे कोण पर मुड़ी थी कि उसके लिए यह मुश्किल था। एक आदमी बुरी तरह से खांस रहा था, दूसरा उदासी से एकटक शून्य में देख रहा था, तीसरा आदमी बेकाबू ढंग से छटपटा रहा था, एक और आदमी भयंकर रूप से उल्टी कर रहा था। उन सबमें जो बात एक जैसी थी कि वे सभी बहुत बूढ़े और कमजोर दिख रहे थे।

डॉक्टरों की एक समर्पित टीम आधुनिक चिकित्सा, हॉर्मोनल बूस्टर, एंटीबायोटिक और पारंपरिक चीनी उपचारों के मिश्रण से चिकित्सा समाधान तैयार करने में जुटी थी, लेकिन अब तक कुछ भी काम नहीं आया था। डॉक्टरों, नर्सों और अर्दलियों की एक टीम उन आदमियों की देखभाल करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वे थके हुए लग रहे थे।

एक डॉक्टर के कोट की जेब में एक मोटी और चमकीली पेन थी। उसने उस पेन से कभी भी कोई नोट या निर्देश नहीं लिखे थे। बल्कि, उसकी शांत आंखें नियमित अंतराल पर वॉर्ड की तस्वीरें ले रही थीं।

बुज़ांग ने इस दृश्य को निर्दयी आंखों से देखा। जबकि, एर्किन की आंखों में आंसू थे।

‘इन आदमियों की वास्तविक उम्र क्या है?’ बुज़ांग ने पूछा।

‘अठ्ठारह से बाइस,’ एर्किन ने अपनी आवाज़ में भावनाओं को छिपाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया। अगर आप इतनी जल्दी में नहीं होते तो ये सब टाला जा सकता था। यह वॉर्ड अब एक उपचार केंद्र नहीं रहा था। यह जीवन के अंत के एक केयर सेंटर जैसा बनकर रह गया था, मरणासन्न रोगियों का एक आसरा, जहां स्वस्थ युवा पुरुष मरने के लिए भेजे जा रहे थे।

बुज़ांग ने सीनियर डॉक्टर को अपने पास आने का इशारा किया। ‘इस बीमारी के बारे में क्या राय है?’ उसने पूछा।

डॉक्टर ने न में अपना सिर हिलाया। ‘हम सिर्फ यही कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें दर्द-मुक्त रख सकें और यथासंभव आराम दे सकें। हम तो यह भी भूल चुके हैं कि अब तक हमने कितने लोगों को खो दिया है।’

बुज़ांग ने अहंकार में अपनी छड़ी लहराकर, डॉक्टर को हटने और अपना काम करने का इशारा किया।

‘मुझे यह कहते हुए बुरा लग रहा है, लेकिन पिशिनोऊ को न खोजकर हम इन आदमियों को उनकी मौत के पास भेज रहे हैं,’ एर्किन ने कहा।

बुज़ांग ने त्यौरियां चढ़ाते हुए गुस्से में अपनी स्वैगर स्टिक मेटल के एक खाली स्टेचर पर मार दी। इसकी आवाज़ से सो रहे कुछ मरीजों की नींद खुल गई। नर्सें बुज़ांग को फटकार लगाना चाहती थीं लेकिन वे चुप रहीं। उनमें से कोई भी लेबर कैंप में नहीं जाना चाहता था।

मैं निकम्मे लोगों से घिरा हुआ हूं जिनके पास रचनात्मक हल खोजने की प्रतिभा ही

नहीं है,' वह तेज़ आवाज़ में बोला। 'मेरे पास शिकायत करने वालों के बजाय समस्या सुलझाने वाले लोग क्यों नहीं हो सकते?'

एर्किन चुप हो गया, लेकिन उसका दिमाग पागलों की तरह दौड़ रहा था। वह मन में प्रार्थना कर रहा था। अल्लाहुम्मा इन्नी औधु बीका मिन ज़ावली...

### 39

दरवाज़ा खुला। प्रवेश द्वार पर 90 से 99 साल के बीच का एक आदमी खड़ा था, जिसकी पीठ आश्चर्यजनक रूप से सीधी थी। उसके पूरे सिर पर काले बाल थे, और चेहरे की त्वचा पर यौवन जैसा कसाव था। उसने एक साधारण सफेद कमीज़ और फ्रीके क्रीम रंग की धोती पहनी थी। उसके माथे पर चंदन का टीका लगा था जिससे पता चल रहा था कि उसने सुबह की प्रार्थना की थी। अपनी ज़्यादा उम्र के बावजूद, उसने चश्मा नहीं लगाया था। ये एक ऐसे इंसान थे जो खुद को नष्ट होने से पूरी तरह बचाकर रखने में सफल रहे थे।

राव की आंखें सीधे पैम पर पड़ीं। फिर वो एक अजीब भाव के साथ अपनी बेटी की ओर मुड़े। ऐसा लग रहा था जैसे उसने एक अजनबी को उनके घर बुलाकर उनसे विश्वासघात किया हो।

वो चुपचाप मुड़े और लिविंग रूम में वापस चले गए जो उनका स्टडी रूम भी था। अनु और पैम झिझकते हुए उनके पीछे चल दीं। यह एक अंधेरी और सीलन वाली जगह थी, जो किताबों, लैब उपकरणों और दस्तावेज़ बाइंडरों से भरी थी। चंदन के लेप और चमेली की अगरबत्ती की हल्की महक हवा में तैर रही थी। छत पर दो पुराने पंखे आवाज़ कर रहे थे। खिड़की वाली एक दीवार बगीचे की ओर थी, जबकि बाकी तीन पर अलमारियां बनी थीं जो लगभग हर विषय—विज्ञान, चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म, इतिहास, माइथोलॉजी, आयुर्वेद, दर्शन, योग, पुरातत्व और भाषा विज्ञान की किताबों से लदी हुई थीं। खिड़की के पास की मेज़ भी किताबों और ढेरों नोटपैड से भरी हुई थी—लेकिन कोई कंप्यूटर नहीं था। मेज़ पर एक फाउंटेन पेन और पुराने ढंग की स्याही की एक बोतल सजी थी।

वो बुजुर्ग साफ़तौर पर इस बात से नाराज़ थे कि अनु एक अजनबी को घर ले आई थी, लेकिन अपनी गरिमा के कारण वो पैम के सामने ये कह नहीं पा रहे थे। अनु ने पैम को एक फटे-पुराने सोफे की ओर इशारा किया। पिता और बेटी लिविंग रूम से निकले और बगल की पैंटी में गायब हो गए। पैम ने इधर-उधर नज़र घुमाई और देखा कि घर में कोई तस्वीर नहीं थी। राव क्या छिपा रहे थे? या वो कुछ भूलने की कोशिश कर रहे थे?

पैम बातचीत के सिर्फ अंश सुन पा रही थी, तमिल और अंग्रेज़ी का मेल, लेकिन उसे इतना समझ आ गया था कि अनु को अपने पिता से फटकार पड़ रही थी। बदले में, वो यह कहकर उन्हें शांत करने की कोशिश कर रही थी कि अगर किसी और कारण से नहीं तो कम से कम देश के लिए, पैम से बात करनी चाहिए। 'देश ने मेरे लिए क्या किया है?' उस बुजुर्ग आदमी ने कड़वाहट के साथ जवाब दिया।

खासतौर से यह बात इतने गुस्से में चिल्लाकर कही गई कि पैम ने उसे सुन लिया। उसके दिमाग में संदेह नहीं था कि राव से बुरा बर्ताव किया गया था। वो मुझसे बात करने के लिए तैयार भी हो जाते हैं तो भी, वो कितना सहयोग करेंगे? और देव ने मुझे यहां क्यों भेजा? क्या यह यात्रा व्यर्थ हो गई?

बाहर आने से पहले उन दोनों के बीच कुछ और बातचीत हुई। अनु रसोई से पानी का गिलास लेकर आई और उसके पिता पैम की तरफ चेहरा करके बैठ गए। 'मुझे नहीं पता मेरी बेटी तुम्हें यहां क्यों लेकर आई है,' उन्होंने कहा। 'वो मेरी किसी से न मिलने की नीति को जानती है। मैंने कई सालों से यह नियम नहीं तोड़ा है। लेकिन मैं उसके फ़ैसले पर भरोसा करता हूं। उसे तुम पर भरोसा है। इसलिए तुम बोलो, बेटी। बताओ तुम्हें मुझसे क्या चाहिए।'

पैम बिना कुछ कहे सोफे से उठी और राव के सामने घुटनों के बल बैठ गई। फिर कांसे का एक सिक्का निकाला जो उसने सदर बाज़ार से खरीदा था, जिसमें अब एक चैन लगी थी। सिक्का प्राचीन पल्लवों का था जिसमें दोहरे-मस्तूल के जहाज़ का एक चिह्न था। उसने अपना सिर झुकाए रखा और नीचे देखते हुए, यह राव को दिया।

राव ने उससे सिक्का लिया और उसकी जांच की। उन्होंने इसे कई बार उलटा-पलटा, आकृति को ठीक से पहचानने के लिए आंखों को थोड़ा सिकोड़ा। 'शुरुआती पल्लव सिक्के केवल एक मस्तूल के जहाज़ को दर्शाते हैं, लेकिन उनके बाद के सिक्कों में दोहरे मस्तूल का चित्र है। यह दर्शाता है कि उनकी जहाज़ निर्माण तकनीक कितनी आगे बढ़ चुकी थी। यही कारण है कि उनके जहाज़ कोरोमंडल तट और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच समुद्री व्यापार पर हावी थे,' राव ने कहा। 'इस तरह के पल्लव सिक्के उन देशों में पाए जाते हैं जिनके साथ वे व्यापार करते थे।'

पैम समझ चुकी थी कि बुजुर्ग जज्बाती हो गए थे लेकिन सिक्के की बात करके वो अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहे थे। 'तुम्हारा नाम क्या है?' उन्होंने कांपती हुई आवाज़ में पूछा। उनकी बात को सुन पाना मुश्किल था।

'पैम खुराना।'

'दिवंगत कर्नल किशन खुराना से कोई रिश्ता है? जो आईपीकेएफ का हिस्सा थे?'

'वो मेरे पिता हैं...थे,' पैम ने गर्व से जवाब दिया।

राव तुरंत नर्म पड़ गए। उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और खड़े होने को कहा।

'तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?' उससे मिलने के बाद वो पहली बार मुस्कुराए। 'तुम्हारे पिता प्रिय मित्र थे। हम अक्सर मिला करते थे। करीब पच्चीस साल पहले हम अलग हो गए, लेकिन हमारे बीच असाधारण संबंध था। वो अक्सर तुम्हारे बारे में बातें किया करते थे। तुम उनके जीवन का प्यार थी। और निश्चित रूप से, तुम्हारी मां भी।'

उनके चेहरे की मुस्कान सच्ची थी, फिर भी जब उन्होंने पैम के पिता का जिक्र किया तो उनकी आंखों में एक उदासी थी।

'उन्होंने मुझसे या मेरी मां से कभी आपका जिक्र नहीं किया,' पैम ने निराश होकर

कहा।

‘वो जानते थे कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा,’ राव ने जवाब दिया। ‘वो तुम लोगों के जीवन को खतरे में डाल देते।’

#### 40

मेरे दल और मैंने हुयानशान<sup>30</sup> की निर्जन पहाड़ियों को पार किया। ये बंजर, लाल बलुआ पत्थर की पहाड़ियां थीं जो रेगिस्तान के उत्तरी छोर पर थीं। गहरी घाटियां दिन में कभी-कभी पहाड़ियों को लाल लपटों का रूप दे देती थीं।

मैं वहीं रुक गया, पहाड़ से उतरा और उन अद्भुत पहाड़ों को देखने में डूब गया। फिर मैं सावधानी से हुयानशान की चट्टानों के नीचे एक तंग घाटी में आगे बढ़ा। गहरी घाटी की ओर यह एक छोटा लेकिन जोखिम भरा रास्ता था, लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो मैंने अब तक का सबसे अद्भुत दृश्य देखा। खड़ी चट्टानों के फलक पर भिक्षुओं के लिए सैकड़ों गुफाएं थीं। बहुत नीचे से एक नदी बह रही थी। मैंने अब तक जितने मठ देखे थे, उनमें यह सबसे अद्भुत मठों में से एक था। इसे हज़ार बुद्ध की गुफाएं<sup>31</sup> कहा जाता था।

हज़ारों भिक्षु अपनी गुफाओं के अंदर से धीमी आवाज़ में मंत्रोच्चार कर रहे थे। उनके साथ मंत्रोच्चार करने के लिए मैं एक गुफा के मुहाने पर बैठ गया। मुझे जो शांति मिली वह सच में अद्भुत थी। संकरे किनारे पर बैठकर नीचे बहती हुई भव्य नदी का अद्भुत दृश्य एक रोमांचक अनुभव था।

भिक्षु चाहते थे कि मैं उनके साथ रहूं, लेकिन मैं जानता था कि मुझे अपनी यात्रा और डी सैन सू चुआन बनने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ना होगा। लेकिन मेरे निकलने से पहले, उन्होंने मुझे गुफाओं की सैर कराई। गोल और धनुषाकार छत वाली वे गुफाएं आकार में आयताकार थीं, जो बुद्ध की उत्कृष्ट नक्काशी से चमक रही थीं, जिनमें उनके जीवन के विभिन्न चित्रों को दर्शाया गया था। वे सभी कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण थीं।

मैंने अपने भिक्षु भाइयों से विदा ली और वहां वापस गया जहां मेरा दल मेरा इंतज़ार कर रहा था। आगे बढ़ने से पहले हमने थोड़ा आराम करने का फैसला लिया, क्योंकि हमारे मार्गदर्शक तेज़ हवाओं से बचना चाहते थे जिसका पूर्वानुमान लगाया गया था। मौसम के अवलोकन के लिए उन्हें किसी उपकरण की ज़रूरत नहीं होती थी और अक्सर यह हुनर उन्हें किसी ने सिखाया नहीं होता था, लेकिन प्रमुख स्थलों, हवा की दिशाओं, रेगिस्तान की स्थिति और खगोलीय स्थिति के अपने अपार ज्ञान का लाभ उठाने में वे महारथी थे।

मैं दूर से आती भेड़ियों की आवाज़ सुन सकता था, लेकिन भिक्षुओं ने मुझे भरोसा दिलाया था कि वे नुकसान नहीं पहुंचाते थे। तभी, सामान से लदा हुआ एक और कारवां वहां से गुज़रा, मैंने उन्हें रुकने की सलाह दी और हमारे साथ यात्रा करने को कहा।

उनके नेता ने मुझे चिंता दिखाने के लिए धन्यवाद किया लेकिन रुकने में असमर्थता जताई। स्पष्ट रूप से उनके काफ़िले में रेशम, हाथी दांत, पत्रा, इत्र, मसाले, कपास, जैतून का तेल और शराब थी, ये सब एक खास अवसर पर महान खान के पास पहुंचना था। समय पर पहुंचना महत्वपूर्ण था।

‘बेटा, हर कारवां एक जैसा नहीं होता,’ मैंने सलाह दी। ‘भिक्षुओं के कारवां की रक्षा के लिए बुद्ध होते हैं। राजनयिकों के कारवां में उनके राजा रक्षक के रूप में होते हैं। लेकिन व्यापारियों के पास इनमें से कोई नहीं होता। डाकू तुम्हें लूटने में हिचकिचाएंगे नहीं। हमारे साथ रहो क्योंकि हमें राजा गाओचांग का संरक्षण प्राप्त है। हमारे मार्गदर्शक बता रहे हैं कि तेज़ हवाएं थोड़ी देर में बंद हो जाएंगी। बाद में पछताने से अच्छा है कि सुरक्षित रहें।’

व्यापारियों का नेता मुझे देखकर मुस्कुराया। ‘मैंने जीवन में सौ से ज्यादा यात्राएं की हैं। मुझे सात बार लूटा गया है। हर बार, ईश्वर ने मेरी रक्षा की है। किसी यात्री की सबसे बड़ी खूबी यही है कि उसे कोई डर न हो। आदरणीय भिक्षु, आपके प्रस्ताव के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं, लेकिन मुझे जाना ही होगा।’ ऐसा कहकर, उसका दल हमारे पास से निकला और अपनी लंबी यात्रा पर आगे बढ़ गया।

अपने आपको तरोताज़ा करके, हमारे कारवां ने अगली मंज़िल की ओर 200 मील लंबी यात्रा शुरू की। ऐसा करने के लिए, हमें एक पर्वत श्रृंखला—सिल्वर माउंटेन<sup>32</sup> पर चढ़ना पड़ा जिन्हें उनके चांदी के भंडार के लिए जाना जाता था। यह एक मुश्किल चढ़ाई थी क्योंकि खनन ने रास्तों की मज़बूती घटा दी थी। लापरवाही का सिर्फ एक कदम हममें से किसी को भी मौत के घाट उतारने के लिए काफी था। गिद्ध हमारे सिरों पर मंडरा रहे थे, उन आदमियों की लाशों में से मांस नोच रहे थे जिनकी गिरने से असमय मौत हो गई थी।

हमने जैसे ही सिल्वर माउंटेन पार किया, हमें एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। हमारे रास्ते में निर्मम हत्या की गई दसियों लाशें बिछी थीं। उनका सामान लूटा जा चुका था और उनके जानवर कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। एक भी आदमी को ज़िंदा नहीं छोड़ा गया था। मैंने हुयानशान के धधकते पहाड़ों पर मिले उस व्यापारी को पहचान लिया। मैं उसके शव पर झुका और उसके लिए एक मौन प्रार्थना की। काश उसने मेरी सलाह मान ली होती, लेकिन शायद उसका समय आ गया था। कोई मृत्यु से तब तक नहीं बच सकता जब तक वह पहले से ही मरा हुआ न हो। और उसके बाद भी, कोई उसके बाद आने वाले अंतहीन चक्र से नहीं बच सकता।

अचानक, हमने दूर से जानवरों के पैरों की आवाज़ सुनी। धूल का गुबार छा गया, जब डाकूओं का एक बड़ा दल हमारे ऊपर आक्रमण करने के लिए सामने आया, उनकी तलवारें उठी हुई थीं और कड़ी धूप में चमक रही थीं। जैसे ही उन्होंने आने वाले खूनी खेल और लूटमार के बारे में सोचा उनके चेहरों पर शैतानी मुस्कान आ गई। पूरी आशंका थी कि इन्हीं लोगों ने हमारे पहले वाले कारवां के लोगों की हत्या की थी। अब

वे और ज़्यादा लूटपाट के लिए लौट आए थे।

हमारे साथ आए वरिष्ठ अधिकारी ने मामले को अपने हाथ में ले लिया। वह एक चट्टान पर खड़ा हुआ और चिल्लाकर बोला, 'अगर तुमने इस दल के एक भी इंसान को छुआ, तो तुम गाओचांग के राजा से युद्ध की घोषणा कर रहे होगे! इस दल का नेतृत्व राजा के दत्तक भाई, ह्वेनत्सांग, कर रहे हैं। ध्यान से सोच लो कि क्या तुम उनके क्रोध का भागी बनना चाहते हो। वहीं दूसरी ओर, अगर तुमने इस दल के सदस्यों के प्रति दया दिखाई, तो मैं तुममें से हरेक को एक बढ़िया पुरस्कार दिलाने की व्यवस्था करूंगा।'

डाकू समझ चुके थे कि राजा को शत्रु बनाने से कुछ हासिल नहीं होने वाला। वे शायद यह भी जानते थे कि राजा की बहन की शादी महान खान के बेटे से हुई थी। कोई भी महान खान को नाराज़ नहीं करना चाहता था, जिनका प्रभाव प्रांत के विशाल हिस्से तक फैला हुआ था। गाओचांग के राजा खुद भी महान खान के अधीन थे और उन्हें उनकी सुरक्षा मिली हुई थी। दोनों राजाओं के बीच के संबंध को डाकूओं ने भी गंभीरता से लिया।

राजा के अधिकारी से मिली इनाम राशि को उन्होंने स्वीकार कर लिया और राजा के क्रोध से बचाने के लिए आभार जताते हुए अपनी रिश्तत लेकर भाग गए। खान के लिए जो वस्तुएं थीं उन्हें हमने इकट्ठा कर लिया ताकि वे उनके पास सुरक्षित पहुंच सकें।

## 41

राव ने सिक्के को सावधानी के साथ एक रुमाल से साफ किया। उसके बाद उन्होंने चेन को गले में पहन लिया ताकि सिक्का उनके सीने से सट जाए।

'मैं इसके लिए आभारी हूँ,' उन्होंने पैम से मुस्कुराकर कहा। पैम के इस जेस्चर ने उनका दिल छू लिया था। वो अपनी किताबों की एक अलमारी के पास गए और कुछ ढूंढ़ते हुए किताबें इधर-उधर फैला दीं। उन्होंने किताबें बाहर निकालीं और उन्हें वापस रखा, उन्होंने खिड़की के नीचे रखे पुराने संदूक की दराज़ खोली, फोल्डर बाहर निकाले और कुछ सोचा, उन्होंने एक बक्सा खोला जो ज़मीन पर रखा था, किताब की ऊंची अलमारियों तक पहुंचने के लिए वो कुर्सी पर भी चढ़ गए। आखिरकार, वो खुशी से थोड़ा चिल्लाए क्योंकि वो जो खोज रहे थे वह उन्हें मिल गया था।

यह लाल रंग के कपड़े का एक बंडल था। जूते के सफेद फ़ीतों से कपड़े बांधे गए थे, ठीक वैसे ही जैसे भारत सरकार के विभागों में फाइलें होती हैं। कपड़े पर धूल की एक पतली परत जम गई थी। उन्होंने पांडुलिपि को दिखाने के लिए सावधानी से बंडल खोला। पन्ने एक किनारे पर एक साथ सिले हुए थे; कवर पर कुछ लिखा नहीं था और वह समय के साथ पीला पड़ चुका था।

राव ने बिना कुछ कहे पांडुलिपि पैम को सौंप दी। उसने इसे पलटकर देखा, इस बात को समझने की कोशिश करते हुए कि राव क्या बताना चाह रहे थे। उसे समझ नहीं आया कि उस किताब में क्या लिखा था, क्योंकि उसमें पहले एक अनुच्छेद मैडरिन और फिर दूसरा अनुच्छेद तमिल में लिखा था और ये दोनों ही भाषाएं उसे नहीं आती

थीं। पैम हैरान थी। उन्हें नहीं पता कि इन दोनों ही भाषाओं से मैं अनजानी हूँ? शायद बुढ़ापे की वजह से। 'क्या मैं आपसे आपके काम के बारे में कुछ पूछ सकती हूँ?' उसने जानना चाहा।

'यह दस्तावेज़ पढ़ने के बाद तुम मेरे पास वापस आना। तुम्हारे पास मेरे लिए जो सवाल हैं मुझे उनके जवाब देने में खुशी होगी। लेकिन तुम्हारी कोशिश करने से पहले नहीं। और, उड़िया कवि दिनकृष्णदास का लिखा रसविनोद भी पढ़ना। जब तक तुम इन दोनों किताबों को खत्म करोगी, तब तक तुम्हें अपने बहुत से सवालों के जवाब मिल चुके होंगे। इन्हें संभालकर रखना और जिस सम्मान के ये हकदार हैं, इन्हें वो देना। मैं तुम्हारे साथ यह सिर्फ इसलिए साझा कर रहा हूँ क्योंकि तुम मेरे प्रिय दोस्त की बेटी हो।'।'

पैम जानती थी कि उसके पास राव की बात मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उसे एक अनुवादक से मदद लेनी होगी। क्या इसे करवाने के लिए जया के पास रॉ के पूरे संसाधन नहीं होंगे? राव की ओर से मिलने वाली कोई भी जानकारी महत्वपूर्ण थी और इसे खोया नहीं जा सकता था। उसने किताब को अपनी बाजू के नीचे दबाया, बुजुर्ग आदमी को धन्यवाद किया और बाहर निकलने लगी।

निकलते वक्त, उसने राव की मेज पर एक छोटी सी मूर्ति देखी। इसमें तीन बुद्धिमान बंदरों को दर्शाया गया था जो 'बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो' के सिद्धांत को दिखा रहे थे। जब उसने इस बारे में पूछा, तो राव ने समझाया कि ये तीन आकृतियाँ जापान से हैं। 'यह विचार सत्रहवीं सदी में निक्को के एक तोशोगु मंदिर के दरवाजे पर की गई नक्काशी से प्रचलित हुआ था, लेकिन इसकी प्रेरणा चीन के कंप्यूशियस की आचार संहिता से आई थी। मैं तो इन तीनों के नाम भी जानता हूँ— बोक, बाखेंग और क्रोम। इस बारे में सोचना। सच्ची शक्ति तीन बंदरों के संकेतों पर चलने से आती है। और भारत में हमने बंदरों की जाति को हमेशा पवित्र माना है।'।'

अनु पैम को बाहर तक छोड़ने साथ आई। 'मुझे उम्मीद है तुमने शुरुआत में मेरे पिता के रूखे व्यवहार का बुरा नहीं माना होगा। अप्पा अभी भी सरकार के अपने साथ किए गए बर्ताव से दुखी हैं। उन्होंने बिना कोई कारण बताए, उनके जीवनभर के काम को अचानक रोक दिया था। उन्हें लगता था कि देश को चलाने के बजाय उसे बर्बाद करने वाली शक्तियों ने उनके साथ विश्वासघात किया था। लेकिन मैं जानती हूँ कि वो तुम्हारे पिता को सच में पसंद करते थे, इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि वो तुम्हारी मदद करेंगे।'।'

'मैं समझती हूँ,' पैम ने जवाब दिया। 'उन्हें मुझसे मिलने के लिए मनाने का शुक्रिया। मुझे पता है तुमने खतरा मोल लिया था। तुमने मेरे लिए परेशानी क्यों उठाई?'।'

'बस समझ लो कि मेरे मन की आवाज़ और मेरे अनुमान का मेल सही बैठ गया। तुम्हारी जेब से पल्लवों का सिक्का बाहर गिर गया था। इसे वापस रखते वक्त, मैंने तुम्हारे पहचान पत्र में तुम्हारा आखरी नाम देखा। यह संयोग कुछ ज़्यादा ही बड़ा था।'।' अनु मुस्कुराई।

‘आप कमाल की फिट हैं और अपनी उम्र के हिसाब से काफी जवान भी,’ पैम ने तारीफ़ करते हुए कहा। ‘मैं सोच भी नहीं सकती थी कि आपकी उम्र पैंसठ साल है। आप चालीस से एक दिन भी बड़ी नहीं लगती।’

‘तुम्हें मेरी उम्र कैसे पता?’ अनु ने तुरंत पूछा।

पैम ने अपनी जीभ दबा ली। उसने अनजाने में ज़रूरत से ज्यादा बोल दिया था। ‘ज़रूर देव ने बताया होगा,’ अनु ने सोचकर कहा। ‘कोई बात नहीं। तुम्हें किसी बात की पुष्टि या खंडन करने की ज़रूरत नहीं है। देव को भी नौकरशाही ने जबरदस्ती बाहर कर दिया था और मेरे पिता की पहल को बदनाम करने के लिए उसे चालाकी से इस काम में लगाया गया था। लेकिन उससे यह बात झूठी नहीं हो जाती कि उसे मेरे पिता की परवाह है।’ और मैं भी कभी उसकी परवाह करती थी। काफी समय पहले, उसने अप्पा को धोखा दिया, उसके पहले।

‘उसने आपके पिता के काम को किस तरह बदनाम किया?’ पैम ने पूछा।

‘इस बारे में बात न करें तो बेहतर है। बस ऐसा लग रहा था जैसे कोई अदृश्य हाथ देव का इस्तेमाल कर रहा था।’

एक असहज शांति छा गई। ‘लेकिन सच में,’ पैम ने विषय को बदलते हुए कहा, ‘आपके यौवन का रहस्य क्या है?’

‘मेरे पिता की ट्रेनिंग। जो लोग आते थे मैं उन्हें प्रशिक्षण देने वाली एक डिल सर्जेंट हुआ करती थी। वे मुझे एक आम औरत समझते थे लेकिन जब मैं उन्हें लड़ाई में आसानी से ज़मीन पर गिरा देती, तब वे चौंक जाते थे। हम महिलाओं को अपने पुरुष समकक्षों के मुकाबले खुद को बेहतर साबित करने के लिए हमेशा कहीं ज़्यादा कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।’

पैम ने सिर हिलाकर हामी भरी। अनु के साथ सहानुभूति रखना आसान था। वे दोनों ही मज़बूत-इरादों वाली महिलाएं थीं जिन्होंने अपने पद के लिए कड़ा संघर्ष किया था। पैम जहां थी वहां पहुंचने के लिए उसने भी स्त्रियों से भेदभाव और पुरुष-प्रधान समाज के खिलाफ संघर्ष किया था।

राव ने उसे जो बाइंडर दिया था, उसे अपने हाथ में लिए हुए पैम ने अनु से इजाज़त ली। अनु घर के अंदर वापस चली गई। पिता और बेटी ने चोरी से एक-दूसरे को देखा। ‘अप्पा, आपने उसे बताया क्यों नहीं?’ अनु ने पूछा। ‘उसे मालूम होना चाहिए। उसकी खुद की ज़िंदगी खतरे में पड़ सकती है।’

‘मैं उसे क्यों बताऊं कि मेरे पूर्वज मूर्ख थे?’ राव ने जवाब दिया। ‘और मैं उसे उसके पिता की अनुपस्थिति के बारे में कैसे समझाऊं? तुम चाहती हो कि मैं उससे कहूं कि मैं कमज़ोर था और दवाब के आगे झुक गया?’

राव ने एक घूंट पानी पिया और खिड़की से बाहर देखते हुए अपनी मेज़ पर बैठ गए। अनु ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया। वो जानती थी कि उनका दिमाग ओवरटाइम कर रहा था।

पैम शाम की फ्लाइट से उसी दिन दिल्ली लौट गई। लैंड करने पर, उसने जया को फ़ोन किया जिसे वो रॉ में जानती थी। जया तब से ही उसके फ़ोन का इंतज़ार कर रही थी जबसे उसके बॉस, वीटीके ने पैम की हर संभव मदद करने को कहा था।

पैम एयरपोर्ट से सीधे डीआरडीओ ऑफिस गई, जहां जया से 8 बजे मिलना तय हुआ था। अपने क्यूबिकल में पहुंचने के लिए उसने अपने एक्सेस कार्ड का इस्तेमाल किया, अपने डेस्क पर बैठी और दराज़ को अपनी चाबी से खोला। इसके अंदर बहुत से प्रोजेक्ट और मामलों से जुड़े नोटपैड, फाइलें और यूएसबी ड्राइव रखे थे। लेकिन कुछ अटपटा लग रहा था; वो हमेशा फाइलों को नोटपैड के नीचे रखती थी और यूएसबी ड्राइव को दाएं कोने में। अभी ऐसा नहीं था।

दराज़ की जांच करने के लिए वो अपने घुटनों के बल बैठी, बोल्ट को ध्यान से देखने के लिए अपने फ़ोन की फ्लैश लाइट का इस्तेमाल किया। पक्के तौर पर, लॉक पर खरोच के निशान थे, जो बता रहे थे कि ताला तोड़ा गया था। मेरा सामान किसने छुआ? उसे आश्चर्य हुआ। उसने खाली ऑफिस में चारों ओर देखा। क्या मुझ पर नज़र रखी जा रही है? हालांकि ऐसा नहीं लग रहा कि कोई चीज़ गायब हुई हो।

जब तक जया वहां पहुंची, डीआरडीओ खाली हो चुका था। भारतीय नौकरशाह काम पर देर से आने और जल्दी निकलने के लिए मशहूर हैं। हीटिंग बंद की जा चुकी थी, इसलिए पैम ने एक शॉल ओढ़ लिया। उसने थर्मस फ्लास्क से दो कप चाय निकाली जो उसे कैंटीन ने भेजी थी और एक जया को पकड़ाई। जया ने कृतज्ञतापूर्वक चाय ले ली।

भूमिका बांधने में समय गंवाए बिना पैम सीधे मुद्दे पर आ गई। 'मुझे ये डॉक्यूमेंट दिए गए हैं। ये उन भाषाओं में हैं जो मैं नहीं समझती। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो?'

'एक बार देखते हैं,' जया ने चश्मा लगाते हुए कहा। उसने पैम से बाइंड किए गए कागज़ लिए और पढ़ने लगी। पढ़ते वक्त उसके हाथ उसके गले में लटके लॉकेट से खेल रहे थे। 'तुम्हें ये किसने दिए?' पत्रे पलटते हुए उसने पूछा।

'एक पुराने दोस्त ने,' पैम ने साफ़ जवाब नहीं दिया। राव के साथ अपनी मुलाकात से जुड़ी कोई भी जानकारी वो किसी से साझा करने में सहज महसूस नहीं कर रही थी। कम से कम अभी तो बिल्कुल नहीं। जया को देखकर ऐसा नहीं लगा कि उसे बुरा लगा होगा। उनके काम में, जानकारी गुप्त रखना आम बात थी।

जया ने आगे पढ़ा तो उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। जब तक उसने कुछ पत्रे पूरे कर लिए, वो हंसने लगी थी। 'इस पांडुलिपि में सोलहवीं सदी की एक उत्कृष्ट चीनी रचना है,' उसने समझाया। 'इसे जर्नी टू द वेस्ट कहते हैं और इसे पहली बार मिंग राजवंश के समय छापा गया था। इस उपन्यास का श्रेय आमतौर पर वू चेंग'एन नाम के लेखक को दिया जाता है।'

राव ने मुझे यह उपन्यास क्यों दिया? सुपरह्यूमन इंजीनियरिंग से जुड़े मेरे सवालों के जवाब सोलहवीं सदी की एक कहानी कैसे दे सकती है?

'यह किस बारे में है?' पैम ने पूछा।

जया मगन होकर बोलती रही। 'यह चीनी साहित्य के चार सबसे महान क्लासिकल उपन्यासों में से एक है,' उसने बताया। 'यह बौद्ध भिक्षु ह्वेन-त्सांग की भारत यात्रा का काल्पनिक विवरण है।'

'शियान...' पैम ने बोलना शुरू किया।

'उनके नाम का उच्चारण "शियान-ज़ैन" है लेकिन लिखा जाता है X-U-A-N-Z-A-N-G,' जया ने धैर्य के साथ समझाया। 'स्कूल के दिनों में हम उनका नाम ह्वेनसांग लिखते थे। वो सुई राजवंश के आखरी दिनों और तांग राजवंश की शुरुआत में लुओयांग में जिंग तू मठ में एक भिक्षु थे। उन्होंने राजधानी चांगआन को छोड़ दिया—जिसे वर्तमान में शियान नाम से जानते हैं—और वर्ष 630 में किसी समय गंगा के मैदानों तक पहुंचने के लिए कई क्षेत्रों को पार किया जिनमें अब शिंजियांग, किर्गिस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, कश्मीर और पंजाब आते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में वो तेरह सालों तक रहे, नालंदा में पढ़ाई की और वर्ष 646 में चांगआन लौटने से पहले कई खज़ानों और बौद्ध ग्रंथों के साथ देश के कोने-कोने की यात्रा की।'

'तो यह उपन्यास उसी यात्रा का एक विवरण है?'

'वास्तविक यात्रा को ह्वेनसांग के शिष्य बियानजी ने भिक्षु की वापसी पर लिखा था। इसे ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजन्स कहा जाता है। तुम्हें जो उपन्यास दिया गया है वह उसी यात्रा से प्रेरित है लेकिन उसका वास्तविक विवरण नहीं है। यह एक साहसिक कथा, एक हास्य कथा, एक नीति कथा, एक लोक कथा और एक पौराणिक कथा को अपने में समेटे हुए है। और वैसे भी, उपन्यास का मुख्य किरदार ह्वेनसांग नहीं है।'

'फिर कौन है?'

'एक बंदर जो ह्वेनसांग के साथ है। उसका नाम है सन वुकोंग। उसमें एक सुअर भी है जिसका नाम है जू बाजी और रेगिस्तान का एक शैतान है, जिसका नाम है शा वुजिंग। ये टीम 81 मुसीबतों से गुज़रती है लेकिन आखिरकार पवित्र ग्रंथों को वापस लाने के अपने मिशन में सफल होती है।'

ये बंदरों का क्या चक्कर है? पैम ने सोचा। हर जगह उनका जिक्र हो रहा है!

जया ने पैम को समझाया कि कहानी मेंडरिन और तमिल में समानांतर रूप से पेश की गई है। 'अच्छी बात यह है कि मुझे तुम्हारे लिए इसका अनुवाद नहीं करना होगा। अलग-अलग सालों में किए गए कई अंग्रेज़ी अनुवाद पहले से ही मौजूद हैं: जैसे कि 1942, 1977 और 1982।'

'मुझे इनमें से कोई भी एक कैसे मिलेगा?' पैम ने पूछा।

'मैं तुम्हारे लिए एक मंगाती हूँ। आर्थर वेली का अनुवाद, मंकी पश्चिमी देशों में प्रसिद्ध है। मैं तुम्हें एक पीडीएफ़ मेल कर दूंगी। तब तक, मैं इस डॉक्यूमेंट की एक फोटोकॉपी ले जाती हूँ ताकि मैं यह देख लूँ कि इसमें लिखी गई बातें उस अनुवाद से मेल खाती हैं, जो मैं तुम्हें दूंगी। वैसे, मुझे इस काम में एक-दो दिन लग जाएंगे।'

मुलाकात खत्म होने का संकेत देते हुए पैम खड़ी हो गई, लेकिन जया बैठी रही। 'मेरी सलाह है कि तुम इस डॉक्यूमेंट को किसी और को मत देना,' उसने कहा।

‘क्यों?’ पैम ने पूछा। ‘अगर ये उपन्यास पहले से ही सावजनिक है तो इसे किसी और को देने में क्या दिक्कत हो सकती है?’

‘जब तक हम पूरा डॉक्यूमेंट अच्छी तरह से न देख लें, हम नहीं कह सकते कि यह पूरी तरह वैसा ही है। सार्थ ही, इसमें तमिल वाक्य भी हैं जो किताब का सटीक अनुवाद हो भी सकती हैं और नहीं भी। और...’

‘और क्या?’ पैम ने उत्सुकता से पूछा।

‘यह भी हो सकता है कि एक या दोनों भाषाओं में कुछ वाक्य ऐसे हों जिनमें एक कोड छिपा हो,’ जया ने कहा। ‘हमें अपने क्रिएनलिस्ट को इसे दिखाना चाहिए और देखना चाहिए कि क्या इसमें कोई अर्थ छिपा है जो बारीकी से देखने पर बाहर आ सकता है। तब तक, यही अच्छा होगा कि यह हम दोनों के बीच रहे।’

### 43

डेंगफेंग काउंटी में प्रशिक्षण केंद्र से दो वरिष्ठ शिक्षक मंदिर की ओर चले। वे आमतौर पर प्रशिक्षण केंद्र नहीं छोड़ते थे, लेकिन निर्देश स्पष्ट थे और मंदिर जाना ज़रूरी था। सर्पीला रास्ता पथरीला और खड़ी ढाल वाला था। ज़रा सी चूक का मतलब होगा सीधे कई सौ फीट नीचे गिरना। लेकिन भिक्षु इस मार्ग पर कई बार चल चुके थे। दोनों जब शाओलिन के दरवाज़े पर पहुंचे, वे पूर्ण मौन के साथ शेडो केव की ओर चल दिए।

अधिकांश प्राचीन स्मारकों की तरह, शाओलिन मंदिर में भी गुप्त कमरे, रास्ते और बाहर निकलने के मार्ग थे। सिर्फ पर्यटक ही नहीं, यहां तक कि शिक्षक और छात्र भी नक्शे को पूरी तरह नहीं जानते थे। कई जगहें छिपी हुई थीं, ताक-झांक करने वाली नज़रों से परे। आंखें जितना देख सकती थीं शाओलिन असल में उससे कहीं ज़्यादा बड़ा था। इसके बहुत से रहस्यों में से एक, एक कमरा था जहां सिर्फ एक ‘छाया दीवार’ से होकर ही पहुंचा जा सकता था। इस विशेष दीवार का एक महत्वपूर्ण इतिहास था और यह शाओलिन के अस्तित्व का अभिन्न अंग था।

शाओलिन के अस्तित्व का श्रेय एक भिक्षु को दिया जाता है जो वर्ष 495 में सम्राट शियाओवेन के दरबार में पहुंचा था। उसे माउंट सॉन्ग पर एक मंदिर बनाने के लिए ज़मीन दी गई थी। इसी अनुदान के परिणामस्वरूप शाओलिन की स्थापना हुई।

लेकिन तीस साल बाद, एक अन्य भिक्षु पश्चिम में एक दूर देश से मंदिर पहुंचे और प्रवेश की अनुमति मांगी। उन्होंने योगिक ध्यान की गहरी समझ होने का दावा किया, ऐसी प्रथा, जो सदियों बाद, दुनिया भर में ज़ेन बौद्ध धर्म के नाम से जानी गई। शाओलिन के महंत, फांग चांग, ने उन्हें प्रवेश देने से मना कर दिया। भिक्षु ने हर तरकीब आजमाई, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

मना किए जाने के बावजूद हठी भिक्षु ने मंदिर के पास एक गुफ़ा में शरण ली। वो अगले नौ सालों तक उसके अंदर रहे, यहां तक कि प्रकाश और ताज़ी हवा के लिए एक बार भी बाहर नहीं निकले। वो घंटों तक, गुफ़ा की एक दीवार के सामने, गहरे ध्यान में बैठे रहते थे; इसकी वजह से अंत में दीवार पर उनकी छाया अंकित हो गई। इसे छाया दीवार के नाम से जाना जाने लगा।

आखिरकार, महंत के पास उस हठी भिक्षु को शाओलिन में प्रवेश देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। अपने नौ साल लंबे ध्यान के दौरान, भिक्षु ने अपने हाथ-पैर, जोड़ों और रक्त संचार को उत्तम स्थिति में रखने के लिए एक व्यायाम दिनचर्या विकसित की थी। उनके व्यायाम का लक्ष्य ध्यान के लिए लंबे समय तक रहने वाली शारीरिक निष्क्रियता को बेअसर करना था। उन्होंने इन शारीरिक व्यायामों को जड़ी-बूटी से बने एक पेय के अलावा, युद्ध कलाओं से जोड़ा जो वो अपनी जन्मभूमि से सीखकर आए थे। एक बार जब उन्हें शाओलिन समाज में स्वीकार कर लिया गया, तो ये अभ्यास मंदिर में आम हो गए और कुंग फू के रूप में विकसित हो गए, वही मार्शल आर्ट जिसके लिए शाओलिन प्रसिद्ध हुआ।

दोनों वरिष्ठ आचार्य मंदिर में शानमेन हॉल से घुसे, मिंग राजवंश के समय पत्थर से बनाए गए दो बैठे शेरों को अनदेखा करते हुए। वे दिव्य राजाओं के कक्ष से होकर गुजरे, जिसके प्रवेश द्वार पर कई बौद्ध योद्धा रक्षकों की मूर्तियां थी, जो बड़ी बारीकी से पत्थर से बनाई गई थीं। वे चार राजाओं की मूर्तियों के सामने कुछ बुदबुदाए, जिन्हें मानव व्यवहार के लिए ज़िम्मेदार माना जाता था, और पत्थर के शेरों की मूर्तियों से घिरे महावीर हॉल में चले गए। वे हॉल की सुंदरता की तारीफ़ करने के लिए रुकें नहीं बल्कि इससे होकर पैगोडा जंगल के नाम से जाने जाने वाले एक समाधि-क्षेत्र में गए, जो सदियों से महत्वपूर्ण बौद्ध भिक्षुओं की समाधि के लिए उपयोग में आता था। फिर छाया दीवार तक पहुंचने के लिए उन्होंने समाधि-क्षेत्र पार किया। यही वो जगह थी जहां उनके हठी पूर्वज मंदिर में प्रवेश की प्रतीक्षा करते हुए नौ सालों तक बैठे थे।

कुछ दूरी से ही वो वुशु प्रशिक्षण केंद्र में अपनी दिनचर्या का अभ्यास करने वाले योद्धा भिक्षुओं की छोटी वूश-वूश की आवाज़ सुन सकते थे, जो साम्राज्य के अंदर सबसे सुहानी और दर्शनीय जगहों में से एक थी। सामान्य योद्धाओं के विपरीत, योद्धा भिक्षु एक बौद्ध संहिता से बंधे थे, नैतिकताओं की एक संहिता जिसे 'वूडे' कहते हैं। संहिता के सिद्धांतों में था, शिक्षकों के प्रति ईमानदार रहना, तुच्छ कारणों के लिए कभी नहीं लड़ना और किसी प्रतिद्वंद्वी को कभी उस सीमा से ज़्यादा घायल नहीं करना जो उसे काबू करने के लिए ज़रूरी हो।

शेडों केव बहुत बड़ी नहीं थी, बस करीब तेईस फीट गहरी और दस फीट ऊंची। दोनों वरिष्ठ आचार्य उस दीवार तक गए जहां कभी छाया अंकित हुई थी। अब वहां कोई छाया नहीं दिखती थी क्योंकि पूरी दीवार को कई वर्षों पहले सावधानी से अलग किया जा चुका था। इसे लगातार आने वाले ढेरों पर्यटकों के देखने के लिए एक संग्रहालय में रख दिया गया था।

एक आचार्य ने पत्थर की दीवार की गहराई में, ऊपरी दाएं कोने में एक दरार में अपनी उंगलियां डालीं। उन्होंने एक स्विच दबाया, और दीवार का एक हिस्सा घूमकर खुल गया। यह थोड़ा बेमेल लग रहा था, शाओलिन के पारंपरिक मठवासी परिवेश के लिए यह तकनीक कुछ ज़्यादा ही आधुनिक थी। खुलने वाली दीवार सैकड़ों वर्षों से थी लेकिन मूल रूप से एक हथ्थे से संचालित होती थी।

दोनों भिक्षु नपे-तुले कदमों से लगभग आदर भाव से कमरे में घुसे। कमरे में सिर्फ तेल

के दीपों से रोशनी आ रही थी, हालांकि शुद्ध हवा के लिए डक्ट्स बनाए गए थे। दरवाज़ा बंद हो गया और शिक्षक अगल-बगल रखे जेड (हरिताश्म) के तीन चबूतरों के सामने घुटनों के बल बैठ गए, उनमें से हर चबूतरा एक कलश को सहारा दे रहा था, उनके सामने अगरबत्तियां जल रही थीं। कमरे की धुंधली रोशनी में, कलशों का हाल बता पाना मुश्किल था, लेकिन वे निश्चित रूप से मंदिर की बहुमूल्य संपत्ति थे। जैसे ही दोनों व्यक्ति कलशों के सामने घुटने के बल बैठे, झिलमिलाते तेल के दीपक ने दीवारों पर नाचती हुई परछाइयों का एक आकार बनाया। प्लेटफॉर्म के सामने महीन रेशम का एक कालीन बिछा था; इसके ऊपर एक पांडुलिपि रखी थी। इसके कवर पर सोने की कढ़ाई में ये शब्द अकीर्ण किए गए थे 'यू-जिन-शी-सुई'।

'क्या हमें वही करना चाहिए जो हमसे कहा गया है?' उम्र में छोटे आचार्य ने पूछा। उसकी आवाज़ कांप उठी। वह द्वंद्व महसूस कर रहा था, और अब दबाव उस पर हावी हो रहा था।

उम्र में बड़े आचार्य ने निराशा के साथ धीरे से सिर हिलाया। उसने गंभीरता से कहा, 'काश स्थिति यहां तक नहीं आती।'

#### 44

आखिरकार, मैं अकिनी साम्राज्य पहुंचा<sup>33</sup> स्पष्ट रूप से 'अकिनी' नाम संस्कृत के शब्द 'अग्नि' से लिया गया था जिसका अर्थ होता है 'आग'। अकिनी के लोग जिस लिपि में लिखते थे उसे यिंदु में इस्तेमाल होने वाली एक लिपि के आधार पर तैयार किया गया था। वे मोटे ऊन के कपड़े पहनते थे। अकिनी के राजा ने मेरा अतिथि सत्कार किया, लेकिन मुझे वो झूठा और अहंकारी लगा। वो खुद को सम्राट ताईजोंग के बराबर समझता था, और ये सोचकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए कि अगर दोनों का आमना-सामना हुआ तो क्या होगा। कुची<sup>34</sup> के लिए निकलने से पहले मैं यान्की में एक दिन से भी कम समय के लिए रुका क्योंकि अभी सफर बहुत बचा था।

कुची के राजा मेरे नए दत्तक भाई, गाओचांग के राजा के दोस्त थे। जब उन्हें मेरे पहुंचने की खबर मिली, तो वो मेरे स्वागत के लिए अपने दरबार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ द्वार के बाहर प्रतीक्षा करने लगे। राजा के साथ सैकड़ों भिक्षु थे। कुची अपने संगीत वाद्य यंत्रों के लिए प्रसिद्ध था। राजा के साथ पूरे कुची का वादक समूह चल रहा था जिसे चांगआन में लोकप्रिय गाने बजाने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। मैं 'द जेड वुमन हैंड्स द कप अराउंड' और 'मीटिंग ऑन द सेवेन्थ इवनिंग' जैसे अधिक प्रसिद्ध गानों को पहचान पाया। मुझे नहीं पता था कि वादक समूह को प्रशिक्षण दिया जा रहा था ताकि संगीतकार और उनके वाद्य यंत्र सम्राट ताईजोंग को उपहार में दिए जा सकें।

राजा दीक्षित बौद्ध था, लेकिन चीनी मूल का नहीं था। वास्तव में, उसके लाल बाल, नीली आंखें और पीली त्वचा थी, जो इस बात का प्रमाण थे कि वह संकर नस्ल का था। लेकिन राजनीतिक गठजोड़ की बात आने पर इस बात का खास महत्व नहीं रह जाता।

था। उसने सफलतापूर्वक सम्राट ताइजोंग को अच्छी नस्ल के घोड़े भेंट में भेजे, और, बदले में, सम्राट ने उसे अपना महत्वपूर्ण सहयोगी बना लिया था।

मैं यह देखकर आश्चर्य में था कि कुची के बौद्ध भिक्षु 'शुद्ध मांस' खाते थे। यह उन जानवरों का मांस होता था जिन्हें उन्होंने अपने सामने मारे जाते हुए नहीं देखा था। इसलिए शुद्ध मांस अनदेखा, अनसुना और असंदिग्ध था, कंप्यूशियस के बंदरों की तरह जिन्होंने कभी कोई बुराई नहीं देखी, कुछ बुरा नहीं सुना और कुछ बुरा नहीं बोला। यह एक हास्यास्पद अवधारणा थी; हम बौद्धों को कभी भी मांस नहीं खाना चाहिए।

कुची के राजा क्षेत्र के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक को चला रहे थे। वो सोने के सिंहासन पर बैठते थे और उनके सिर पर एक उत्कृष्ट पगड़ी थी जिसमें से एक लंबी पट्टी लटकी रहती थी। कुची में अनार, अंगूर, नाशपाती, बेर, आलूबुखारा, आड़ और खुबानी के साथ-साथ सोना, चांदी, तांबा, लोहा, सीसा और टिन का उत्पादन होता था। साम्राज्य अपने महान कलाकारों, मूर्तिकारों, संगीतज्ञों और लेखकों के लिए प्रसिद्ध था। यह ऐसी भूमि थी जो सिर्फ समृद्ध ही नहीं थी बल्कि रचनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति को भी बढ़ावा देती थी। दुर्भाग्यवश, उनकी कारीगरी में तख्तों का इस्तेमाल करके बच्चों के सिर को दबाकर चपटा करना भी शामिल था, जो मनुष्य के शरीर की सुंदरता बढ़ाने के लिए किया जाता था। ये लोग भी जिस लिपि में लिखते थे वो पिंगु की एक लिपि पर आधारित थी।

यह प्रवास मेरी उम्मीद से ज़्यादा लंबा रहा। हद से ज़्यादा भारी बर्फबारी के कारण मेरा रास्ता बंद होने के चलते मैं वहां दो महीने तक फंसा रहा। मैंने अपने समय का अच्छी तरह इस्तेमाल किया क्योंकि साम्राज्य में बारह मठ और 5,000 से अधिक भिक्षु थे। बौद्ध सर्किट में यह एक महत्वपूर्ण जगह थी, और कुची के पश्चिमी द्वार के हर तरफ बुद्ध की उत्कृष्ट प्रतिमाएं थीं। मेरी यात्रा के दौरान एक बड़ा त्यौहार पड़ा जिसमें मठों ने संगीत के साथ बुद्ध की सुंदर-सजी मूर्तियों और तस्वीरों का जुलूस निकाला। मुझे कुछ उपदेश देने के लिए बुलाया गया, जो मैंने स्वेच्छा से किया। कुची के नागरिकों ने मेरा स्वागत किया और मुझे भी उनके साथ कुछ और दिन बिताकर खुशी हुई।

कुची में बौद्ध धर्म का एक पुराना स्वरूप माना जाता था जिसे हीनयान कहते हैं। वहीं दूसरी ओर मेरी पढ़ाई महायान में हुई थी, जो नया माध्यम है। अपने एक उपदेश के दौरान, मैंने श्रोताओं को याद दिलाया कि कुची हीनयान और महायान के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। 'कुमारजीव, महायान लेखों के महानतम अनुवादकों में से एक, कुची से ही थे, और इस प्रयास के लिए उन्होंने अनुवादकों की एक टीम का पर्यवेक्षण करते हुए चांगआन में दस साल बिताए', मैंने उन्हें बताया। यह सुनकर मेरे श्रोता उत्साहित हो गए और इस छोटी सी बात को जानने के बाद अधिक रुचि के साथ मेरी बातों को सुनने लगे।

कुची के पश्चिम में कोंगलिंग<sup>35</sup> था, वह पठार जहां कुनलुन शान<sup>36</sup> और दिव्य पर्वत

मिलते थे। खतरनाक मौसम के बावजूद, मैंने तय किया कि हमें अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिए। राजा के सलाहकारों ने हमें ऐसा न करने की सलाह दी, लेकिन मैं अड़ा हुआ था। मैं अपनी मंज़िल के अलावा किसी भी दूसरी जगह पर ठहरने के लिए इस यात्रा पर नहीं निकला था। मेरी संतुष्टि नालंदा पहुंचने में थी।

सबकी सलाह के विरुद्ध, अंततः हमने पठार के उत्तरी छोर पर 14,000 फीट ऊंचाई पर स्थित कोंगलिंग दर्रे<sup>37</sup> को पार करने का निर्णय लिया। दर्रा खड़ी ढलान वाला था और पूरे साल बर्फ से ढका रहता था, बर्फ की लंबी चादरें रास्ते को रोके रहती थीं। भयंकर बर्फ़ीले तूफान में, जब हम ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर आगे बढ़े तो गाओचांग के राजा के दिए गए भारी कोट भी हमारी खास मदद नहीं कर पा रहे थे। हमें लगातार तूफानी हवाओं, ऑक्सीजन की कमी और हिमस्खलन का सामना करना पड़ रहा था। ठंडी हवा और बर्फ की चादरों से परावर्तित हो रही सूरज की चमक के चलते हमारे लिए आंखों को पूरी तरह खुला रख पाना असंभव था।

मैं समय का हिसाब नहीं रख पाया। यहां तक कि मैं कई बार बेहोश भी हो गया, और ये मेरे शिष्य ही थे जिन्होंने बारी-बारी से मुझे संभाला और सुनिश्चित किया कि मैं जीवित रहूं। ऐसे कई मौके आए जब तेज़ बर्फ़बारी के चलते कुछ लोग बाकी के समूह से बिछड़ जाते थे। दोबारा इकट्ठा होने में कई घंटे, कभी-कभी तो कई दिन लग जाते थे। जब तक हम एक-दूसरे को खोजते थे, तब तक हम टीम के कुछ और सदस्यों को खो देते थे।

जब मैंने थकान, भुखमरी और शीतदंश के कारण अपने लोगों और जानवरों को खोना शुरू कर दिया तब मुझे आगे बढ़ने में की गई गंभीर गलती का एहसास हुआ। जब तक हमारे समूह ने हानटेनगोली फेंग<sup>38</sup> को पार किया, तब तक मेरे साथ आए अट्टाईस में से आधे लोगों की मौत हो चुकी थी। 30 जानवरों में से भी अधिकांश मर चुके थे। गाओचांग के राजा ने जो चार शिष्य भेजे थे, उनमें से मैंने दो को खो दिया था। अभी हम अपनी मंज़िल के आसपास भी नहीं थे और मैं कई मूल्यवान साथियों को खो चुका था। मुझे अपनी ज़िद की बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी थी।

शाओलिन की शेडो केव में ध्यान करने वाला ज़िंदी बौद्ध भिक्षु जो चाहता था उसने वो पा लिया था, लेकिन ये निश्चित नहीं था कि मेरी खुद की ज़िद मुझे मेरी मंज़िल तक पहुंचाएगी या नहीं।

मैं हर पल ग्रेट प्योर लेक<sup>39</sup> तक पहुंचने की प्रार्थना कर रहा था। ऐसा कहा जाता था कि यह झील कभी जमती नहीं—इसका पानी खारा और गर्म था। इसकी गर्मी के चलते, पश्चिमी तुर्क के महान खान ने इसके तटों पर अपनी शीतकालीन राजधानी बनाई थी, और हर साल अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी चे-शिह<sup>40</sup> से अपने परिजनों और नौकरों के साथ यहां आ जाते थे। रेगिस्तान में मुझे गर्मी के कारण दृष्टिभ्रम हो गया था; अब मुझे ठंड से दृष्टिभ्रम हो रहा था। कभी-कभी मैं खुद को ये सोचने से नहीं रोक पाता था कि भरा पेट और गर्म बिस्तर कितना अच्छा लगेगा।

ऐसे विचारों के तुरंत बाद अपराधबोध आ जाता था। आखिरकार, एक बौद्ध होने के नाते, क्या मुझे सुख और दुख से अप्रभावित नहीं रहना चाहिए?

#### 45

भोर के समय कांचीपुरम एकदम शांत था। पौ फटने में अभी एक घंटा बाकी था। हल्की हवा ने अगरबत्ती की सुगंध हवा में फैला दी थी। दूर, कई मंदिरों में सुबह का मंत्रोच्चार शुरू हो चुका था।

डॉ. राजा राव के कोटिज से कुछ मिनटों की दूरी पर, नदी के किनारे प्राइवेट लेन में एक साधारण सा घर था; इसकी बाहरी दीवारों पर चूने का प्लास्टर किया गया था और ढांचा मज़बूत लड़कियों की शहतीरों पर टिका था। जैसा कि उस जगह की सभी पारंपरिक संरचनाओं के साथ था, घर के बीच का हिस्सा एक खुली छत वाला आंगन था। यहीं पर अनु अकेली अपनी दिनचर्या में लगी थी।

आंगन के दक्षिण-पश्चिम कोने में हनुमान की एक छोटी मूर्ति थी, जो लचीलेपन और शक्ति का प्रतीक थी। इसके सामने ताज़े फूल, जल रही एक खुशबूदार अगरबत्ती और पानी का एक छोटा बर्तन रखा था। अनु की सुबह हमेशा ईश्वर की एक छोटी प्रार्थना के साथ शुरू होती थी, जो उसकी शक्ति का स्रोत थी। कभी मत भूलो कि तुम सिर्फ उसकी शक्ति का माध्यम हो। तुम कभी भी स्रोत नहीं बन सकते। अनु हमेशा खुद को उस परम सत्य की याद दिलाती रहती थी।

आंगन के फ़र्श पर लाल मिट्टी का प्लास्टर किया गया था। अनु इसे नर्म बनाए रखने के लिए समय-समय पर मिट्टी पर पानी का छिड़काव करती रहती थी। मिट्टी उसकी कठिन दिनचर्या के लिए एक कुदरती कुशन का काम करती थी, यह किसी भी दूसरे स्पोर्ट्स रबड़ जैसे सिंथेटिक फ़ोम या एस्टो टर्फ, से कहीं बेहतर थी। उसने एक साधारण सफ़ेद साड़ी पहनी थी, जो धोती स्टाइल में बंधी थी ताकि उसके पैरों और बाजुओं का मूवमेंट बाधित न हो, लगभग जैसे कि उसने ट्रैकसूट पहना हो।

आंगन की परिधि में कई तरह के हथियारों से भरी अलमारियां रखी थीं, जिनमें अलग-अलग लंबाई की लाठियां, मेटल के चाबुक जिन्हें सुरुल वाल के नाम से जाना जाता था, काले हिरण की सींगें, वेलकम्बु भाले और बड़ी वाल वीचु तलवारें थीं। अनु कभी-कभी लाठियां चलाते-चलाते कोई और हथियार चलाने लगती थी, हालांकि एक छात्र के लिए नियम यह कहता था कि एक बार में सिर्फ एक हथियार इस्तेमाल हो सकता था। उसके हाथ में, एक साधारण लाठी भी घातक हथियार हो जाती थी, जिसका उपयोग विनाशकारी प्रभाव के लिए किया जा सकता था।

दिनचर्या कभी नहीं बदलती थी। वो सुबह चार बजे उठती थी, नींबू और शहद डालकर एक गिलास गर्म पानी पीती थी, नहाती थी, अपनी प्रार्थना करती थी, ध्यान करती थी और फिर दो घंटे अपनी कसरत में बिताती थी जो दक्षिण भारतीय मार्शल आर्ट की दो प्राचीन विधाओं सिलांबम और कलारिपयटूट का मेल थीं। सिलांबम की उत्पत्ति कुछ हज़ार साल पहले तमिलनाडु में बांस-युद्ध के एक रूप में हुई थी, जबकि कलारिपयटूट कुछ सदियों बाद अलग-अलग हथियारों से की जाने वाली युद्ध की एक

पद्धति के रूप में उभरा था।

हालांकि, लोककथाओं के अनुसार, सिलांबम अगस्त्य ऋषि की देन थी, जिन्होंने हथियारों के बिना लड़ाई करने के कौशल को निखारा था, जबकि कलारिपयट्ट की उत्पत्ति का श्रेय ऋषि परशुराम को था, जिन्होंने हथियारों से युद्ध की कला में महारथ हासिल की थी।

अपनी ढलती उम्र में भी, अनु चुस्त और मज़बूत थी। आंगन के बीच में कई गज कपड़े में लिपटा पक्षियों को डराने वाले पुतले जैसा एक डमी रखा था। बिजली की गति से, अनु हवा में छलांग लगाती थी और अलग-अलग कोणों से सुंदर लेकिन शक्तिशाली चालों से इस पर हमला करती थी। ऐसे प्रहार के लिए गहन मानसिक एकाग्रता, कठोर फिटनेस और नियमित अभ्यास चाहिए था। हर एक चाल कई खास गुणों को निखारने के लिए थी: लचीलापन, ताक़त, गति, स्फूर्ति, संतुलन, हाथ-आंख का ताल-मेल, शारीरिक गति के प्रति जागरूकता, सहनशक्ति, मांसपेशियों की मज़बूती और हृदय एवं रक्तवाहिकाओं की क्षमता।

हर थोड़ी देर पर, वो अपनी लाठी को हवा में उछालती थी और फिर इसे पकड़ने के लिए हवा में छलांग लगाती थी। वो इसे इतनी ताक़त के साथ घुमा रही थी कि लगता था जैसे किसी हवाई जहाज़ का पंखा नाच रहा हो। उसकी मानसिक सतर्कता और मांसपेशियों का ताल-मेल त्रुटिहीन था। उसके चेहरे पर पसीने की एक हल्की परत ही सिर्फ़ इस बात का संकेत थी कि वो गहन अभ्यास कर रही थी; अन्यथा वो पूरी तरह शांत और संयमित थी। आम लोगों को उसकी हर चाल अलग-अलग लगती थी, लेकिन ऐसा था नहीं।

‘शास्त्रीय रागों को याद रखो,’ उसके पिता उससे कहते थे। ‘हर रचना अलग-अलग लगती है जबकि किसी एक राग के लिए सीमित सुरों का ही इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह, एक जैसे मसालों का इस्तेमाल करके अलग-अलग व्यंजन बनाए जा सकते हैं। ठीक वही बात तुम्हारी चालों पर भी लागू होती है। इसमें सिर्फ़ सात मूल चालें हैं और चार बुनियादी छड़ी घुमाव। इनका अलग-अलग मेलजोल असीमित है, जो हर चाल को अलग बनाकर दिखाता है।’

हर कदम उसे शक्ति उत्पन्न करने के लिए अपने पूरे शरीर को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने में सक्षम बनाता था। अपनी सुरक्षा से समझौता किए बिना प्रतिद्वंद्वी की सीमा में पहुंचने के लिए हर चाल में हमले के साथ पीछे हटना भी शामिल होता था। उसके पैर और हाथ एक बैले डांसर की तरह हिल रहे थे। अधिकांश चालों के लिए वो हथौड़े के समान पकड़ का इस्तेमाल करती थी, तुलनात्मक रूप से कमज़ोर हाथ का इस्तेमाल सिर्फ़ लाठी की गति को दिशा देने के लिए होता था। वर्षों के प्रशिक्षण ने उसे दोनों हाथों का इस्तेमाल करना सिखा दिया था, मज़बूत हाथ और तुलनात्मक रूप से कमज़ोर हाथ में फर्क कर पाना मुश्किल था। हर वार उसकी कलाई से गति और पूरे शरीर से शक्ति लेता था।

उसके प्रहारों का निशाना पुतले के खास हिस्सों पर था। प्राचीन चिकित्सक सुश्रुत ने अपने ग्रंथ सुश्रुत संहिता में मानव शरीर के 107 महत्वपूर्ण बिंदुओं को पहचाना और

उनका वर्णन किया था। इनमें से, चौंसठ को घातक माना जाता था, अगर उन पर मुक्के, लाठी या किसी अन्य हथियार से वार किया जाए। अनु न सिर्फ उन सभी बिंदुओं को जानती थी बल्कि उसने आयुर्वेद और उद्भिचिल, चिकित्सा और मालिश के प्राचीन हर्बल उपचार का भी अध्ययन किया था। उसने शराब, धूम्रपान और मांसाहार से बचते हुए एक बेहद अनुशासित जीवन बिताया था। दैनिक ध्यान ने उसे सबसे कठिन परिस्थितियों में भी शांत रहना सिखा दिया था। वह अपनी शक्तियों के लिए हनुमान जी को धन्यवाद देते हुए एक छोटी प्रार्थना के साथ अपनी दिनचर्या खत्म करती थी।

पड़ोस की छत पर बैठा एक हट्टा-कट्टा आदमी उसे ध्यान से देख रहा था। उसने ज्यादा पैसे देकर उसके पास का घर किराए पर लिया था। अनु के एक मंज़िल के घर के विपरीत, बगल का घर दो मंज़िल ऊंचा था, और छत से अनु का आंगन दिखाई देता था। बिना उसकी जानकारी के, वह आदमी कई हफ्तों से उस पर नज़र रख रहा था— उसकी तस्वीरें लेना, समय और दिनचर्या नोट करना, और उसकी हर गतिविधि पर नज़र रख रहा था।

#### 46

कंबोडिया में, खोजी दल बुज़ांग को परिणाम देने के लिए रात-दिन एक कर रहा था। अंकोर वाट में अपनी खोज को बढ़ाने के लिए उन्होंने हर तरकीब, तकनीक और तरीका लगा दिया, लेकिन कुछ नहीं मिला।

उन्होंने पूरे नक्शे का मूल्यांकन कर लिया था, विशेष रूप से मंदिर का उत्तर-पश्चिमी हिस्सा जो क्षेत्र के अधिकांश मंदिरों के ठीक विपरीत था। यहां तक कि दीवारों पर उभरी हुई आकृतियां भी घड़ी की विपरीत दिशा में थीं। इससे क्या समझा जाए?

दल के नेता ली को इसका जवाब मिल गया था। 'हिंदू अंतिम संस्कार सामान्य धार्मिक संस्कारों के विपरीत क्रम में होते हैं। अगर परिसर की मूल डिज़ाइन सिर्फ विष्णु के सम्मान के लिए नहीं बल्कि अंत्येष्टि परिसर के तौर पर इस्तेमाल के लिए भी बनी थी, तो यहां सब कुछ सामान्य से उल्टा होगा। इस स्मारक के निर्माता, सूर्यवर्मन द्वितीय, महान किन शी हुआंग की तरह अमर होने की खोज में लगे थे। हमें खोजते रहना चाहिए। सारे संकेत अनुकूल हैं।'

ली की टीम के सदस्य समझ गए। सभी महान राजा अमर होना चाहते थे, और चीन के शासक भी इसका अपवाद नहीं थे। शक्तिशाली किन शी हुआंग ने अपने मरने के बाद लंबे समय तक युद्ध लड़ने के लिए टेराकोटा की सेना बनाने में लाखों लोगों को झोंक दिया था। बारीकी से गढ़े गए मिट्टी के 8,000 से ज्यादा सैनिक, 130 रथ और 670 घोड़ों को उसके साथ दफ़नाया गया था। और किन शी हुआंग की खोज सिर्फ मृत्यु के बाद के जीवन में नहीं थी। वो सचमुच हमेशा के लिए जीवित रहना चाहता था। चीन में युद्धरत सभी छह राज्यों को जीतने के बाद, वो निःसंदेह रूप से अब तक का सबसे शक्तिशाली सम्राट बन गया था, लेकिन क्या वह अमर भी हो सकता था?

'किन शी हुआंग ने एक औपचारिक राजाज्ञा जारी की थी जिसके अनुसार चीन के लोगों को एक ऐसे अमृत की खोज करनी थी जो उसे अमर जीवन दे,' टीम के उप-नेता

ने कहा। 'वेडंबना यह है कि, उसने सिनेबार या मकरो सल्फाइड का सेवन इस विश्वास के साथ जारी रखा कि यह उसे अमर बना देगा। लेकिन, इसके ज़हर से वो उनतालीस साल की छोटी उम्र में ही मौत का शिकार हो गया!'

टीम के दूसरे सदस्य ने कहानी आगे बढ़ाई। 'यहां तक कि उसने अपने निजी जादूगर, शू फू, को अमृत खोजने के लिए पूर्वी समुद्रों की तरफ भेजा। औषधि खोजने और वापस लाने के लिए उसे साठ जहाज़, चालक दल के 5,000 सदस्य और 3,000 सहायक कर्मी दिए गए थे। इसके बजाय, शू फू ने जापान की खोज की और वापस लौटने से इनकार करके खुद को वहां का राजा घोषित कर दिया। समझदार आदमी। अगर वो खाली हाथ लौटता तो उसके राजा ने उसे मार डाला होता।'

ली ने बात काटते हुए कहा। 'सभी संकेत दिखाते हैं कि अंकोर वाट को महान सूर्यवर्मन द्वितीय के लिए एक अंत्येष्टि परिसर के रूप में डिज़ाइन किया गया था ताकि वो अपनी मृत्यु के बाद भी शासन जारी रख सकें। पिछली बार, हमने सात फोकस एरिया तय किए थे जिनमें सफलता की उम्मीद दिख रही थी और अपने संसाधनों को उसी हिसाब से आवंटित किया था, लेकिन वे सभी बेकार साबित हुए। क्या हमारे पास कोई नया आइडिया है?'

इस सवाल के बाद एकदम सन्नाटा छा गया। हर रात, वे बिस्तर पर जाते ही सो जाते थे, सिर्फ इसलिए कि सूर्योदय से पहले एक बार फिर काम शुरू करेंगे। यह एक असंभव काम था जो बुज़ांग के दिए गए तमाम तकनीकी सहयोग और संसाधनों के बावजूद सबसे मज़बूत इंसानों का हौसला पस्त कर सकता था।

शोधकर्ता अपने कंट्रोल रूम में एकत्र हो गए और घबराहट में आगे के रास्ते पर चर्चा करने लगे। 'क्या हमें अंकोर वाट के बाहर के मंदिरों पर विचार करना चाहिए?' उनमें से एक ने सलाह दी। 'अंकोर पार्क में कई मंदिर हैं जो अंकोर वाट का हिस्सा नहीं हैं।'

'लेकिन बुज़ांग को इसकी जानकारी कौन देगा कि अंकोर की सिर्फ चुनिंदा जगहों की तलाशी में मैं भी सालों लग सकते हैं?' ली के डिप्टी ने निराशा से पूछा। उनमें से कोई भी बुरी खबर देना नहीं चाहता था।

बुज़ांग बेहद आक्रामक रूप से सफलता के लिए प्रयास कर रहा था और उसे उम्मीद थी कि उनकी खोज एक गेम चेंजर साबित होगी। जहां सफलता का मतलब पदोन्नति, सार्वजनिक सम्मान और बड़े आर्थिक पुरस्कार थे, वहीं असफलता का मतलब धरती पर नर्क भोगने जैसा था। बुज़ांग ने निजी देखरेख में हुनान प्रांत के चांगशा में एक गुप्त जेल बनवाई थी। यहां कैदियों को लाओज़िआओ नाम के एक कार्यक्रम से गुज़रना पड़ता था। इसका शाब्दिक अनुवाद 'श्रम के माध्यम से पुनः शिक्षा' था, जो कि क्रूर नज़रबंदी को छिपाने भर के लिए सिर्फ एक शब्द था। वैसे तो क्रांति के तुरंत बाद बनाए गए ऐसे शिविर अब बंद हो गए थे, यह नई जेल उन लोगों के लिए थी जो बुज़ांग के एजेंडे के हिसाब से नहीं चलते थे। यह साफ़ नहीं था कि चीन के राष्ट्रपति को भी बुज़ांग की इस गुप्त जेल के बारे में मालूम था या नहीं।

ली बेचैन लग रहा था। उसे पता था कि असफलता की अंतिम ज़िम्मेदारी उसे ही लेनी

होगी। उसने जैसे ही बुज़ांग के साथ बातचीत की कल्पना की, उसकी रोड़ में एक सिहरन दौड़ गई। 'इसे मुझ पर छोड़ दो,' उसने हिम्मत दिखाते हुए कहा। लेकिन उसके माथे पर आया पसीना उस आतंक का सबूत था जिसने उसे घेर रखा था।

अगले दिन, वह अपने मोबाइल और सैटेलाइट फ़ोन छोड़कर, अकेले ही किसी सफ़र पर निकल पड़ा। उसने अपनी टीम से कहा कि वो खोज जारी रखे, तब तक वह खुद दूसरी जगहों से होकर आ रहा था, जिन पर ध्यान नहीं दिया गया था।

ली टीम की एक जीप लेकर सिएम रीप तक गया, वह शहर जहां अंकोर आने वाले अधिकांश पर्यटक ठहरते थे। उसने एयरपोर्ट के पास कार खड़ी की और एक टुक-टुक में बैठ गए। उसने ड्राइवर से मैगो क्लिज़ीन चलने को कहा, यह एक फाइन-डाइनिंग रेस्टोरेंट था जो अपने यूरोपीय खाने के लिए मशहूर था। समय-समय पर, ली ड्राइवर के साइड-व्यू मिरर में या सावधानी से बाहर देखता था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। वह रेस्टोरेंट के पास उतरा, किराया दिया, गाड़ी के जाने का इंतज़ार किया और फिर चलकर पास के पब्लिक टेलीफ़ोन बुथ पर गया। वहां से उसने एक नंबर डायल किया और एक बार घंटी बजने के बाद फ़ोन काट दिया।

वह फ़ोन के पास ही इंतज़ार करता रहा और जैसे ही घंटी बजी, फ़ोन उठा लिया। 'हलो?' उसने कहा। 'आपके हिसाब से मुझे सांगकट वाट नोम कब तक आना चाहिए?'

#### 47

पैम तुरंत जर्नी टू द वेस्ट का अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ने बैठ गई। रात काफी हो चुकी थी, और डीआरडीओ ऑफिस खाली हो चुका था। सिर्फ़ एक इकलौता टेबल लैम्प छोटे से ऑफिस को रोशन कर रहा था, जहां वो बैठी थी। अपनी एनर्जी बनाए रखने लिए वो स्प्रिंक्स बार खा रही थी। कभी-कभी वो चाहती थी कि अपने पिता की तरह वो भी सिगरेट पीती होती। जो लोग सिगरेट पीते थे उन्हें कुछ और घंटे रीचार्ज रखने के लिए सिर्फ़ निकोटिन का एक कश ही काफी था।

यह उपन्यास सातवीं सदी में चीनी भिक्षु ह्वेनसांग की भारत यात्रा का एक आकर्षक विवरण था, जो बौद्ध धर्म के पवित्र मूल ग्रंथों तक पहुंचने की मंशा से की गई थी। इस काल्पनिक, लगभग पौराणिक कथा, के अनुसार, ह्वेनसांग के साथ उसकी यात्रा में एक शक्तिशाली बंदर सन वुकोंग था जो कई हास्यजनक स्थितियों का कारण बना। असल में, ह्वेनसांग के सामने आने वाली अधिकांश समस्याएं सन वुकोंग की गलती से ही पैदा हुई थीं, लेकिन बहुत सारी मुश्किलों से निकालने का श्रेय भी उस बंदर को ही जाता है। यह उपन्यास पहली बार सोलहवीं सदी में मिंग वंश के शासनकाल में प्रकाशित हुआ था। इसने ह्वेनसांग के स्वयं के वर्णन की मुख्य रूपरेखा, द ग्रेट तांग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजंस, को कायम रखा, लेकिन लोक-कथाओं और मिथकों, और कंप्यूशियन, ताओवाद, और बौद्ध दर्शन से रोचक बातें इसमें जोड़ीं।

यह लंबा भी था—एक लाख तैंतालीस हजार शब्दों से थोड़ा ज़्यादा। ग्रंथ को सौ अध्यायों में बांटा गया था और यह चार असमान भागों में था। पहले भाग में सन वुकोंग

को पृष्ठभूमि को चचा है, जो माशेल आट, शारीरिक पारेवतन और अमरत्व के रहस्यों के साथ ताओ में भी निपुण था। दूसरे भाग में ह्वेनसांग के चरित्र का परिचय है, जिसका संदर्भ नाम बदलकर दिया गया है, और ह्वेनसांग के प्रारंभिक जीवन, उनके भिक्षुत्व और उन कारणों की बात की गई है जिन्होंने उन्हें इतनी महत्वपूर्ण यात्रा के लिए प्रेरित किया। तीसरे में वास्तविक यात्रा और भिक्षु और बंदर की कई कठिनाइयों के बारे में बताया गया है क्योंकि धधकते पहाड़ों, गहरी घाटियों, कठोर मौसम, शैतान जादूगरों और डाकुओं के बावजूद वे अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहे थे। आखिरी भाग में ह्वेनसांग के घर वापसी के प्रयासों का वर्णन है।

पैम ने किताब के कुछ ही अध्याय पढ़े थे कि उसका फ़ोन बजा। यह मार्क था। पैम ने जम्हाई को रोकते हुए कहा, 'तुम इतनी देर तक जाग रहे हो।'

जवाब आया, 'मैं भी तुमसे यह कह सकता था। तुम कहां हो?'

'ऑफिस।'

'वहीं रुको। मैं आ रहा हूं। मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है। मुझे अंदर आने देने के लिए सुरक्षा अधिकारी के पास संदेश छोड़ दो।'

'सच में, मार्क?' पैम ने अपनी घड़ी देखी। घड़ी की सुइयां एक के पार दिखा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि वो कई दिनों से सोई नहीं थी।

लेकिन मार्क अड़ा रहा। 'यह बेहद ज़रूरी है। और मैं तुम्हें फ़ोन पर नहीं बता सकता।'

वो पंद्रह मिनट बाद पहुंच गया और सुरक्षा गार्ड ने उसे अंदर भेज दिया। वो तरोताज़ा और जागा हुआ लग रहा था। आफ्टरशेव की खुशबू बता रही थी कि उस बेसमय में भी वो उससे मिलने के लिए सज-संवरकर आया था।

मार्क बिना किसी लाग-लपेट के सीधे मुद्दे पर आ गया। 'मेरी टीम ने टूनिकेट पर लगे खून का पूरा विश्लेषण किया है। नतीजे हैरान करने वाले हैं।' उसने उसकी मेज़ पर एक पतला फ़ोल्डर रखा। इसके अंदर एक पन्ने की रिपोर्ट थी जिसके ऊपर सीबीटीटी का लोगो था। पैम ने इसे देखा लेकिन उसे समझ नहीं आया कि नंबरों का क्या मतलब था।

जब वो रिपोर्ट देख रही थी तो मार्क ने समझाया, 'खून और ऊतक के सैंपल रीसस मकैक बंदर से मेल खाते हैं।'

'रीसस?' पैम को याद आया कि उसने पहले भी यह शब्द कहीं सुना है लेकिन कहां, यह याद नहीं आ रहा था।

'पीले बाल, गुलाबी-चेहरे वाले बंदर की प्रजाति जो चीन, अफगानिस्तान और भारत में पाई जाती है,' मार्क ने जवाब दिया। 'आजकल, गांव के लोग इन्हें फसल पर हमला करके उसे बर्बाद करने से जोड़कर देखते हैं। यह उनकी गलती नहीं है कि हमने खेती के लिए उनकी जमीन छीन ली है।'

उसे अचानक याद आया कि उसने वह शब्द कहां सुना था। राव से, जब वह उसे तीन कंप्यूशियस बंदरों के बारे में बता रहे थे जिन्होंने कभी कुछ बुरा नहीं देखा, बुरा नहीं सुना और बुरा नहीं बोला था। इस बारे में सोचना, सच्ची शक्ति तीन बंदरों के नियम का

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास ( Novel ) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

( Motivational Book ) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

<https://t.me/hindilibrary>

<https://t.me/requestbookpdf>

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👉👉👉

[https://t.me/books\\_request](https://t.me/books_request)

English Books 📖📖

[https://t.me/Google\\_Ebooks](https://t.me/Google_Ebooks)

पालन करने से आती है। और भारत में हमने हमेशा से रीसस प्रजाति को पवित्र माना है। पैम का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। यह बंदर की पूरी पहेली है क्या?

उसने रिपोर्ट नीचे रखी और जर्नी टू द वेस्ट की प्रस्तावना पर वापस लौट गई। इसमें समझाया गया था कि ह्वेनसांग की मूल यात्रा में, शुरुआत में उसके साथ बंधा नाम का एक व्यापारी था।

बंधा? क्या ये नाम हिंदी के शब्द “बंदर” से प्रेरित था?

‘इंसान के खून में छियालिस गुणसूत्र होते हैं लेकिन रीसस के खून में अड़तालिस,’ मार्क ने समझाया।

‘और इस नमूने में?’ पैम ने पूछा।

‘सैंतालिस। इन दोनों प्रजातियों के बीच का कुछ। यह काफी हद तक अविश्वसनीय है।’ मार्क की आवाज़ में जो उत्साह था वह दूसरों पर भी असर डाल सकता था।

पैम ने उसे देखा, पहले वह थोड़ा चकराई, फिर उसे समझ आने लगा। उसने खुशी से उसे मुस्कुराकर देखा। और अचानक उन दोनों के बीच का माहौल बदल गया।

दोनों एक दूसरे के सामने बैठे थे, उनकी आंखें सिर्फ एक-दूसरे पर ही टिकी थीं। फिर, धीमे से, लगभग श्रद्धाभाव से, मार्क नीचे झुका और अपना चेहरा उसके चेहरे के पास लाया। पैम स्थिर बैठी थी, उसकी आंखें पूरी खुली और सतर्क थीं। उनके होंठों का स्पर्श हुआ।

वे दोनों जानते थे कि अब यहां से पीछे लौटना नामुमकिन था।

## 48

निकलने के एक साल बाद, दुखद रूप से छोटा हो चुका मेरा दल और मैं पहाड़ों को पार करके, ज़ियू के पश्चिमी क्षेत्रों को पीछे छोड़ते हुए खान के नियंत्रण वाले मैदानों में पहुंचे। जल्द ही हम द ग्रेट प्योर लेक पहुंच गए जिसे ‘गर्म समुद्र’ के नाम से भी जाना जाता था। मुझे बताया गया था कि यह कथित तौर पर दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी खारी झील थी। इसका पानी गर्म काला-नीला था जिसका स्वाद कड़वा था और ऐसी अफ़वाह थी कि समुद्री राक्षस और शैतान झील में रहते थे, इसलिए इसका तापमान ज्यादा था।

महान खान की शीतकालीन राजधानी सुइये<sup>41</sup> थी, जो ग्रेट प्योर लेक के उत्तर-पश्चिमी किनारे पर थी। उसकी ग्रीष्मकालीन राजधानी प्रसिद्ध चे-शिह थी। महान खान का साम्राज्य, जिसे बाद में पश्चिमी तुर्किक खगानाटे<sup>42</sup> के नाम से जाना गया, अपने चरमोत्कर्ष पर था। ‘खान’ शब्द सामान्य रूप से ‘खगान’ से लिया गया था, जिसका अर्थ कुछ तुर्की भाषाओं में प्रमुख या शासक होता है।

मैं मिली-जुली उत्सुकता और घबराहट के साथ उसके निवास स्थान की ओर चला। आखिरकार, वो ज़ियू के पश्चिमी क्षेत्रों के बाद सबसे शक्तिशाली शासक था। वह अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए जाना जाता था लेकिन सम्राट ताइजोंग के साथ उसकी गहरी

दोस्ती भी थी। ऐसा कहा जाता था कि उसने चीनी सम्राट के लिए कीमती पत्थर जड़ी हुई ठोस सोने की बनी कई उत्कृष्ट कमरबंद भेजी थीं। यह मैदानी क्षेत्र के 5,000 मज़बूत घोड़ों के अलावा था।

खान और उसके लोग अहुरा मज़्दा नाम के एक देवता की पूजा करते थे, कहा जाता था कि इस देवता ने बुराई के खिलाफ़ लड़ाई में खान की मदद के लिए यज़ाता नाम के जित्न बनाए थे। बुराई के खिलाफ़ अच्छाई के इस संघर्ष में मज़्दा की मदद करना उपासकों का पवित्र कर्तव्य था। मैंने इस आस्था को बुद्ध की शिक्षाओं के संदर्भ में समझने की कोशिश की और मुझे आशा थी कि मैं किसी दिन खान और उसके अनुयायियों को सच्चे मार्ग पर ला सकूंगा। लेकिन अभी उसका समय नहीं था।

शिविर के अंदर आराम करते वक्त, मैंने खुरों की बहुत तेज़ आवाज़ सुनी। मैं दौड़कर बाहर निकला तो धूल की आंधी दिखाई दी जिसमें सैकड़ों जानवर और उनके सवार हाथ में भाला लिए सीधे हमारी ओर दौड़ रहे थे।

लेकिन, मेरा डर गलत साबित हुआ। महान खान थाउज़ेंड स्प्रिंग्स के घने जंगलों से शिकार करके लौट रहा था। उसने अपने घोड़े से उतरकर मुझे गले लगाकर गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। वह खुश था कि मैं उसके लिए बनाई गई चीज़ें लेकर आया था, जो डाकुओं ने लूटने की कोशिश की थी। हरे साटन के कपड़ों में वह प्रभावशाली दिख रहा था। उसके बाल दस फुट के रेशमी पट्टे से बंधे थे जो उसके सिर में लपेटा था और पीछे लटका हुआ था। उसके चारों ओर हज़ारों आदमी भाले, धनुष और झंडे लेकर खड़े थे और अद्भुत रूप से सजे हुए ऊंटों और घोड़ों पर सवार थे। भीड़ की गिनती कर पाना असंभव था।

मेरे सम्मान में खान के आलीशान शिविर में भव्य भोज रखा गया, एक विशाल गोल शिविर जो कठोर ठंड से लोगों को बचाने के लिए फ़र और खालों से ढका था। अंदर का हिस्सा सोने के फूलों से सजा था जो तेल के दीयों की रोशनी में जगमगा रहे थे। चटाई की दो लंबी कतारों पर बैठे मेहमानों के सामने मटन के बड़े-बड़े हिस्से और बछड़े के उबले हुए मांस का ढेर लगा था। खान के साथ भरपूर शराब भी परोसी गई थी। उत्सव में संगीतज्ञों का एक समूह भी था जो कई तरह के सुर बजा रहा था, वो मेरे कानों के लिए बड़े अजीब थे। महान खान और उसके अनुयायियों के बारे में बहुत कम ऐसी बातें दिखाई दे रही थीं जिनमें नम्रता और शिष्टता हो। उसके व्यवहार से असीमित शक्ति टपकती थी।

महान खान ने अपने रसोइयों से मेरे लिए खास भोजन की व्यवस्था करने को कहा, उन्हें पहले से ही बता दिया गया था कि बौद्ध भिक्षु शाकाहारी थे। अंगूर के शर्बत के साथ चावल के विशेष केक, क्रीम, घोड़ी का दूध, क्रिस्टलाइज्ड शक्कर, शहद और किशमिश मेरे सामने परोसे गए। खान ने मुझसे एक छोटा सा उपदेश देने को कहा, और मैंने उसका अनुरोध स्वीकार कर लिया, इस बात का खयाल रखते हुए कि मेरी बात सिर्फ़ प्रेम और आपसी सम्मान के बारे में होगी। मैंने बौद्ध धर्म के 10 गुणों की बात

की, जिनमें अहिंसा, उदारता, सत्यता, ईमानदारी, यौन दुर्व्यवहार का त्याग, दूसरों की सहायता, प्रार्थना, अश्लील भाषा से बचना, गुस्से का त्याग और धर्म-विरोधी दृष्टिकोण का त्याग शामिल था। मैंने अपना भाषण छोटा रखा क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि खान सोचे कि मैं एक प्रचारक था।

मैंने देखा कि भोज में तांग साम्राज्य का एक दूत उपस्थित था। भोजन के दौरान वह लगातार मुझे संदेह की दृष्टि से देखता रहा। मैं चिंतित था। मैंने सम्राट की इच्छा के विरुद्ध चीन छोड़ा था। सम्राट ताइज़ोंग को अपने राजदूत से जल्द ही मेरी 'अवज्ञा' के बारे में पता चल जाएगा, अगर उन्हें पहले से ही इसकी जानकारी न हो तो। भोज के बाद, दूत मेरे पास आया और कहा कि सम्राट खुश नहीं होंगे। उसकी छोटी, धूर्त आंखें प्रतिक्रिया के लिए बड़े गौर से मुझे देख रही थीं।

'कृपया महामहिम को सूचित करें कि जैसे ही मैं डी सैन सू चुआन बन जाऊंगा मैं सम्राट और बुद्ध की सेवा में लौट आऊंगा,' मैंने यथासंभव शांत स्वर में उसके कान में फुसफुसाया। दूत तुरंत शांत हो गया। मुझे नहीं पता था कि वह क्या संदेश पहुंचाएगा, लेकिन मुझे लग रहा था कि वह जोखिम नहीं उठाना चाहता था। उसे देखकर लग नहीं रहा था कि उसे मालूम था कि मेरे पास राजा की अनुमति थी या नहीं। मेरी अंतरात्मा कह रही थी कि वह जोखिम नहीं उठाएगा और अपने मालिक के सामने यह मुद्दा उठाने से बचेगा।

महान खान ने यिंदु को बर्बरों की भूमि कहकर मुझे यिंदु जाने से रोकने की कोशिश की। लेकिन मेरे दृढ़ संकल्प को देखकर, उन्होंने मुझे गांधार<sup>43</sup> के राजकुमारों के नाम पहचान की चिट्ठियां लिखकर दीं, जो उसके जागीरदार थे। उसने मुझे रेशम के पचास टुकड़े और लाल साटन का एक जोड़ी कपड़ा भेंट किया। फिर उसने अपने कुछ अधिकारियों को यिंदु की यात्रा में थोड़ी देर मेरे साथ जाने का आदेश दिया।

मैंने महान खान को बहुत सारा धन्यवाद दिया। फिर मैंने बुद्ध को अपने आध्यात्मिक घर तक मेरा रास्ता खोलने के लिए धन्यवाद दिया। मैं तरोताज़ा और उत्साहित महसूस कर रहा था। मैं नई ऊर्जा के साथ अपनी आगे की यात्रा पर बढ़ने के लिए तैयार था।

## 49

लोधी रोड पर रॉ मुख्यालय में एक ऑफिस के अंदर, जया राव के डॉक्यूमेंट को स्कैन और प्रिंट कर रही थी। यह बहुत कठिन प्रक्रिया थी; क्योंकि वो बाइंडिंग को सुरक्षित रखना चाहती थी, इसलिए फीडर में ढेर सारे पेज एक साथ डालने के बजाय उसे एक फ्लैटबेड स्कैनर पर हर पेज को खोलना पड़ा।

बाहर ऐसा कोई साइनबोर्ड नहीं लगा था, जिससे यह पता चले कि इमारत रिसर्च एंड एनालिसिस विंग की थी। ग्यारह मंज़िला इमारत सबसे महंगे इलाकों में से एक पर थी, मशहूर लोधी गार्डन्स से सिर्फ कुछ दूरी पर, जहां दिल्ली के रईस और रसूख वाले लोग सुबह सैर करने जाते थे। इमारत में रॉ के सभी विभाग एक ही छत के नीचे थे, जिसमें एक कम्युनिकेशन इंटरसेप्शन यूनिट, काउंटर-इंटेलिजेंस डिवीज़न, स्पेशल ऑपरेशंस

विभाग, कंट्री डेस्क, एक इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल्स इंटेलेजेंस सेक्शन, सोक्रेट डिवीजन जैसे स्पेशल फ्रंटियर फोर्स और रोज़मर्रा के सामान्य काम करने वाले अकाउंट्स जैसे विभाग शामिल थे।

हर पेज स्कैन होने के बाद, जया अपलोड हुई इमेज को रेज़ॉल्यूशन और संपूर्णता के लिए ध्यान से देखती थी। फिर वो चीनी और तमिल के हिस्सों को चिह्नित करती थी, उनकी क्रम से नंबरिंग करती थी ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि इंजन ने सही क्रम बनाए रखा था। वो एक प्रॉपराइटी सॉफ्टवेयर इस्तेमाल कर रही थी जो राँ के भाषाविदों ने तैयार किया था जो कई फॉर्मेट और भाषाओं में आने वाले स्कैन पर नज़र रख सकता था। फिर यह इनका अनुवाद और मिलान कर सकता था। साधारण ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन सॉफ्टवेयर को मशीन के छापे गए टेक्स्ट को पहचानने के लिए डिज़ाइन किया गया था, न कि हैंडराइटिंग या कर्सिव स्क्रिप्ट या कैलिग्राफी को पहचानने के लिए। राँ की मशीन उनसे बेहतर काम कर सकती थी। तकनीकी प्रगति के बावजूद यह बहुत मेहनत का काम था, हालांकि जया ने इसे आसान बना दिया था। जया बीच-बीच में सॉफ्टवेयर में अपने खुद के नोट्स और ऑब्ज़र्वेशन डाल रही थी ताकि अंत में उसके पास एक पूरा डॉक्यूमेंट हो जिसमें सिर्फ पैम की दी किताब ही न हो बल्कि विशिष्ट अंशों से जुड़े उसके खुद के रिमाइंडर मार्जिन मेमो भी हों। उसने अपने सामने के एक पन्ने को देखा और काव्यात्मक वर्णन को देखकर मुस्कुराई। उसके हाथ उसके गले में पड़े लॉकेट से खेलने लगे, एक पुरानी आदत जो उसके भीतर हमेशा भरोसा जगाती थी।

एक सौ दो हज़ार छह सौ साल पहले, स्वर्ग और पृथ्वी में प्रेम हुआ और हर चीज का जन्म हुआ, ऊपर से मर्द और नीचे से प्लस, तीन बंदर और बीच में चमक, मनुष्य और पशु और पक्षी अस्तित्व में आये और विश्व चार बड़े महाद्वीपों में विभाजित हो गया, पूर्वी महाद्वीप और पश्चिमी, उत्तरी महाद्वीप और दक्षिणी।

वीटीके ने अंदर झांका। 'कोई प्रगति?' उसकी मेज़ पर रखे छपे हुए पन्नों का ढेर देखकर उन्होंने पूछा।

उसने दस्तावेज़ों से अपनी नज़र उठाकर देखा और मुस्कुराई। 'पहली नज़र में ये अंश जर्नी टू द वेस्ट का साधारण अनुवाद लगते हैं। आपको रिपोर्ट करने से पहले मुझे पूरे दस्तावेज़ अच्छी तरह से देखने दीजिए।'

वीटीके ने सिर हिलाया और चले गए। उन्होंने देखा था कि जया को जब अपने ढंग से काम करने दिया जाता है तो वो सबसे अच्छा काम करती है।

## 50

वीटीके अपना ओवरकोट पहने खड़े होकर, आग की लपटों को देख रहे थे। सुबह के पांच बज रहे थे; कभी-कभार आने वाले उत्साही जॉर्ग्स को छोड़ दें तो वह जगह बिलकुल सुनसान थी। कुछ मिनटों के बाद, चमड़े की जैकेट और ऊनी टोपी पहना एक आदमी वहां आया और उनके बगल में खड़ा हो गया। उन दोनों ने एक-दूसरे को

देखा नहीं। वे सिर्फ स्मारक में रुंचे रखने वाले दो पयंटकों की तरह खड़े रहे, उनकी सांसें ठंडी हवा को कोहरे में बदल रही थीं।

इंडिया गेट, जो पेरिस के आर्क डी ट्रायम्फ जैसा दिखता है, उसके मेहराब के नीचे काले संगमरमर का एक चबूतरा था। इस चबूतरे पर एक उल्टी बंदूक थी जिस पर युद्ध की एक हेलमेट उलटी करके रखी थी, जिसके चारों ओर गैस की चार मशालें थीं। अमर जवान ज्योति नाम से जाना जाने वाला यह ढांचा, 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में शहीद हुए जवानों के स्मारक के रूप में बनाया गया था।

‘क्या हम सही रास्ते पर हैं?’ वीटीके ने अपना सिर घुमाए बिना पूछा।

‘हां,’ उस आदमी ने आग की लौ को देखते हुए, जवाब दिया। ‘हमने संपर्क साध लिया है और अब यह काम कभी भी हो सकता है।’

वीटीके चुप रहे, वो गहरी सोच में डूबे थे। यह एक अंधेरी दुनिया थी जिसमें वो रहते थे, ऐसी जिसमें दूसरे की प्रेरणा या वफ़ादारी को बता पाना असंभव था। एक बार एक हॉलीवुड अभिनेता ने कहा था कि आदमी सिर्फ उतने ही वफ़ादार थे जितने उनके विकल्प थे। निश्चित तौर पर, वह दूसरे संदर्भ में बात कर रहा था लेकिन वीटीके का दृष्टिकोण यही था। हर कोई वफ़ादार है लेकिन किसके प्रति, इसमें समय-समय पर बदलाव आता रहता है।

‘नतीजा अगर सफल रहा, तो तुम्हारे और मेरे दोनों के लिए अच्छा होगा,’ अंत में वीटीके ने कहा। ‘हमारे पास अब यहां से गड़बड़ी की गुंजाइश नहीं है। जासूसी सही चल रही है? भरोसा है?’

उस आदमी ने हां में सिर हिलाया। ‘वाइल्ड कार्ड पैम खुराना है। हमें उसे काबू में रखना होगा ताकि अंतिम नतीजा खतरे में न पड़े।’

‘उसकी क्या गतिविधियां चल रही हैं?’ वीटीके ने पूछा। दोनों आदमियों ने अगले कुछ मिनट उसके बारे में बात की।

‘हम एक तीर से दो शिकार कर रहे हैं,’ उस आदमी ने कहा। ‘असल में तीन, अगर हम मां को गिनें तो।’

‘मैं सोच रहा हूं कि प्रतिक्रिया क्या होगी,’ वीटीके ने कहा।

‘हर क्रिया की कोई प्रतिक्रिया होती ही है। जब ऐसा होगा तो हम उससे निपट लेंगे। हालांकि, हमें सावधान रहना चाहिए। आंखें और कान हर वक्त खुली रखनी होंगी। खासकर डोकलाम के बाद।’

वीटीके ने स्मारक के चारों तरफ खुदे ‘अमर जवान’ शब्दों को पढ़ा। वो अंदर ही अंदर हंसा। उन शब्दों का अनुवाद था ‘अमर सैनिक’, लेकिन सच्चाई यह थी कि सैनिक इसलिए सैनिक थे क्योंकि वे मरने को तैयार थे। इसमें अमर होने जैसा क्या था? और यह पूरा घटनाक्रम? सत्ता, शक्ति और अमरत्व की यह उन्मादी चाहत? इसके पीछे क्या है? हजारों वर्षों में कुछ भी नहीं बदला। इसी चाहत ने सदियों से सम्राटों और शासकों को प्रेरित किया, और आधुनिक सरकारें भी अलग नहीं थीं। राष्ट्र-राज्यों ने सिर्फ अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे रहने के लिए जासूसी, गुप्त कार्रवाइयों और सूचना

एकात्रित करने पर अरबों खर्च कर दिए हैं।

वीटीके ने स्मारक के कोनों पर रखे चार कलशों को बड़े ध्यान से देखा। सिर्फ एक लगातार जल रहा था। बाकी के तीन सिर्फ स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर जलाए जाते थे। क्यों? अगर हज़ारों लोग देश के लिए मर चुके थे, तो क्या देश सभी चारों ज्वालाओं को लगातार जलाए नहीं रख सकता?

उन्होंने खुद को उन ख्यालों से बाहर निकाला और इस बात पर ध्यान दिया कि उसका साथी क्या कह रहा था। फिर उन्होंने इन शब्दों के साथ मुलाकात खत्म की: 'हमारे बीच सारी बातचीत अब सिर्फ स्कैम्बल फ़ोन पर ही होनी चाहिए। अंतिम नतीजा आने तक मिलने की कोई ज़रूरत नहीं है।'

## 51

बुज़ांग जब राष्ट्रपति के ऑफिस में पहुंचा तो वो निर्देशों और पत्रों पर हस्ताक्षर करने में व्यस्त थे। एक सचिव उनकी कुर्सी के पास खड़ा होकर उनके सामने सही कागज़ रखने में मदद कर रहा था। राष्ट्रपति ने अपने चश्मे के ऊपर से देखा और दस्तावेज़ों पर दस्तखत करने का काम खत्म होने तक बुज़ांग को बैठने का इशारा किया। काम खत्म होने पर, वो अपने दोस्त को देखकर मुस्कुराए। सचिव उन्हें साथ छोड़कर चुपचाप चला गया।

झोंग़ानहाई इस समय शांत था। फॉरबिडन सिटी से सटा पूर्व शाही उद्यान चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और चीन की केंद्र सरकार के केंद्रीय मुख्यालय के रूप में काम करता था। इसमें पार्टी के महासचिव—जो राष्ट्रपति भी होता था—के कार्यालय के साथ-साथ प्रधानमंत्री और अधिकांश चीनी नेताओं के कार्यालय भी शामिल थे। यह दो बड़ी कृत्रिम झीलों के किनारे एक साथ खड़े भूरी ईंटों के ऑफिस ब्लॉक और किंग राजवंश के महलों का एक अजीब मेल था। झोंग़ानहाई चीन का केमलिन था, और यहां हर हिस्से में व्यापक सुरक्षा थी।

'तुम इन दिनों ज़्यादा ही व्यस्त रहते हो,' अपने जनरल की आंखों में देखते हुए राष्ट्रपति ने कहा।

'ऐसा कुछ नहीं है,' बुज़ांग ने लापरवाही से कहा। 'बस ऐसा है कि हमारे कई अभियानों में उम्मीद से ज़्यादा समय और ध्यान लगाना पड़ रहा है।'

'मुझे उम्मीद है कि तुम वो बेतुके प्रयोग नहीं कर रहे होंगे?' राष्ट्रपति ने पूछा। 'अमेरिका और रूस के बाद हम तीसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति हैं। हमारे शत्रुओं को परास्त करने के लिए यह डर ही काफ़ी है। हमें अपना समय गैर-ज़रूरी चीज़ों पर बर्बाद नहीं करना चाहिए।'

'बेशक,' बुज़ांग ने कहा। 'कोई प्रयोग नहीं। सिर्फ एलोकेशन, ट्रेनिंग और इक्विपमेंट अपग्रेड जैसी सामान्य चीज़ें। चीन को आगे बढ़ते रहना होगा।' भले ही आप मेरे कब्ज़ाए इलाके छोड़ दें, बुज़ांग राष्ट्रपति के डोकलाम में हमले के पहले वाली स्थिति में जाने को लेकर कभी भी खुश नहीं था।

राष्ट्रपति ने हां में सिर हिलाया। 'और मैं जो लेबर कैंप्स के बारे में सुन रहा हूं वो क्या है? मुझे लगा कि हमने इसे कम करने का सामूहिक फैसला लिया था।'

'और हमने ऐसा ही किया है,' बुज़ांग ने जवाब दिया। 'कुछ मामलों में हमने कैदियों को इधर-उधर किया है और कई शिविरों को एक में मिला दिया है। इस मेल से बढ़ी हुई संख्या की वजह से यह गलत जानकारी फैल रही होगी कि हम लेबर कैंप्स का विस्तार कर रहे हैं।'

राष्ट्रपति ने बुज़ांग को शक की नज़रों से देखा। कुछ तो ऐसा था, जो सच नहीं था। इतने वर्षों की घनिष्ठता के बावजूद, राष्ट्रपति को असहज महसूस हो रहा था कि उनका दोस्त उनसे कुछ छिपा रहा था।

बुज़ांग ने अपने नेता को उनके सबसे मुश्किल वर्षों में समर्थन दिया था, और राष्ट्रपति यह कभी नहीं भूले, उन्होंने उस आदमी को अपार शक्तियां दीं जिन्हें उन्होंने अपने सबसे भरोसेमंद साथी के रूप में देखा था। दोनों में से कोई भी इन अफ़वाहों से अनजान नहीं था कि बहुत से मामलों में उनके बीच आपसी सहमति नहीं होती थी।

राष्ट्रपति मानते थे कि चीन वैश्विक व्यवस्था में गौरवपूर्ण स्थान का हकदार है और यह कूटनीति, आर्थिक ताकत, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय मदद, सांस्कृतिक शक्ति, सहयोगियों के नेटवर्क और अपनी सैन्य क्षमता के सर्वव्यापी भय के माध्यम से आसानी से हासिल किया जा सकता है। बुज़ांग मानता था कि निर्मम शक्ति का कोई विकल्प नहीं था। उसकी नज़र में, चंगेज खान ने विशाल मंगोल साम्राज्य को प्रेम और मित्रता के माध्यम से नहीं जोड़ा था।

दोनों के बीच का अनोखा समीकरण चीन के इतिहास में दबा था। 1958 में, माओत्से तुंग, जो उस समय चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष थे, ने ग्रेट लीप फॉरवर्ड लॉन्च किया। इसमें चीनी जनसमूह को बड़े पैमाने पर संगठित किया गया था और इस्पात उत्पादन का काम दिया गया। जिन स्तरहीन परिस्थितियों में इसका उत्पादन किया गया था, उस वजह से इसका ज़्यादातर हिस्सा निम्न गुणवत्ता का और इस्तेमाल के लायक नहीं था। बेवकूफ़ी भरे इस अभियान में कृषि उत्पादन पूरी तरह ध्वस्त हो गया। यह एक आर्थिक आपदा थी जिसके चलते चीन में भयंकर अकाल पड़ा और लाखों लोगों की मौत हो गई।

अंततः, माओ को पीछे हटना पड़ा और पार्टी के ज़्यादा व्यावहारिक सदस्यों के हाथ में बागडोर सौंपनी पड़ी। लेकिन 1966 तक, माओ ने वापसी की और सांस्कृतिक क्रांति नाम का एक आंदोलन शुरू किया, जिसका उद्देश्य देश को उन बुर्जुआ तत्वों से मुक्त कराना था जो चाहते थे कि चीन पूंजीवाद की ओर लौट आए। सांस्कृतिक क्रांति 1966 से 1976 तक चली और इसका नियंत्रण माओ के करीबी माने जाने वाले चार लोग कर रहे थे। उन्हें गैंग ऑफ़ फ़ोर के तौर पर जाना गया। यह ज्यादतियों से भरा दौर था, और गैंग ऑफ़ फ़ोर ने बेरहमी से दस लाख से ज़्यादा लोगों की मौत को अंजाम दिया था।

माओ की मौत के बाद दंग शियाओ पिंग, जिन्हें हमेशा एक सुधारक के रूप में देखा गया, का दौर शुरू हुआ। उन्होंने चीन को बाज़ार की ताकतों के लिए खोल दिया और

आर्थिक सुधार को प्रक्रिया शुरू की।

वर्तमान राष्ट्रपति ने दंग शियाओ पिंग के सहयोगी के रूप में काम किया था। वास्तव में, बीस के दशक में उनका अधिकांश शारीरिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण शियाओ पिंग की निगरानी में ही हुआ था। सांस्कृतिक क्रांति के वर्षों के दौरान उन्हें किशोरावस्था में यानचुआन काउंटी में निर्वासित कर दिया गया था, क्योंकि उनके पिता विपक्ष में थे, लेकिन शियाओ पिंग के शासन संभालने के बाद उन्हें वापस बुला लिया गया। तब से, उन्होंने प्रांतीय पार्टी सचिव, जिला गवर्नर और पोलित ब्यूरो स्थायी समिति के सदस्य समेत कई पदों पर काम किया।

बुज़ांग का रास्ता बिल्कुल अगल था। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान, सत्ता गैंग ऑफ फ़ोर के हाथों में केंद्रित थी। उनमें से एक झांग चुनकियाओ थे। उन वर्षों में बुज़ांग रेड गार्ड्स का सिर्फ एक युवा सदस्य था लेकिन उसकी क्रूरता और काम कराने की क्षमता पर झांग चुनकियाओ का ध्यान चला गया, जिन्होंने उसकी तरक्की सुनिश्चित की।

हालांकि राष्ट्रपति और बुज़ांग विचारधारा के मामलों में विपरीत थे, भाग्य का एक मोड़ उन्हें साथ ले आया। वह मोड़ था तियानमेन चौक। 1989 में, चौक पर छात्रों का प्रदर्शन शुरू हुआ। सुधार के पक्षधर कम्युनिस्ट नेता हू याओबांग की मौत के बाद यह प्रदर्शन भड़क उठा था।

दंग शियाओ पिंग के सुधार ने एक संपन्न बाज़ार अर्थव्यवस्था पैदा कर दी थी जो राजनीतिक स्वतंत्रता की कीमत पर आई थी और उसके बाद बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार, महंगाई दर और सत्ता असंतुलन की स्थिति बन गई थी। छात्र ज्यादा राजनीतिक जवाबदेही, संवैधानिक सुधारों, लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे।

हालांकि विरोध प्रदर्शनों से कैसे निपटा जाना चाहिए इस पर दोनों व्यक्तियों के मत अलग थे, दोनों इस बात पर सहमत थे कि चीन की आर्थिक प्रगति एक-दलीय शासन की स्थिरता पर निर्भर थी। दोनों ने अराजकता पर व्यवस्था को महत्व दिया और सामान्य स्थिति की बहाली के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। ऐसा करने के लिए उनके कारण अलग थे, लेकिन उद्देश्य एक था।

बुज़ांग ने असहज होकर अपनी कुर्सी पर जगह बदली। 'कुछ चीज़ें हैं जिन्हें आपका न जानना ही बेहतर है,' उसने अपने बॉस से कहा। 'भारत समय-समय पर छोटी समस्या पैदा करता रहता है, उस मक्खी की तरह जो किसी के भोजन का आनंद कम कर देती है। अमेरिका वह मधुमक्खी है जिसका डंक दर्दनाक हो सकता है। मैं सिर्फ ये सुनिश्चित कर रहा हूँ कि आप मक्खियों से परेशान या मधुमक्खियों के डंक का शिकार न हों।'

राष्ट्रपति ने बुज़ांग के शब्दों पर विचार किया। उन्होंने कहा, 'भारत के साथ हमारी बहुत सी समानताएं हैं। अगर भारत न होता तो हमें बौद्ध धर्म का ज्ञान कभी न मिलता। चीनी की मिठास हमारे पास भारत से ही आई थी और कई सदियों बाद हमारे पास से वापस भारत गई। हम भूगोल और एक लंबी सीमा साझा करते हैं। हम दोनों के पास एक बड़ी आबादी है और दोनों ही अपने लोगों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति

सुधारने को कोशिश कर रहे हैं। हां, विवाद हैं, लेकिन हम एक जैसी समस्याओं से भी जूझ रहे हैं। ऐसा कोई कारण नहीं है कि दो देश समानांतर रूप से प्रतिस्पर्धा और सहयोग नहीं कर सकते।’

‘भारत एक मुसीबत है,’ बुज़ांग ने दलील दी। ‘उनके लोकतंत्र, स्वतंत्र प्रेस, विचारों की स्वतंत्रता और न्यायिक व्यवस्था से हमें कुछ नहीं मिला है। हमारे केंद्रीकृत नियंत्रण से हमें तरक्की, विकास और समृद्धि मिली है। उनकी स्वतंत्रता का कोई मोल नहीं है। सही रास्ते पर लाने के लिए हमें हर दिन चेयरमैन माओ को याद करना चाहिए।’

‘माओ के आदर्श अद्भुत थे, लेकिन हमें तरक्की के रास्ते पर लाने के लिए दंग शियाओ पिंग की ज़रूरत थी,’ राष्ट्रपति ने ज़ोर देकर कहा। ‘हमें उसे कभी नहीं भूलना चाहिए, मेरे दोस्त।’

बुज़ांग के जाने के बाद, राष्ट्रपति ने अपने सहयोगी को बुलाया। ‘उन तीन फाइलों पर काम कैसा चल रहा है? और डेंगफेंग काउंटी से आई उन तस्वीरों का क्या हुआ?’

## 52

चे-शिह से, मैंने शे नदी<sup>44</sup> पार की जो आम तौर पर शांत और कीचड़युक्त रहती थी, लेकिन कई जगहों पर उसका बहाव तेज़ था। यहां से, मैं लाल रेत के रेगिस्तान<sup>45</sup> में प्रवेश कर गया जहां न तो पानी था और न ही घास। सड़क बंजर बियाबान में जाकर खो जाती थी, और किस रास्ते पर जाना है, यह तय करने के लिए मुझे चारों ओर पड़ी हड्डियों की मदद लेनी पड़ती थी। अपनी यात्रा के सुदूर पश्चिमी बिंदु समोकिएन<sup>46</sup> पर पहुंचने के लिए हम रेगिस्तान को पार कर गए।

समोकिएन पिछले 800 वर्षों से बसा हुआ था और अपनी कला, शिल्प और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध था। इसे एक समय दुनिया का सबसे महान शहर भी माना जाता था और अभी भी यहां रेशम मार्ग के किनारे बेहतरीन शिल्पकार, बुनकर और कारीगर रहते थे। बर्फ पिघलने से बनी एक नदी घाटी में स्थित, इस शहर में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन और एक संतुलित जलवायु थी।

समोकिएन के शासकों ने समझदारी से सिंचाई की नहरों के एक जटिल नेटवर्क में निवेश किया था, इस वजह से समोकिएन और उसके चारों हमेशा हरियाली रहती थी। आप जिधर भी देखें उधर सुरम्य पर्वत, हरे-भरे खेत, विशाल चारागाह कल-कल करती जलधाराएं, बगीचे, जलाशय, फूल और फलों के पेड़ थे।

समोकिएन शहर हर तरह से इंद्रियों को अभिभूत कर देने वाला था। रेशम के सुंदर कपड़े पहने अमीर व्यापारी उन्हीं सड़कों पर चलते थे, जिन पर पसीने से लथ-पथ ताम्रकार, कुम्हार और कागज़ बनाने वाले। दौड़ते हुए घोड़े, ऊंट की घंटियां, चरमराती गाड़ियां, कीचड़ में चलने की आवाज़ और व्यापारियों की चीख साथ मिलकर पूरे दिन चलने वाली कहानी बयान करती थी। बाज़ार में अगरबत्ती, लौंग, मेमने का उबलता मांस, दालचीनी और करी मसालों की गंध में एक-दूसरे पर हावी होने की होड़ लगी थी।

समोकिएन ने उन सभी के लिए अपने दरवाज़े खोल दिए थे जो व्यापार के नियम मानना चाहते थे। यह वाणिज्य के लिए स्वर्ग था। इसके बाज़ार में वो सारी चीज़ें मिलती थीं जिसकी आप कल्पना कर सकते थे। इनमें दुर्लभ पांडुलिपियां, भाषा और अनुवाद मार्गदर्शिकाएं और यहां तक कि इंसान की अजीब इच्छाओं को पूरा करने वाले दास भी मिलते थे। अक्सर ऐसा कहा जाता था कि समोकिएन के व्यापारियों के यहां जब बेटे का जन्म होता था, तब वे उसके होंठों पर शहद और उसकी हथेलियों पर गोंद चिपका देते थे। ऐसा इसलिए करते थे ताकि जब वह बड़ा हो तब सिर्फ़ मीठी बातें करें और धन को कसकर पकड़ा रहे।

यहां के व्यापारी हवा से भी मुनाफ़ा कमाने के लिए मशहूर थे। उनमें से कई दुनिया भर के दूसरे शहरों में बस गए और अपने नए घरों से समृद्ध वैश्विक व्यापार कर रहे थे। आप उन्हें उनके खास नैन-नक्श से तुरंत पहचान सकते थे—बाज जैसी नाक, घनी दाढ़ी जो उनके चेहरे के ज़्यादातर हिस्से को ढक देती थी और नीली, हरी या भूरी आंखें।

बाज़ार में जिन वस्तुओं का व्यापार होता था उनमें पेंदु से कपास, मसाले और रत्न शामिल थे; चीन से चाय, हरिताश्म की वस्तुएं और लोहे के बर्तन; और शियु से फर, खनिज, मवेशी और खाल शामिल थे। आपको आश्चर्य हो सकता है कि मैंने रेशम का ज़िक्र क्यों नहीं किया। निश्चित तौर पर रेशम चीन की एक प्रमुख वस्तु थी लेकिन इसका इस्तेमाल मुद्रा के रूप में अधिक किया जाता था। लोगों को अक्सर रेशम की गठरी के रूप में भुगतान किया जाता था, और व्यापारियों को बहुत भारी सिक्कों की तुलना में नर्म कपड़े के गट्टर ले जाना आसान लगता था। व्यापार की जाने वाली सबसे मूल्यवान वस्तुओं में जीवित प्राणी—घोड़े और दास शामिल थे। चीनी लोग घास के मैदानों में पाले गए मजबूत शेन घोड़ों के लिए ऊंची कीमत देने को तैयार रहते थे, और समोकिएन में इन्हें बड़ी संख्या में खरीदा और बेचा जाता था। शत्रुओं के समूहों के बीच लगातार चल रही लड़ाइयों से दासों की आपूर्ति भी सुनिश्चित होती रहती थी।

महान खान की तरह, समोकिएन के लोग भी अहुरा मज़्दा के उपासक थे। कई साल पहले छोड़े जा चुके दो बौद्ध मठ खंडहर हो गए थे। समोकिएन एक सुसंस्कृत राज्य था, लेकिन इसके लोग अपने धर्म के लिए बेहद पक्षपाती थे। मेरे दो शिष्य अनजाने में बौद्ध खंडहरों में प्रार्थना करने चले गए। स्थानीय निवासियों को लगा कि वे बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के मिशन पर थे और उन्होंने जलती मशालें लहराते हुए उन पर हमला कर दिया। उन्हें अपनी जान बचाकर भागना पड़ा और वे महल परिसर में घुसकर ही खुद को बचाने में सफल हो पाए। सौभाग्य से, समोकिएन के राजा महान खान के अधीन थे, और मेरे साथ सम्मान और सेवा का व्यवहार होता था। वो एक निष्पक्ष व्यक्ति भी थे और जब उन्हें इस घटना के बारे में बताया गया तो वो बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने तुरंत महल के रक्षकों को बुलाया और आदेश दिया कि हमलावरों के हाथ काट दिए जाएं। सरगना को मौत की सज़ा देने का आदेश दिया गया था।

इन लोगों के भाग्य के लिए मैं खुद को ज़िम्मेदार मान रहा था। मुझे अपने शिष्यों को मठ में जाने के खतरों के बारे में आगाह करना चाहिए था। अगर वे उन खंडहरों में प्रार्थना करने नहीं जाते तो ऐसा कुछ नहीं हुआ होता। मैंने राजा से संयम और दया दिखाने की प्रार्थना की। आखिरकार वो मान गए और उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया। लेकिन हमारे हमलावरों के प्रति राजा से दया दिखाने की प्रार्थना करने मात्र से राजा पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने मुझे महल के अहाते में एक सभा को उपदेश देने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मेरे उपदेश सुने और देर रात तक मुझसे सवाल करते रहे। सूरज की पहली किरण के साथ, उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाने का फैसला कर लिया। मेरे निकलने के बाद, राजा ने मेरे सुझाव पर काम किया और सम्राट ताइज़ोंग का जागीरदार बनना चाहा। सम्राट ने इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया लेकिन दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध बन गए। मैं खुश था कि मेरी यात्रा तांग साम्राज्य के कुछ काम आ सकी। मुझे आशा थी कि चीन लौटने के बाद जब मैं सम्राट के सामने खड़ा होऊंगा तो इससे मुझे मदद मिलेगी।

### 53

अनु और उसके पिता जहां रहते थे, वहां से कुछ ही दूरी पर, कांची से वंदावसी जाने वाली सड़क पर और पलार नदी के किनारे, संजीवीराया हनुमान मंदिर था। दूसरे मंदिरों के विपरीत जहां वानर देवता हनुमान की पूजा विष्णु या राम के सहायक के रूप में की जाती थी, यहां हनुमान मुख्य देवता थे।

महान भारतीय ग्रंथ रामायण में कहा गया है कि, युद्ध में घायल लक्ष्मण को पुनर्जीवित करने के लिए हनुमान विशेष जड़ी-बूटियां तोड़कर लंका ले गए थे। हनुमान उस खास जड़ी-बूटी को लेकर अनिश्चित थे जिसकी ज़रूरत थी, इसलिए उन्होंने उस पहाड़ को ही उठा ले चलने का फैसला किया, जिस पर वे बूटियां उगती थीं। लोक कथाओं के मुताबिक उनके पहाड़ का एक हिस्सा कांची के पास जमीन पर गिर गया था।

कई सदियों बाद, सोलहवीं शताब्दी में, ताताचार्य, दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य के मुख्य मंत्री, अपने राजा वेंकटराय द्वितीय द्वारा कांची के एक मंदिर के लिए दान किया गया सोना देने के लिए शहर जा रहे थे। जब दल ने रात के लिए अपनी यात्रा रोकी, तब अपने कुछ आदमियों को पहरेदारी का काम सौंपकर ताताचार्य और उनके साथ यात्रा पर निकले लोग पेड़ों के नीचे सो गए। दुर्भाग्यवश, देर रात, डाकुओं ने उन पर हमला किया, जिन्हें ले जाए जा रहे विशाल खजाने की भनक लग गई थी।

जब ऐसा लग रहा था कि सबकुछ लुट जाएगा, तब मानव-आकार के बंदरों के एक दल ने डाकुओं पर झपटकर मुख्य मंत्री, उनके नौकरों और साथ ही खजाने को भी बचा लिया। डाकुओं को पूरी तरह से आतंकित होकर भागने पर मजबूर होना पड़ा। ताताचार्य को विश्वास हो गया कि उन्हें, उनके लोगों और उनके सोने को बचाने हनुमान स्वयं वहां आए थे। अभिभूत होकर उन्होंने हनुमान की स्तुति में कुछ छंद गाए। फिर उन्होंने उस जगह पर एक मंदिर बनाने का संकल्प लिया। उन्होंने न केवल सुंदर

संजोवोराया हनुमान मंदिर बनवाया, बाल्के उसके सामने 150 एकड़ में फैला एक विशाल तालाब भी बनवाया। यह बंदरों समेत स्थानीय वन्यजीवों के लिए जलस्रोत के रूप में काम करता था। तालाब के किनारों पर चौबीस स्तम्भों का एक भव्य घेरा हनुमान के विभिन्न रूपों को दर्शाता था।

मंदिर की देखभाल करने वाले पुजारी के लिए तट पर अलग से एक कुटिया बनाई गई थी। अनु जब वहां पहुंची, तो यह एक अंधेरी, अमावस की रात थी। पुजारी गहरी नींद में सो रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से खरटे ले रहे थे। दरवाज़ा लगातार खटखटाने से उनकी नींद टूट गई। वह चौंककर जागे और कौन था यह देखने के लिए बिस्तर से लड़खड़ाकर उतरे। उन्होंने गुस्से में दरवाज़ा खोला लेकिन अनु को देखकर नरम पड़ गए।

‘तुम इतनी रात को यहां क्यों आई हो, बेटी?’ उन्होंने उसे अंदर बुलाने और कुर्सी देने के बाद पूछा।

‘कुछ अप्रत्याशित घटनाएं हुई हैं,’ अनु ने जवाब दिया। ‘अप्पा बहुत चिंतित हैं कि कहीं कुछ अनहोनी न हो जाए। अचानक, अतीत में लोगों की रुचि बहुत बढ़ गई है। उन्होंने मुझसे खासतौर पर आपको और देवता को देखने के लिए कहा है।’

‘सब कुछ ठीक है,’ पुजारी ने अपने कंधे पर शॉल लपेटते हुए कहा। ‘लेकिन तुम ऐसे बेवक्त यहां क्यों आई? तुम मुझसे फ़ोन पर बात कर सकती थी।’

‘मुझे पर नज़र रखी जा रही है,’ अनु ने कहा। ‘अप्पा के साथ भी ऐसा ही है। हमें पता नहीं है कि हमारी फ़ोन लाइनों को हक किया गया है कि नहीं। न ही हमें इस बात का अंदाज़ा है कि हमें कौन देख रहा है। इसलिए मुझे आधी रात को यहां आना पड़ा।’

‘तुम्हारे पिता मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?’ पुजारी अनु के पिता को बचपन से जानते थे। उन्होंने साथ में पढ़ाई की थी, साथ खेले थे और साथ खाना खाया था। राव की नियति उन्हें विज्ञान की ओर ले गई, जबकि उनके मित्र का रुझान अध्यात्म की ओर था। राव हमेशा मज़ाक करते थे कि एक अच्छे वैज्ञानिक को दिल से आध्यात्मिक और एक अच्छे अध्यात्मवादी को दिल से वैज्ञानिक होना चाहिए। विज्ञान और अध्यात्म की धारणाएं आपस में असंगत नहीं थीं।

‘आपसे अनुरोध है, ध्यान रखिएगा कि देवता को किसी भी हाल में परेशानी न हो,’ अनु ने कहा। ‘अगर आप चाहें तो, हम कांची से कुछ लोगों को भेज सकते हैं ताकि आप इस विशाल परिसर में पूरी तरह से अकेले न रहें।’

‘हनुमान इस मंदिर के सबसे शक्तिशाली रक्षक हैं। किसी और आदमी की ज़रूरत नहीं है। लोगों को बुलाकर हम अपनी ओर ध्यान आकर्षित करेंगे। वैसे भी, दिन में दर्शन करने वालों के जाने के बाद गर्भगृह में ताला लगा रहता है, और चाबी सिर्फ मेरे पास होती है। अपने पिता को भरोसा दिलाना कि मैं अपनी जान देकर भी देवता की रक्षा करूंगा। उन्हें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।’

अनु मुस्कुराई। ‘धन्यवाद। अब मुझे चलना चाहिए।’

‘अपने पिता के लिए थोड़ा पुलियोगरे ले जाओ,’ पुजारी ने कहा। ‘मैं जानता हूं उन्हें यह

बहुत पसंद है।' इमली के स्वाद वाला खास चावल, मांदेर को रसोई, मडप्पल्लो में पकाया जाता था। 'मैं उन्हें आश्चर्य करने के लिए एक छोटा नोट लिख देता हूं कि सब ठीक है। क्या तुम प्रसादम और नोट उन्हें दे दोगी?'

अनु ने सिर हिलाया। 'आप अपने मित्र को जानते हैं। अप्पा अच्छे भोजन को कभी मना नहीं करते। विशेषकर जब यह हनुमान की रसोई से आया हो।'

## 54

भारी हथियारों से लैस पुलिसवाले सार्वजनिक बस सेवा के रूट 332 के रास्ते में सामान्य से एक परिसर की सुरक्षा कर रहे थे। ज़ियुआन में बीजिंग चाइनीज़ मेडिसिन हॉस्पिटल के पश्चिम में ढेर सारे पुलिसकर्मी खड़े थे, जो यह सुनिश्चित कर रहे थे कि वहां कोई गाड़ी खड़ी न हो, न ही इलाके में कोई आगंतुक घूम सके। कैमरे तत्काल ज़ब्त कर लिए गए। यह गुप्त परिसर चीन की सुरक्षा एजेंसी एमएसएस का मुख्य केंद्र था। ज़ियुआन फैसिलिटी समर पैलेस के ठीक बगल में स्थित थी, जबकि सटे हुए एक परिसर में, जिसे यिदोंगयुआन कहते थे, ज़ियुआन में काम कर रहे एमएसएस के लोग रहते थे।

एमएसएस राज्य सुरक्षा मंत्री की अध्यक्षता वाली एक विशाल संस्था थी, जो केंद्रीय समिति को रिपोर्ट करती थी; इसके विभागों का संचालन ब्यूरो चीफ करते थे, सभी सेना के वरिष्ठ अधिकारी थे जो अपने आप में ताकतवर थे। एमएसएस का उद्देश्य अमेरिका, ताइवान, दक्षिण कोरिया और जापान समेत सिर्फ उन देशों पर नज़र रखना नहीं था जो सैन्य, राजनीतिक या आर्थिक रूप से चीन के लिए प्रासंगिक थे, बल्कि उन क्षेत्रीय शक्तियों पर भी नज़र रखना था जिनके साथ चीन सीमा साझा करता था जैसे रूस, भारत और वियतनाम।

परिसर के अंदर केंद्र में एक बड़े खुले आंगन के साथ मुख्य स्थानों पर संरचनाएं बनी हुई थीं। एक कॉन्फ्रेंस रूम में, बुज़ांग की भारत के ब्यूरो प्रमुख के साथ बैठक चल रही थी। इस तरह की बैठक का कहीं कोई रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था, जिसमें गेट पर मेंटेन किए जाने वाले एंटी लॉग रिकॉर्ड में बुज़ांग के आने का ज़िक्र नहीं किया गया था। भारत का ब्यूरो प्रमुख एक दुबला-पतला आदमी था जिसने तार के फ्रेम वाला चश्मा पहना था। वह इतना कमज़ोर था कि ऐसा लग रहा था कि अगर कोई उसकी ओर सांस भी छोड़ेगा तो वह गिर जाएगा। लेकिन छोटी सी उस काया में एक असाधारण रूप से बुद्धिमान और राजनीतिक रूप से चालाक शख्स था जिसे अक्सर भारत में कुछ होने से पहले ही उसकी खबर रहती थी।

ब्यूरो प्रमुख और बुज़ांग सिंधुआ विश्वविद्यालय में सहपाठी थे, और उनकी दोस्ती अब भी कायम थी। बुज़ांग जानता था कि उसका दोस्त राष्ट्रपति तक जानकारी पहुंचे बिना खुलकर बात करेगा।

'भारत में कुछ चल रहा है,' ब्यूरो चीफ ने कहा। 'आप इसके बारे में जानना चाहेंगे।'

'क्या?' बुज़ांग ने पूछा।

'डोकलाम में जो हुआ उसकी जांच किसी नए आदमी को सौंप दी गई है। यह रॉ के

सामान्य गुप्तचरों में से कोई नहीं है, बल्कि डीआरडीओ की एक युवा माहेला है। उसका नाम पैम खुराना है। उसका एकसूत्रीय एजेंडा हमारे विशेष बलों के रहस्य का पता लगाना है।’

‘यह नाम जाना-पहचाना क्यों लग रहा है?’ विचार में डूबे बुज़ांग ने अपनी फू मांचू मूछों को सहलाते हुए पूछा।

‘उसके पिता के साथ हमारा एक पुराना इतिहास है,’ ब्यूरो प्रमुख ने कहा। ‘किशन खुराना याद है?’

‘आह, हां, अब मुझे याद आया। शेंगली क्या कहता है?’

‘शेंगली का कहना है कि हमें ज़्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए और पैम खुराना की जांच कहीं पहुंचेगी नहीं।’

‘जब लोग मुझसे कहते हैं कि चिंता मत करो तब मुझे चिंता होने लगती है,’ बुज़ांग ने कहा।

उसका दोस्त मुस्कुराया क्योंकि उसे भी ऐसा ही लगता था। ‘भारत में हर जगह हमारी आखें और कान हैं,’ उसने कहा। ‘सालों से हमने ज़रूरी जानकारी निकालने के लिए राजनेताओं, नौकरशाहों, सैन्य कर्मियों, पत्रकारों, राजनयिकों, वैज्ञानिकों, व्यवसायियों और यहां तक कि शिक्षाविदों की भर्ती की है। लेकिन इस बार किसी को ज़्यादा जानकारी नहीं है। खुराना अपने दम पर काम कर रही है। वो सिर्फ उन्हीं लोगों की मदद लेती है जिनकी उसे तुरंत ज़रूरत पड़ती है।’

‘क्या वो राव से मिली है?’ बुज़ांग ने पूछा।

ब्यूरो चीफ ने हामी भरी। ‘हां। लंबे समय से पिता, बेटी और वह असिस्टेंट, देव, हमारी निगरानी में हैं।’

‘तुम्हें लगता है कि उसे खरीदा जा सकता है?’ सालों के अनुभव ने बुज़ांग को सिखाया था कि हर किसी की एक कीमत थी। जो लोग कहते कि उन्हें खरीदा नहीं जा सकता वो सिर्फ बेहतर सौदे के इंतज़ार में थे।

ब्यूरो प्रमुख ने न में अपना सिर हिलाया। ‘वो हद से ज़्यादा ईमानदार है। अपने पिता की तरह। वो सचमुच बहुत बड़ी समस्या है।’

‘अपने पिता के बारे में वो क्या जानती है?’

‘सिर्फ इतना कि जहाज़ पर कहीं से आई एक गोली ने उसे मार डाला। लेकिन उसके नए असाइनमेंट को देखते हुए हो सकता है कि उसे इस मामले में हमारे दखल का पता चल जाए।’

‘हम उसे मार नहीं सकते,’ बुज़ांग ने कहा। ‘नहीं-नहीं, हम उसे मार सकते हैं लेकिन हमें ऐसा करना नहीं चाहिए। हमारी पहली के खोए टुकड़ों को खोजने के लिए शायद वो हमारी सबसे अच्छी उम्मीद है। इस बारे में उस नाकारे एर्किन की शिकायतों से मैं थक चुका हूं।’

उसके दोस्त ने सहमति में सिर हिलाया। ‘इसका मतलब है कि हमें शेंगली की पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। शेंगली को यह पक्का करना होगा कि खुराना की खोज का

इस्तेमाल हमारे फ़ायदे के लिए किया जाए।’

‘बिलकुल,’ बुज़ांग ने कहा। ‘जो भी ज़रूरी है वो करो। ह्यूमिंट और सिगिंट दोनों का इस्तेमाल करो। खुराना की जानकारी भू-राजनीतिक समीकरणों को बदल सकती है।’ बुज़ांग ह्यूमन इंटेलिजेंस और सिग्नल्स इंटेलिजेंस की बात कर रहा था। ह्यूमिंट चीनी जासूसों और स्रोतों का नेटवर्क था; सिगिंट का फोकस कम्युनिकेशंस, साइबर जासूसी, इलेक्ट्रॉनिक्स और सैटेलाइट्स पर था।

ब्यूरो प्रमुख अपने दोस्त के साथ सहमत था। जानकारी की अहमियत बहुत ज़्यादा थी। पच्चीस शताब्दियों पहले, सैन्य रणनीतिकार सून तज़ू ने कहा था, ‘खुद को जानो, अपने दुश्मनों को जानो।’ वर्षों से, एमएसएस ने इसे अपना मार्गदर्शक सिद्धांत बना रखा था और यह सुनिश्चित किया था कि दुनिया के रहस्य उनके सामने खुलते रहें।

‘क्या हमें एलएलएल का इस्तेमाल करने के बारे में सोचना चाहिए?’ ब्यूरो प्रमुख ने पूछा। वह उत्तर पूर्व भारत के माओवादी गुरिल्ला समूह, लेनिनिस्ट लिबरेशन लीग, की बात कर रहा था।

‘स्थिति की समीक्षा करके फ़ैसला लेंगे,’ बुज़ांग ने कहा। ‘लेकिन जब तुमने इसका जिक्र कर दिया है...’

## 55

मार्क रिचर्ड्स अपने ऑफिस से निकला और दिल्ली मेट्रो से जनपथ पहुंचा। ऐसे सफर पर वो कंपनी की कार और ड्राइवर का इस्तेमाल करने से बचता था। ऐसे सफर वो समय-समय पर करता रहता था, अपना मोबाइल फ़ोन छोड़कर, ताकि उसकी पोज़िशन का पता न लगाया जा सके। उसकी सैक्रेटरी को लंगता था कि उसका अफेयर चल रहा था जिस वजह से वो ऐसा अजीब बर्ताव करता था। उसके वापस लौटने पर वह उसे अजीब नज़र से देखती थी। यह उसके लिए सही भी था। वो किसी जादूगर की तरह था जो अपने दर्शकों का ध्यान एक चीज़ से भटकाने के लिए दूसरी चीज़ पर आकर्षित करता था।

जनपथ मेट्रो स्टेशन से निकलने के बाद, वो स्टेशन के पास वाली गली में गया। दोनों ओर छोटी-छोटी दुकानें थीं जिनमें पेंटिंग, चित्र बने हुए कपड़े, गहने, फर्निचर और प्राचीन वस्तुएं बेची जाती थीं। कई पर्यटकों को उनके गाइडों के साथ मवेशियों की तरह इधर-उधर घूमते देखा जा सकता था।

मार्क सर्दी की ठंड से खुद को बचाने के लिए चमड़े से बनी अपनी जैकेट को बंद करके तेज़ी से चलने लगा। उसने पहली कुछ दुकानों को नज़रअंदाज़ कर दिया, लेकिन आधी गली पार करने के बाद उसकी चाल धीमी हो गई। सुनहरे अक्षरों वाले लाल साइनबोर्ड को देखते ही वो रुक गया। वो थोड़ा बेचैन था, लेकिन सालों की ट्रेनिंग ने उसे तनाव को प्रोडक्टिव तरीके से इस्तेमाल करना सिखाया था। उसने अपने तनाव का इस्तेमाल पूरी तरह सतर्क होने के लिए किया। हर गुप्त मुलाकात जोखिम भरी होती थी, चाहे कोई कितना भी तैयार हो।

चीनी मूल के दुकान मालिक का अभिवादन करते हुए वो अंदर चला गया, जो उसे

देखकर निकोटिन के धब्बे वाले दांतों से मुस्कुराया। वो हमेशा वही चीनी-भरी मुस्कान देता है। 'चीनी' का मतलब 'चीन से' भी होता है। मार्क को याद आया कि उसने कहीं पढ़ा था कि अठारहवीं सदी के अंत में बंगाल में आया पहला चीनी प्रवासी टोंग अचेव था, जिसने क्षेत्र में गन्ने की खेती शुरू की और एक शगर फैक्ट्री लगाई जिसे अचीपुर कहा जाने लगा। मज़ेदार बात यह थी कि कई सदियों पहले जब चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आए थे, तब उन्होंने चीनी और कैंडी की खोज की थी और सम्राट के लिए चीनी की थोड़ी गोलियां लेकर भी गए थे।

दुकान मालिक तेज़ी से प्रवेश द्वार पर गया, 'ओपन' की तख्ती को पलटकर 'क्लोज़्ड' कर दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया। उसका परिवार 1837 में भारत आ गया था, और उसके हक्का-वंशज परदादा ने कलकत्ता के बो बाज़ार स्ट्रीट में बढ़ई का काम शुरू किया। इन वर्षों में, मोची, बढ़ई, चमड़ा कारखाने के मालिक, रेस्टोरेंट के मालिक, डेंटिस्ट और ब्यूटीशियनों की एक के बाद एक पीढ़ियां यहां फली-फूलीं। एक दशक पहले वह दिल्ली चला आया था क्योंकि उसके सबसे अच्छे ग्राहक उत्तर में केंद्रित होते जा रहे थे। अमेरिका, यूरोप और जापान के कलेक्टर्स तक भी दिल्ली से पहुंचना आसान था। इसके अलावा, उसने एक अतिरिक्त काम के लिए मार्क के साथ बहुत अच्छे संबंध बना लिए थे। यह जोखिम भरा काम था लेकिन इसके बेशुमार फ़ायदे थे।

दुकान में अंधेरे और सीलन का एहसास था, जिसकी थोड़ी वजह सिगरेट का बासी धुआं था, लेकिन बात कुछ और भी थी। अफ़्रीम? मार्क को पता था कि कई पुराने लोग अभी भी अपने तंबाकू में इसे मिलाते थे, एक आदत जिसे अंग्रेज़ों ने चीनियों में डाली थी। अंग्रेज़ों की कुटिलता का कोई अंत नहीं था। उन्होंने भारतीयों को अफ़्रीम उगाने के लिए मजबूर किया, इसे चीन भेजा, यह सुनिश्चित किया कि चीनियों को इसकी लत लग जाए और फिर उस पैसे का इस्तेमाल चाय खरीदने के लिए किया, जिससे उन्हें भारत और ब्रिटेन में भारी फ़ायदा मिला। उस युग में धन कमाने की बहुत सी बड़ी-बड़ी कहानियां असल में नशीली दवाओं के कारोबार की कहानियां थीं। उन्हें सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग और ट्रेड का सम्मानजनक मुखौटा पहना दिया गया था। तब से अब तक कुछ खास नहीं बदला था। आज भी दुनिया में सबसे मुनाफ़े वाला कारोबार ड्रग्स ही है।

दुकान की तीन दीवारों पर लकड़ी की मोटी और मज़बूत अलमारियों पर कलाकृतियां थीं। यह साफ़ था कि ये पीतल या तांबे की सामान्य चीज़ें नहीं थीं जो औसत दुकान प्राचीन वस्तुओं के नाम पर बेचती थीं। ये पत्थर की नक्काशी, मूर्तियां, वर्जित हाथी दांत, कालीन और जेड मूर्तियां थीं। हाथी दांत का व्यापार भारत में प्रतिबंधित था, साथ ही तिब्बती मुर्गों के ऊंर के व्यापार पर भी रोक थी। फिर भी, इस दुकान ने सबकुछ पूरी तरह सार्वजनिक रूप से रखा हुआ था। कभी भी किसी पुलिसकर्मी ने दुकानदार को परेशान नहीं किया था। उसका प्रभाव सचमुच बहुत दूर तक फैला था।

कोई रास्ता नहीं था जिससे यह बताया जा सके कि दुकान में रखा सामान कानूनी रूप से खरीदा गया था या भारत, कंबोडिया, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम के मंदिरों

और संग्रहालयों से चुराया गया था। ज़्यादा संभावना चुराए जाने की ही थी। दानेया भर में सैकड़ों कलेक्टर थे जो निजी संग्रह के लिए इन चीज़ों को खरीदने के लिए भारी कीमत चुकाने को तैयार थे। उन्हें इस बात की चिंता नहीं होती थी कि उन सामानों को कैसे हासिल किया गया था, क्योंकि उनका उन्हें कभी भी बेचने का इरादा नहीं होता था।

‘आज हमें क्या चर्चा करनी है?’ दुकान मालिक ने एक थर्मस से दो कप जैस्मिन टी निकालते हुए धीरे से पूछा।

‘कई चीज़ें हुई हैं। बहुत सारी गतिविधियां हुई हैं। संदेशों का आदान-प्रदान,’ मार्क ने धाराप्रवाह मैडरिन में कहा। ‘हम इस पर चर्चा क्यों ना करें कि हमलोग मेरे बॉसेज़ को खुश कैसे रख सकते हैं? इसमें तुम्हारे लिए भी थोड़ा फ़ायदा है। मैं इस चीज़ में हमेशा उदार रहता हूँ।’

‘तुम्हारे बॉसेज़ को खुश करने का मतलब है कहीं और दुख,’ मालिक ने कहा। ‘लेकिन मैं यह दलील देने वाला कौन होता हूँ? तुम्हारा फैसला है। और मैं? मैं तो बस वही करता हूँ जिसमें पैसा है। तुम और मैं दोनों जानते हैं कि मैं जो तुम्हें दे सकता हूँ वो चीज़ अनमोल है।’

‘एक या दो?’ मार्क ने पूछा। उसके दिमाग में बुज़ांग था।

‘तीन’ दुकान मालिक ने जवाब दिया। ‘बिल्कुल वही जो तुम चाहते थे।’

मार्क ने दुकान मालिक की बातों पर विचार किया। ‘मैंने मामले पर चर्चा की है,’ उसने सावधानी से कहा। ‘और ज़ाहिर तौर पर हम शर्तों पर सहमत हैं...’

## 56

मैं दक्षिण की ओर मुड़ा और तब तक चलता रहा जब तक पु-हो<sup>47</sup> और वहां से प्रसिद्ध लौह दरवाज़ा<sup>48</sup> गेट तक नहीं पहुंच गया। यह प्राकृतिक लौह चट्टानों के दो खड़े हिस्सों से बना एक दर्रा था। इन दो सीधी दीवारों के बीच एक संकरी सड़क थी जो लकड़ी के विशाल दोहरे दरवाज़ों से बंद की गई थी, जिन्हें लोहे की प्लेटों से मज़बूती दी गई थी और घंटियां लगाई गई थीं। दरवाज़ों के दोनों ओर चिकनी लाल दीवारें थीं जो पश्चिमी तुर्कों द्वारा नियंत्रित भूमि की सीमा को चिह्नित करती थीं।

दर्रे के दोनों ओर सैकड़ों लोग कतारों में खड़े थे, जो उस पार जाना चाहते थे, लेकिन बड़ी संख्या में लोगों को वापस भेजा जा रहा था। दर्रे के ऊपर के किले पर एक तुर्क सरदार का नियंत्रण था, जो दर्रे का इस्तेमाल आने-जाने वाले यात्रियों से टैक्स और फीस वसूली के लिए करता था। हालांकि, महान खान के पत्र ने चमत्कार कर दिया। मेरे दल को न सिर्फ वहां से निकलने की अनुमति मिली, बल्कि सरदार ने मुझसे अतिथि-सत्कार का मौका देने का आग्रह भी किया।

सरदार की बेटी एक बेहद सुंदर युवती थी, जिसने यह सुनिश्चित किया कि मेरी देखभाल अच्छी तरह से की जाए। वह कितनी सुंदर थी इसकी व्याख्या कर पाना असंभव है। बेदाग त्वचा, चमकती नीली आंखें, लंबे बाल, पतली-दुबली काया, और जब

वह मुस्कुराती थी तो गालों में गड्ढे पड़ते थे। वह सौम्य और देखभाल करने वाली भी थी और उसका स्वभाव भी मधुर था। उसने सुनिश्चित किया कि मुझे ऐसा भोजन परोसा जाए जो मेरी मान्यताओं के अनुरूप हो और इस बात का भी ध्यान रखा कि मेरे ठहरने का कमरा आरामदायक हो। उसने नौकरों को मेरे दल के दूसरे सदस्यों का ध्यान रखने और हमारे जानवरों को भोजन-पानी उपलब्ध कराने का भी निर्देश दिया। उसके छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखने से मैं प्रभावित हो गया।

युवती के पिता उसके लिए एक उपयुक्त रिश्ता ढूँढ़ रहे थे, और उन्होंने मुझे उससे शादी करने का प्रस्ताव दिया। मैंने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा के कारण विनम्रतापूर्वक मना कर दिया, लेकिन मैंने उसके लिए एक अच्छा रिश्ता खोजने का वादा किया। अगले दिन मैं पो-त्सु<sup>49</sup> नदी पार करने के बाद हुआ<sup>50</sup> की ओर चल दिया। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि हुआ में बौद्ध धर्म फल-फूल रहा था और एक हजार से ज्यादा बौद्ध भिक्षु वहाँ रह रहे थे। एक मठ में मैंने एक अद्भुत मूर्ति देखी। इसमें बुद्ध को परिनिर्वाण स्थिति में लेटे हुए, शिष्यों से घिरा दिखाया गया था।

हुआ का शासक, शहजादा टाई, महान खान का बेटा था। उसने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। टाई की शादी गाओचांग के राजा की बहन से हुई थी; हाल ही में उसकी मौत हो गई थी। चूंकि मेरे पास दोनों शासकों की चिट्ठियाँ थीं, इसलिए मेरी आवभगत असाधारण रूप से महत्वपूर्ण अतिथि के रूप में हुई। राज्य में शोक होने के बावजूद शहजादे ने कई दिनों तक मेरा अतिथि-सत्कार किया।

टाई ने मुझे सुझाव दिया कि मैं क्षेत्र के मठों का दौरा करने में कुछ समय बिताऊँ। दुर्भाग्य से, जब मैं मठों के दौरे में व्यस्त था, तब हुआ में एक शाही साजिश रची जा रही थी। आधिकारिक शोक अवधि खत्म होने के पहले ही, टाई ने अपनी पत्नी की छोटी बहन के साथ कामुक प्रेम-संबंध शुरू कर दिया। इससे भी कोई समस्या नहीं होती, लेकिन षड्यंत्रकारी छोटी बहन का टाई के बेटे के साथ भी प्रेम-प्रसंग चल रहा था। यह साफ था कि हुआ के लोग इन घटनाक्रमों से नाखुश थे, लेकिन शहजादे टाई उन साजिशों से बेखबर थे जो रची जा रही थीं। एक शाम, मैंने उन्हें असंतोष के बारे में आगाह करने की कोशिश की, लेकिन वो उस महिला पर आसक्त थे और कारण समझने को तैयार नहीं थे।

मेरा सबसे बुरा डर जल्द सच हो गया। षड्यंत्रकारी औरत ने टाई की शराब में ज़हर मिला दिया। टाई अगली सुबह अपने शयनकक्ष में मृत पाया गया। इससे पहले कि कोई कुछ कर पाता, उस औरत ने यह सुनिश्चित कर लिया कि टाई का बेटा सिंहासन पर बैठेगा। मुझे पता था कि आगे क्या होगा। वह युवक से शादी कर लेगी, जो तकनीकी रूप से उसका भांजा था, और रानी बन जाएगी। हालांकि मैं स्थानीय राजनीति में नहीं पड़ना चाहता था, लेकिन मेरा मानना था कि इस औरत की शक्ति कम करनी होगी। मैं इस महान खान के लिए करना चाहता था। विडंबना यह थी कि इसके लिए मुझे गाओचांग के राजा की छोटी बहन के विरुद्ध जाना था, लेकिन मुझे

पता था कि उनकी बहन ने जो किया था वह उसे स्वीकार नहीं करते।  
 मैं युवा शासक का भरोसा जीतने की कोशिश में लग गया। अगले कुछ दिनों तक हमारी कई बार बातचीत हुई, और मैं उसकी षड्यंत्रकारी मौसी के बारे में कुछ भी नकारात्मक कहने से बचता रहा। कई दिनों के बाद मैंने यूँ ही बताया कि लौह द्वार से अपनी यात्रा के दौरान मैं दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला से मिला था। वह जानने को तुरंत उत्सुक हो गया। वह कौन थी? मैंने बहुत विस्तार से उसका वर्णन किया। महिलाओं के मामले में वह युवक बहुत बदनाम था, और मुझे पता था कि वह इसमें दिलचस्पी लेगा। उसने मुझसे लौह द्वार के प्रमुख से बात करने की प्रार्थना की। मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो गया, बशर्ते वह मामले को पूरी तरह गुप्त रखे।  
 राजकुमार की ओर से वैवाहिक गठबंधन के विषय पर चर्चा के लिए मैं एक बार फिर लौह द्वार की ओर वापस निकल पड़ा, जो कुछ दिनों की यात्रा थी। लौह द्वार के प्रमुख विवाह प्रस्ताव से बेहद खुश थे। यह एक शक्तिशाली मेल था। मैं जब उस सुंदर युवती के साथ लौटा, तब टाई को पहली नज़र में ही उससे प्यार हो गया, जिससे उसकी मौसी काफी डर गई, जिसकी नीयत उसकी रानी बनने पर लगी हुई थी। विवाह समारोह का आयोजन मेरे प्रस्थान से पहले किया गया।  
 मुझे पता था कि मुझे तुरंत हुआ से निकल जाना चाहिए क्योंकि मेरे जीवन को खतरा हो सकता था। मैंने एक ताक़तवर महिला की सोची-समझी योजनाओं को बिगाड़कर उसे अपना दुश्मन बना लिया था। मैंने युवा जोड़े को आशीर्वाद दिया, फिर उनसे विदा ली। मैंने टाई को भी सावधानी से सुझाव दिया कि उसे अपनी मौसी को गाओचांग वापस भेजने पर विचार करना चाहिए।

## 57

राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी के अंडरग्राउंड मुख्यालय में, S2A—साउथ एशिया सेक्शन—के विशेषज्ञों में से एक ने बताया कि बीजिंग और भारत में नागालैंड के कोहिमा के बीच कई कॉल हुई थीं जिनमें 'शेंगली' नाम के किसी व्यक्ति या चीज़ के बारे में बात की गई थी। उन्हीं कॉल्स में 'मिशन', 'आज़ादी', 'क्रांति' और 'हत्या' शब्दों का भी जिक्र था।  
 एनएसए का मुख्यालय पेटक्सेंट फ्रीवे के पास, फोर्ट मीड के किनारे और बाल्टीमोर से पंद्रह मील दूर दक्षिण पश्चिम में, दो ऊंची इमारतों में स्थित था। वे पत्थर के ऑफिस ब्लॉक की तरह दिखते थे।  
 एनएसए की सभी चीज़ों के साथ एक बात आम थी कि किसी ने क्या देखा, इससे ज़्यादा अहमियत होती थी कि किसी ने क्या नहीं देखा। साधारण आकार की दो इमारतें एक विशाल भूमि पर स्थित थीं जिसमें दस एकड़ का एक बहुत बड़ा अंडरग्राउंड वर्क स्पेस था जिसमें एनएसए के 20,000 से ज़्यादा कर्मचारियों के लिए जगह थी। एनएसए न सिर्फ़ मैरीलैंड के सबसे बड़े एम्प्लॉयर्स में से एक था, बल्कि दुनिया में गणितज्ञों का सबसे बड़ा एम्प्लॉयर भी था। ऐसा अनुमान था कि कुछ सालों में मुख्यालय में कर्मचारियों की संख्या 40,000 का आंकड़ा पार कर जाएगी।

एनएसए के वर्कस्पेस में दुनिया के सबसे शांतिशाली सुपर कम्प्यूटरों में से एक था। एजेंसी, न सिर्फ मुख्यालय से बल्कि दूसरे कम्प्यूटर लैब, रीजनल सेंटर्स और दुनिया भर में सैटेलाइट इंटरसेप्शन पोस्ट से जो भी जानकारी इकट्ठा करती थी, वो अंत में इसी में डाली जाती थी। एनएसए का फोकस एक और सिर्फ एक गतिविधि पर था: सिग्नल इंटेलिजेंस। असल में इसका मतलब था कि हर जानकारी पर नज़र रखना, इससे पहले कि यह तय हो सके कि इसमें किसी प्रकार का जोखिम था। एक इकलौता एनएसए स्टेशन रोज़ाना एक लाख करोड़ से भी ज़्यादा मेटाडेटा रिकॉर्ड इकट्ठा करता था और एक करोड़ फ़ोनकॉल सुनता था।

बीजिंग-कोहिमा के बीच बातचीत एनएसए के PRISM (प्रिज़्म) नाम के प्रोग्राम की वजह से सामने आई थीं। एनएसए का एक हिस्सा ईमेल, वीडियो, फोटो, टेक्स्ट फाइलें, वॉयस चैट, वॉयस-ओवर-आईपी कॉल, फाइल ट्रांसफर और सोशल नेटवर्किंग कम्प्युनिकेशंस को इकट्ठा और स्टोर करता था। लगभग सभी टेलीफोन नेटवर्क, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ईमेल सर्वर और अंडर-सी केबल की जासूसी होती थी। लेकिन प्रिज़्म का काम विश्लेषण था, जासूसी नहीं। इसने इन करोड़ों डेटा प्वाइंट्स को लेने के लिए जटिल एल्गोरिदम का इस्तेमाल किया और प्रासंगिक समझे जाने वाले शब्दों के आधार पर कुछ कार्रवाई योग्य बिंदु सामने आए।

S2A विशेषज्ञ ने ऑपरेशंस डायरेक्टर प्रमुख को सचेत किया, जिन्होंने मामला एनएसए डायरेक्टर तक पहुंचाया जिन्हें व्हाइट हाउस से मिली ब्रीफिंग याद आई। चीन-भारत संघर्ष पर असर डाल सकने वाली किसी भी बातचीत के बारे में हमें सूचित करते रहें। उन्होंने तुरंत डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेलिजेंस (डीएनआई) से मिलने का समय मांगा। डीएनआई कैबिनेट-रैंक वाले अधिकारी थे जिन पर अलग-अलग एजेंसियों से इंटेलिजेंस के लिए समन्वय की ज़िम्मेदारी थी और वो राष्ट्रपति को रिपोर्ट करते थे।

कुछ ही घंटों के भीतर, दोनों शख्स वर्जीनिया के मैकलीन में डीएनआई के दफ्तर, 1,500 टायसन मैकलीन ड्राइव पर मिल रहे थे। यह टेररिस्ट थ्रेट इंटेग्रेसन सेंटर से सटा हुआ था और इसे अक्सर लिबर्टी क्रॉसिंग के तौर पर जाना जाता था। सुरक्षा दरवाज़ों और एंटी पर एक बैरियर को छोड़ दें, तो बाहर से यह बता पाना असंभव था कि उस इमारत में अमेरिका के मुख्य जासूस का ऑफिस था। हालांकि, हवा में ऊंचाई से देखने पर पता चलता था कि इस बिल्डिंग का आकार अंग्रेजी के X जैसा था, जो शायद काम की रहस्यमय प्रकृति का प्रतीक था।

कॉम्प्लेक्स के हर हिस्से को कोडेड ताले वाली एक तिजोरी की तरह डिज़ाइन किया गया था। बाहरी खिड़कियां बुलेटप्रूफ और ब्लास्ट प्रूफ थीं; अंदर का हिस्सा जेम्स बॉन्ड के किसी फिल्म के सेट जैसा था। डायरेक्टर को तुरंत अंदर लाया गया और वो अमीबा के आकार वाली एक डेस्क पर डीएनआई के सामने बैठ गए। वो सोच रहे थे कि लोग इस टेबल पर अपने बैठने की सामान्य स्थिति को कैसे समझ लेते थे।

डीएनआई बातचीत की ट्रांसक्रिप्ट्स पर नज़र दौड़ा रहे थे, जबकि डायरेक्टर उनकी प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहे थे। 'शायद इसे भारतीयों के साथ साझा किया जाना

चाहेए?’ डायरेक्टर ने पूछा। ‘मेरी समझ कहती है कि हम किसी भी प्रासंगिक बातचीत को उनके साथ सौझा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, है ना?’

‘कीवर्ड है “प्रासंगिक”,’ डीएनआई ने जवाब दिया। उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। ‘जब तक हम और ज़्यादा निश्चित न हो जाएं, तब तक हमें इस बारे में परेशान नहीं होना चाहिए।’

‘तब तक बहुत देर हो सकती है,’ डायरेक्टर ने तर्क दिया। उसने खुद को रोक लिया। डीएनआई के साथ कहा-सुनी करना मूर्खता थी।

डीएनआई एकदम शांत रहे, लेकिन यह साफ़ था कि उनके दिमाग में कुछ चल रहा था। आखिरकार उन्होंने कहा, ‘हम इसे फिलहाल अपने तक ही रखते हैं। अगर चीनियों की इस शेंगली में इतनी ज़्यादा दिलचस्पी है तो मुमकिन है कि कोई महत्वपूर्ण चीज़ होगी। पता लगाते हैं कि शेंगली के पास जो भी है, उसका एक हिस्सा हमें मिल सकता है क्या।’

## 58

देव वर्कआउट कर रहा था। उसकी दिनचर्या कभी नहीं बदलती थी। सुबह 5:30 पर अलार्म बजता था और देव पट्टा लगे अपने रॉटवीलर के साथ वॉर्म-अप के लिए जिम निकल जाता था जो दस मिनट की दूरी पर था। सुल्तान की ट्रेनिंग बहुत अच्छी हुई थी और असल में उसे पट्टे के बिना भी रखा जा सकता था, सिवाय इसके कि ज़्यादातर राहगीर उससे डर जाते थे।

जिम पहुंचने पर, वह लॉकर रूम में जाकर कपड़े बदलता था, जहां उसकी मुलाकात अपना दिन जल्दी शुरू करने वाले उत्साही लोगों से होती थी। फिर वो वॉर्म-अप के लिए जाता था जिसमें टेडमिल पर दौड़ना शामिल था। वॉर्म-अप खत्म होने पर, देव सर्किट वेट पर चला जाता था जो उसे लिमिट तक पुश करती थी, उसके बाद कोन हॉप्स, बारबेल बेंच प्रेस, डम्बल स्क्वॉट्स, पुल-अप और प्लैंक करता था। उसके वर्कआउट का मकसद एक हॉर्मोनल उछाल लाना था ताकि ऊंचे रेस्टिंग मेटाबॉलिक रेट के कारण उसका शरीर दिन भर मांसपेशियां बनाने और चर्बी जलाने के लिए तैयार रहे।

देव को बॉडीबिल्डिंग का ज्ञान उन सभी चीज़ों में से एक था, जो उसने राव के अधीन रहकर सीखी थीं। वो राव के सबसे अच्छे छात्रों में से एक था। आज तक, वो उन्हें अपना गुरु मानता था। उसे इस बात से नफ़रत थी कि राव के विरोधी समूहों ने उसे जबरदस्ती बाहर कर दिया था। इसकी वजह से उसे अपने जीवन का प्यार खोना पड़ा था।

देव के शरीर पर ज़रा भी अतिरिक्त चर्बी नहीं थी, और पसीने में भीगी हुई उसकी पतली सी टी-शर्ट, शानदार ढंग से उसके धड़ की लहराती मांसपेशियों को दिखा रही थी। कोई भी सोचेगा कि ऐसे शरीर के साथ, देव को महिलाओं को आकर्षित करने में कोई दिक्कत नहीं होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। राव की अकादमी बंद होने के बाद उसका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। उसे जगह बदलने और दोस्तों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों से संपर्क तोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। अनु ने उससे दोबारा मिलने से

इनकार कर दिया था। उसने उसके काम को सबसे बड़े धोखे के रूप में देखा। उसके बाद से, देव को किसी के बहुत करीब न जाना ही ज्यादा सुरक्षित लगा।

दो घंटे बाद अपना वर्कआउट खत्म करके, उसने अपने कैटाबोलिक हॉर्मोन को नियंत्रित रखने के लिए व्हे प्रोटीन पाउडर खाया, फिर जमकर नहाया और कुछ आरामदेह कपड़े पहने। फिर वो पड़ोस के कैफे में नाश्ता करने पहुंचा। रास्ते में वो एक गंदी सी दुकान से गुज़रा जो क्रिकेट से लेकर राजनीति तक हर चीज़ पर अनौपचारिक सट्टा कराने के लिए जानी जाती थी। दुकान मालिक ने सिर झुकाकर देव का अभिवादन किया, लेकिन देव नहीं रुका। वो जानता था कि उसकी सट्टे की आदत ने उसके साथ क्या किया था। उसने दोबारा उस रास्ते पर जाने से इनकार कर दिया।

वो कैफे में घुसा और वेट्रेस को देखकर अभिवादन किया। देव के लिए नाश्ता हमेशा बहुत बड़ा होता था, और वेट्रेस को उसका ऑर्डर जुबानी याद था। प्रोटीन और गुड फैट से भरपूर, कार्ब में कम, रेस्टोरेंट के मालिक अक्सर महत्वाकांक्षी एथलीटों और फिटनेस प्रेमियों से उसके नाश्ते की सिफारिश किया करते थे। वे उसे अपने मेन्यू में 'देव'स ब्रेकफास्ट ऑफ चैंपियन्स' कहते थे।

देव बैठने ही वाला था कि उसका फ़ोन बजा। यह कोई अनजान नंबर था—शायद कोई स्पैम कॉलर उसे इंश्योरेंस बेचने की कोशिश कर रहा होगा। फिर भी उसने फ़ोन उठाया। मन ही मन, वो उम्मीद कर रहा था कि यह पैम का कॉल हो। वो लुभावने और दिलकश ढंग से बातचीत कर रही थी।

'तुमसे पैम को राव के पास भेजने को किसने कहा था?' दबी सी आवाज़ में किसी ने पूछा। 'तुमने जो झमेला खड़ा किया है तुम्हें उसका अंदाज़ा भी है?'

'मैं...मैंने सिर्फ उसे अक...अकैडमी का पता दिया था,' देव लड़खड़ाई आवाज़ में बोला। 'वो उसे कहीं और से भी पा सकती थी। यह तो गूगल मैप पर भी है।'

'बेवकूफ कहीं के। तुम उससे बात न करके मामले को शुरू में ही दबा सकते थे। तुम जानते भी हो कि वो कौन है?'

'वो...वो एक स्पोर्ट्स मैगज़ीन से थी। उसने मुझे अपना मोबाइल नंबर भी दिया था।'

'इतनी तेज़ी से डेट की व्यवस्था कर लेने के लिए मुबारक,' आवाज़ ने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा। 'क्या तुम्हारे मन में उसका पूरा नाम जानने का ख्याल भी आया? या तुम उसकी खूबसूरती पर मर-मिटे थे?'

'मुझे ध्यान है कि मैंने उससे उसका पूरा नाम पूछा था लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा,' देव ने कहा। उसने पैम का पूरा नाम पूछने की जहमत नहीं उठाई थी। उस पर पैम के हुस्न का जादू चल गया था।

'वो पैम खुराना है, कर्नल किशन खुराना की बेटी। अब तुम्हें समझ आया कि तुमने कितनी बड़ी मुश्किल खड़ी कर दी है?'

देव ने बुदबुदाते हुए माफ़ी मांगी। वो जानता था कि उसने गलती कर दी थी। पैम खुराना ने उसे बेवकूफ बनाया था। वो एक अकेला आदमी था जो लगातार निगरानी और अपने पुराने कर्मों की वजह से एक प्रेमहीन जीवन जी रहा था। उन कमीनों को

पता चले बिना वो शौचालय तक नहीं जा सकता था, प्रेम-प्रसंग तो दूर की बात थी। जबसे राव की अकेडमी बंद हुई थी, वो उन लोगों पर निर्भर था। किसी महिला के ज़रा से प्यार से बात कर लेने ने उससे बेवकूफी करा दी थी।

‘मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था,’ उसने जवाब दिया। ‘मुझे इस चूक के लिए माफ़ कर दीजिए।’

‘याद है ना राव की योजना का क्या हुआ था? याद है ना कर्नल किशन खुराना के साथ क्या हुआ था?’

‘हां...हां...मुझे वो सब याद है,’ देव ने कहा, उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें बहने लगीं। ये लोग ऐसे नहीं थे जिनके साथ उलझा जाए। उन्हें सबकुछ पता था, वो सबकुछ देख और सुन रहे थे, वो सबकुछ कंट्रोल कर रहे थे।

‘तुम किस्मत वाले थे जुए के इतने मोटे कर्ज़ के बावजूद हमने तुम्हें फिर से बसाया। हमने कमाई का ज़रिया, कार और घर के साथ दिल्ली में तुम्हें बसाया। अब शायद तुम अपनी उपयोगिता से ज़्यादा जी रहे हो।’ मैं जुडस इस्कारियट (ईसा मसीह को धोखा देने वाला) बन गया और मुझे चांदी की तीस मुहरें मिल गईं, देव ने दुखी मन से सोचा। और उस इकलौते शख्स को भी खो दिया, जिसकी मैं परवाह करता था, अनु।

‘मैं वा...वादा करता हूं, मैं...ज़्यादा सावधान रहूंगा...’ देव ने कहना शुरू किया, लेकिन फ़ोन करने वाला पहले ही फ़ोन काट चुका था।

देव ने हड़बड़ी में फ़ोन नीचे रखा और एक रुमाल से अपने चेहरे का पसीना पोछा। उसने पैम से बात करने के लिए खुद को कोसा। उसके लिए सुल्तान के स्नेह के भरोसे रहना ज़्यादा बेहतर होता।

## 59

भारत और म्यांमार की सीमा पर पहाड़ों का एक जटिल नेटवर्क था जो आमतौर पर बादलों से घिरा रहता था। इनमें सबसे ऊंची चोटी माउंट सारामती थी, जिसकी ऊंचाई 12,552 फीट थी। इस घने जंगली क्षेत्र की घाटियों में से एक में, युवाओं का एक समूह कठोर अभ्यास कर रहा था जो एक मॉडिफाइड टाइथलॉन जैसा था। वे सभी सैनिकों के कपड़े पहने हुए थे, उनके सिर पर लाल पट्टियां बंधी हुई थीं।

उनकी उम्र चौदह से पच्चीस साल के बीच थी। उनमें से हरेक को इस बात का पूरा यकीन दिला दिया गया था कि भारत देश उनका सबसे बड़ा दुश्मन है; अपनी व्यवस्था बचाए रखने का इकलौता तरीका शासक वर्ग का तख्तापलट करना था। वे सभी दृढ़ता से मानते थे कि सिर्फ़ माओ का दर्शन ही उनके जीवन को बेहतर बना सकता था और एक हृदयहीन राज्य से निपटने के लिए सैन्य संघर्ष उचित था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि उन्हें पक्का यकीन था कि अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए वे जो रास्ता अपना रहे थे, वह न्यायसंगत था।

यह घने जंगलों वाला इलाका था जो उत्तर में दोयांग और दीफू नदियों से घिरा था और दक्षिण-पश्चिम में बराक नदी से। तेज़ उत्तर-पश्चिमी हवाओं की वजह से साल के इस

समय जमा देने वाला तापमान और ज़मीन पर पाले की मोटी परत थी। इमारतों लकड़ी और महोगनी के घने जंगलों की वजह से छुरे के बिना एक जगह से दूसरी जगह तक जाना अक्सर नामुमकिन होता था। कमज़ोर दिल वालों के लिए न तो यह जगह थी और न ही मौसम।

ब्रिटिश शासन से भारत की आज़ादी के 16 साल बाद, नागालैंड राज्य 1963 में भारत में शामिल हुआ था। तबसे, कुछ दलों की नागा इलाकों को भारत से अलग करने की मांग के चलते उग्रवाद ने पूरे इलाके को घेर रखा था। वैसे तो इनमें से ज़्यादातर समूह घर में ही पनपे थे, कुछ को म्यांमार या चीन से मदद मिल रही थी। असल में, एक विशेष दल ट्रेनिंग लेने के लिए चीन के युनान प्रांत तक भी हो आया था। इनमें से कुछ लोगों को उनके अचूक युद्ध कौशल और जीवित रहने की रणनीति के चलते जंगल की लड़ाई में सबसे अच्छा माना जाता था। यहां तक कि अंग्रेज़ भी कभी नागाओं को जीत नहीं सके थे और उनके इलाके के छोटे से हिस्से से ही खुद को संतुष्ट करने के लिए मजबूर हुए थे।

कैडेटों ने झाड़ियों वाले जंगलों, ऊंची घास और सरकंडों को अपनी छुरियों से साफ़ करते हुए कई मील का उबड़-खाबड़ रास्ता पार किया। उसके बाद वे तेज़ धाराओं का आसानी से मुकाबला करते हुए बर्फ़ाली-ठंडी उफ़नती नदियों से तैरकर निकले। उनके पास संभलने का समय नहीं था, क्योंकि जैसे ही वे दूसरे किनारे पर पहुंचे, वहां लड़ाकों का एक और समूह उनसे लड़ने का इंतज़ार कर रहा था जबकि उनके प्रशिक्षक पेड़ों की चोटी से गोलियां दाग रहे थे। उस मुश्किल इम्तेहान को पूरा करने के बाद, चुनौती के अंत तक पहुंचने के लिए उन्हें अपने हाथ-पैर का इस्तेमाल करके एक खड़ी चट्टान पर चढ़ना था। चोटी पर सबसे पहले पहुंचने वाला विजेता घोषित होता।

यह एक ऐसी दिनचर्या थी जो इंसान की मज़बूती को चरम सीमा पर पहुंचा देती। लेकिन ये युवा शायद मज़बूती से ही बने थे। नागा लोगों की करीब छियासठ जनजातियां थीं, जिनमें से ज़्यादातर हेड-हंटर्स (इंसानों का शिकार करके उनके सिर जमा करने वाले) थे। यह प्रथा अब चलन में नहीं थी, लेकिन दो दशक पहले, एक आदिवासी संघर्ष हुआ था जिसमें एक गांव के लोगों ने एक दुश्मन गांव के अट्टाइस लोगों के सिर काट दिए थे और उन्हें टॉफी के तौर पर घर ले आए थे। कुछ गांवों में सामुदायिक अवशेष घर भी थे जहां जीती हुई खोपड़ियां लगा दी गईं। जंगल का कानून हावी हो गया।

रहन-सहन के हालात भी उतने ही मुश्किल भरे थे। कैडेट फूस की छतों वाली बांस की झोपड़ियों में रहते थे जिनमें बारिश या ठंड से थोड़ी ही सुरक्षा मिल पाती थी। कैंप को नालों, पथरों को बेतरीके काटकर बनाई गई दीवारों और गहरे गड्ढों से सुरक्षित किया जाता था। वैसे तो राशन के रूप में चावल रोज़ दिया जाता था, लेकिन कैडेटों को इसके साथ कुछ और खाने के लिए शिकार करना पड़ता था। उनके भोजन में कीड़े, सांप, घोघे, चूहे, गिलहरियां और यहां तक की मकड़ियां और चींटियां भी शामिल रहती थीं। ऐसा कुछ भी नहीं था जो वे नहीं खाते थे।

उनके कैंप के बीचोंबीच लाल रंग का एक झंडा लहरा रहा था जिस पर 'एलएलएल'

लिखा था। लॉनोनेस्ट लिबरेशन लोग। इस ग्रुप को चीन में निजी समूहों से वैचारिक प्रेरणा, सैन्य प्रशिक्षण और वित्तीय मदद मिलती थी, इनमें से कई समूह बुज़ांग या एमएसएस के बनाए थे।

गाल पर चोट के गहरे निशान के साथ गंभीर दिखने वाला एक युवक उस पूरी दिनचर्या से होकर गुज़र रहा था जिसकी उससे उम्मीद थी। वह सबसे पहले चट्टान की चोटी पर पहुंचा था। पसीने से लथ-पथ और भयानक तकलीफ के चलते हाथ-पैर में हो रहे दर्द के बावजूद वह अपने साथियों की तरह नहीं बैठा। अपने कमांडिंग ऑफिसर से अगले निर्देश के इंतज़ार में वह अपनी पीठ सीधी करके सावधान खड़ा रहा, जो मोबाइल फ़ोन पर बात करने में व्यस्त था। उसके थके होने का एकमात्र संकेत उसकी तेज़ सांसों थीं जिन्हें छिपाने के लिए वह कड़ी मेहनत कर रहा था।

कुछ मिनटों के बाद, उसके कमांडर ने उसे एक किनारे बुलाया। 'हमें मिले निर्देशों के मुताबिक कल तुम दिल्ली निकलोगे,' उसने कहा। 'क्या तुम्हारे भीतर अपने मिशन को लेकर भरोसा और प्रतिबद्धता है?'

युवक ने जल्दी-जल्दी हां में सिर हिलाया। वह लंबे समय से ऐसे मौके का इंतज़ार कर रहा था। अब समय आ चुका था कि उसे खुद को साबित करने का मौका दिया जाए। उसने अचानक मृत्यु देने वाले रुतज़ेह के लिए एक छोटी सी प्रार्थना पढ़ी। पिछले वर्षों के दौरान, अमेरिकी बैपटिस्ट मिशनरियों के प्रभाव में अधिकांश नागाओं ने ईसाई धर्म अपना लिया था, लेकिन कई जनजातियों की सांस्कृतिक मान्यताएं गहराई तक गई हुई थीं, जिनमें रुतज़ेह में विश्वास भी शामिल था।

'हमें निराश मत करना,' उसके कमांडर ने कहा। 'एयरपोर्ट पर तुम्हें ज़रूरी हथियार और गोला-बारूद दिए जाएंगे। यह मिशन हमारे चीनी दोस्तों के लिए महत्वपूर्ण है। गौरवशाली क्रांति अमर रहे!'

युवा कैडेट ने जोशीले ढंग से सैल्यूट किया। 'गौरवशाली क्रांति अमर रहे!'

## 60

किसी को नहीं मालूम था कि ता-मी<sup>51</sup> शहर की स्थापना कब हुई थी। इसके कम से कम एक हजार साल पहले से अस्तित्व में होने के दस्तावेज़ मौजूद हैं, क्योंकि पश्चिम<sup>52</sup> के महान विजेता का तभी से इस पर कब्ज़ा था। शहर के आसपास के क्षेत्र को ये आक्रमणकारी बैक्ट्रिया नाम से जानते थे।

एक मठ के रास्ते में, मुझे धर्मसिंहा नाम के एक भिक्षु से मिलने का मौका मिला। उन्होंने यिंदु का दौरा किया था और मैंने उनके साथ बिताए गए समय का इस्तेमाल इस जगह और यहां के लोगों के बारे में समझने में किया। उन्होंने कश्मीर<sup>53</sup>, जालंधर<sup>54</sup> के उपजाऊ मैदानों और फू-शुई<sup>55</sup> की शक्तिशाली गर्जना का वर्णन किया। उन्होंने मुझे उन समृद्ध राज्यों के बारे में बताया जो उस भूमि के चारों ओर निर्बाध रूप से फैले हुए थे। लेकिन मैं यह सुनकर निराश था कि बुद्ध के मार्ग का पतन हो रहा था और पुरानी यिंदु आस्थाएं एक बार फिर से प्रचलन में आ रही थीं।

पो-त्सु नदी के दक्षिण में उपजाऊ मैदान और घाटियां थीं। इस क्षेत्र में 3,000 से ज्यादा हीनयान भिक्षु थे, और यह स्तूपों से भरा हुआ था जो बुद्ध की निशानियों को संरक्षित

करने के लिए बनाए गए थे। सबसे कीमती वस्तुएं आमतौर पर स्फटिक और सोने के डिब्बों में रखी जाती थीं और कम मूल्यवान वस्तुएं लकड़ी या पत्थर के डिब्बों में।

क्षेत्र के सैकड़ों मठों में से एक था नवविहार जो फोहो<sup>56</sup> में था। यह सबसे बड़ा था और इसके गुरुओं की अटूट श्रृंखला चली आ रही थी। यहां के प्रमुख भिक्षु, प्रज्ञाकर ने मेरा स्वागत किया। नवविहार की समृद्धि देखकर मैं स्तब्ध था। गुफा मंदिर, स्तूप, आंगन, मूर्तियां, विस्तृत लकड़ी की छतें, अलंकृत स्तम्भ स्तूप और पत्थर की भव्य छतरियां पूरे परिसर को भव्यता की आभा दे रही थीं। वहां कीमती पत्थर जड़े बुद्ध के कई चित्र थे और मठ के विशाल कक्ष मूल्यवान दुर्लभ वस्तुओं से सजे थे जो तेल के दीयों की झिलमिलाती रोशनी में चमक रही थीं, जिनमें लगातार तेल भरा जा रहा था। मठ के नियंत्रण में खेती की बहुत बड़ी जगह होने की वजह से भोजन की कोई कमी नहीं थी।

मैं वहां करीब एक महीने रुका और प्रज्ञाकर का दोस्त बन गया। मैंने उनसे पूछा कि इस क्षेत्र के स्तूपों का एक अलग आकार क्यों था। प्रज्ञाकर मुस्कुराए और मुझे एक कहानी सुनाई। ऐसा माना जाता है कि दो अमीर व्यापारी एक यात्रा के दौरान बुद्ध से मिले थे और उनके साथ भुने अनाज और शहद का अपना थोड़ा सा भोजन साझा किया था। बदले में, बुद्ध ने उन्हें पांच उपदेश और दस शील सिखाने में कुछ समय बिताया। जब व्यापारियों ने बुद्ध की शिक्षाओं का मूल समझ लिया, तो उन्होंने गुरु से उन्हें याद रखने के लिए कुछ देने का आग्रह किया। बुद्ध ने दोहराया कि उनकी पूजा नहीं की जानी चाहिए, लेकिन अपनी शिक्षाओं को याद रखने के लिए उन्होंने उन्हें अपने बालों का एक गुच्छा दिया। तब व्यापारियों ने उनसे पूछा कि बालों के इस गुच्छे को सुरक्षित रखने का सबसे अच्छा तरीका क्या था। बुद्ध ने अपने तीन वस्त्रों को मोड़कर सबसे बड़े को ऊपर और सबसे छोटे को नीचे रखकर उन्हें एक के ऊपर एक तह लगा दिया। फिर बुद्ध ने अपना भिक्षा पात्र उठाया और उसे उल्टा करके तह किए इन कपड़ों के ऊपर रख दिया। अंत में, उन्होंने सबसे ऊपर अपने दंड को खड़ा कर दिया और वही स्तूप का डिजाइन बन गया जिनमें भविष्य में उनके अवशेष रखे जाने थे। मुझे यह कहानी दिलचस्प और पूरी तरह से विश्वसनीय लगी।

मैंने अपने दौरे को हीनयान की मान्यताओं को सीखने के मौके के तौर पर इस्तेमाल किया। प्रज्ञाकर ने मुझे उन धर्मग्रंथों से परिचित कराया जिन्हें मैंने पहले नहीं पढ़ा था। उन्होंने मुझे एक महत्वपूर्ण ग्रंथ, महाविभाषा, भी दिया, जिसे मैं भविष्य में अनुवाद के लिए अपने साथ ले गया। प्रज्ञाकर ने मुझे सिर्फ नालंदा ही नहीं बल्कि कश्मीर में भी समय बिताने को कहा, जहां कई पुराने ग्रंथों को संहिताबद्ध किया गया था।

जब मेरे निकलने का समय हुआ तब, प्रज्ञाकर मेरे साथ बर्फ़ीले पहाड़ों<sup>57</sup> से चमकते प्रकाश के स्थान<sup>58</sup> तक मेरे साथ आए, जो सोने की चादरों से ढकी बुद्ध की विशाल मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध थी।

हमेशा बर्फ़ से ढकी चोटियों और बर्फ़ीले तूफ़ानों की वजह से बर्फ़ीले पहाड़ों की यात्रा जोखिम भरी थी। रास्ते में, प्रज्ञाकर, मेरे दो शिष्य और मैं बाकी समूह से अलग हो गए

थे। यह एक खतरनाक घटना थी, क्योंकि वह जगह लुटेरों, जंगली जानवरों और बुरी आत्माओं का घर मानी जाती थी। हम फंस गए थे। कई दिनों बाद, हमें तेंदुए का शिकार करने वाले एक व्यक्ति ने बचाया, जिसने हमें रास्ता दिखाया और हमें दल के दूसरे लोगों से दोबारा मिलाया। शिकारी के रूप में एक रक्षक को भेजने के लिए मैंने बुद्ध का धन्यवाद किया। उसे अपना पेशा छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाने की सलाह देना अजीब लग रहा था। अगर वह शिकार पर नहीं निकलता, तो हम कभी नहीं बच पाते!

अंततः हम चमकते प्रकाश के स्थान पर पहुंचे, जो बर्फ़ीली घाटियों में बसा एक मरुद्धान था। इसकी एक झलक भर से मेरी सांसें थम गईं—बेहद विशालकाय झरोखों के बीच दो महाकाय मूर्तियां, मैं अपने दिल को तेज़ी से धड़कते हुए महसूस कर सकता था, लेकिन मुझे पता था कि उन मूर्तियों तक पहुंचने में हमें कई दिन लग जाएंगे।

अब तक, प्रज्ञाकर के साथ मेरे संबंध मजबूत हो चुके थे। मैंने उन्हें बताया कि मैं सिर्फ नालंदा से मूल ग्रंथ नहीं पाना चाहता, बल्कि डी सैन सू चुआन के रूप में चीन भी लौटना चाहता था। तब प्रज्ञाकर ने मुझे कहा कि अगर मैं डी सैन सू चुआन बनने के लिए गंभीर था तो मुझे 'सुगंधित भूमि' जाना चाहिए। मैंने उनसे पूछा कि सुगंधित भूमि कहां थी, लेकिन उन्हें इसकी कोई जानकारी नहीं थी। इसका कई लेखों में उल्लेख था, लेकिन प्रज्ञाकर कभी उस जगह नहीं गए थे। मैं सोच रहा था कि मैं इसे कभी कैसे खोज पाऊंगा।

हमेशा की तरह, मैंने बुद्ध में अपना भरोसा कायम रखा।

## 61

वह छोटी सी दुकान अनु के घर के पास थी, और आयंगर दुकान मालिक हर ग्राहक को उसके नाम से जानता था। अनु दुकान पर नियमित रूप से आती थी, और अपने पिता के साथ वो जो भी भोजन करती थी उनमें से अधिकांश यहीं के खरीदे गए बैटर से बनाए गए होते थे। यह, निस्संदेह रूप से, धरती पर सबसे अच्छा बैटर था, और वो इसके बिना खाना नहीं बनाती थी।

दुकान बेहद साधारण थी, इतनी साधारण कि कोई आसानी से इसे देखने से चूक सकता था। लकड़ी के एक साइनबोर्ड पर तमिल में परिवार का नाम लिखा था। रात को परिसर पर जंग लगा हुआ एक शटर गिरा दिया जाता था लेकिन शायद ही उसमें कभी ताला लगा होता था। अंदर फ़र्श और दीवार पर ग्रे सेरामिक टाइलें लगी थीं, जो दिन का काम खत्म होने के बाद तेज़ गर्म पानी से धुलने के लिए तैयार रहती थीं। यहां स्वच्छता, धार्मिकता के बाद सबसे महत्वपूर्ण थी। एक दीवार पर श्री वरदराजपेरूमल मंदिर के भगवान की तस्वीर थी, जिसमें एक छोटी सी शेल्फ थी जिस पर रोज़ सुबह एक अगरबत्ती जलाई जाती थी। दुकान के सामने लकड़ी के एक काउंटर से दिन भर का भोजन बेचा जाता था। आमतौर पर सुबह 10 बजे तक दुकान का सारा सामान

बिक जाता था, और रोज़ के ग्राहकों को पता था कि अगर वे उसके बाद पहुंचे तो उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ेगा। सीमित मात्रा में बैटर बनाने से यह तय रहता था कि भोजन की बर्बादी न हो और इससे रोज़ बिकने वाला बैटर भी एकदम ताज़ा रहता था।

दिल से, कांची अभी भी एक छोटा शहर था, जहां दुकानदार और ग्राहक एक दूसरे को पीढ़ियों से जानते थे। दुकान मालिक के पिता ने प्रसिद्ध कांचीपुरम इडली बेचकर प्रतिष्ठा कमाई थी, वह मदापल्ली के श्री वरदराजपेरुमल मंदिर से काम करते थे जो भगवान विष्णु को समर्पित था। पक्वान उत्तम होना ही था क्योंकि यह भगवान को परोसा जाता था और इसे बनाए जाने की विधि में थोड़ा सा भी बदलाव नहीं किया जा सकता था। बेटे ने इस परंपरा को जारी रखा लेकिन इसमें पारंपरिक इडली और डोसा बैटर को भी जोड़ लिया। वह एक दुबला-पतला, सांवला आदमी था, जो लगभग हमेशा सफेद कमीज़ और सफेद धोती पहने रहता था और उसके माथे पर चंदन का टीका लगा होता था। उसकी मोटी सफेद भौहें उसके कपड़ों के रंग से मेल खाती थीं।

पूरे कांची के लोग कांचीपुरम इडली खाने और अपनी रसोई के लिए बैटर खरीदने उसकी छोटी सी दुकान पर आते थे। काम में यह प्रवीणता आसानी से नहीं आई थी। दुकानदार रोज़ शाम को चावल, काले चने की दाल और मेथी के दानों को पीसकर महीन पेस्ट बनाने से पहले अपने गुप्त अनुपात में खुद भिगोता था।

सुबह 4 बजे से ही, वह कड़ी मेहनत में लग गया था, नाश्ता करने वालों और गृहिणियों के लिए वह पहले बैच की तैयारी में लगा था, काउंटर पर केले के पत्तों का ढेर लगाना, जो कागज़ और प्लास्टिक प्लेटों के लिए उसका पारंपरिक, पर्यावरण के अनुकूल विकल्प था। इसके बाद, उसका ध्यान पीतल के बड़े बर्तनों पर गया जिनमें वह अपनी खास इडली बनाता था। चटनी और सांबर बनाना अभी बाकी था।

दुकानदार सिर्फ एक व्यापारी नहीं था; वह एक कलाकार था। वह अपने काम को लेकर जुनूनी था, और वह जुनून उनके खाने की क्वालिटी में भी दिखाई देता था। काम करते वक्त वह मन ही मन गुनगुनाता रहता था।

दुकान खुलने के बाद, गुनगुनाना बंद हो जाता था। जैसे ही ग्राहक अंदर आना शुरू होते थे वह नाम लेकर उनका अभिवादन करने और उनके परिवारों का हालचाल पूछने में व्यस्त हो जाता। कुछ ग्राहक, जो बैटर के इस्तेमाल के बारे में पूछते थे, वह उन्हें खाना पकाने की किसी किताब से भी ज़्यादा विस्तार में जानकारी देता था।

लेकिन रोज़ की हलचल शुरू होने के पहले, दुकान के अंदर सिर्फ वही था। या उसे ऐसा लगा होगा। वह उस अजनबी को नहीं देख पाया जो पहले से अंदर था, एक गठीला आदमी जिसने अपने हाथ जेब में डाले हुए थे।

उसकी नज़र उस आदमी पर तब पड़ी, जब उसने काउंटर पर हाथ फेरकर जांचा कि कहीं धूल तो नहीं थी। 'भाई, अभी दुकान खुली नहीं है,' उसने कहा। 'तुम एक घंटे बाद आना।' वो हट्टा-कट्टा आदमी हिला नहीं। दुकानदार को समझ नहीं आ रहा था कि उसने उसकी बात समझी या नहीं; तभी उसे कुछ दिखाई पड़ा। आदमी के दाहिने हाथ में एक बंदूक थी जिसकी आकृति उसकी जेब के अंदर से भी दिखाई दे रही थी।

दुकानदार घबरा गया। टीवी पर अपने परिवार के साथ देखी गई तामेल फिल्मों को छोड़कर उसने कभी कोई बंदूक नहीं देखी थी। उसका जीवन बहुत सीधा-सादा था। उस ठग को आखिर उससे क्या चाहिए होगा? 'आप पैसों की दराज खोलकर जो चाहे ले सकते हैं,' उसने घबराहट के मारे कहा। 'पैसे ज़्यादा नहीं हैं। इस दुकान के अंदर चुराने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं है।'

'मुझे तुम्हारे पैसे नहीं चाहिए,' घुसपैठिए ने कहा, 'न ही मैं तुम्हें चोट पहुंचाना चाहता हूँ। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो और तुम्हें कुछ नहीं होगा।'

'आप असल में चाहते क्या हैं?' दुकानदार ने सावधानी से पूछा।

उस आदमी ने एक शीशी निकाली जिसमें एक सफेद दानेदार पाउडर था। 'मैं चाहता हूँ कि तुम इसे बैटर के एक खास बैच में मिला दो।'

## 62

रात के करीब 11 बज रहे थे जब पैम ने जर्नी टू द वेस्ट पढ़ना खत्म किया। वह सोफे पर टेक लगाए, लिविंग रूम के फ़र्श पर बैठी थी। किताब काफ़ी रोचक निकली, हालांकि बीच-बीच में थोड़ी थकाऊ भी थी। उसने सोचा, 'द मॉन्क एंड द मंकी' बेहतर टाइटल होता। एक तरफ, बंदर सोचता था कि भिक्षु के मांस का एक टुकड़ा खाकर वह अमर हो जाएगा; दूसरी तरफ भिक्षु को ड्रैगन, लुटेरों, आत्माओं और दुष्ट जादूगरों से लड़ने के लिए, जो उनकी खोज को विफल कर सकते थे, बंदर की ज़रूरत थी जिसके पास उड़ने, अदृश्य होने और दूसरे आकार में बदलने की शक्तियां थीं। लेकिन इसमें बड़ी सीख क्या है? और अमरता को लेकर यह जुनून क्यों? एक महान भिक्षु को अपनी यात्रा में एक अलौकिक बंदर क्यों चाहिए? किताब किस गहरे रहस्य को छिपा रही है?

उसने लेखक, वू चेंगेन, के बारे में गूगल पर तुरंत सर्च किया। लेखक के बारे में बहुत कम जानकारी थी। वो सोलहवीं सदी के किसी समय के थे और अपने पिता की तरह साहित्य में उनकी रुचि थी। वो कई बार इंपीरियल यूनिवर्सिटी की परीक्षा में बैठे लेकिन प्रवेश पाने में असफल रहे। अंततः जब उन्हें सफलता मिली तो वो अथेड्ड उम्र के हो चुके थे। जैंगजिंग और बीजिंग में वो आधिकारिक पदों पर रह चुके थे, लेकिन काम उन्हें उबाऊ लगा। उन्होंने अपना बाकी जीवन कहानियां और कविताएं लिखकर बिताया। उनका सबसे अच्छा काम, जर्नी टू द वेस्ट, छद्मनाम से प्रकाशित हुआ था। ऐसा क्यों है? कल्पना और रोमांच के इस उपन्यास में किस रहस्योद्घाटन के चलते लेखक को खुद को गुमनाम रखना पड़ा?

पैम को सबसे बड़ा असमंजस यह था कि राव ने उससे किताब पढ़ने का अनुरोध किया था। क्या वह बूढ़ा आदमी पागल हो चुका है? वर्तमान में डोकलाम में जो हो रहा है उससे इस उपन्यास का क्या संबंध है? मुझे हज़ारों शब्दों से गुज़रने की क्या ज़रूरत थी? सिर्फ चीन के श्रेष्ठ ग्रंथों की सराहना के लिए?

पैम अपनी मां से बेखबर थी, जो सोफे पर बैठकर लगभग बंद आवाज़ में एक टीवी

सौरियल देख रही थी ताँके पैम को परेशानी न हो। पैम ने अपने स्मार्टफ़ोन के स्क्रीन की लाइट जलते हुए देखी। मार्क का फ़ोन आ रहा था। उसने कंप्यूटर अलग रखा और कॉल उठाई। मार्क ने उससे मिलने को कहा। उसने अपनी घड़ी की ओर देखा। काफी देर हो चुकी थी, लेकिन उतनी देर नहीं हुई थी। वे एक रात-भर खुले रहने वाले एक रेस्टोरेंट में मिलने को तैयार हुए, यह उनमें से एक था जिनके लिए दिल्ली मशहूर थी।

उसकी माँ ने अपना चश्मा उतार लिया था और पैम को घूर रही थीं। वह एक असहज चुप्पी का क्षण था। 'अगर वह अच्छा है, तो तुम उसे घर पर क्यों नहीं बुलाती?' अपनी बेटी की वैवाहिक संभावना के लिए उम्मीदों से भरकर उसकी माँ ने अचानक पूछा। पैम ने आह भरी। उसकी माँ के साथ इस तरह की बातचीत करना नामुमकिन था। हर बात शादी के मुद्दे पर ही पहुँच जाती थी।

'वह एक आहत आदमी है, माँ,' पैम ने कहा।

'तुम्हारा मतलब उसके तलाक से है?'

'मेरा मतलब उसके उन वर्षों से है जिसमें उसने अभी के जीवन के बिल्कुल उलट जीवन जिया था। मुझे नहीं पता कि कुछ ज़ख्म कभी भरते हैं या नहीं। एक अधेरा सा है जो उस पर छाया हुआ है। मुझे नहीं लगता कि मैं उस अंधेरे को बांटने के लिए तैयार हूँ।'

उसकी माँ परेशान हो गई। वह पहले भी अपनी ज़िद्दी बेटी से ये सब सुन चुकी थी।

पैम तुरंत तैयार हो गई, कार में बैठी और एम्स—ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की तरफ निकल गई। एम्स के ठीक सामने सफ़दरजंग हॉस्पिटल का गेट था; जिसके बाहर रात-भर खुला रहने वाला एक ढाबा था जिसमें चौबीसों घंटे पराठे और चाय मिलती थी। रात के इस समय द्वारका में उसके घर से वहाँ पहुँचने में बीस मिनट से भी कम समय लगता, हालाँकि दिल्ली के बदनाम टैफिक जाम में दिन के वक्त यही दूरी तय करने में एक घंटे से ज़्यादा लग जाता। जिन सोडियम स्ट्रीट लैंपों की रोशनी में वो कार चला रही थी, उनकी नीरसता ने उस पर एक अजीब सा शांत असर डाला। उसने कार के स्टीरियो का बटन दबाया और अपने फ़ोन के संगीत को ब्लूटूथ के जरिए स्ट्रीम किया। उसके मन में बसा डायर स्टेट का गाना वॉटर ऑफ लव बजना शुरू हुआ। ड्राइव करते हुए उसने मार्क नॉफ़लर के साथ गाना शुरू किया। उसके होंठों पर मार्क नॉफ़लर था लेकिन दिमाग में मार्क रिचर्ड्स।

गाड़ी चलाते वक्त यादें ताज़ा हो गईं। गोवा में कॉन्फ्रेंस और लगातार मौज-मस्ती; तीसरी पीढ़ी के मालिक द्वारा चलाया जा रहा सीफूड ज्वाइंट; हिप्पी जो अपना मलाना क्रीम ज्वाइंट उनसे शेयर करने में खुश थे; हवा में पसरी चरस की महक; स्ट्रॉबेरी कॉकटेल और फेनी का ओवरडोज़; बीच पर देर तक तक डांस करना; और समुद्र तट के सामने के सुइट में एक बिस्तर पर सोना। अगली सुबह वे मॉर्निंग सेशन में नहीं गए थे। उसकी जगह, उन्होंने बिस्तर पर ही नाश्ता ऑर्डर किया, और एक-दूसरे को एक्स्ट्रा मैपल सिरप के साथ वैफल खिलाए।

कॉन्फ्रेंस में वापस जाने का समय होने तक वे लगातार बातें करते रहे। उस सुबह, मार्क

ने उसे बताया कि वह कंबोडिया, चीन और वियतनाम में अपने वर्षों के दौरान कैसे जीवित रहा; कैसे उसे थाईलैंड के खमेर रूज निर्वासितों ने पकड़कर प्रताड़ित किया था; कैसे उसकी शादी टूट गई; कैसे उसने कैसर से लड़ाई लड़ी थी।

मार्क ने बहुत कुछ झेला था। घाव के निशानों के बिना वह कुछ भी नहीं था, और पैम यह जानती थी। लेकिन उसकी कहानियों में कुछ कमियां थीं, उसे पता था कि वो कुछ छिपा रहा था। वो सोचती थी कि क्या वो कभी मार्क पर पूरा भरोसा कर पाएगी। उसके तार्किक दिमाग में उसके लिए, उसके बारे में कई सवाल थे।

लेकिन वो यह भी जानती थी कि उसे उस आदमी से प्यार हो रहा था। और प्यार शायद ही कभी तर्क के बारे में सोचता हो।

### 63

पैम खाने के अड्डे पर रुकी। कई कारें पहले से ही बाहर खड़ी थीं, यह जगह उन लोगों का पसंदीदा अड्डा था जिन्हें बेवक्त तीखा, मसालेदार खाना चाहिए होता था। कारहॉप्स ग्राहकों से उनकी कार तक आकर ऑर्डर ले जाते थे, और मिनटों में खाना डिलीवर भी कर देते थे। सामने रखे एक बड़े आकार के तवे और दो कड़ाहों पर सारा काम हो रहा था। दुकान का मालिक इन कड़ाहों में, अपने ग्राहकों की पसंद के अनुसार अलग-अलग चीजें भरकर हर रात सैकड़ों परांठे बनाता था।

मार्क कुछ मिनटों के बाद वहां पहुंचा। उसने अपनी कार कुछ दूरी पर खड़ी की, पैम के पास चलकर गया और पैसेंजर सीट पर बैठ गया। वो पास गया, पैम के गाल को चूमा और फिर चालाकी से उसके होंठों की ओर बढ़ा। पैम मुस्कुराई लेकिन दूर हट गई।

‘पहले काम की बात,’ उसने दृढ़ता से कहा।

‘ओह, मज़ा खराब कर दिया,’ मार्क ने निराश होकर कहा। ‘बेकार।’

काली टी-शर्ट और जींस पहने और एक पेंसिल को अपने कान के पीछे खोंसे एक कारहॉप ने मार्क की खिड़की पर दस्तक दी। मार्क ने दोनों के लिए चाय और परांठे ऑर्डर किए। उस आदमी ने उनका ऑर्डर नोट किया और चला गया। धंधा बढ़िया चल रहा था और किसी कर्मचारी के पास एक मिनट की भी फुर्सत नहीं दिख रही थी। कर्मचारी और ग्राहकों को ऑर्डर देने में तेज़ी दिखाने की ज़रूरत थी, रसोइए को उन ऑर्डरों को तेज़ी से तैयार करना था, कारहॉप्स को खड़ी कारों तक ऑर्डर पहुंचाने में कुशल होना था, ग्राहकों को पता था कि खाना खाते ही उन्हें अगली कार के लिए पार्किंग की जगह तेज़ी से खाली करनी थी। सारा सिस्टम बहुत अच्छी तरह चल रहा था, और हां, यहां वक्त कीमती था।

‘राव ने मुझे जो दस्तावेज़ दिए थे वे असल में चीनी उपन्यास जर्नी टू द वेस्ट का एक संस्करण था,’ पैम ने समझाया। ‘कहानी में, चीनी भिक्षु ह्वेन-त्सांग मूल बौद्ध धर्म ग्रंथों को हासिल करने के लिए, वानर-राज सन वुकोंग के साथ भारत आते हैं।’

‘उससे तुम्हें क्या फायदा होगा?’ मार्क ने पूछा। ‘एक उपन्यास तुम्हारे अभी के लक्ष्य के

लिए इतना महत्वपूर्ण कैसे हो सकता है?’

‘क्योंकि डोकलाम में चीनी हमलावरों के नाक-नकश बंदरों जैसे थे। यहां तक कि तुम्हारी टीम ने खून का जो विश्लेषण किया है, उससे भी इंसानों और बंदरों के बीच कुछ होने का संकेत मिला है।’

‘ये महज़ एक संयोग हो सकता है।’

‘संयोगों की संख्या कुछ ज्यादा ही है। हम जानते हैं कि जर्नी टू द वेस्ट एक पुरानी रचना द ग्रेट तांग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजंस से प्रेरित है, जो ह्वेन-त्सांग के शिष्य बियानजी ने लिखी थी। उस विवरण में, ह्वेन-त्सांग को जेड गेट के आगे रेगिस्तान पार करने में मदद के लिए एक व्यापारी मिला था। व्यापारी का नाम बंधा था।’

‘तो?’ मार्क ने पूछा। वो समझ नहीं पा रहा था कि पैम क्या कहना चाह रही थी।

‘बंधा संदेहास्पद रूप से बंदर जैसा लगता है,’ पैम ने जवाब दिया। ‘क्या यह नाम मूल शब्द का अपभ्रंश मात्र था? लेकिन कुछ और भी है। और इसका संबंध मेरे पिता से है।’

‘क्या?’ मार्क ने अपनी आंखें सिकोड़कर कहा।

पैम ने अपने पिता की नोटबुक खोली और उसे रोशनी के नीचे रखा। उसने अंत तक पेज पलटे और मार्क को स्केच दिखाए। ‘मेरे पिता ने ये आकृतियां क्यों बनाईं? वे कौन लोग हैं? वे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? और ये कहां बनाए गए थे?’

मार्क ने तस्वीरों को सावधानी से देखा। आकृतियां स्पष्ट रूप से वानर जैसे नाक-नकश की ओर इशारा कर रही थीं। लेकिन क्या यह संभव नहीं कि कर्नल खुराना सिर्फ चित्र बना रहे हों?

‘जब मैं राव के घर से निकल रही थी, मैंने उनकी मेज़ पर एक छोटी मूर्ति देखी,’ मार्क के मन में चल रहे विचारों से बेखबर, पैम ने बोलना जारी रखा। ‘तीन बुद्धिमान बंदर जो बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो के सिद्धांत का प्रतीक हैं। हम उन्हें जापानी किरदार समझते हैं, लेकिन उनका मूल चीन में है, कंप्यूशियस के कोड ऑफ कंडक्ट में। बहुत से तार जुड़ रहे हैं, और सभी बंदरों की ओर ले जा रहे हैं।’

‘अगर तुम किसी भी विषय की गहराई से जांच करोगी तो तुम्हें हमेशा बहुत सारे तार जुड़ते मिलेंगे,’ मार्क ने दलील दी। ‘वे कनेक्शन रैंडम हो सकते हैं और हो सकता है उनका कोई मतलब न हो। यह भी याद रखो कि राव एक बुजुर्ग हैं। हो सकता है उनका दिमाग भटक गया हो।’

पैम ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। मार्क के नज़रिए में कुछ सच्चाई थी, लेकिन उसे अभी भी इस बारे में ज्यादा सोचने की ज़रूरत थी। ‘जब मैं निकल रही थी तब राव ने कुछ और भी कहा था। कि सच्ची शक्ति तीन बंदरों का सिद्धांत मानने से आती है—वे बंदर जिनके उन्होंने नाम भी रखे थे—और यह कि भारत में हमने रीसस प्रजाति को हमेशा पवित्र माना है। और वो सही कह रहे हैं। हनुमान शायद पहले सुपर हीरो थे जिनकी पूजा की जाती है। सुपरमैन और स्पाइडरमैन के बहुत पहले से। और फिर तुम मुझे बताते हो कि टूनीकेट ब्लड में हमें सैंतालिस गुणसूत्र मिले, जो मनुष्य और बंदर के बीच की एक संख्या है।’

मार्क चुप रहा। पैम जो भी कह रही थी, वो उन सारी बातों को अपने मन में बैठाने की कोशिश कर रहा था। पैम अपने स्मार्टफ़ोन में कुछ खोजने में लगी थी। 'तुम क्या खोज रही हो?' मार्क ने पूछा।

'यह,' मार्क की ओर फ़ोन बढ़ाते हुए उसने कहा। यह बीजिंग के नेशनल साइंस रिव्यू का एक लेख था। मार्क ने शीर्ष पर सारांश देखा। चीनी शोधकर्ताओं ने मानव मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले MCPH1 जीन की प्रतियां ली थीं, और इसे जीन ले जाने वाले एक वायरस के माध्यम से बंदर के भ्रूण में डाला था।

'क्या ऐसा हो सकता है कि हम परिवर्धित बंदरों से निपट रहे हों?' पैम ने पूछा जब मार्क उस लेख को देख रहा था, तब फ़ोन की स्क्रीन की रोशनी में दिख रहा था कि उसे यकीन नहीं हो रहा था।

कारहॉप की खटखट से उसका ध्यान टूटा। उनके परांठे और चाय आ गई थी। मार्क ने खाने की दो छोटी ट्रे लेने के लिए खिड़की नीचे की ओर एक ट्रे पैम को दी। खाने से कमाल की खुशबू आ रही थी।

अचानक, कान के पर्दे फाड़ने वाला एक शोर हुआ और पैम की खिड़की चकनाचूर हो गई। जब उसे एहसास हुआ कि एक गोली उससे चूककर निकल गई थी तो वो चीखी। कारहॉप ने हाथ में कसकर बंदूक पकड़ी थी और फिर से पैम पर निशाना साधा, लेकिन इस बार मार्क ने अपनी जलती हुई चाय का कप उस आदमी के चेहरे पर फेंक दिया। चाय से चेहरा झुलसने के चलते वह दर्द में चिल्लाया और उसकी बंदूक ज़मीन पर गिर गई। वह तेज़ी से संभला लेकिन तब तक मार्क कार से बाहर निकल चुका था और उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

पैम अपने शुरुआती सदमे से उबरी और दरवाज़ा खोलकर बाहर आई। कार से बाहर निकलकर, वो उस तरफ दौड़ी जिधर मार्क था। मार्क कारहॉप पर ताबड़तोड़ घूँसे चला रहा था, जो बराबरी से जवाब दे रहा था। आसपास की कारों में बैठे दूसरे ग्राहकों ने हंगामा देखा, गोलियों की आवाज़ सुनी और चुपके से सुरक्षित दूरी पर भाग गए।

मार्क ने कारहॉप की बंदूक उठाने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि वो उसे पकड़ पाता, नौजवान एलएलएल लड़ाके ने इसे छीन लिया। एक और गोली चली, और पैम ने मार्क को ज़मीन पर गिरते देखा, उसके पेट में गोली लगी थी। पैम चिकनी सड़क पर फ़िसली और उसके पैर एक प्रोजेक्टाइल की तरह जाकर कारहॉप से भिड़े। वह गिरा और उसकी पकड़ से हथियार छूट गया। बंदूक उसके हाथ से निकलकर हवा में उड़ी, पैम ने उसे थामने के लिए अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। उसकी उंगलियों ने इसे हवा में ही पकड़ लिया और बिना कुछ सोचे पैम ने ट्रिगर दबा दिया। ऐसा लग रहा था कि उसके दिमाग में प्रोसेस करने के लिए बहुत सारे आंकड़े थे और उसका अवचेतन मन उसे रास्ता दिखा रहा था।

गोली उसके भावी हत्यारे के सीने में लगी। वह सड़क पर खून से लथपथ पड़ा था। पैम ने बंदूक फेंकी और मार्क के बगल में घुटनों के बल बैठ गई, जिसका खून बुरी तरह बह रहा था। उसने उसका सिर अपनी गोद में रखा और खून रोकने के लिए अपने

स्काफ़ का इस्तेमाल किया। 'एंबुलेंस बुलाओ,' वो ज़ोर से चिल्लाई। 'प्लीज़, कोई मदद करो!'

उसने जब मार्क को अपनी बांहों में थामा हुआ था तब उसके आंसू नहीं रुक रहे थे, वो प्रार्थना कर रही थी कि जिस तरह उसने अपने पिता को खोया था, वैसे मार्क को न खोए।

## 64

बर्फ़ीले पहाड़ों की ढलानों से उतरकर, हम चमकते प्रकाश के स्थान पर पहुंचे। हर कदम हमें उन दो विशाल मूर्तियों के करीब ले जा रहा था जो खड़ी चट्टानों में उकेरी गई थीं। चमकते प्रकाश का स्थान एक हरी-भरी घाटी था, जो बहुत समृद्ध लगती थी। यह ज़मीन कई तरह के अनाज, फल और फूल पैदा करती थी। इसके अलावा मवेशियों, भेड़ों और घोड़ों के लिए भी भरपूर चारागाह थे। लोग अच्छे कपड़ों में थे, फर और ऊन के कपड़े पहने हुए थे। जैसे-जैसे हम मूर्तियों के पास पहुंच रहे थे मैं अपने दिल को तेज़ी से धड़कते हुए महसूस कर सकता था। अपने जीवन में मैंने ऐसा अविश्वसनीय दृश्य कभी नहीं देखा था।

मुलायम मिट्टी के रंग की दो चट्टानों को बड़ी मेहनत से तराश कर दो विशाल झरोखे बनाए गए थे, और उनके बीच बुद्ध की दो विशाल मूर्तियां खड़ी थीं। जैसे-जैसे हम करीब पहुंचे, हमने ध्यान दिया कि मूर्तियां चमकीले रंग में रंगी थीं, एक नीली और दूसरी लाल। मूर्तियों ने चमकीले आभूषण पहने थे, साथ ही उनमें हीरे-जवाहरात जड़े थे, जिनकी चमक से आंखें चौंधिया रही थीं। यहां तक कि मूर्तियों के चेहरे और हाथ पर भी सोने की परत थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि इस जगह को चमकते प्रकाश का स्थान क्यों कहते थे। मैं मूर्तियों को निहारते हुए स्तब्ध खड़ा था, यह समझने की कोशिश करते हुए कि इन्हें इंसानों ने ही बनाया था या किसी दैवीय शक्ति ने। मैं सोच रहा था कि क्या इस जगह के लोग, जो इन मूर्तियों को रोज़ देखते थे, कभी भी उस महिमा को समझ पाएंगे कि उनके बीच क्या वस्तु खड़ी थी। भविष्य की पीढ़ियां इन महान कलाकृतियों के साथ कैसा व्यवहार करेंगी? मैंने उनकी रक्षा के लिए बुद्ध से प्रार्थना की।

राजा को मेरे आगमन की सूचना दी जा चुकी थी और वो पहले से ही मूर्तियों के चरणों में खड़े थे। गर्मजोशी से मेरा स्वागत करने के बाद, वो खुद मुझे मठ तक लेकर गए, जो इन दो विशाल दक्षिणमुखी मूर्तियों के पीछे गुफ़ाओं में खोदकर बनाया गया था। मैंने अब ध्यान दिया कि वे अलग-अलग आकार की थीं। एक करीब 175 फीट ऊंची थी और दूसरी करीब 125 फीट। उनके बीच में भिक्षुओं के कमरे थे, साथ ही प्रार्थना और ध्यान लगाने के लिए कक्ष भी थे। ये सभी बुद्ध के जीवन को दर्शाने वाले चित्रों से सजे हुए थे। बुद्ध की इन दोनों मूर्तियों से चार मील पूर्व में एक तीसरी मूर्ति होने की भी सूचना मिली, एक गौरवशाली परिनिर्वाण बुद्ध। मुझे आशा थी कि लौटते समय मैं इसकी एक झलक देख पाऊंगा।

चमकते प्रकाश के स्थान से, मैं 9,000 फीट से अधिक ऊंचे साईं कोह<sup>59</sup> को पार कर, पूर्व दिशा में चल दिया। इस दर्रे से हम एक घाटी तक पहुंचे जहां पहाड़ चमत्कारिक ढंग से अलग हुए और कियापिशी<sup>60</sup> का सुंदर राज्य दिखने लगा। दमकती हुई घाटी तीन तरफ़ से बर्फ़ीली चोटियों वाले पहाड़ों से घिरी थी और फल के पेड़ों, केसर, अखरोट और शहतूत से सुगंधित थी। मैंने यहां सौ से ज्यादा मठों के भिक्षुओं के साथ विचार साझा करते और कहानियां सुनते-सुनाते हुए छह महीने बिताए। मठों और स्तूपों के अलावा, वहां यिंदु के प्राचीन देवताओं को समर्पित दस विशाल मंदिर थे। राजा सुली जनजाति का एक क्षत्रिय था, और हर साल वह अपने कारीगरों से बुद्ध की अठारह फुट की चांदी की मूर्ति बनवाता था।

राजा एक उदार व्यक्ति था, जो मेरी अच्छे से देखभाल करता था। उसने कियापिशी से तत्कालीन कुषाण साम्राज्य पर शासन किया। कियापिशी सही मायने में रेशम मार्ग का चौराहा था, जो दागिन और चांग'आन की पूर्व-पश्चिम सड़क के बीचों-बीच और समोकिएन और यिंदु की उत्तर-दक्षिण सड़क के बीच में स्थित था। पूरे राज्य में, गांधार कला के सुंदर उदाहरण देखे जा सकते थे, जो पूर्वी दर्शन के साथ पश्चिमी शैली का मिश्रण था। मुझे बताया गया कि बुद्ध के कपड़ों की सिलवटें और मोड़ तक दक्किन और सीला<sup>61</sup> की कला से प्रेरित थे। लोग महान सम्राट कनिष्क के बारे में प्रेम से बातें किया करते थे, जो कई सौ साल पहले राज करते थे और जिन्होंने खुद को कुषाण कहने वाले खानाबदोश जनजातियों के स्थायित्व और समृद्धि पर ध्यान दिया।

कियापाशी के पास एक विशाल मठ था जिसे एक विचित्र नाम से जाना जाता था: बंधकों का मठ<sup>62</sup> मैं इस नाम के बारे में सोच रहा था। राजा के सलाहकारों में से एक ने मुझे चीन के एक राजकुमार की कहानी सुनाई जिसे कनिष्क ने बंधक बना लिया था। उसे मठ में बंदी बनाया गया था, लेकिन राजा ने भिक्षुओं से उसके साथ एक सम्मानित अतिथि जैसा व्यवहार करने का अनुरोध किया था। राजकुमार ने यिंदु के भिक्षुओं से उनकी शारीरिक, आध्यात्मिक और आहार से जुड़ी दिनचर्या के बारे में कई चीजें सीखी थीं। जब वह रिहा हुआ और घर लौटा, तो उसने भिक्षुओं के लिए खज़ाने से भरा एक संदूक वापस भेजा। इसे मुख्य देवता के चरणों में गाड़ा जाना था और कभी भी मठ किसी मुश्किल समय में फंस जाए तो इसे सिर्फ किसी चीनी व्यक्ति द्वारा ही खोदा जाना था।

भिक्षु मुझे देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने मेरे आगमन को खज़ाने की खुदाई के लिए एक अच्छे शगुन के रूप में देखा। मैं उनकी सहायता करने में खुश था। करीब आठ फीट गहराई तक खोदने के बाद हमें कीमती कपड़े से ढका तांबे का एक संदूक मिला और उसके ऊपर एक तलवार बनी थी। संदूक मोतियों और सोने से लबालब भरा हुआ था, जो मठ को अगले सौ सालों तक चलाने के लिए पर्याप्त था। तलवार पर दो साधारण चीनी अक्षर खुदे हुए थे।

## 香至

मैंने उकेरे गए उन अक्षरों का एक रेखाचित्र बना लिया ताकि बाद में उन्हें याद करने की ज़रूरत पड़ने पर काम आए। मेरी याददाश्त आमतौर पर बहुत तेज़ थी, लेकिन लगातार यात्रा की थकान अक्सर आड़े आ जाती थी।

कियापिशी के राजा यह सुनकर खुश थे कि मैंने भिक्षुओं की मदद की थी और उन्होंने मुझे पांच दिन के धार्मिक सम्मेलन का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया। इसमें कई वाद-विवाद शामिल थे जिनमें हिस्सा लेकर मैं खुश हुआ। मुझे भरोसा था कि मैंने दार्शनिक विचारों की कई धाराओं पर अपनी महारथ का प्रदर्शन किया, और राजा मेरे ऊपर उपहारों की वर्षा करके खुश थे जिनसे मुझे यात्रा में मदद मिलने वाली थी।

अब तक मुझे यात्रा पर निकले हुए एक वर्ष से अधिक समय हो चुका था। मेरी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक ऊर्जा की कड़ी परीक्षा ली गई थी। मैंने कई रेगिस्तान, पर्वत श्रृंखलाएं, नदियां और जंगल पार किए थे। मैं इस दौरान ढेरों लोगों से मिला था, जिनमें राजा, व्यापारी, भिक्षु, कलाकार, डाकू, पुजारी और सैनिक शामिल थे। मैंने बुद्ध की एक मौन प्रार्थना की, इस कठिन यात्रा के दौरान मेरा ध्यान रखने और मुझे उस भूमि के द्वार के पास लाने के लिए जिसकी मुझे तलाश थी: यिंदु।

## 65

यह चमत्कार से कम नहीं था कि पैम और मार्क ने देर रात की अपनी मुलाकात के लिए खाने का जो अड्डा चुना था, वह नई दिल्ली के दो सबसे अच्छे अस्पतालों के पास था।

सफ़दरजंग अस्पताल की एक एंबुलेंस कुछ दूरी पर ही खड़ी थी; इसका ड्राइवर, सिगरेट पीने के बाद ढाबे पर चाय पी रहा था। हंगामा सुनने और मार्क को पैम की गोद में सिर रखकर पड़े देखकर, उसने तुरंत पार्किंग स्लॉट से अपनी एंबुलेंस निकाली और उनकी ओर भागा। पास खड़े लोगों ने मार्क को एंबुलेंस पर चढ़ाने में ड्राइवर की मदद की और पैम उसके साथ अंदर आ गई। कुछ ही मिनटों में वे अस्पताल के इमरजेंसी ब्लॉक में थे।

पुलिस की कार्रवाई के बिना दिल्ली के अस्पताल हादसे या अपराध के शिकारों के इलाज में देरी के लिए बदनाम थे। इस वजह से अक्सर गंभीर वक्त हाथ से निकल जाता था, जब इलाज की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती थी। पैम इस बारे में जानती थी और उसने इसी हिसाब से तैयारी की। दिल्ली ऐसा शहर था जो संबंधों पर चलता था। सही बटन दबाइए और कुछ भी करवाया जा सकता था। हालांकि, एक बहुत बड़ी आबादी के लिए ये बटन पहुंच से बाहर थे। पैम ने एंबुलेंस से डीआरडीओ में अपने बॉस को फ़ोन किया। उन्होंने तुरंत अपने दोस्त, दिल्ली पुलिस कमिश्नर को फ़ोन किया,

जिन्होंने अस्पताल में फ़ोन किया ताकि मार्क के इलाज में कोई देरी न हो। उन्होंने गोलीबारी वाली जगह पर एक पुलिस टीम भी भेजी। 'मैं अपने सबसे अच्छे आदमियों को काम पर लगा रहा हूँ,' उन्होंने पैम के बॉस से कहा।

अस्पताल पहुंचने पर, मार्क के स्टेचर को पहिये वाले एक स्टेचर पर टांसफर कर दिया गया, और ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर ने तुरंत अपनी टीम को रेडियो संदेश भेजा। स्टेचर के साथ दौड़ रही नर्स ने घाव की जगह और उसका फैलाव जांचने की कोशिश की। इमरजेंसी रूम के अंदर पहुंचते ही, उन्होंने आईवी लगाई और टेस्ट के लिए खून निकालना शुरू किया। मार्क के सिरहाने एक एनेस्थीसियोलॉजिस्ट खड़ा था, जिसने एक श्वास नली डाली। मुख्य सर्जन पैरों के पास खड़ा, मरीज की स्थिरता का स्तर और सर्जरी से पहले के रूटीन तय करने के अलावा छर्रे सहित सभी संभावित घावों का लॉग बनाने की कोशिश कर रहा था।

इमरजेंसी रूम के बाहर इंतज़ार करते वक्त, पैम ने डॉक्टर को अपनी टीम को चीखकर निर्देश देते सुना, नर्सों से महत्वपूर्ण संकेतों का रिकॉर्ड लेने को कहते हुए: पल्स, ब्लड प्रेशर, सांस और ऑक्सीजन सैचुरेशन। 'मुझे क्रिस्टलॉएड इंप्यूजन वाली दो बड़े-बोर की आईवी लाइनें चाहिए। फेस मास्क के ज़रिए सौ प्रतिशत ऑक्सीजन। जब तक क्रॉस-मैच नहीं हो जाता ओ-निगेटिव खून इस्तेमाल करो। ब्लड प्रेशर अनियमित है। फ्लुइड रिससिटेशन प्लीज़। नेज़ो-गैस्ट्रिक ट्यूब चाहिए। पेट को डिक्ंप्रेस करो और हैमरेज प्रोटोकॉल चालू करो।'

पैम सब कुछ सुन पा रही थी लेकिन कुछ भी समझ नहीं पा रही थी। उसका दिमाग कहीं और था। वो सिर्फ मार्क के बगैर दुनिया के बारे में सोच पा रही थी। उसने मार्क के साथ रिश्ता न रखने की बहुत कोशिश की थी, लेकिन यह नामुमकिन था। वो जानती थी कि मार्क की ज़िंदगी का एक ऐसा पहलू था, जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी, और इससे एक खतरा भी हो सकता था, लेकिन अब वो उस बारे में नहीं सोच रही थी। उसकी सोच उसके पिता तक चली गई, जिन्होंने हमेशा उससे चीज़ें छिपाई थीं। शायद उन्होंने गोपनीयता की कोई शपथ ली थी।

सफ़दरजंग अस्पताल का नया इमरजेंसी ब्लॉक काफी बड़ा था, जिसमें 260 बेड, सैंटीस आईसीयू और छह ऑपरेशन थिएटर थे। गलियारे लंबे-चौड़े थे। और पैम, ड्यूटी डॉक्टर से ज्यादा जानकारी के इंतज़ार में, मिलने के लिए आने वाले लोगों के लिए लगी कुर्सियों में से एक पर बैठ गई। मार्क को गोद में लेने की वजह से उसके कपड़े खून से सन गए थे। हाथ में मोबाइल पकड़े हुए, वो सिर्फ आसमान को देख रही थी। एक नर्स उसके लिए एक कप कॉफी ले आई, लेकिन उसने मना कर दिया। उसे कुछ नहीं चाहिए था। बस मार्क फिर से अच्छा हो जाए।

सफ़दरजंग के साथ उसकी पुरानी यादें नकारात्मक थीं। उसकी दादी ने अपनी आखरी सांस यहीं ली थी। उसी तरह उसके मामा ने भी। पैम सफ़दरजंग को मौत से जोड़कर देखती थी। और अब मार्क इसमें एक मरीज़ था।

कुछ फीट दूर, ड्यूटी पर तैनात ज़्यादा उम्र की नर्स जो पैम के लिए कॉफी लेकर आई थी, उसे लगातार देख रही थी। उसने नर्स की सामान्य यूनिफॉर्म सफेद पायजामा, कुर्ता

और जूते पहने हुए थे। उसके बाल कसकर जूड़े में बंधे थे, और उसने मोटे चश्मे लगाए हुए थे। वह नर्स स्टेशन तक गई और लापरवाही से वो फोल्डर उठाया जिसमें मार्क से जुड़ी जानकारी नोट की गई थी। उसने तेज़ी से कुछ पन्नों पर नज़र दौड़ाई।

उसने फोल्डर डेस्क पर वापस रखा और एक नया मोबाइल फ़ोन निकालने से पहले गलियारे में और आगे की तरफ चली गई। उसने फ़ोन की पैकिंग खोली और फ़ोन को चालू किया, जिसमें पहले से एक सिम कार्ड लगा हुआ था। इस फ़ोन और सिम का इस्तेमाल सिर्फ़ एक बार होना था। दुनिया भर की इंटेलेजेंस एजेंसियां अपने एजेंटों और मुखबिरों को ये बर्नर फ़ोन देती थीं जिनका पता लगा पाना बेहद मुश्किल था।

‘हेलो,’ वह फ़ोन में फुसफुसाकर बोली। ‘मेरे पास एक अहम जानकारी है। हो सकता है कि आप इसे आगे बताना चाहें। शेंगली...’

पैम ने नर्स को देखा या सुना नहीं। वो उस आदमी को देखने में व्यस्त थी जो उसे पता नहीं क्यों जाना-पहचाना लग रहा था। उसे यह महसूस करने में एक पल लगा कि जब से वो अस्पताल में आई थी, तभी से वह आदमी लगभग हर जगह उसके साथ था। वो इतनी परेशान थी कि उस पर ध्यान ही नहीं दे पाई। क्या वह मेरा पीछा कर रहा है? उसने सोचा।

## 66

जनपथ के एंटीक्स डीलर ने नई दिल्ली से सियोल के लिए कोरियन एयर की उड़ान ली थी। सियोल से वह एक ट्रेन में चढ़ा जिसने उसे जांगसेऑंग स्टेशन पर छोड़ा। वहां से, उसने डेसन होटल के लिए टैक्सी ली, जो बंदरगाह के आसपास उसके ठहरने के लिए इकलौता विकल्प था। निकोटिन के धब्बे वाले दांतों से मुस्कुराते हुए उसने ड्राइवर को टिप दी, और होटल में चेक इन किया।

डेसन का बंदरगाह सेओसन नाम के एक शहर के पास था। सेओसन छोटा था। बहुत छोटा। यह दक्षिण कोरिया के दक्षिण चुंगचेओंग प्रांत में, सियोल से करीब अठहत्तर मील दक्षिण में स्थित था। शहर में सिर्फ़ वही लोग आते थे जिनका सेओसन में परिवार या कारोबार था। यहां के इकलौते सैलानी थे पक्षी। साल के इस समय हज़ारों बतखें, हंस और सारस आते थे। शहर में हर साल इन पक्षियों को देखने के लिए एक मेला लगता था, लेकिन उसमें शामिल होने वाले लोग सिर्फ़ स्थानीय होते थे। यहां तक कि हेमीअप-सियोंग किले जैसे पर्यटन स्थलों पर भी केवल स्थानीय लोग ही आते थे। सेओसन में कभी कुछ ज़्यादा नहीं हुआ, और ऐसा लगता था कि वहां के लोगों को यह शहर ऐसे ही पसंद था।

लेकिन सेओसन का एक हिस्सा था जो रात हो या दिन, हमेशा व्यस्त रहता था: डेसन का बंदरगाह। चीन में यंताई के मछली पकड़ने के बंदरगाह से सिर्फ़ 273 मील दूर स्थित, डेसन न सिर्फ़ एक बंदरगाह था बल्कि उन कंपनियों के लिए एक महत्वपूर्ण पेट्रोकेमिकल हब भी था, जो दुनिया के बाकी हिस्सों में तैयार माल भेजने से पहले यहां पर रिफाइनिंग की प्रक्रिया पूरी करती थीं। इस तरह डेसन पीले सागर के किनारे लॉजिस्टिक्स के लिए एक केंद्र बिंदु था।

एंटीक्स डीलर ने जल्दी से कुछ खाया, तरोताज़ा हुआ और फिर अपनी मुलाकात के लिए चेहरे पर मास्क पहनकर पैदल ही निकल गया। चीन के प्रदूषित मेनलैंड से धूल लेकर उड़ने वाली तेज़ हवाएं डेसन में एक समस्या थीं। स्थानीय लोग इसे ह्वांगा या एशियाई धूल कहते थे। मास्क पहनने के अलावा इससे बचने का कोई और तरीका नहीं था। वह मन ही मन धीरे से हंसा। उसके जीवन में असली ह्वांगा मार्क रिचर्ड्स था। और सिर्फ एक मास्क के साथ रिचर्ड्स से नहीं बचा जा सकता था।

डेसन में ठंड थी। जाड़े की पहली बर्फ़ गिर चुकी थी। मुलाकात की जगह पर जाते समय डीलर ने अपने पार्क की चेन ऊपर खींच ली और हुड को अपने सिर के चारों ओर ठीक कर लिया। यह एक ऑफिस था जिस पर लगे बोर्ड पर लिखा था 'यंताई फिशरीज़'।

वह बेहद साधारण लेकिन गर्म अंदरूनी हिस्से में गया। एक तंग जगह में कई ज़रूरत से ज़्यादा भरी हुई डेस्क ठूसकर रखी हुई थीं, और बाहर निकल रही फाइलों से भरी मेटल की रैक बेहद गंदी दिख रही थीं। इस अव्यवस्था के बीच कर्मचारी किसी तरह काम कर पा रहे थे। जबकि उनके हर काम पर नज़र रखने वाले उनके बॉस के लिए, जो साठ साल से अधिक उम्र का एक व्यापारी था, उनकी मुस्कुराहट भी बनी हुई थी। उसका ऑफिस एक कोने में था और अपने अंतरराष्ट्रीय मेहमान को उसने गलियारा पार करके अपने केबिन में आने का इशारा किया।

पॉलिएस्टर की एक पुरानी ऑफिस शर्ट पहना हुआ बॉस एक निकोटिन वेप चूस रहा था जिससे उसकी सिगरेट पीने की इच्छा दबी रहती थी। उसके बाल जेल से पीछे की ओर चिपके हुए थे, और उसकी शर्ट की जेब से एक सस्ता प्लास्टिक पेन झांक रहा था। उसे देखकर यह बता पाना नामुमकिन था कि अपने मछली पकड़ने वाले जहाज़ों को 'गलती से' भटकने और अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में मछली पकड़ने की अनुमति देकर उसने बहुत पैसे कमाए थे। कभी-कभी वह इंसानों समेत तस्करी की जाने वाली चीज़ों को भी जहाज़ पर रखने की अनुमति दे देता था।

मैरीटाइम कम्युनिकेशंस को हैक करके वह आमतौर पर कोस्टगार्ड से एक कदम आगे रहता था। जब से इंटरनेट आधारित नेविगेशन सिस्टम तैयार हुआ था, जो दुनिया भर में जहाज़ों की रियल-टाइम लोकेशन को ट्रैक कर सकता था, कोरियाई लोग भी अधिकारियों को मात देना सीख गए थे। कुछ जहाज़ मालिक इतने मूर्ख थे कि वे बिना किसी फायरवॉल के पब्लिक आईपीवी4 एड्रेस का इस्तेमाल करते थे।

वे दोनों आदमी साथ में बड़े अजीब लग रहे थे, जिनमें कोई मेल नहीं था। बीते वर्षों में उन्होंने बहुत सारे व्यापारिक सौदे किए थे, लेकिन यह उन सबमें सबसे बड़ा सौदा होने वाला था। डीलर को पता था कि वो कोरियाई सबसे ऊंची कीमत बताएगा लेकिन काम कुशलता के साथ और चुपचाप पूरा करेगा। उस कोरियाई को पता था कि दिल्ली के आदमी के साथ पीछे हटने या पेमेंट की कोई दिक्कत नहीं होगी। उनके सौदे में एक भरोसा था जो कई कामयाब सौदों के बाद बने आपसी विश्वास से ही आया था।

चाय की चुस्की लेते हुए उन्होंने उस योजना पर चर्चा की जिसे अमल में लाना था। कुछ भी गलत हुआ तो दोनों मुश्किल में पड़ जाएंगे। पीले सागर के पानी में चीन, उत्तर

कोरिया और दक्षिण कोरिया के जहाज़ चलते थे। योजना विफल रही तो कोरियाई जहाज़-मालिक पर कोई दया नहीं दिखाई जाएगी। ऐसी स्थिति में, कोरियाई और चीनी-भारतीय दोनों को ही अपने-अपने बॉस से कोई सुरक्षा नहीं मिलेगी और उन्हें पूरी तरह से उनके हाल पर छोड़ दिया जाएगा। बल्कि, बड़ी आसानी से बलि का बकरा बनाकर, अंतरराष्ट्रीय संबंधों की वेदी पर उनकी बलि चढ़ा दी जाएगी।

‘माल यंताई तक कैसे पहुंचेगा?’ कोरियाई आदमी ने पूछा।

‘वह आपकी समस्या नहीं है,’ भारतीय ने जवाब दिया। ‘हमारे बीच सौदा होने के बाद, आपकी जिम्मेदारी यंताई से शुरू होती है। आप मुझे बताइए कब और कौन से जहाज़ उपलब्ध हैं। मैं देखूंगा कि यंताई में कार्गो की आवाजाही के लिए कौन सा विकल्प सबसे अच्छा है।’

कोरियाई ने अपनी कम्प्यूटर स्क्रीन को देखा। पीले सागर में अलग-अलग जहाज़ों की अनुमानित स्थिति जांचने के लिए उसने कुछ बटन दबाए। ऐसे मूवमेंट में हमेशा कुछ खतरा होता था, लेकिन योजना बनाकर इसे कम किया जा सकता था। आंकड़ों की जांच करके, उसने अपनी ई-सिगरेट से भाप का गोला बाहर छोड़ते हुए सिर हिलाया। थोड़े मोल-तोल के बाद, एक सौदा हुआ, समय, जगह और पासवर्ड तय किए गए।

कॉन्टैक्ट के अनुसार माल यंताई से डेसन भेजा जाएगा, लेकिन यंताई तक और डेसन से आगे माल की आवाजाही कोरियाई के जिम्मे नहीं थी।

## 67

सफ़दरजंग अस्पताल के डॉक्टरों ने टिपल कॉन्ट्रास्ट एनहैंसमेंट के साथ मार्क की छाती, पेट और पेल्विस का एक सीटी स्कैन किया। इसमें पेट के बाईं तरफ ऊपर की ओर गोली दिखाई दी। उन्हें हवा के बुलबुले भी मिले, जो संभवतः उसकी आंत में चोट लगने की वजह से आए होंगे। कई घंटे तक चली लंबी सर्जरी में गोली निकालने के साथ, सफाई और आंत में हुए छेद की मरम्मत शामिल थी। उसके बाद मार्क को किसी इंफेक्शन से बचाने के लिए नसों में एंटीबायोटिक्स की भारी खुराक देकर आईसीयू में रखा गया।

आईसीयू के बाहर गलियारे में आते-जाते समय पैम ने सीबीटीटी में मार्क की टीम के परिचित चेहरों को देखा। मार्क की सेक्रेटरी जो कसकर जूड़ा बनाने वाली एक स्थूल औरत थी, उसी ने पैम को पहले देखा। उसके साथ मार्क का डिग्री भी था, जिसने इंडियन डिफेंस टेक्नोलॉजी में प्रेजेंटेशन दिया था, इंजीनियर जो सीबीटीटी में मोशन-कैप्चर लैब चलाता था, और पैथोलॉजिस्ट, जिसने ट्युमर के फॉरेंसिक टेस्ट किए थे।

उनके पहुंचने के साथ-साथ सर्जन भी पैम से मिलने के लिए बाहर आए। वो उसे देखकर मुस्कुराए और उसे फिक्र न करने की सलाह दी। ‘हमने गोली निकाल दी है और छेद को बंद कर दिया है,’ उन्होंने बताया। ‘लेकिन मार्क की किस्मत बहुत अच्छी थी कि आप उसे इतनी जल्दी यहां ले आईं। थोड़ी सी देर होने पर समस्या कहीं अधिक गंभीर हो जाती। अगले कुछ दिनों तक हमें उसकी ध्यान से निगरानी करनी होगी, लेकिन मुझे यकीन है कि वह ठीक हो जाएगा।’

पैम ने राहत की एक गहरी सांस ली। उसे महसूस हुआ कि उसकी आंखों से बेवजह ही, आंसू बह रहे थे। उसे कुछ नहीं पता था कि खुशखबरी सुनकर वो रो क्यों रही थी। मार्क की सेक्रेटरी ने पैम के कंधे पर हाथ रखा। पैम ने ऊपर देखा और वह महिला मुस्कुराई। 'मार्क अभी लंबे समय तक हॉस्पिटल में रहेगा,' उसने कहा। 'मेरी सलाह है कि तुम घर जाओ और थोड़ा आराम करो। सीबीटीटी टीम बारी-बारी से यहां आती रहेगी। चिंता मत करो। मार्क हम सबके लिए परिवार के सदस्य की तरह है।' पैम ने कृतज्ञता से सिर हिलाया और उठ गई।

वो लिफ्ट की ओर जा रही थी तभी उसने उस आदमी को देखा जो पिछले कुछ घंटों से उसका पीछा कर रहा था। और तभी अचानक उसे बात समझ में आई। वैसे वो आदमी सादे कपड़ों में था, उसका गंभीर भाव, पुराना नीला ब्लेजर, चिपके हुए बाल, लंबी मूछें और घिसे जूतों से लग रहा था कि वो पुलिस में था।

उसने अपना आईडी कार्ड दिखाते हुए कहा, 'मैं सीबीआई से कुमार हूं।' सीबीआई यानी सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन। 'तकनीकी रूप से आप हमारे लिए काम करती हैं, क्योंकि कम से कम कागज़ पर तो आप सीबीआई की अस्थायी कर्मचारी हैं।'

'मुझे लगा कि जांच दिल्ली पुलिस कर रही है,' पैम ने उत्सुकता से कहा।

'वही करने वाली थी। लेकिन चूंकि मामले में एक डीआरडीओ कर्मचारी और एक विदेशी नागरिक शामिल है और संभावित आतंकी संबंधों वाला एक हत्यारा शामिल है, इसलिए हमें मामले को अपने हाथ में लेना पड़ा। हमने पहले ही हॉस्पिटल में मिस्टर रिचर्ड्स के लिए चौबीसों घंटे की सुरक्षा व्यवस्था कर दी है, लेकिन मुझे आपका विस्तृत बयान चाहिए जब भी आप तैयार हों।'

थका देने वाले ऐसे मुश्किल तजुर्बे के बाद कोई भी आम आदमी बयान को टाल देता, लेकिन पैम ने ऐसा नहीं किया। 'यही सही समय है,' पैम ने कहा। 'चलिए आपकी कार में चलते हैं।'

'कार क्यों?' कुमार ने पूछा।

'क्योंकि आप मुझे अपराध वाली जगह पर ले जा रहे हैं,' पैम ने बेफिक्री से कहा। उसे अहसास हुआ कि उसके पास कुमार को उसे वहां ले जाने का आदेश देने का कोई अधिकार नहीं था, इसलिए उसने दूसरी चाल चली। 'हम घटनास्थल पर रहेंगे तो आपको समझाना आसान होगा कि क्या हुआ था।'

कुमार मुस्कुराया। वह जानता था कि पैम की चाल क्या थी फिर भी वह साथ गया। वे लिफ्ट से कार पार्क में गए और कुमार की एसयूवी में बैठ गए, जिस पर पुलिस की कार होने के कोई निशान नहीं थे।

अपराध स्थल को टेप से घेर दिया गया था, और उस जगह पर लोगों को जाने से रोकने के लिए पुलिस अधिकारी सुरक्षा में खड़े थे। एक पुलिस फोटोग्राफर और क्राइम सीन परीक्षक पहले से ही काम में लगे थे। पैम की कार की जांच चल रही थी, साथ ही सड़क पर फैले खून की भी। कारहॉप की लाश का निरीक्षण करके, फोटो खींचकर और उसे बांधकर पहले ही शवगृह में रखा जा चुका था। कई गज दूर खड़ी मार्क की कार क्राइम

सोन का हिस्सा नहीं थी, फिर भी उसकी जांच की जा रही थी।

कुमार ने पैम के जवाबों के आधार पर नोट बनाना शुरू किया। आप कितने बजे पहुंची थीं? मिलने की जगह किसने तय की थी? क्या आपने फ़ोन पर चर्चा की थी कि आप कहां मिल रहे हैं? गोली चलनी कब शुरू हुई? आप दोनों यहां कैसे पहुंचे?

जब उसने मार्क के साथ उसके संबंध के बारे में पूछा तो पैम रुक गई। 'हमारे रिश्ते पेशेवर थे,' उसने संक्षेप में कहा। 'हम कुछ नई तकनीकों पर काम कर रहे थे। मार्क की कंपनी, सीबीटीटी आंशिक रूप से डीआरडीओ के स्वामित्व में है।'

कुमार ने नोट तो बना लिया लेकिन पूरी तरह आश्वस्त नहीं दिख रहा था। उसने हॉस्पिटल में उसकी परेशानी देखी थी। ऐसा नहीं लग रहा था कि यह पूरी तरह से सिर्फ पेशेवर संबंध था। जब वे बात कर रहे थे तब फॉरेंसिक परीक्षक ने पैम की उंगलियों के निशान लिए।

अचानक पैम का फ़ोन बजने लगा। यह उसके फ़ोन में इंस्टॉल किए गए सिग्नल ऐप पर एक एनक्रिप्टेड कॉल थी। ऐप एक ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर था जो मेसेज और कॉल का एंड-टू-एंड एनक्रिप्शन करता था। यह कॉल वीटीके की थी। कुमार ने देखा कि कौन कॉल कर रहा था और उसे फ़ोन उठाने का इशारा किया।

वीटीके वाकई में उसे और मार्क को लेकर चिंतित लग रहे थे। उन्होंने सलाह दी कि पैम को कुछ अंगरक्षकों के साथ पुलिस सुरक्षा दी जाए, लेकिन पैम इस सुझाव के सख्त खिलाफ़ थी।

'कुमार को फ़ोन दो,' वीटीके ने कहा, कुमार ने इंटेलिजेंस प्रमुख से सम्मान के साथ बात की। राँ और सीबीआई अफसरों की अक्सर एक-दूसरे से बनती नहीं थी, लेकिन कुमार ने देश के प्रमुख जासूस, वीटीके के लिए उचित रूप से सम्मान दिखाया।

'जी, सर,' उसने फ़ोन पर कहा। 'हमने जांच की है कि गोलियों का निशाना कौन था। इसकी बहुत संभावना है कि मिस खुराना ही निशाने पर थीं, लेकिन हम अभी पक्के तौर पर नहीं कह सकते।'

फिर वह थोड़ी देर चुप रहा। 'मैं समझता हूं सर', कुमार ने कहा। 'कारहॉप के प्रिंट आधार डाटाबेस में किसी से मेल खाते हैं। मूल पता नागालैंड का है। उसके परिवार ने सरकारी सब्सिडी लेने के लिए रजिस्ट्रेशन कराया होगा। हालांकि, उसके पास कोई पहचान पत्र नहीं था। बंदूक चीन की बनी हुई QSZ-92 थी।' वीटीके के फिर से बोलने पर वह रुक गया।

'ज़रूर, सर,' अंत में कुमार ने कहा। 'मैं उस एंगल की भी जांच करूंगा। जी, मैं फ़ोन उन्हें वापस दे रहा हूं।'

पैम ने अपने और कुमार के बीच कुछ दूरी बना ली ताकि वो वीटीके के साथ निजी तौर पर बात कर सके। उनके पास पैम के लिए एक खबर थी। 'शूटिंग की घटना के बाद, अमेरिका के नेशनल इंटेलिजेंस के डायरेक्टर का फ़ोन आया था। उन्होंने मुझे पहले सूचना दे दी होती, तो हम सावधान हो सकते थे। नागालैंड और बीजिंग के बीच फ़ोन पर कई बार बातचीत हुई थी। मुमकिन है कि तुम्हें रास्ते से हटाने का लक्ष्य हो। मैं ज़ोर

देकर कहूंगा कि तुम अपने लिए सिक्योरिटी कवर ले लो।’

पैम भी अड़ी हुई थी कि उसे अपने साथ बॉडीगार्ड नहीं चाहिए। उसने समझाया कि चारों ओर सुरक्षा गार्ड मंडराते रहेंगे तो वो छिपकर काम नहीं कर पाएगी।

वीटीके को समझ आ गया था कि वो नहीं मानेगी, तब उन्होंने कहा कि वो उसके लिए एक ग्लोक-17 हैंडगन भेज रहे हैं। ‘मेरा मानना है कि तुम्हारा बंदूक का लाइसेंस अभी भी वैध है?’

पैम ने हां में जवाब दिया, ताकि किसी तरह उनसे पीछा छूटे। फिर उसने विषय बदल दिया। ‘क्या सिस्टम में कोई भेदिया है? चीनियों को कैसे पता चला कि मैं ही इस संवेदनशील काम को देख रही हूं?’

इसके जवाब में दोनों के बीच एक लंबी चुप्पी आई। ‘सर? आप फ़ोन पर हैं?’ पैम ने जानना चाहा कि कहीं कॉल ड्रॉप तो नहीं हो गई।

‘हम इस पर काम कर रहे हैं,’ वीटीके ने गहरी सांस भरते हुए जवाब दिया। ‘हमें शेंगली नाम के एक शख्स पर शक है, लेकिन अभी हमारे पास कोई सुराग नहीं कि वह कौन है। तुम इसकी चिंता मत करो। कुमार से कुछ भी कहते वक्त सावधान रहना।’ ऐसा लग रहा था कि वीटीके अब फ़ोन काटने की हड़बड़ी में थे।

पैम ने बेमन से फ़ोन रख दिया, लेकिन उसका दिमाग घूम रहा था। यह भेदिया कौन है जिसे चीनी शेंगली बुलाते हैं? क्या सुरक्षा छोड़कर मैं गलती कर रही हूं? मैंने ऐसा क्या खोज लिया है जो चीनी अधिकारियों के लिए परेशानी पैदा कर रहा है।

पैम इस निष्कर्ष पर पहुंची कि सूचना देने वाले को इंतज़ार करना होगा। उसकी पहली प्राथमिकता राव के पास वापस जाना और सुपरह्यूमन इंजीनियरिंग के बारे में पता लगाना होनी चाहिए। इसका उन दस्तावेज़ों से क्या संबंध था जो उन्होंने पहले दिए थे। राव के स्पष्टीकरण से भारत-चीन सीमा पर दोनों देशों की सैनिकों के बीच का अंतर पाटने में मदद मिल सकती थी।

वो घर लौटी और अपनी मां से बात करने के पहले नहाने गई। उसने खून में सने अपने कपड़ों को एक शॉपिंग बैग में रखा ताकि रास्ते में उसे कहीं फेंक सके। वो बिल्कुल नहीं चाहती थी कि उसकी मां यह सब देखकर परेशान हो।

वो ग्लॉक लेने के लिए वीटीके के आदमी का इंतज़ार कर रही थी। जैसे ही वह पहुंचा, उसने इसे अपनी अलमारी में बंद कर दिया। इससे सिर्फ परेशानी होगी। विमान में हथियार लेकर जाना बहुत टेढ़ी प्रक्रिया थी जिसमें बहुत सारी कागज़ी कार्रवाई करनी पड़ती थी।

वो सोच रही थी कि क्या चेन्नई के लिए उसे देर रात की उड़ान लेनी चाहिए लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसके कार्यक्रम में अचानक बदलाव से उसकी मां परेशान हो जाती। वैसे भी, आधी रात में चेन्नई पहुंचकर उसे क्या हासिल हो जाएगा? ऐसा तो था नहीं कि वो आधी रात में राव के घर पहुंचकर घंटी बजा देगी। उसने सुबह की उड़ान के लिए बुकिंग कराई।

आखिरकार मैं नाकालोहो<sup>63</sup> पहुंच गया, जो कुभा<sup>64</sup> नदी और यिंदु<sup>65</sup> नदी के बीच में था। मुझे बताया गया था कि कुभा का नाम पानी रखने के बर्तन के लिए संस्कृत के शब्द, कुंभ, से लिया गया था, जिसका उल्लेख पोलोमेनकुओ<sup>66</sup> के फी तुओ<sup>67</sup> के सबसे पुराने ग्रंथों में से एक में किया गया था। हालांकि, बीते वर्षों में स्थानीय लोग इसके आसपास के क्षेत्र को कुभा की जगह काबुल बुलाने लगे। मैं यिंदु नदी के पास पहुंचने को लेकर उत्साहित था, जिसे बुद्ध की भूमि का प्रवेश द्वार माना जाता था।

नाकालोहो में मेरी भेंट कई ब्राह्मणों और जैनों से हुई। मैंने ऐसे संन्यासियों को भी देखा जो शिपो नाम के देवता की पूजा करते थे। वे अपने नग्न शरीरों को राख में लपेटे और खोपड़ियों की माला पहने रहते थे। वे बहुत डरावने और जंगली लगते थे। मैं बहुत से जैन संन्यासियों से भी मिला जो पृथ्वी पर नग्न घूमने की दिगंबर परंपरा का पालन करते थे। इसके अलावा, सफेद वस्त्रधारी गैर-बौद्ध भी थे जो खुद को श्वेतांबर कहते थे। मुझे यह देखकर दुख हुआ कि शाक्यमुनि का मार्ग छोड़कर लोग अन्य मार्गों पर जाने लगे थे। बौद्ध धर्म में अठारह संप्रदाय थे, और वे हमेशा एक-दूसरे से झगड़ते रहते थे।

मैंने जो कुछ भी देखा या सुना उसे विस्तार से लिखने का निर्णय लिया। मैं जिन लोगों से मिला उनमें से एक ने मुझे बताया कि यिंदु मेरी कल्पना से कहीं अधिक बड़ा था। मैंने पूछा, 'यह कितना बड़ा है?' मुझे बताया गया कि इसकी परिधि करीब 2 लाख 70 हजार मील थी, जिसके उत्तर में बर्फीले पहाड़ थे और दक्षिण की ओर समुद्र। मैं सोच रहा था कि क्या अपनी यात्रा के दौरान मैं इसका एक अंश भी देख पाऊंगा।

एक व्यापारी जो नियमित रूप से यिंदु की यात्रा पर आता था, उसने मुझे बताया कि यह भूमि राजनीतिक रूप से सत्तर राज्यों में विभाजित थी जो अक्सर एक-दूसरे के साथ युद्ध करते रहते थे। वास्तव में, वह क्षेत्र जिसे मैं यिंदु कहता था एक अकेली इकाई नहीं थी। कुछ ग्रंथों में इसे जम्बूद्वीप कहा जाता था, कुछ हिस्सों को आर्यदेश या मध्यदेश कहा जाता था, हालांकि ये नाम भी राजनीतिक रूप से लागू नहीं होते थे। यहां के शासक अपनी पहचान उन राज्यों से करते थे जिन पर उनका शासन था, उदाहरण के तौर पर, मगध, कश्मीर, आंध्रदेश, कौशल या द्रविड़।

पूरे देश में मिट्टी की गुणवत्ता अलग-अलग थी, जिसका मतलब यह था कि यिंदु के अलग-अलग हिस्सों में उगने वाली फसलें भी अलग-अलग थीं, साथ ही भोजन की आदतें भी। दूरी और समय के मामलों में नाप बहुत सटीक थे। सिले हुए कपड़ों का विचार यहां के लोगों के लिए बिल्कुल अपरिचित था। इसकी जगह वे खुद को कपड़े के टुकड़े में लपेटना पसंद करते थे। नहाने, धोने और खाने के सख्त नियमों के साथ, उनकी निजी स्वच्छता के स्तर बहुत ऊंचे थे। मैंने पाया कि यिंदु के लोगों में एक जाति व्यवस्था थी जो उन्हें चार मुख्य समूहों में बांटती थी। और वे शहर या गांव के अलग, सीमांकित हिस्सों में रहते थे। ऊंची, चौड़ी चतुष्कोणीय दीवारों के साथ शहर अपने आप में शानदार थे, हालांकि सड़कें संकरी और भीड़-भाड़ वाली होती थीं।

आम लोग जो भाषा बोलते थे वह मुझे समझ नहीं आती थी। एक विद्वान ब्राह्मण ने मुझे बताया कि यिंदु की भाषाएं बहुअक्षरीय लिपियों पर आधारित थीं। यह चीन की वर्णमाला से कहीं बेहतर प्रणाली थी। मैं यिंदु के बारे में और जानना चाहता था, इसलिए ब्राह्मण ने मुझे राज्यों, उनके राजाओं, कानूनों, सेनाओं, न्याय, शासन और परंपरा के बारे में बताने के लिए, अगले कुछ दिन मेरे साथ बिताए।

ऐसा लगता था कि यिंदु में शिक्षा की पूजा होती थी। जब बच्चे सात साल के होते थे, तब उन्हें पांच विज्ञानों के महान ग्रंथों के बारे में बताया जाता था। पहला विज्ञान था व्याकरण, जो शब्द और उनके प्रयोग सिखाता था। दूसरा कला, शिल्प या ज्योतिष जैसे कुशल व्यवसायों का विज्ञान था। तीसरा था चिकित्सा का विज्ञान। चौथा था तर्क का विज्ञान। और पांचवां था स्वयं का विज्ञान, जो धार्मिक सिद्धि की पांच उपाधियों और कर्म के सिद्धांत को जांचता और सिखाता था।

जैसे ही मैं अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने वाला था, मुझे बताया गया कि कई सदियों पहले, बुद्ध ने अपनी छाया को शैडो गोटो<sup>68</sup> नाम की एक गुफा में छोड़ दिया था। अधिकांश लोग चोर-डकैतों की वजह से वहां जाने से बचते थे। मैंने मन बना लिया था कि मैं वहां जाऊंगा। मेरी यात्रा के साथी कुछ दूरी तक मेरे साथ चले, लेकिन जैसे ही हम करीब पहुंचे वे पीछे रुक गए। मैं उनका डर समझ सकता था, और मैंने उन्हें वापस लौटने की अनुमति दे दी। आगे की यात्रा मैंने अकेले तय की।

जब गुफा दिखाई दी तब तक देर रात हो चुकी थी। और लगभग तुरंत ही, मुझे डाकुओं ने पकड़ लिया। और उससे भी बुरी बात यह कि वे नरभक्षी थे, जो मुझे अपने अगले भोजन के रूप में देख रहे थे। मेरा दिमाग तेजी से चलने लगा कि खुद को इस झंझट से कैसे निकालूं। मेरे सामने शैडो गोटो का प्रवेश द्वार दिखा और मुझे अचानक एहसास हुआ कि मेरे पास निकलने का रास्ता था।

मैंने नरभक्षियों के साथ एक शर्त लगाई। वे मेरे साथ गुफा में आ सकते थे और मुझे प्रार्थना करते देख सकते थे। अगर मेरी प्रार्थनाओं से बुद्ध प्रकट हो गए, तो वे मुझे छोड़ देंगे और खुद को सुधारने का वादा करेंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो वे मुझे खा सकेंगे।

जब हम गुफा में पहुंचे, तो वहां घुप्प अंधेरा था। मैं प्रार्थना करने के लिए नीचे बैठा, लेकिन चट्टान में एक महीन छेद से मुझे हवा का एक हल्का झोंका महसूस हो रहा था। इस पर मेरा ध्यान पहले भी गया था: प्रवेश द्वार के ऊपर ऊंचाई पर एक छोटा छिद्र था। मैंने पूरी रात प्रार्थना की, धैर्यपूर्वक उस क्षण की प्रतीक्षा करता रहा जब सूर्य की किरणें उस छिद्र से गुफा के अंदर प्रवेश करतीं। नरभक्षी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे, उनके नेता को बार-बार उन अनियंत्रित लोगों को रोकना पड़ता था जो मुझे तुरंत खा जाना चाहते थे। लेकिन बुद्ध ने मुझे बचा लिया। सूर्य के प्रक्षेप पथ में एक निश्चित समय पर, कुछ मिनटों के लिए किरणें उस कोणीय छिद्र से टकराईं। इसने गुफा के अंदर बुद्ध की एक बिल्कुल काली प्रतिमा को अचानक चमका दिया, जिससे वह एक छाया जैसी दिखने लगी।

नरभाक्षियों ने यह चमत्कार देखा और मेरे पैरों में गिर गए। उन्होंने अपने तरीकों की गलती पर पश्चाताप किया और सुधार के लिए बौद्ध प्रतिज्ञा ली, फिर उन्होंने शहर तक पहुंचने में मेरी मदद की। मेरा दांव सफल रहा। मुझे आशा थी कि मेरी बची हुई यात्रा के दौरान भी भाग्य मेरा साथ देता रहेगा।

## 69

देव अपने स्टडी रूम में था, रॉटवीलर उसके पैरों के बगल में जमीन पर था। उसने अपनी मेज़ पर पड़ी पुरानी तस्वीरों को एक बार फिर से देखते हुए कुत्ते के सिर पर अनजाने में हाथ फेरा। उनमें से कई तस्वीरें धुंधली या सिकुड़ी थीं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। यादें खूबसूरत थीं। एक तस्वीर कैडेट्स की पूरी क्लास के साथ राव के बगल में खड़े हुए देव की थी। दूसरी में अनु के खिलाफ देव मार्शल आर्ट का एक दांव लेते हुए नज़र आ रहा था। एक और तस्वीर में देव, अनु और राव के घास पर बैठकर इडली खाते हुए मज़ेदार पल कैद किए गए थे। फिर एक और तस्वीर में वो और कर्नल खुराना मज़बूत मुकाबले लायक लाठियों में बदलने के लिए बांस को भिगोते हुए नज़र आ रहे थे। उसने तस्वीरों को प्यार से देखा, उसके होठों पर एक मुस्कान थी, फिर कुत्ते के भौंकने की वजह से वो जैसे अपनी नींद से जग गया।

‘क्या हुआ, सुल्तान?’ उसने कहा। वो जानता था कि उसे जांच करनी चाहिए। सुल्तान कभी नहीं भौंकता जब तक कोई अजीब बात न हो। देव उठ खड़ा हुआ और हूडी वाला एक जैकेट पहना। कड़ाके की ठंड में एक और कपड़े की ज़रूरत पड़ती थी। उसने कांच के दरवाज़ों में से एक को खोला, जो उसके स्टडी रूम को पीछे के लॉन से अलग करता था और बाहर झांका। वहां कुछ भी नहीं था। उसे लगा कि सुल्तान को गलतफहमी हुई होगी। उसे ताज़गी देने वाली ठंडी हवा का अहसास हुआ। उसने दरवाज़ा खुला छोड़ दिया, अपनी मेज़ पर लौट आया और बैठ गया।

देव फिर से तस्वीरों को देखने लगा। उसकी आंखें नम हो गईं जब उसे याद आया कि कैसे उसे एक चिट्ठी लिखने के लिए मजबूर किया गया था जिसमें कहा गया था कि राव का कार्यक्रम एक दिखावा था और इससे कुछ भी सार्थक नहीं निकलेगा। उसने राव के चेहरे पर उस दर्द भरे भाव को याद किया जब देव उस चिट्ठी में लिखी गई बातों को दोहराने के लिए विशेष जांच दल के सामने खड़ा था। उसकी गवाही ने सुनिश्चित किया था कि राव को पैसे मिलने रुक जाएं और अकादमी बंद हो जाए। वो ताबूत में आखरी कील साबित हुआ था। लेकिन उसके पास और क्या विकल्प था? देव की जुए की आदत के कारण उस पर बहुत ज़्यादा कर्ज़ हो गया था, और उन कमीनों ने उसे अपनी धुन पर नचाने के लिए इसे एक मौके की तरह इस्तेमाल किया था। हर बार जब उसने अनु को देखा, तो उसे केवल यही याद आया कि कैसे उसने राव के भरोसे को तोड़ा था। वह फिर कभी अनु के सामने कैसे आ सकेगा? और वो उसे कभी भी क्यों स्वीकार करेगी?

रॉटवीलर ने हवा को सूंघा और कमरे से बाहर सीधे बगीचे में भागा। उसे वहां जो दिखा, उसका साथ पाकर वह खुश था। उसने ज़मीन पर बह रहे पेशाब को सूंघा। यह

फेरोमॉस से भरा हुआ था जिसने तुरंत ही उसकी यौन इच्छा को जगा दिया था। उसने कुतिया के शरीर को सूँघा। प्री-मैटिंग क्रिया में दोनों ने कुछ देर तक डांस किया। रॉटवीलर कुतिया के साथ पूरी तरह व्यस्त था, तभी ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने एक घुसपैठिया दीवार से नीचे कूदा और चुपचाप देव के स्टडी रूम में घुस गया। देव का सिर अचानक पीछे की ओर खिंच गया और उसके गले में एक रस्सी बंध गई। उसकी सांस फूलने लगी। फंदा कस गया था। हत्यारा देव का चेहरा तो नहीं देख सका लेकिन उसके डर को भांप गया।

‘तुमने कभी नहीं सोचा था ना कि इस कहानी का अंत ऐसा होगा?’ उसके कान में एक आवाज़ फुसफुसाई, जब देव खुद को मौत के चंगुल से छुड़ाने के लिए जूझ रहा था। देव अपने हाथों को रस्सी तक ले गया और रस्सी को ढीला करने की जी-तोड़ कोशिश की, लेकिन उसमें ताकत नहीं बची थी। कसने वाली रस्सी और उसके गले के बीच उसकी उंगलियां खुद को फंसाने में नाकाम रही थीं।

उसकी आंखों के सामने अंधेरा बढ़ता हुआ महसूस हुआ। हांफते हुए देव को जल्दी ही अंधेरे ने अपने आगोश में ले लिया। ‘कैसा लग रहा है, देव? क्या तुम्हारे फेफड़े अभी तक काम कर रहे हैं? चिंता मत करो। तुम जल्द ही बेहोश हो जाओगे और उसके बाद, ब्रेन-डेड,’ हमलावर फुसफुसाया। ‘तुम्हारे पास अपनी ज़िंदगी को फिर से बनाने का मौका था, लेकिन तुमने इसे गंवा दिया।’

देव ढीला पड़ गया। उसके दिमाग को खून की कम आपूर्ति और उसकी श्वासनली पर दबाव ने अपना काम कर दिया था। वो बेहोश हो गया, लेकिन उसका हमलावर पकड़ को तब तक कसता रहा जब तक कि गले की हड्डी टूट नहीं गई। देव का शरीर फर्श पर गिरा हुआ था, उसकी आंखें बेजान थीं। इसके बाद हत्यारे ने रस्सी को पंखे से बांध दिया और देव के शरीर को उससे लटका दिया। एक हत्या अनोखे तरीके से आत्महत्या में बदल गई थी।

घुसपैठिया उसी रास्ते से निकल गया जिस रास्ते का इस्तेमाल घुसने के लिए किया था। उधर रॉटवीलर कुतिया के साथ प्यार में ही व्यस्त था। प्यार का जादू सब पर चलता है।

## 70

वह सुबह बाकी दिनों की सुबह जैसी ही थी। अनु ने इडली बनाने के लिए बैटर उठाया, उसे पकाने के लिए चढ़ाया और जल्दी ही अपने पिता के घर आ गई। फिर उसने पारंपरिक तरीके से कॉफी बनाई, झागदार दूध के साथ फिल्टर में बारीक पिसी हुई कॉफी को छानने से मिले मिश्रण के साथ। बाप और बेटी साथ में नाश्ता कर रहे थे, और पीतल के छोटे-छोटे गिलासों से कॉफी पी रहे थे।

राव खाते समय अखबार पढ़ते थे, अक्सर भारत में हो रही घटनाओं पर टिप्पणियां करते रहते थे। अनु हमेशा की तरह चुप रही और उन्हें बड़बड़ करने दिया।

पंद्रह मिनट बाद, वे नाश्ता कर चुके थे। जैसे ही अनु डाइनिंग टेबल से उठी और बर्तन धोना शुरू किया, उसे उबकाई आने लगी। रसोईघर उसे घूमता सा दिखने लगा। उसने सहारे के लिए काउंटर को पकड़ लिया। क्या यह खाने की वजह से हुआ? उसने वह

थाली छोड़ दी जिसे वह धो रही थी और टोफेन बॉक्स उठा लिया जिसमें बचा हुआ बैटर रखा था। उसने इसे सूँघने की कोशिश की, लेकिन वह उसके हाथों से गिरकर फर्श पर फैल गया। उसने वह थाली उठाई जिसे वह अपने दूसरे हाथ से धो रही थी, लेकिन वह भी ज़मीन पर गिर गई। वह खुद पर से नियंत्रण खो रही थी।

जब तक वह लिविंग रूम में पहुँची उसके पिता पहले से ही सोफे पर बेहोश पड़े थे। उनके हाथ में जो अखबार था वह उनके सिर के नीचे पड़ा था। उसने उन्हें आवाज़ देने की कोशिश की। ‘अप्पा... अप्पा...’ लेकिन आधे-अधूरे शब्द निकले, लगभग अस्पष्ट। कुछ सेकंड बाद, अनु फर्श पर गिर गई, उसका सिर स्टडी टेबल के कोने से टकराने से बमुश्किल बच पाया।

हट्टा-कट्टा आदमी और उसका सहयोगी, जो उन पर नज़र रख रहे थे, अपने फ़ोन पर घर के अंदर होने वाली घटनाओं को देख रहे थे। फ़्लुनाइटाज़ेपैम, जिसे डेट-रेप ड्रग रोहिप्रोल के नाम से भी जाना जाता था, ने अपना काम कर दिया था। वे घर में घुस गए। दोनों आदमियों ने कुशलता से नायलोन की रस्सी से राव के हाथ और पैर बांध दिए और फिर उनकी बेटी के साथ भी ऐसा ही किया। उनकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी और उन्हें चुप रखने के लिए उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया गया था। आलू की बोरियों की तरह उठाकर बाहर इंतज़ार कर रहे गाड़ी में लादे जाने पर भी वे बेहोश रहे। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने खुद को एक चलती एसयूवी में कैद पाया।

एक लंबे सफ़र के बाद गाड़ी रुक गई। राव और अनु को बाहर ले जाया गया और मिट्टी के फर्श पर फेंक दिया। उनकी आंखों पर बंधी पट्टी और मुँह में ठूँसी गई चीज़ें निकाल दी गईं, तब उन्होंने देखा कि वे किसी शेड में थे जिसका इस्तेमाल बंद हो चुका था। जंग खा रही मशीनरी एक कोने में पड़ी थी। कई जगह छत टूट चुकी थी। उनके अपहरणकर्ता उनके सामने खड़े थे, उन्होंने अपने हाथ अपनी छातियों पर बांध रखे थे, साफ़ था कि उनका पलड़ा भारी था।

अनु ने खुद को उन रस्सियों से आज़ाद करने के लिए संघर्ष किया जिन्होंने उसके हाथ-पैरों को बांधा हुआ था, उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वो इतनी कमज़ोर क्यों महसूस कर रही थी। वो हमेशा मज़बूत, आत्मनिर्भर, पक्के इरादे वाली थी। उसने डरी हुई आंखों से अपने पिता की ओर देखा, फिर उसकी नज़रें पहले अपने अपहरणकर्ताओं पर गई और फिर उसने अपने चारों तरफ देखा। वो उम्मीद कर रही थी कि अप्पा ठीक हों। राव बिना किसी हरकत के लेटे थे, मदहोश और जवाब देने में नाकाबिल।

अनु ने अपना मुँह खोलने की कोशिश की और मदद के लिए चिल्लाई। लेकिन जो आवाज़ निकली वह एक दबी हुई चीख थी।

‘जितना चाहो चिल्लाओ,’ हट्टे-कट्टे शख्स ने कहा। ‘मीलों तक तुम्हारी आवाज़ कोई नहीं सुनेगा। यहां से निकलने का केवल एक ही तरीका है—हमें वह जगह बता दो जिसकी हम तलाश कर रहे हैं। तुम जानती हो कि यह क्या है और कहां है।’

पैम दिल्ली से चेन्नई को फ्लाइट में रुक-रुक कर झपकी लेती रही। वो बार-बार मार्क के बारे में ही सोच रही थी। उन सभी ट्यूबों और सेंसरों के साथ आईसीयू बिस्तर में उसे देखना आसान नहीं था। सीबीटीटी टीम पूरे दल-बल के साथ अस्पताल में थी। वो उनके साथ सुरक्षित रहेगा। मार्क के सर्जन ने भी उसके स्थिर होने की पुष्टि की थी। उसने कहा था, 'हमें बस उसे आराम करने देने और घाव भरने देने की जरूरत है।'

क्या मुझे मार्क को इस अवस्था में छोड़कर जाना चाहिए? पैम सोच रही थी। 'चिंता मत करो,' मार्क की सेक्रेटरी ने उससे कहा था। 'मैं तुम्हें उसकी हालत के बारे में खबर करती रहूंगी।' उसकी आंखों में ऐसा भाव था, जिससे संकेत मिलता था कि वह जानती थी कि उन दोनों के बीच कुछ चल रहा था। लेकिन यह भाव लाड़-प्यार करने वाले माता-पिता की तरह का भाव था।

उसे वही कार और ड्राइवर मिला जो पहले उसे हवाई अड्डे से लेकर आया था। घनी दाढ़ी वाला ड्राइवर मुस्कुराया और गर्मजोशी से उसका अभिवादन किया। उसके बारे में कुछ ऐसा था जो अजीब महसूस हुआ। हालांकि वो समझ नहीं पा रही थी कि क्या। पिछली बार की ही तरह, उसने देखा कि ड्राइवर बार-बार रियर-व्यू मिरर में उसकी तरफ देख रहा था।

दो घंटे बाद वो राव के घर कांची पहुंची। कार के रुकते ही उसे आभास हुआ कि कुछ तो गड़बड़ थी। पहली बात यह थी कि अकादमी का मुख्य दरवाज़ा या फाटक, जो आमतौर पर जंग लगे ताले से बंद रहता था, अब खुला पड़ा था। फाटक के नीचे की झाड़ियां अस्त-व्यस्त हो गई थीं, जो साफ़ बता रही थीं कि इसे काफी लंबे समय के बाद खोला गया था। 'बिना अनुमति प्रवेश नहीं' वाला बोर्ड ज़मीन पर गिरा हुआ था।

पैम सावधानी से राव के कॉटेज के घुमावदार रास्ते की ओर बढ़ी। वो धीरे-धीरे घर के पास पहुंची, किसी भी संभावित खतरे को लेकर वो सावधान थी। घर का मुख्य दरवाज़ा अधखुला था। राव या अनु के बिल्कुल उलट; जो अपनी प्राइवसी को महत्व देते हैं, वो दबे पांव अंदर घुसी, जैसे कि उसे खुद पर हमला होने की पूरी उम्मीद हो, लेकिन वहां सन्नाटा था। पिछली रात की बजाय सुबह की फ्लाइट लेने के लिए उसने खुद को कोसा। शायद मैं इसे रोक पाती।

रसोईघर में उसे प्लेट और टिफ़िन बॉक्स फ़र्श पर पड़े मिले। वो बचे हुए नाश्ते को सुंघने के लिए नीचे झुकी। उसे कुछ भी अजीब गंध नहीं समझ आई। लेकिन वो जानती थी कि कुछ दवाएं गंध का कोई निशान नहीं छोड़तीं।

लिविंग रूम में सोफे के पास नायलॉन की नीली रस्सी का एक ढेर था। क्या उन लोगों को इससे बांधा गया था? उसने मुख्य दरवाज़े का मुआयना किया कि कहीं टूटा तो नहीं था। शायद ताला खोला गया था क्योंकि दरवाज़े को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। उसने लिविंग रूम के चारों ओर देखा कि क्या कोई चीज़ चोरी हुई थी, लेकिन राव ने अपनी किताबें, पांडुलिपियां और कागज़ात जिस बेतरतीब ढंग से रखे थे, उसे देखते हुए यह बताना नामुमकिन था।

वो बाहर निकली और तेज़ी से घर के चारों ओर चलते हुए देखने लगी। वो उस खिड़की

के पास रुक गई जिससे बाहर बगोचा दिखाई देता था। इसकी तरफ जाने वाली नरम मिट्टी में चलने के निशान साफ़ दिख रहे थे। पैम को कोने में कुछ दिखा। वो खिड़की की चौखट पर चढ़ गई और उस चीज़ को छुआ। मैं समझ गई। नज़र रखने वाला कैमरा। कोई राव और अनु पर नज़र रख रहा था। लेकिन क्यों? और कौन? पैम ने अपने फ़ोन पर एक ऐप खोला और अपने फ़ोन को कैमरे के पास ले आई। ऐप चालू हो गया और उससे एक धीमी आवाज़ आई। कैमरा एक नेटवर्क से जुड़ा था। जिसने भी उसे लगाया था, वह जान चुका था कि पैम अंदर थी। अब वक्त बर्बाद नहीं किया जा सकता था।

वो सोच रही थी कि अपहर्ताओं ने अनु पर कैसे काबू किया होगा जो इतनी मज़बूत और फुर्तीली थी।

पैम ने अपने फ़ोन पर एक और ऐप चालू किया। वो उम्मीद कर रही थी कि राव ने अपने पास कांसे का पल्लव सिक्का रखा होगा, जिसे उसने सदर बाज़ार से खरीदा था। इसमें एक जीपीएस टैकर लगाया था जिसे मार्क की टीम ने उसके कहने पर लगाया था। ऐप अचानक काम करने लगा और कांची और वंदावासी के बीच कहीं एक जगह को दिखाने लगा। उसकी किस्मत अच्छी थी।

गूगल मैप्स ने बताया कि अगर वो तुरंत यहां से निकलती, तो छियालीस मिनट के अंदर वहां पहुंच जाएगी। उसने जल्दी से घर के अंदर के, कैमरा और चलने के निशान की कुछ तस्वीरें लीं और उन्हें वीटीके को भेज दिया। साथ ही मैसेज किया कि उसे घर की जांच के लिए एक क्राइम सीन स्पेशलिस्ट की जरूरत होगी। एक मिनट के भीतर वीटीके ने सिग्नल ऐप पर वापस मैसेज किया कि वो राँ के चेन्नई फ़िल्ड ऑफिस को उस जगह को देखने और रिपोर्ट करने के लिए कह रहे थे। 'पुलिस बैकअप भी भेजा जा रहा है—अपना लाइव लोकेशन एक्टिव रखना,' उन्होंने कहा। 'उस सिक्के पर जीपीएस टैकर के लिए भगवान का शुक्र है।'

पैम ने अपने ड्राइवर को समझाया कि उन्हें कहां जाना था। जब उसने उसे अनुमानित समय बताया तो वह हंसने लगा। 'आपके उस नक्शे को यह नहीं पता है कि जब मुझे ज़रूरत हो तो मैं कितनी तेज़ी से गाड़ी चला सकता हूं, मैडम,' उसने इंजन चालू करते हुए कहा। 'अपनी सीट बेल्ट बांध लीजिए और मुझे धीरे चलने को मत कहिएगा। मैं बस इतना ही कहूंगा।'

## 72

मैं नाकालोहो से कांटोलो<sup>69</sup> के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र से गुज़रा। यह स्थान प्रकृति की उदारता का एक और उदाहरण था और कई फूलों की प्रजातियों और झाड़ियों का घर था। हवा में हमेशा एक मनभावन सुगंध रहती थी, और इसने इस क्षेत्र को इसका स्थानीय नाम दिया- 'गांधार' या सुगंध। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या यह वही 'सुगंधित भूमि' थी जिसका उल्लेख प्रज्ञाकर ने किया था। लेकिन इस क्षेत्र का अधिकांश हिस्सा खंडहर हो चुका था, तो यह कैसे हो सकता था?

में पुलुशापुलो<sup>20</sup> तक यिन्दु दर्रे<sup>21</sup> से होकर गया, जिसे यिन्दु का प्रवेश द्वार माना जाता था। इतने सारे मठों और स्तूपों को जीर्ण-शीर्ण अवस्था में देखकर मुझे दुख हुआ। यिन्दु की पुरानी आस्थाएं फिर से प्रचलन में थीं, और बुद्ध का मार्ग स्पष्टतौर पर अब लोकप्रिय नहीं था। ऐसा महान राजा कनिष्क के प्रयासों के बावजूद हुआ था, जिन्होंने सैकड़ों साल पहले इस क्षेत्र में बुद्ध को समर्पित बेहतरीन स्तूपों में से एक का निर्माण किया था।

जैसी कि कहानी है, राजा शिकार के लिए निकले थे जब एक सफेद खरगोश उनके पास आया। खरगोश उन्हें एक चरवाहे लड़के के पास ले गया, जो गीली मिट्टी से एक छोटा स्तूप बना रहा था। लड़के ने कनिष्क को बताया कि बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी कि एक महान राजा एक दिन इसी तरह का स्तूप बनवाएगा। कनिष्क बौद्ध बन गया और तुरंत शानदार स्तूप का निर्माण करवाने लगा। मैंने दुःख के साथ स्तूप के खंडहरों को देखा। यह 200 साल पहले आक्रामक हूण के हमलों का नतीजा था और तबसे इसका ऐसा ही हाल था। यह 400 फीट ऊंचा और 185 फीट चौड़ा था। मूल स्वरूप में इसमें तांबे के चक्रों वाली एक अधिरचना होती थी जो सूर्य के प्रकाश में चमकती थी।

मैं पास के एक पुराने घर की ओर चल पड़ा। इस तथ्य को बताने के लिए ज़मीन में एक तख्ती लगाई गई थी कि वसुबंधु—जिनकी किताबों का अध्ययन करते हुए मैंने चीन में वर्षों बिताए थे—यहां रहते थे। मैं काफी निराश था क्योंकि गांधार के कभी बसे हुए शहर और गांव लगभग वीरान हो गए थे। अधिकांश मठ खंडहर हो चुके थे और वहां जंगली झाड़ियां उग आई थीं। वहां केवल एक सक्रिय मठ था, जिसमें लगभग पचास महायान भिक्षु रहते थे। इस बर्बादी के जिम्मेदार हूण माने जाते थे, जो लुटेरों का एक खानाबदोश समूह था, वे जहां भी जाते थे, मौत और तबाही छोड़ जाते थे।

सबसे दिलचस्प चीजों में से एक जो मैंने देखी वह थी गन्ने की फसल। लोग इससे मीठा रस निकालते थे। फिर उस रस को सुखाकर कठोर मिश्री बना लेते थे। मैंने लिखकर रख लिया कि वापसी की अपनी यात्रा के दौरान थोड़ी मिश्री ले जाऊंगा। मैं जानता था कि चीन में ऐसा कोई पदार्थ नहीं था। मुझे उम्मीद थी कि इससे सम्राट ताइज़ोंग के साथ मेरी मुलाकात मीठी हो जाएगी।

मैं पुरुषों के शहर से निकला और यिन्दु नदी के साथ चलते हुए उदकखंडा<sup>22</sup> के लिए निकल गया, जहां सड़कें नहीं थीं, केवल गहरी घाटियों से गुज़रने वाले रास्ते थे, उनमें से कई जानलेवा थे। मेरे सफर के साथी जो गाओचांग से मेरे साथ थे, अब मुझे छोड़कर जा चुके थे। उनमें से बहुत से लोग जानते थे कि इन देशों में उनका स्वागत नहीं किया जाएगा। केवल मेरे दो शिष्य मेरे साथ रहे क्योंकि वे अब जीवनभर के लिए मेरे साथ थे। हमने सुपोफस्तु<sup>23</sup> नदी पर रस्सी या लोहे की जंजीरों से बने कई जर्जर पुलों को धीरे-धीरे पार किया। इनमें से कई वास्तव में भयावह थे, क्योंकि नीचे की भयंकर शोर मचाने वाली नदियां और पानी के नीचे नुकीली चट्टानें आसानी से दिखाई दे रही थीं।

हम उन पहाड़ियों पर चढ़े जिनमें चढ़ने के लिए हिलते हुए खूंटे थे। किसी आदमी के

अपना संतुलन खोने के साथ ही सैकड़ों फीट नीचे अपनी मौत की तरफ जाना एकदम आसान था। यिन्दु नदी के ऊपरी भाग में एक खड़ी चट्टान पर अव्यवस्थित रूप से बना एक मठ था। भिक्षुओं ने विशेष रूप से अनुरोध किया कि मैं उन्हें आतिथ्य का सम्मान देने व मैत्रेय, भविष्य के बुद्ध, के दर्शन करूं जो लकड़ी पर खुदी हुई सुनहरे रंग वाली सौ फुट की विशाल प्रतिमा थी।

मैं मठ तक पहुंचने वाले रास्ते पर आगे बढ़ा, सावधानी से अपने पैर उन खूंटों पर रखे जो विशाल प्रतिमा तक ले जाने वाले थे। दुर्भाग्य से, खूंटों में से एक ढीला था। मैं गिर गया, और मेरी यात्रा एक लज्जाजनक अंत पर आ गई होती अगर मैं अपने ऊपर की एक खूंटी को पकड़कर अपनी जान बचाने के लिए लटकने में सफल नहीं होता। मैं फिर से समझ गया कि मैत्रेय हर कदम पर मुझे बचा रहे थे। यह एक परम चमत्कार था कि मैं गिरते समय उस खूंटी को पकड़ सका। मुझे अंततः भिक्षुओं ने ऊपर खींच लिया, जिन्होंने अपने एक भाई को मेरी कमर पर रस्सी बांधने के लिए नीचे भेजा था। मैं अब पहले से ज्यादा सुरक्षित महसूस कर रहा था और नीचे भयंकर नदी में गिरने के बारे में सोचे बिना बचे हुए खूंटों पर आसानी से चलने में सक्षम था।

अंततः मैंने उत्तोकियाहांचा<sup>24</sup> में यिन्दु नदी को पार किया। यह एक विशाल, गर्जना वाली नदी थी, और मुझे ले जाने वाली नाव हर कुछ मिनटों में उलटने के लिए तैयार लग रही थी, लेकिन मैं सुरक्षित रूप से तचाशिलो<sup>25</sup> की घाटी में पहुंच गया। तचाशिलो कई सौ साल पहले एक महान मठ और विश्वविद्यालय हुआ करता था, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा हूणों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। मुझे पता चला था कि दुनियाभर से छात्र यहां साठ से अधिक विषयों का अध्ययन करने आते थे, जिनमें संस्कृत व्याकरण, कानून, सैन्य विज्ञान और चिकित्सा शामिल हैं। इसके कुछ महानतम छात्रों और शिक्षकों में महान नीति-उपदेशक<sup>26</sup> शामिल थे, जिन्होंने उस साम्राज्य का निर्माण किया जिस पर अंततः अशोक का शासन हुआ; महान भाषाविद<sup>27</sup> थे जिन्होंने संस्कृत व्याकरण के लिए कई नियम प्रतिस्थापित किए; और यिन्दु औषधि विज्ञान के जनक<sup>28</sup> थे। मैं तचाशिलो की हालत को देखकर दुखी था, यह जानकर कि कभी यह प्रतिष्ठा और उत्कृष्टता के शिखर पर था।

इसके बाद मैं संतों के आसन<sup>29</sup> पहुंचा, जिसमें कई बुद्ध हैं, और जो तचाशिलो के बहुत कम बचे हुए मठों में से एक है। मैं वहां नहीं रुका बल्कि उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ा, कई पहाड़ों पर चढ़ता गया और रस्सी के और भी अधिक पुलों को पार करते हुए वितस्ता<sup>30</sup> नदी के गहरे घाट से होते हुए कश्मीर तक पहुंचा। कश्मीर नरेश के मामा ने मेरा स्वागत किया। उन्हें मुझे लाने के लिए घोड़ों के साथ भेजा गया था।

कश्मीर को अपना नाम यिन्दु की महानतम देवी पार्वती से मिला है, जिनके कई नामों में एक कश्मीरा भी था। यह अब एक बौद्ध साम्राज्य था और बौद्ध धर्म के बचे हुए कुछ केंद्रों में से एक था। यह इस कारण से था कि लगभग 500 साल पहले महान सम्राट कनिष्क ने चौथी बौद्ध संगीति के दौरान बौद्ध धर्मग्रंथों की समीक्षा और उन्हें एक स्थान

पर एकत्र करने के लिए कश्मीर में 500 बौद्ध विद्वानों को इकट्ठा किया था। मैं बहुत उत्साहित व धन्य महसूस कर रहा था कि मैं वहां पहुंच गया था।

कश्मीर की सुंदरता सांसें रोक देने वाली थी। मैंने खुद को हरी-भरी घाटियों, चारों ओर से बर्फ से ढके पहाड़, कल-कल बहती जलधाराएं, सुगंधित बाग और हरे-भरे घास के मैदानों के बीच पाया। धरती पर अगर कहीं स्वर्ग था तो यहीं था।

मैंने वराहमूला<sup>81</sup> के पास एक मठ, हुसेकियालो<sup>82</sup> में रात बिताई। 'वराहमूला' नाम दो शब्दों से आया है: वराह और मूल, जिसका अर्थ है 'सूअर' और 'दाढ़'। यहां के लोगों का मानना था कि एक राक्षस को हराने के लिए भगवान सूअर के रूप में प्रकट हुए थे। सूअर के दांत ने पहाड़ में एक छेद बना दिया था, जिससे घाटी के बीचोंबीच एक झील बन गई थी।

अगले दिन, मैंने हाथी पर सवार होकर अधिष्ठान<sup>83</sup> की यात्रा की और राजा, उनके मंत्रियों और एक हज़ार से अधिक भिक्षुओं ने आदरपूर्वक मेरा स्वागत किया। राजा ने मुझे उन ग्रंथों के अनुवाद में सहायता करने के लिए बीस लिपिक दिए, जिन्हें मैं अपने साथ चीन ले जाना चाहता था।

मैंने कश्मीर में बस कुछ सप्ताह बिताने की योजना बनाई थी, लेकिन स्थान इतना आकर्षक व मनमोहक था कि मैं वहां दो साल तक टिका रहा।

### 73

पैम का ड्राइवर उसे—छियालीस नहीं—बत्तीस मिनट में ले आया, हालांकि इसका मतलब था कि यह रोंगटे खड़े कर देने वाला सफर था जिसमें कई बार हादसे होते-होते बचे, बार-बार लेन बदला गया, गलत साइड से ओवरटेक किया गया और लगातार हॉर्न बजता रहा। लेकिन वादे के मुताबिक पैम ने कोई शिकायत नहीं की और ड्राइवर को जो कुछ भी करने की ज़रूरत थी उसे करने दिया। सिर्फ एक बार उसे ऐसा महसूस हुआ कि ड्राइवर को डांटना चाहिए था, जब उसने घास के बंडल के साथ जा रहे एक साइकिल सवार का संतुलन बिगाड़ दिया और वह सड़क के किनारे गिर गया। पूरी यात्रा के दौरान, पैम वीटीके के संपर्क में रही, जिनकी चेंनई टीम ने राव के घर की तलाशी शुरू कर दी थी।

उन्होंने कई ऐसे नाम वाले छोटे गांवों और कस्बों को पार किया, जिनका उच्चारण करना पैम के लिए मुश्किल था, जैसे अयंगरकुलम, महाजनंबक्कम और थेन्नंगुर। उसने देखा कि लोग अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी जी रहे थे—सड़क किनारे स्टॉल पर कॉफी पी रहे थे, अपना सामान लगा रहे थे या सफाई कर रहे थे। उनका जीवन साधारण था जो पैम को पिछले कुछ दिनों में देखी हिंसा के बाद शांति भरा महसूस हुआ। कांची और वडामंगलम के बीच कहीं किसी जगह, जीपीएस टैकर ऐप बजने लगा—बिल्कुल साफ़ संकेत था कि उन्हें मुख्य सड़क से उतर जाना चाहिए। कई दफा बाएं और दाएं घूमने के बाद, वे एक सुनसान शेड में पहुंचे जो एक कट्टू के खाली पड़े खेत की तरह दिखने वाली जगह के बीच में था।

शेड को नालोदार छत पूरी तरह से जंग खा चुकी थी और टूटकर गिर गई थी, जिससे जगह-जगह छेद हो गए थे। इन छेदों से, लोहे की चादरों को सहारा देने वाले लकड़ी के शहतीर दिखाई दे रहे थे, उनमें से कुछ नीचे भी गिर गए थे। बगल की दीवारों की ईंट मलबे के ढेर की तरह ढह गई थी, और इस पूरे जगह को थामकर रखने वाली इकलौती चीज़ बांस की अस्थायी मचान लग रही थी। पैम ने सोचा, किसी को बंदी बनाने के लिए यह सबसे उम्दा जगह थी। उसने अपने ड्राइवर से कुछ दूर पहले ही कार रोकने के लिए कहा और रास्ते में टायर के बने निशानों को देखते हुए आगे बढ़ गई। टायरों के आने और जाने दोनों के निशान थे। क्या उन्हें यहां लाने वाली गाड़ी पहले ही जा चुकी है?

वो जंग लगी धातु की कुछ चादरों को हटाते हुए शेड में चली गई, जो एंटी प्वाइंट के पास बैरियर के तौर पर लगाए गए थे। अब वो सोच रही थी कि वीटीके ने उसे जो बंदूक भेजी थी, उसे छोड़कर आना क्या समझदारी थी। वो ऐहतियात के साथ अंदर गई, लेकिन जगह खाली लग रही थी। उसने हर कोने को अच्छे से देखा और कबाड़ के हर सामान के पीछे देखा। उसने फुर्ती से बाहर का एक चक्कर लगाया, यह पक्का करने के लिए कि छिपकर हमला किए जाने की कोई आशंका तो नहीं थी।

वो राव और अनु के वहां होने के किसी सबूत की तलाश करने लगी। सुराग आंखों के सामने थे। मिट्टी के फ़र्श पर दो साफ़ धब्बे थे। वहां तक आने और वहां से दूर जाने के कई पैरों के निशान थे। वो ज़मीन की बारीकी से जांच करने के लिए नीचे झुकी।

उसने अपने फ़ोन पर ऐप देखा, जो लगातार बज रहा था। कहां गया वह सिक्का? उसने फ़र्श पर फैली हुई सूखी मिट्टी की मोटी परत पर अपने हाथ चलाए और वहां सिक्के को आधा दबा पाया। राव तक पहुंचने की कड़ी टूट गई थी—शायद तब जब राव को वहां पटका जा रहा था या वापस वहां से उठाया जा रहा था। लेकिन वो कहां थे? अनु कहां थी? क्या वे मारे गए थे? वो बिना जीपीएस के उन्हें कैसे ट्रैक करेगी?

उसने देव को फ़ोन करने की कोशिश की। आखिरकार, उसने ही सबसे पहले उसे कांची एकेडमी का संकेत दिया था। लेकिन उसका फ़ोन या तो बंद था या नेटवर्क कवरेज से बाहर था। जैसे ही वो उसे मैसेज करने वाली थी, उसकी स्क्रीन पर एक और कॉल का फ्लैश आया। यह वीटीके का फ़ोन था।

वीटीके ने कहा, 'शायद मुझे पता है कि वे कहां हो सकते हैं।'

'कहां?' अपनी हथेली में रखे सिक्के को देखते हुए पैम ने पूछा।

'हमारे एजेंटों को हनुमान मंदिर के पुजारी की लिखी एक चिट्ठी मिली है जो उस जगह से बहुत दूर नहीं है जहां तुम हो। संजीवीर्य हनुमान मंदिर। पुजारी ने राव को चिट्ठी लिखकर चिंता न करने के लिए कहा था और कहा था कि उनका "प्रसाद" सुरक्षित है। मंदिर एक ऐसा स्थान लगता है जहां राव और उनकी बेटी अक्सर जाते होंगे। हो सकता है कि वहां कोई सूत्र मिले। तुम्हें वहां पहुंचना चाहिए। मैं तुम्हारे पीछे पुलिस बैकअप भेज रहा हूं।'

'मैं वहां कैसे जाऊंगी?' पैम ने पूछा।

‘तुम्हें मुड़कर वापस उसी सड़क पर कांचों की ओर जाना होगा। पालार ब्रिज पहुंचने से ठीक पहले तुम्हें मंदिर दिखाई देगा। मैं तुम्हें रास्ते का नक्शा भेज रहा हूं, क्योंकि जीपीएस सिक्का अब किसी काम का नहीं है।’ पैम ने फ़ोन काटा और अपनी कार की तरफ दौड़ी, और अंदर बैठने के साथ ही उसने ड्राइवर को रास्ते के बारे में समझाया। एक बार अंदर बैठते ही उसके दिमाग की घंटी बजी। वीटीके को कैसे पता चला कि मैंने राव को जो सिक्का दिया था, उसमें जीपीएस ट्रैकर है? मैंने उनसे कभी इसका जिक्र नहीं किया, और उन्हें कैसे पता कि यह अब किसी काम का नहीं है?

74

जब पैम मंदिर के रास्ते में थी तभी मार्क की सेक्रेटरी ने फ़ोन किया। ‘वो अच्छी रिकवरी कर रहा है। डॉक्टरों को लगता है कि वे उसे कुछ दिनों के भीतर आईसीयू से निकालकर प्राइवेट रूम में शिफ्ट कर सकते हैं। मैं तुम्हें बताती रहूंगी।’ पैम ने राहत की सांस ली।

उसका ड्राइवर पहले भी मंदिर जा चुका था। ‘बहुत मशहूर जगह है, मैडम,’ उसने कहा। ‘दुर्भाग्य से, बहुत ज़्यादा लोग वहां नहीं जाते हैं। यह उजाड़ और वीरान सा दिखता है, लेकिन यह भारत के सबसे अच्छे हनुमान मंदिरों में से एक है। खंभों पर हनुमान के पचहत्तर अलग-अलग रूप अंकित हैं।’

पैम ने बेध्यानी से सुना, उसके ख्यालों में राव और अनु ही थे। वो मना रही थी कि पिता और बेटी सुरक्षित हों। हो सकता था कि हनुमान मंदिर से भी कोई मदद नहीं मिल पाए। आखिरकार, वे लोग अपना काम पूरी तरह से एक पुजारी की चिट्ठी के आधार पर कर रहे थे। क्या होगा अगर इसका उनके अपहरण से कोई लेना-देना नहीं निकले? और तथाकथित ‘प्रसाद’ क्या था जो राव पुजारी के पास छोड़ गए थे?

उसके चिप-लगे सिक्के के बारे में वीटीके को पता होना भी उसे परेशान कर रहा था। क्या मार्क की टीम में कोई भेदिया था? क्या जीपीएस माइक्रोचिप लगाने वाला तकनीशियन किसी को जानकारी दे सकता था? और क्या वो वीटीके पर भरोसा कर सकती थी? वो उसके आसपास सुरक्षा के लिए लोगों को रखना चाहते थे। क्या यह उस पर नज़र रखने की कोशिश का तरीका था?

उसका मोबाइल फिर से बीप-बीप की आवाज़ करने लगा। यह जनरल जय ठाकुर का एक एन्क्रिप्टेड मैसेज था। टेक्स्ट मैसेज में कहा गया था, ‘तुम्हें इसे देखने की ज़रूरत है।’ कुछ सेकंड बाद एक और मैसेज आया जिसमें एक तस्वीर थी। हाई-डेफिनिशन ज़ूम लेंस से ली गई यह तस्वीर जनपथ में किसी एंटीक्स शॉप के मालिक के साथ मार्क की मुलाकात की थी। यह साफ़ था कि तस्वीर दुकान के कांच के दरवाज़े से ली गई थी। लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि तस्वीर में जो शख्स था वह मार्क था। दोनों को हाथ मिलाते हुए देखा जा सकता था।

‘यह किस बारे में है?’ उसने वापस मैसेज किया।

ठाकुर ने जवाब दिया, ‘दुकान के मालिक को तस्करी रैकेट में शामिल होने के शक

को वजह से सीबीआई को निगरानी में रखा गया था।’

‘किस तरह का तस्करी रैकेट?’

ठाकुर ने उसे फ़ोन किया। बिना किसी हाय-हैलो के उसने कहा, ‘ज़्यादातर भारत, कंबोडिया, थाईलैंड और वियतनाम के एंटीक्स। मार्क इसी शख्स से मिलता पाया गया। कनेक्शन केवल गोलीबारी की घटना के कारण सामने आया। सीबीआई इन्वेस्टिगेटर, कुमार ने देखा कि पीड़ित—मार्क—इस तस्वीर में दिख रहे आदमी की तरह दिख रहा था।’

‘तो क्या?’ पैम ने पूछा। ‘हो सकता है कि वो दुकान से कुछ खरीद रहा हो। यह साबित नहीं होता है कि मार्क किसी भी धोखेबाज़ी में शामिल हैं।’ उसे भी कुछ खटक रहा था, लेकिन वो इसे मानना नहीं चाहती थी। वो खुद को मजबूर कर रही थी कि मार्क के बारे में मन में कोई शक न लाए।

‘शक है कि चीनी मूल के दुकान मालिक के विदेशी खुफिया एजेंसियों से संबंध हों। कुछ दिन पहले वह लापता हो गया था। जांच से पता चला है कि उसने सियोल जाने वाली फ्लाइट में बुकिंग की थी। सच कहूं तो, मैं पक्का नहीं कह सकता कि मार्क को लेकर कोई समस्या है लेकिन साथ ही मैं तुम्हें यह भी नहीं कह सकता हूं कि ऐसा नहीं है। और ठीक यही वजह है कि मैं चिंतित हूं। हम सब के वास्ते, उससे सावधान रहना।’

‘कैसे?’

‘अपने और उसके बीच कुछ दूरी रखो और उसे कोई नई जानकारी नहीं दो। वैसे भी, वो इस समय अस्पताल में है, इसलिए तुम्हारी गैर-मौजूदगी पर शक नहीं होगा।’

जनरल ने फ़ोन रख दिया। इस रहस्योद्घाटन से पैम अचंभित रह गई। वो जानती थी कि उसे चेतावनी को गंभीरता से लेना होगा। मार्क का अतीत संदेह भरा था, और वो इसे अनदेखा नहीं कर सकती थी। गोली चलाने वाले को कैसे पता चला कि मार्क और मैं उस रात कहां होंगे? क्या मुझ पर निगरानी रखी गई थी, या मार्क ने किसी को इसकी जानकारी दी थी? क्या सीबीआई ने यह नहीं कहा था कि शायद मैं उनके निशाने पर थी? क्या ऐसा हो सकता है कि मार्क ने किसी गलत मकसद की वजह से मुझसे दोस्ती की हो? उसका दिमाग जिस दिशा में सोचने लगा था, उससे उसे नफ़रत थी।

पलभर के लिए वो अपने आपको बिल्कुल अकेला और असहाय महसूस कर रही थी। उसने अपना ध्यान ड्राइवर और आगे की सड़क पर लगाया। हमेशा की तरह, ड्राइवर की एक आंख सड़क पर थी और एक आंख रियर व्यू मिरर पर।

‘हम कितनी दूर और हैं?’ पैम ने पूछा।

‘आगे पालार ब्रिज है,’ ड्राइवर ने गाय से बचने के लिए ब्रेक लगाते हुए कहा। ‘ब्रिज पर पहुंचने से पहले हमें मंदिर दिख जाएगा। वह हमें दिखेगा ही क्योंकि उसकी इमारत इस इलाके में सबसे ऊंची है। हम किसी भी वक्त वहां पहुंच जाएंगे।’

वायुमंडल के काफी ऊपर, एक अकेले सैटेलाइट, रिसैट-2 ने भारत-चीन सीमा की तस्वीरें खींचीं। इसने उन्हें उसी समय ज़मीन पर एक मॉनिटरिंग स्टेशन तक भेज दिया। रिसैट-2 कोई साधारण सैटेलाइट नहीं था। इस खास सैटेलाइट पर एक्स-बैंड सिंथेटिक अपर्चर रडार लगा हुआ था जिसे भारत ने इज़रायली टेकसार को लॉन्च करने के लिए दी गई सुविधा के बदले में इज़रायल से हासिल किया था। इस मॉडर्न अपर्चर ने रिसैट-2 को रात में और यहां तक कि एकदम खराब मौसम होने पर भी तस्वीरें भेजने के काबिल बनाया था और इस लिहाज से यह हर मौसम में काम आने वाला था।

दक्षिण भारत के हासन में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की खुद की मुख्य नियंत्रण प्रणाली थी। रिसैट-2 से तस्वीरें हासन के माध्यम से ही भेजी गई थीं। फिर उन्होंने नई दिल्ली में राजाजी मार्ग पर एक इमारत में बने नियंत्रण कक्ष तक पहुंचने के लिए रक्षा मंत्रालय से जुड़े एक एन्क्रिप्टेड नेटवर्क के ज़रिये सफ़र किया। यह इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ मुख्यालय था, वही इमारत जहां डोकलाम विवाद के बाद शुरुआती ब्रीफिंग के लिए जनरल जय ठाकुर और उनके सीओएससी ने पैम से मुलाकात की थी। भारत के लिए हाल में फ़िक्र की दोनों वजहों—पाकिस्तान और चीन—के पास सीमाओं की निगरानी के लिए अपने-अपने सैटेलाइट थे। दरअसल, पाकिस्तान का पीआरएसएस-1 चीन से इसलिए खरीदा गया था ताकि वह भारत की जासूसी कर सके। चीन के भी कई सैटेलाइट भारत पर नज़र रख रहे थे और चीन अंतरिक्ष के इस खेल में काफी आगे था। भारत के 106 की तुलना में अंतरिक्ष में चीन के करीब 280 सैटेलाइट होने की जानकारी सामने आई थी। न केवल ज़मीन पर बल्कि अंतरिक्ष में भी चीनियों की कई आंखें और कान थे।

कश्मीर हाउस में बना कंट्रोल रूम अत्याधुनिक था, जिसमें एक घुमावदार दीवार के साथ उलटे आधे गोलाकार में बड़ी एलईडी स्क्रीन लगाई गई थी। हर स्क्रीन पर उन सैटेलाइटों से अलग-अलग फ़ीड दिख रही थी, जो पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश और म्यांमार के साथ भारत की संवेदनशील सीमाओं पर नज़र रखते थे, साथ ही श्रीलंका के साथ साझा समुद्री इलाकों की तस्वीरें थीं।

कमरे के बीच में दस हाई-टेक वर्कस्टेशन थे, जिनमें से सभी एन्क्रिप्टेड फ़ोन लाइनों से लैस थे। इनका इस्तेमाल प्रमुख रक्षा कर्मियों को महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए किया जाता था। सभी वर्कस्टेशनों से वॉल डिस्प्ले साफ़ दिखाई दे रहे थे। इसके अलावा, हर डेस्क पर बड़े आकार के मॉनिटर लगे हुए थे, जो उन इलाकों के पास के दृश्य दिखा रहे थे, जिन्हें अलग-अलग ऑपरेटर बड़ा करके देख सकते थे। साल के 365 दिनों में तीस ऑब्ज़र्वर, आठ-आठ घंटे की शिफ्ट में दस ऑब्ज़र्वर, चौबीसों घंटे इन वर्कस्टेशनों पर काम करते थे। यानी हर साल 87,600 घंटे की मॉनिटरिंग।

भारतीय नियंत्रण कक्ष न केवल आने वाली सूचनाओं को लेने के बाद उन पर नज़र रखता था और विश्लेषण करता था बल्कि सीमाओं की रक्षा करने वाले सैन्य कर्मियों की मदद के लिए सीमाओं से हाई-रिज़ॉल्यूशन तस्वीरें भी उन्हें भेजता था। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा—या सीपेक—जिसका एक हिस्सा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में गिलगित-बाल्टिस्तान से होकर गुज़रता था, पर खास नज़र रखी जाती थी।

भारत और चीन के बीच विवादित क्षेत्र अक्साई चोन भी नेगरानों वाला एक और इलाका था। कंट्रोल रूम किसी भी संदिग्ध गतिविधि के लिए नक्सल बहुल इलाकों या तथाकथित रेड कॉरिडोर पर भी नज़र रखता था।

ऑब्ज़र्वर में से एक ने अपने टर्मिनल पर आई तस्वीर को और करीब से देखा। उसने अपने एक साथी को दोबारा देखने के लिए बुलाया। 'ये क्या चीज़ हैं?' उसने अपनी स्क्रीन के ऊपरी बाएं हिस्से की ओर इशारा करते हुए पूछा। उस पर कई छोटे-छोटे आयताकार और गोलाकार ढांचे एकाएक प्रकट हो गए थे।

उनके सहयोगी ने आंखें जमाकर देखीं। वह जानता था कि वह डोकलाम के चीनी हिस्से में याटोंग और सोना सेक्टरों को देख रहा था। लेकिन अचानक भंडारण ढांचे और हेलीपोर्ट कैसे आ गए? वह यह भी देख सकता था कि वहां हेलीकॉप्टर हैंगर जैसी कोई चीज़ भी थी।

उसने कहा, 'कई अर्ध-स्थायी ढांचे हैं, जो रातों-रात दिखाई दे रहे हैं। जाहिर है सैनिकों और हथियारों को रखने के लिए। यकीन करना मुश्किल है। कुछ दिन पहले तक तोरसा नदी के पश्चिम में बनी सड़क को छोड़कर इनमें से कुछ भी नहीं था। हम जानते हैं कि चीनियों के पास उन्नत निर्माण विधियों का इस्तेमाल करके रातों-रात निर्माण करने की क्षमता है, लेकिन हमने पिछले कुछ दिनों में किसी भी तरह की निर्माण गतिविधि को क्यों नहीं देखा?'

'सिर्फ एक संभावना है,' दूसरे आदमी ने कहा। 'उन्होंने रिसैट-2 के नज़र रखने और उड़ने के सटीक समय का अंदाज़ा लगा लिया हो और केवल उन घंटों के दौरान काम किया हो जब हमारे सैटेलाइट की नज़र कहीं और थी।'

दोनों आदमी पठार वाले हिस्से को जूम करके देखने लगे। डोकलाम पठार से महज एक मील की दूरी पर कम से कम सौ वाहन पीछे वाली ढलान पर थे। 'क्या वे वही हैं जो मुझे लगता है कि वे हैं?' पहले वाले शख्स ने पूछा।

दूसरे आदमी ने हामी भरी। 'जालीदार पर्दे के नीचे टेंट। और हथियारबंद सैनिकों को ढोने वाली बख्तरबंद गाड़ियां हैं। बिलकुल वैसी ही जैसी कि पीपुल्स आर्म्ड पुलिस इस्तेमाल करती है। वे सेना के सामान्य ट्रकों की तुलना में कहीं अधिक कार्यक्षमता रखती हैं।'

कोई भी इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता था कि भारतीय एक बार फिर नींद में पाए गए, जब चीनी आगे बढ़ रहे थे। प्रधानमंत्री को तुरंत जानकारी देनी होगी। समस्या यह थी कि उन्हें पहले जनरल जय ठाकुर को जानकारी देनी होगी।

मेरा दल और मैं कश्मीर के पहाड़ों से उतरे, चंद्रभागा<sup>84</sup> नदी को पार किया और सकाला<sup>85</sup> के मैदानों में प्रवेश किया। मेरे साथ मेरे दो शिष्य ही नहीं, बल्कि कश्मीर के राजा द्वारा दिए गए सेवक भी थे। कश्मीर की सुंदरता और शांति अब केवल एक याद बनकर रह गई थी। 5,000 बौद्ध भिक्षुओं और सौ से अधिक मठों के घर वाली इस

सुरम्य भूमे में दो साल बिताने के बाद, मुझे यहां से जाने का दुख था। कश्मीर से मैं अपने साथ कनिष्क के ग्रंथ और वसुबंधु और असंग के पुराने सिद्धांतों पर बनाई गई तर्क की संशोधित नई प्रणाली लेकर आया था। मुझे बौद्धिकता और तत्वमीमांसा पर चर्चा करने में कई घंटे बिताने का भी सौभाग्य मिला। कश्मीर न केवल इंद्रियों के लिए बल्कि मन के लिए भी एक उत्सव जैसा था। लेकिन मुझे पता था कि कर्तव्य मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

जल्द ही हम सकाला के पास एक घने जंगल में पहुंच गए। सिला के प्राचीन आक्रमणकारियों ने इस स्थान को सगाला कहा था। सकाला के राजा ने कई सौ साल पहले एक बौद्ध भिक्षु से वाद-विवाद में हारने के बाद बौद्ध धर्म अपना लिया था। सकाला एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था जिसे सुंदरता से बसाया भी गया था। इसमें कई उद्यान, उपवन और तालाब थे। इसकी गलियां चौक और चौराहों के साथ व्यवस्थित ढंग से बनाई गई थीं, और बाज़ार महंगे सामानों से भरे हुए थे। शहर पहाड़ों, नदियों और जंगलों से घिरा हुआ था। प्राचीर, मीनार, दीवार और खाई के साथ इसकी अच्छी तरह से सुरक्षा की भी व्यवस्था की गई थी। सुंदर हवेलियां चारों ओर दिखाई देती थीं, और सड़कों पर अनगिनत घोड़ों, पालकियों और हाथियों की आवाज़ें आती रहती थीं। लेकिन यही कारण भी था कि सकाला की तरफ कई आक्रमणकारी भी आकर्षित होते थे। यहां लूटने के लिए बहुत धन था।

मेरा छोटा समूह इस बात से अनजान था कि जब हम जंगल के रास्ते पर चल रहे थे तो डाकू हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारे शहर छोड़ने के बाद से वे हमारा पीछा कर रहे होंगे। संभवतः, हमारे हमलावरों ने हमें बाज़ार में दिख रहे सामानों पर पैसे खर्च करते देखा था और सोचा होगा कि हमारे पास लूटने लायक अच्छी धन-संपत्ति होगी।

हम बरगद के एक विशाल पेड़ की छाया में थोड़ी देर के लिए अपनी यात्रा को रोककर जब सो रहे थे, तब हमें रक्त जमा देने वाली चीखें सुनाई दीं। डाकू पेड़ से झूलते हुए हमारी तरफ आए और हम पर घात लगाकर हमला किया। हमारा उनसे कोई मुकाबला नहीं था। उनका सरदार लाल आंखों और लंबे बालों वाला एक क्रूर लंबा-चौड़ा आदमी था, जिसने मानव हड्डियों के टुकड़ों का हार पहना था। जब उसके आदमियों ने हम पर हमला किया तो वह दहाड़ा, 'उन्हें मार डालो'। हम अपनी जान बचाने के लिए भागे, हम इतने डरे हुए थे कि एक पल के लिए भी हमने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हम एक सूखे दलदल के पास पहुंचे, जो कभी एक झील रही होगी। यह कांटेदार लताओं की एक दीवार से घिरा हुआ था, और इसके बीच से भागना असंभव था। हम फंस गए थे।

मेरे आदमियों ने अपनी जान की भीख मांगी। 'तुम्हारे पास पहले से ही हमारी सारी संपत्ति है। तुम चाहो तो हमारे कपड़े भी ले सकते हो,' वे रोए। 'कृपया हमारी जान बख्श दो।' लेकिन डाकू सुनने को तैयार नहीं थे। उन्होंने मेरे दो आदमियों को लकड़ी के तख्तों से बांधना शुरू कर दिया और बाकियों का पीछा करने लगे। उसी समय, मेरे

दल का एक युवा भिक्षु मुझे दलदल की पूर्वी सीमा की ओर खींचने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मुझे वहां क्यों ले जा रहा था। जब हम किनारे पर पहुंचे तभी मैंने वह देखा जो उस युवा भिक्षु ने पहले ही देख लिया था। यह एक सूखा हुआ सुराख था जो कभी झील को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने वाला पानी का एक नाला रहा होगा। मेरे युवा साथी ने इसके रुके हुए और मच्छरों से भरे पानी को अनदेखा करते हुए मुझे सुरंग में खींच लिया। हम अपने समूह की चीखें सुन सकते थे, लेकिन हम जानते थे कि हमारे पास वापस जाने और उन्हें बिना बाहरी मदद के बचाने की क्षमता नहीं थी। हम अंधेरी सुरंग के माध्यम से आगे बढ़े, जिससे गाढ़े कीचड़ ने हमें लगभग हमारी गर्दन तक ढक दिया। हमें नहीं पता था कि सुरंग कहां जाएगी। हम बस इतना जानते थे कि शायद कहीं बाहर निकलेगी।

लंबे समय के बाद हम सुरंग से बाहर निकले और सूरज की रोशनी में आ गए। दलदल से एक मील दूर एक गांव में जाकर सुरंग खुलती थी। गांववालों ने हमें निकलते हुए देखा और शुरू में सिर से पांव तक गाढ़े काले कीचड़ से सना देखकर डर गए। उन्हें लगा कि हम जंगल के अजीब जानवर थे। सौभाग्य से, मेरा साथी उनकी भाषा जानता था और उसने समझाया कि क्या हुआ था। तुरंत ही, ग्रामीणों ने एक लड़ाकू दल बनाया और हमारे साथ वापस दलदल की ओर चल दिए।

हमें जो दृश्य दिखा, वह भयानक था। वस्तुतः हमारे समूह के प्रत्येक सदस्य को पकड़ लिया गया था और एक खूंटे से बांध दिया गया था। उनमें से एक मृत पड़ा था, उसकी खोपड़ी पूरी तरह से फट गई थी। अन्य लोगों को बेरहमी से पीटा गया था। ऐसा लग रहा था कि डाकुओं को इस तरह पीड़ा देकर बहुत खुशी मिल रही थी। सौभाग्य से, इस दृश्य से ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने तुरंत कार्रवाई की। उन्होंने अपने देवताओं को याद करते हुए नारे लगाए और डाकुओं पर झपट पड़े, उनकी संख्या अधिक थी। डाकुओं को भागने पर मजबूर होना पड़ा। इसके बाद गांव वाले हमें अपने टोले में ले गए जहां उन्होंने हमें आगे जाने से पहले नहाने, खाने और आराम करने दिया। हमारी अधिकांश संपत्ति भी हमें वापस मिल गई। डाकुओं ने पहले जो संपत्ति लूट रखी थी, उसे हमारे बचावकर्ताओं के बीच बांट दिया गया।

मैं इन घटनाओं से हिल गया था लेकिन मैंने स्वयं को शांत और इनके प्रभाव से अलग रखने की पूरी कोशिश की। मैं चीनभुक्ति<sup>86</sup> की ओर आगे बढ़ा, जिसका नाम इस तथ्य के कारण पड़ा कि कनिष्क ने चीन से पकड़े गए कई सैनिकों को यहां रखा था। मुझे भिक्षु-राजकुमार विनीतप्रभा से मिलने का सौभाग्य मिला। तमोसुफना<sup>87</sup> के रास्ते जलंधरा जाने से पहले मैंने उनके ग्रंथों पर चर्चा करते हुए कई दिन बिताए। अब तक बारिश शुरू हो चुकी थी, और मैंने कई महीनों तक जलंधरा में डेरा डाला, मूसलाधार बारिश के खत्म होने की प्रतीक्षा करता रहा। जैसे ही बारिश कम हुई मेरे समूह ने कुलु-टो<sup>88</sup> के देवदार से आच्छादित क्षेत्र तक पहुंचने के लिए पतले पहाड़ी रास्तों और लताओं के हिलने-डुलने वाले पुलों को पार किया। कुलु-टो का शाब्दिक अर्थ है 'रहने

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास ( Novel ) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

( Motivational Book ) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

<https://t.me/hindilibrary>

<https://t.me/requestbookpdf>

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👉👉👉

[https://t.me/books\\_request](https://t.me/books_request)

English Books 📖📖

[https://t.me/Google\\_Ebooks](https://t.me/Google_Ebooks)

योग्य विश्व का अंत'। यह विपासा<sup>89</sup> नदी द्वारा बनाई गई एक विस्तृत खुली घाटी थी, जो पहाड़ों से घिरी हुई थी, जिसमें समृद्ध वनस्पति, फल और फूल थे। कुलु-टो में मूल्यवान औषधीय जड़ी-बूटियों, सोना, चांदी, लाल तांबे और स्फटिक के भी संसाधन थे। इस क्षेत्र में बीस महायान मठ और कई देव मंदिर थे। मैं कुलु-टो में रहना पसंद करता, लेकिन मुझे पता था कि उसके लिए समय नहीं था। इसलिए मैंने येनमौना<sup>90</sup> नदी के साथ-साथ दक्षिण की तरफ सफर शुरू किया, जब तक मैं मोटुलो<sup>91</sup> तक नहीं पहुंच गया।

## 77

चीनी शरुक्स शुक्रवार दोपहर अपने ऑफिस से निकला और तियानमेन ईस्ट मेट्रो स्टेशन आ गया। उसने जिदान के लिए एक लाइन वन ट्रेन ली, जहां उसने लाइन फॉर पर स्विच किया। छह स्टॉप बाद, वह बीजिंग दक्षिण रेलवे स्टेशन पर उतरा। वह काउंटर पर गया और हाई-स्पीड जी475 ट्रेन का टिकट खरीदा, जो दोपहर 3.36 बजे बीजिंग से रवाना होगी और उसे रात 9.13 बजे तक यानतेई पहुंचा देगी।

एक बार अपनी सीट पर बैठने के बाद, उसने शंघाई सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के द येलो रिवर कैंटाटा सुनना शुरू कर दिया। वह खिड़की से बाहर देखकर स्टॉप गिनता रहा—कांगझोउ वेस्ट, देझोउ ईस्ट, जिनान वेस्ट, ज़ीबो, वेईफ़ांग... ट्रेन के सफर में अक्सर उसे नींद आ जाती थी लेकिन अभी वह बहुत ज़्यादा तनाव में था। वह जानता था कि उसकी यात्रा ऐसी थी जिसमें बहुत आसानी से कुछ भी गलत हो सकता था। उसने बेचैनी से अपने साथी मुसाफिरों को देखा। चीन में कोई नहीं जानता कि कौन किस पर नज़र रख रहा हो।

उसका मन भटकते हुए शिहेज़ी में अपने परिवार और घर की तरफ चला गया। उसके पिता व मां ने पार्टी की 'वन-चाइल्ड' नीति का पालन किया था। उन दिनों, सरकारी नियमों की अवहेलना करना आम नागरिकों के लिए अकल्पनीय था। उसके माता-पिता के लिए यह वरदान और अभिशाप दोनों साबित हुआ था। वरदान क्योंकि उनके सीमित संसाधन उनके तीन सदस्यों के परिवार का पेट पाल सकते थे, और अभिशाप इसलिए कि उनका बेटा अपनी बढ़ती उम्र के दौरान कमज़ोर और बीमार बना रहा और उसके माता-पिता अपने इकलौते बच्चे को खो देने के लगातार आतंक में रहे।

उसकी मां ने बेटे पर अपना सारा प्यार और स्नेह बरसा दिया था, लेकिन तब उसके पिता की मौत हो गई थी, और उन दोनों की देखभाल का जिम्मा अकेली मां पर आ गया था। मां और बेटे शिन्जियांग प्रांत के सबसे समृद्ध शहर उरुमक़ी में बसने की अनुमति पाने में कामयाब रहे, जहां मां को एक कपड़ा कारखाने में नौकरी मिल गई थी। मां ने अकेले अपने दम पर यह तय किया था बेटे को सबसे अच्छी शिक्षा मिले, अक्सर अपनी ज़रूरतों को पीछे रखती थी। उसके दिमाग और मां के अथक प्रयासों से उसे कॉलेज छात्रवृत्ति मिलनी सुनिश्चित हो गई। उसे उसकी मां से ज़्यादा प्यार करने वाला कोई नहीं था, और मां के साथ कुछ अनहोनी होने के ख्याल से ही उसे डर लगने लगता था।

पूरे सफर में वह चुपचाप बैठा रहा और किसी से बात नहीं की। शेंडोंग प्रांत में मछली पकड़ने के सबसे बड़े बंदरगाह यंताई पहुंचने पर, उसने यंताई साउथ स्टेशन के लिए एक टैक्सी ली। वहां से उसने वेईहाई बस स्टेशन के लिए एक लोकल ट्रेन पकड़ी, फिर ज़िफु टापू के लिए एक बस पकड़ी। ज़िफु कभी एक अलग टापू था, लेकिन कई सालों तक रेत के लगातार जमाव ने टापू तक पहुंचने के लिए एक चौड़ा कुदरती रास्ता बना दिया था। यह अब एक प्रायद्वीप ज़्यादा था। बस ने उसे लाओए माउंटेन के बेस पर पब्लिक रोड 26 के खत्म होने वाली जगह पर उतार दिया। यह रात के लिए आखरी बस थी, और जब वे अपने गंतव्य पर पहुंचे तो बस में वही इकलौता मुसाफिर था।

वह बोहाई सागर के सामने एक बेंच पर बैठ गया और सब्र के साथ इंतज़ार करने लगा। आसपास कोई नहीं था। द्वीप एक पर्यटक आकर्षण था जो क्लाम और एबालोन में रुचि रखने वाले मछली पकड़ने के उत्साही लोगों को यहां ले आता था, लेकिन साल के इस समय कोई पर्यटक नहीं था। उसने अपने कॉलर को ऊपर की तरफ खींचा और तेज़ हवा से खुद को बचाने के लिए अपने हाथों को अपनी भारी जैकेट की जेबों में दबा लिया। अजीब बात थी कि वह ज़िफु से इतनी महत्वपूर्ण यात्रा शुरू कर रहा था। चीन के पहले सम्राट और टेराकोटा सेना के निर्माता किन शी हुआंग ने व्यक्तिगत रूप से अमृत की खोज करते हुए तीन बार द्वीप की यात्रा की थी। अमृत ढूंढ़ने में नाकाम होने के बाद ही उन्होंने इसे खोजने के लिए दरबारी जादूगर जू फू को भेजा। बेशक, जू फू जापान के लिए रवाना हो गया और इस तरह सम्राट के क्रोध से बच पाया। उसे भी दूर जाने का मन कर रहा था। शायद कहीं दूसरी जगह, लेकिन वजह बिलकुल एक जैसी थी।

ग्यारह बजे और आधी रात के बीच के किसी समय उसने एक नाव से रोशनी की पांच बार चमक आती देखी। ये चमक एक तरह का संकेत था—छोटी-बड़ी-छोटी-बड़ी-छोटी, फिर थोड़ी देर के लिए चमक रुक गई, फिर संकेत दोहराया गया। वह आदमी खड़ा हुआ और गोदी की तरफ अपने रास्ते पर बढ़ते हुए अपनी टॉर्च जलाई।

कुछ मिनट बाद, मछली पकड़ने वाली नाव पास आ गई। यह एक टॉलर था जिसके पीछे की ओर एक सुपरस्ट्रक्चर था। दोनों तरफ आउटरिगर बूम थे जिनमें पकड़ी गई मछलियां रखी जा सकती थीं, साथ ही आठ समुद्री मील की रफ्तार को बनाए रखा जा सकता था। उस आदमी ने टॉलर के किनारे पेंट किए गए नाम एफवी हेसबिच पर गौर किया। यह उस नाम से मेल खाता था जो उसे बताया गया था। काले बैकग्राउंड पर अक्षर फीके पड़ गए थे और अंदरूनी भाग गंदा था, लेकिन उसे नाव जन्नत के एक हिस्से की तरह लग रही थी। जहाज़ की मिलिकियत यंताई फिशरीज के पास थी, जिसने अंतरराष्ट्रीय समुद्री हिस्से में मछली पकड़कर अच्छे-खासे पैसे जमा कर लिए थे।

जहाज का कप्तान, टेढ़े-मेढ़े दांतों वाला एक गंदा सा आदमी था, जिसने हाथ मिलाने के बाद एक डकार के साथ जहाज़ पर उसका स्वागत किया। पासवर्ड के आदान-प्रदान के बाद, वह संकरी सीढ़ी से होते हुए नीचे की तरफ दीवार से लगे एक बिस्तर की ओर आ गया, जिस पर वह तीस घंटे में 273 मील का सफर तय करने वाला था। उसकी मंज़िल थी दक्षिण कोरिया के सेओसान का पोर्ट डायसन। उसने अपनी घड़ी

को तरफ देखा। उसके पास समय बहुत कम था। उसकी गैरहाज़िरी सोमवार को सुबह तक नज़र में आएगी, उससे पहले नहीं।

78

संजीवीर्य हनुमान मंदिर के गर्भगृह के अंदर, हनुमान की मूर्ति अब अपनी जगह पर नहीं थी, जहाँ वह अमूमन होती थी। पुजारी को मजबूर किया गया था कि वह देवता को एक तरफ खिसका दे। फिर जो गुंडे राव और अनु को वहाँ लाए थे, उन्होंने मूर्ति जहाँ पहले रखी हुई थी, उसके ठीक नीचे गड्ढा खोदने के लिए पुजारी पर दबाव डाला था।

गर्भगृह के एक कोने में पड़े राव और अनु बेबसी से बस देखते रहे। रोहिप्रोल का असर खत्म हो चुका था; पिता और बेटी दोनों अब पूरी तरह से होश में थे और समझ रहे थे कि उनके आसपास क्या हो रहा था। हालांकि, वे चल नहीं सकते थे। उनके हाथ-पैर अभी भी बंधे हुए थे, और उनके अपहरणकर्ता उनके पास ही खड़े थे। एक ने पुजारी पर बंदूक तान रखी थी तो दूसरे ने राव और अनु पर।

अनु ने कभी भी खुद को इतना असहाय महसूस नहीं किया था। गुंडों में से एक ने जगह का पता बताने के लिए उसके पिता पर लात-घुंसे बरसाना शुरू कर दिया था, लेकिन यह बूढ़ा शख्स टस से मस नहीं हुआ था। आखिरकार अनु ही टूट गई थी। वो अपने पिता के साथ उन लोगों द्वारा की जा रही मारपीट को और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। 'जल्दी करो, पंडित!' अपहर्ताओं में से एक ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। 'हमारे पास दिन भर का समय नहीं है। तेज़ी से काम करो!' पुजारी, जिसे बहुत पसीना आ रहा था, डर और घबराहट में तेज़ी से खुदाई करने लगा। मूर्ति के नीचे की ज़मीन काफी सख्त थी, बहुत लंबे समय से उसे छुआ नहीं गया था। उस पर फावड़ा चलाना मुश्किल था। लेकिन आखिरकार उसकी कोशिश रंग लाई और फावड़ा किसी धातु की चीज़ से टकराया।

'अपने हाथों और घुटनों पर बैठ जाओ और इसे बाहर खींचो,' अपनी बंदूक को उसकी तरफ तानते हुए अपहरणकर्ता ने कहा। पुजारी ने अपने हाथों से धातु के संदूक को ढकने वाले मलबे को साफ़ किया। उसने दोनों ओर के अलंकृत हथ्ये को पकड़ा और एक ज़ोरदार झटके के साथ संदूक को बाहर निकाला।

यह एक कांसे का संदूक था जिस पर हरे-नीले रंग का पटीन (एक तरह की जंग) जमा हो चुका था। ढक्कन पर हिन्दू त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शिव की नक्काशी थी। ढक्कन को एक काफी पुरानी कुंडी से बंद किया गया था।

'इसे खोलो,' हट्टे-कट्टे गुंडे ने कहा। लेकिन लाख कोशिशों के बाद भी पुजारी कुंडी नहीं खोल पा रहा था। यह पूरी तरह से जाम हो चुकी थी। सालों तक ऐसे ही पड़े रहने की वजह से कुंडी के कलपुर्जे जाम हो गए थे।

और ज़्यादा इंतज़ार नहीं करते हुए उस गुंडे ने कुंडी की तरफ अपनी बंदूक तानी और गोली चला दी। कुंडी टूटकर गिर गई, धातु के टुकड़े गोली के धमाके के कारण छर्छरी की तरह उड़े थे। पुजारी विस्फोट के झटके से सहम गया। राव और अनु मायूसी से देख रहे थे।

वह आदमी झुका और एक सबल की मदद से संदूक का ढक्कन खोलने लगा। जब उसने देखा कि उसके अंदर क्या था तो खुशी से उसका मुंह खुला रह गया। बारीक कंकड़ों की सतह पर तीन कलश रखे हुए थे। कलशों के ऊपर बंधे हुए ताड़पत्र रखे थे। ताड़पत्र के सबसे ऊपर के पत्र पर ग्रन्थ लिपि में कुछ शब्द लिखे थे।

‘इसका क्या मतलब है?’ गुंडों में से एक ने पूछा।

राव चुप रहे। गुंडे ने उन पर वार करने के लिए अपनी बंदूक ऊपर उठाई, लेकिन राव पर हमला करने के पहले पुजारी बोल पड़ा।

उसने कहा, ‘ताकाई ताकैनार मर्म मज्जै कुट्टीकारिपु, उन्हें मारो नहीं।’

‘स्नायु कण्डरा परिवर्तन और मज्जा शुद्धिकरण,’ राव ने इसका अनुवाद किया। ‘चीनी भाषा में इसे यू-जिन शी-सुई के नाम से जाना जाता है। यह ह्यूमन री-इंजीनियरिंग पर सबसे अच्छा मैनुअल है। इसमें बताया गया है कि जड़ी-बूटियों, आहार और व्यायाम के मेल के जरिये शरीर को अलौकिक शक्ति कैसे दी जा सकती है।’

अपराधी खिलखिलाकर हंस पड़े। उन्हें ठीक वही मिला था, जिसकी उनके मालिक तलाश कर रहे थे। उन्होंने बंधे हुए ताड़-पत्तों को उठाया और कलशों पर एक नज़र डाली। वे अनछुए लग रहे थे।

अचानक बाहर से खून जमाने वाली चीख सुनाई दी। तेज़ आवाज़ में चीखने-चिल्लाने और गुराने की आवाज़। ऐसा लग रहा था कि भेड़ियों का समूह हमला कर रहा था, और इससे निपटने के लिए गुंडों ने अपनी बंदूकें कसकर पकड़ लीं।

लेकिन इसके बाद जो हमला हुआ वह उनकी सोच के उलट था। राव, अनु और पुजारी तो अकदम अवाक रह गए जब लगभग आदमियों के आकार वाले बंदरों का झुंड मंदिर में आ धमका। बंदूकधारियों ने उन पर बेतहाशा गोलीबारी की, लेकिन बंदर उनसे ज्यादा फुर्तीले थे। उन पर गोली चलाए जाने से वे और अधिक नाराज़ हो गए। वे बदला लेने की भावना से अपहरणकर्ताओं पर टूट पड़े।

उनमें से एक बंदर अलग सा ही दिख रहा था। वह लंबा, चौड़े कंधे वाला और असाधारण रूप से मांसल था। वह निःसंदेह उनमें सबसे अच्छा दिखने वाला और अच्छी कद-काठी वाला था और उसने अपने सिर के चारों ओर एक मुकुट की तरह की बेल लपेट रखी थी। वह अनु के सामने झुका और पत्थर के एक तेज़ चाकू से उसकी रस्सियों को काट दिया। इस बीच, उसकी मंडली अपहरणकर्ताओं पर हमला करने में व्यस्त थी। गर्भगृह के सीमित दायरे में उनकी आवाज़ कान के पर्दे फाड़ने वाली थी।

जैसे ही रस्सियां काटी गईं, अनु दबाकर रखे गए स्प्रिंग की तरह हवा में लहराते हुए उछली। उसने अपहर्ताओं में से एक के जबड़े पर अपने हाथ का ऐसा वार किया कि वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। दूसरे आदमी ने उस पर गोली चलाई, लेकिन वह गोली से बचने के लिए हवा में कूदी और सीधे उसके गले पर खुली उंगलियों का प्रहार किया। उसके गले से खून निकला और वह ज़मीन पर गिर गया, अनु की उंगलियों के चाकू जैसे वार से उसकी मौत हो गई थी। धातु के संदूक के साथ उसकी

बंदूक तेज़ आवाज़ के साथ टकराई।

अनु ने टखनों और कलाई के चारों ओर बंधी कई गांठों को जल्दी-जल्दी खोलकर अपने पिता को आज़ाद कर दिया। वह बंदरों के सरदार को धन्यवाद देने के लिए मुड़ी, लेकिन वहां कोई नहीं था। वे जितनी जल्दी आए थे उतनी ही जल्दी चले भी गए थे। अनु ने बाहर से उसे पुकारने की आवाज़ें सुनीं। यह पैम थी जो वीटीके द्वारा भेजे गए स्थानीय पुलिस बल के साथ थी।

‘क्या तुम दोनों ठीक हो?’ पैम ने पूछा। उसने उन तक जल्दी नहीं पहुंच पाने के लिए खुद को कोसा।

‘हमारी चिंता मत करो,’ अनु ने जवाब दिया। ‘उन बंदरों ने हमें बचाया। उन्होंने इन कलशों और पांडुलिपि को गलत हाथों में पड़ने से भी बचा लिया।’ उसने संदूक की ओर इशारा किया।

पैम ने वहां के माहौल का जायजा लिया: एक छोटा सा कमरा जिसमें साफ़तौर पर दिख रहा था कि मूर्ति को उसकी जगह से खिसकाया गया था, एक खुला हुआ गड्ढा, धातु का एक संदूक, एक मृत व्यक्ति जिसके गले से खून बह रहा था और दूसरा ज़मीन पर बेहोश पड़ा हुआ था। पैम ने पुलिस अधिकारियों में से एक को इशारा किया, जिसने तुरंत बेहोश आदमी को हथकड़ी लगाई और उसे बाहर खड़े एक पुलिस वाहन की तरफ खींचते हुए ले गया। ‘मुझे उससे बाद में पूछताछ करनी होगी,’ पैम ने कहा। ‘इससे पहले कि मैं हवालात में उसके पास जाऊँ, उसका मेडिकल चेकअप करवा लेना।’ दूसरे गुंडे की लाश को एक अन्य वाहन से भेज दिया गया, बाकी पुलिस वालों ने मंदिर की सुरक्षा घेरे में ले लिया।

ड्राइवर की मदद से पैम, राव और अनु संदूक को पुजारी के कमरे में ले गए। पैम ने अपने ड्राइवर और राव के बीच हुए गुप्त इशारे पर ध्यान नहीं दिया।

‘मुझे लगता है कि आपको मुझे सबकुछ बता देना चाहिए,’ पैम ने राव से धीरे से कहा। पुजारी कॉफी बनाने के लिए किचन में चला गया।

राव ने थके हुए अंदाज़ में सहमति में सिर हिलाया। ‘तो कहानी कुछ यूँ है,’ उन्होंने बोलना शुरू किया।

## 79

दो शाओलिन महारथी गुफा के पीछे के गुप्त कमरे को छोड़कर चाय समारोह चान चाडाओ के लिए एक बाहरी कक्ष में आ गए। भिक्षुओं द्वारा अक्सर परिवर्तन और जागृति के मार्ग के रूप में चाय बनाने और पीने जैसी आसान चीज़ का इस्तेमाल किया जाता था। समारोह लकड़ी, आग, पानी, चाय, धातु और पृथ्वी की परस्पर निर्भरता को दिखाता था, जिनमें एक तरह का संतुलन और सामंजस्य दिख रहा था। मानसिक और शारीरिक शक्ति ऐसे संतुलन का परिणाम थी। चाय पीते हुए बुजुर्ग गुरु युवा शाओलिन महारथी के सवालों के जवाब दे रहे थे, जो गुप्त कमरे में रखे हुए कलशों से संबंधित थे। ‘पांचवीं शताब्दी की शुरुआत में, फाह्यान नाम के एक बौद्ध भिक्षु ने रेशम मार्ग से होते

हुए भारत की यात्रा की। उन्होंने दो साल श्रीलंका में भी बिताए। इसके बाद वो अपने साथ दक्षिण भारत के पल्लव राजा द्वारा दिया गया कलश लेकर चीन लौट आए। उन्होंने इसे ब्रमाहाओ कहा।’

‘कलश शाओलिन तक कैसे पहुंचा?’ युवा शाओलिन महारथी ने पूछा।

‘फाह्यान ने इसे कुईन राजवंश के सम्राट को भेंट किया। सम्राट ने कलश को श्वेताश्व मंदिर को दान कर दिया, जो वही स्थान था जहां कई सदियों पहले दो भारतीय भिक्षुओं ने पहली बार बौद्ध धर्म का परिचय चीन के लोगों से करवाया था। कुछ साल बाद, कलश को सुरक्षित रखने के लिए श्वेताश्व मंदिर से शाओलिन में स्थानांतरित कर दिया गया।’

‘लेकिन वहां तो एक से अधिक कलश हैं। वे शाओलिन में कैसे आए?’

‘पांचवीं शताब्दी के अंत में, एक पल्लव राजकुमार ने भारत से सुमात्रा, जावा, बाली, मलेशिया और वियतनाम होते हुए समुद्री मार्ग से चीन तक की यात्रा की।’

‘वो कौन थे?’

‘शाओलिन के दस्तावेजों के अनुसार वो भारत में एक ब्राह्मण राजा के तीसरे बेटे थे। उनका नाम बोधिधर्मा था। वो एक योगी थे जो सिलंबम और कलारिपयट्ट के रूप में जानी जाने वाली भारतीय युद्ध कला में पारंगत थे।’ गुरु को विदेशी शब्दों को बोलने में थोड़ी दिक्कत हुई लेकिन उन्होंने इसे बखूबी कर लिया।

‘495 में इसकी स्थापना के लगभग तीस साल बाद बोधिधर्मा शाओलिन पहुंचे,’ उन्होंने अपनी बात पूरी की और अपनी चाय की चुस्की लेने के लिए थोड़ी देर रुके। ‘उन्होंने योगिक एकाग्रता को गहराई से समझने का दावा किया, जिसे अब जैन बौद्ध धर्म के रूप में जाना जाता है। दुर्भाग्य से मठाधीश, फेंग चांग ने उन्हें दाखिला देने से मना कर दिया। वहां से जाने के बजाय, बोधिधर्मा इस गुफा में चले गए—वही गुफा जिसमें हम अब हैं—और अगले नौ वर्षों तक ध्यान में बैठे रहे।’

‘फिर क्या हुआ?’

‘अंततः मठाधीश के पास उस हठी भिक्षु को दाखिला देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। यह पता चला कि अपने नौ साल के एकांतवास के दौरान, भिक्षु ने अपने अंगों, जोड़ों और रक्त परिसंचरण को कायम रखने के लिए एक विशेष शारीरिक दिनचर्या विकसित की थी। उनके अभ्यास में सिलंबम, कलारिपयट्ट, योग और श्वास व मन पर नियंत्रण शामिल था। एक बार जब उन्हें शाओलिन भ्रातृसंघ में अपना लिया गया, तो ये अभ्यास नियमित हो गए और कुंग फू के रूप में विकसित हो गए, जिसके लिए शाओलिन अंततः मशहूर हो गया।’

‘लेकिन इससे यह नहीं पता चलता कि कलश तीन कैसे हो गए,’ युवा शाओलिन महारथी ने कहा।

‘बोधिधर्मा दक्षिण भारत से कलश लाए थे। इसे शिपो कहा जाता था। शाओलिन में अब दो कलश, ब्रमाहाओ और शिपो थे। इसके अलावा, बोधिधर्मा ने अपनी मूल भाषा तमिल में स्नायु कण्डरा परिवर्तन और मज्जा शुद्धिकरण नामक व्यायाम पर एक ग्रंथ

लिखा। इसका बाद में मेंडारेन में अनुवाद किया गया और इसे यू-जेन शी-सुइ कहा गया। तुम इसे अंदर रखे गए कलशों के पास देख सकते हो। बोधिधर्मा ने खुद को और मंदिर को बर्बर लोगों के हमलों से बचाने के लिए शाओलिन मंदिर में भिक्षुओं को प्रशिक्षित करने का काम अपने हाथ में ले लिया। इस प्रकार, वो अनजाने में शाओलिन कुंग फू और शाओलिन के योद्धा भिक्षुओं के संप्रदाय के संस्थापक बन गए।

‘उन दोनों कलशों के अंदर क्या था?’ युवा शाओलिन महारथी ने पूछा। वे बुज़ांग के विशेष बलों के लिए नियमित रूप से सामग्री निकालते रहे थे, लेकिन अभी भी यह नहीं जानते थे कि वे किस वस्तु से बने थे।

‘सेवन करने वाले को शक्ति प्रदान करने के लिए दोनों औषधियों को एक साथ मिलाना होता है,’ बुजुर्ग गुरु ने जवाब दिया। ‘यह बोधिधर्मा द्वारा लिखित नियमावली में दिनचर्या के निर्दिष्ट मानक के अतिरिक्त था।’

‘बोधिधर्म भारत के किस हिस्से से थे?’ युवा शाओलिन महारथी ने पूछा।

बुजुर्ग गुरु ने उसके सामने ज़मीन पर अपनी उंगलियों से दो अक्षर बनाए।

香  
至

‘इसका क्या मतलब है?’ बुजुर्ग गुरु ने पूछा।

‘कांग-ज़ी,’ युवा शाओलिन महारथी ने जवाब दिया।

‘और तुम जानते हो कि कांग-ज़ी का क्या मतलब है?’ इस प्रश्न के उत्तर के लिए उन्होंने इंतज़ार नहीं किया। ‘सुगंध की भूमि।’

‘वह कहां है?’

‘दक्षिण भारत में मंदिरों का एक शहर है। मंदिर के फूल और हवन सामग्रियों की प्रचुरता के कारण इसे सुगंध की भूमि कहा जाता है। इसका असली नाम कांचीपुरम है। संक्षेप में कांची या कांग-ज़ी। यहीं से बोधिधर्मा आए थे।’

‘क्या हमें इसकी पक्की जानकारी है?’

‘बोधिधर्मा से 300 साल पहले, एक चीनी राजकुमार को राजा कनिष्क ने पकड़ लिया था और आज के अफगानिस्तान के कपिसी शहर में एक मठ में रखा था। वहां उसे कांग-ज़ी के भिक्षुओं की विशेष शक्तियों को देखने का मौका मिला। योद्धा भिक्षुओं ने उसे “कांग-ज़ी” लिखी एक तलवार भी भेंट की। जब राजकुमार घर लौटा, तो उसने कपिसी भिक्षुओं के लिए खज़ाने से भरी एक तिजोरी भेजी, जिन्होंने बंदी रहने के दौरान उसकी अच्छी देखभाल की थी। तिजोरी पर उसने वह तलवार रख दी जो योद्धा भिक्षुओं ने उसे भेंट की थी। वह खुद वहां जाने में असमर्थ था, लेकिन जानता था कि भविष्य में कोई और चीनी यात्री ऐसा कर सकता है।’

‘बोधिधर्मा का अंत में क्या हुआ?’

‘जब उनको मृत्यु हुई, तो माना जाता है कि बोधेधमा को शाओलेन मंदिर के पीछे एक पहाड़ी पर दफनाया गया था। उन्होंने निर्देश दिए थे कि हम भिक्षुओं को जड़ी-बूटियों वाली औषधि का इस्तेमाल तब तक नहीं करना चाहिए, जब तक बाहरी हमले के मामले में अचानक बहुत अधिक शक्ति की आवश्यकता नहीं हो। इसका नियमित इस्तेमाल करने वालों को इसके घातक परिणाम भुगतने पड़ेंगे। और अब हम देख सकते हैं कि इन औषधियों के नियमित इस्तेमाल ने उन लोगों के साथ क्या किया है जो हमसे प्रशिक्षण ले रहे हैं।’

‘तीसरे कलश की क्या कहानी है? जो टूटा हुआ है?’

‘चौदहवीं शताब्दी में लाल पगड़ी विद्रोह के दौरान वह टूट गया था। यह एक ऐसा विद्रोह था जिसने सत्तारूढ़ युआन राजवंश को निशाना बनाया। शाओलेन पर हमला किया गया और कलश की सामग्री बर्बाद हो गई थी। हम कभी इसकी भरपाई नहीं कर पाए।’

‘लेकिन यह कहां से आया?’ युवक ने अपनी पूछताछ जारी रखते हुए सवाल किया।  
बुजुर्ग भिक्षु मुस्कुराए। ‘वह एक अलग कहानी है।’

## 80

मैं येनमौना नदी के पीछे-पीछे मोटुलो तक गया, जो मुख्य रूप से ब्राह्मणों का शहर और सांस्कृतिक केंद्र था। यहां 2,000 बौद्ध भिक्षु ब्राह्मणों के साथ रहते थे। यह शहर हिन्दु के लोगों के देव भगवान कृष्ण का जन्मस्थान माना जाता था। बौद्ध धर्म को मानने वालों की संख्या में गिरावट आ रही थी और पुरातन कृष्ण पूजा फिर से जड़ें जमा रही थी।

मोटुलो से कुछ ही दूरी पर एक बड़ा सूखा हुआ तालाब था जिसके बगल में एक स्तूप था। स्तूप उस स्थान पर था, जहां एक बंदर ने बुद्ध को थोड़ा शहद दिया था। बुद्ध ने झील में शहद डाला था और उसका पानी मीठा हो गया था। बंदर खुश हुआ, लेकिन अपनी मस्ती में वह पानी में गिर गया और मर गया। अपने अच्छे कर्मों के कारण, उसका मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म हुआ। यह बंदरों और मनुष्यों के बीच आंतरिक जुड़ाव का एक उदाहरण है।

मोटुलो से, मैं अब फू-शुई की ओर बढ़ चला। यह हिन्दु की सबसे शक्तिशाली नदियों में से एक थी और स्थानीय लोग इसे देवी के रूप में पूजते थे जिन्हें वे गंगा कहते थे। उसके पानी का रंग अलग स्थान पर अलग दिखता था और उसमें काफी बड़ी-बड़ी लहरें उठती थीं। नदी में कई अद्भुत जीव थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी को घायल नहीं किया। इसके पानी का स्वाद मीठा था, जो सुखद अहसास कराता था। इसीलिए इसे ‘फू-शुई’ या ‘खुशी का पानी’ कहा जाता था। इसमें नहाने से पाप धुल सकते थे।

मेरा अगला पड़ाव कानोकुशे<sup>92</sup> में था। यह एक अत्यंत समृद्ध शहर था और दुनियाभर के बाजारों में से सबसे अच्छे सामानों के व्यापार के लिए जाना जाता था। यहां अच्छी खासी संपत्ति वाले परिवार रहते थे और इस शहर में कृत्रिम झीलें, बगीचे, मंडप, ऊंची

दीवारें और शानदार हवेलियां थीं। कानोकुशे चांग'आन से कम नहीं था। यह स्पष्ट था कि शासक, सम्राट हर्ष, देवों और बौद्ध धर्म को समान महत्व देते थे, और कई मंदिर और मठ यहां-वहां फैले हुए थे। वहां सौ मठ और 200 से अधिक देव मंदिर थे। जब भी वो अपनी राजधानी में होते थे तो प्रतिदिन हजारों बौद्ध भिक्षुओं और ब्राह्मण पुजारियों को भोजन कराते थे। उन्होंने सैकड़ों विश्रामगृहों का निर्माण कराया था जो यात्रियों के लिए पूरी तरह से निःशुल्क थे। वो नालंदा के सबसे बड़े दानदाताओं में से एक थे।

राजा एक धर्मात्मा थे और उन्होंने अपने राज्य में जानवरों का वध बंद कर दिया था। मैं उनसे नहीं मिल सका क्योंकि वो एक सैन्य अभियान पर थे। स्वाभाविक था कि उन्हें मनुष्यों का वध स्वीकार्य था।

हर्ष सिंहासन के आधिकारिक उत्तराधिकारी नहीं थे। एक शत्रु राजा ने उनके बड़े भाई की हत्या कर दी और उनकी बहन को बंदी बना लिया था। अपनी बहन को मुक्त कराने और अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए जो अभियान शुरू हुआ था, वह पूरे उत्तर हिन्दु पर विजय में बदल गया था।

कानोकुशे में कई महीने बिताने के बाद, मैंने बुद्ध परिपथ के लिए निकलने का फैसला किया। ये बुद्ध के जीवन से जुड़े चार महान गंतव्य थे: बुद्ध का जन्मस्थान लुंबिनीवन<sup>93</sup>; उनकी ज्ञान प्राप्ति का स्थान उरूबेला<sup>94</sup>; इसिपतना<sup>95</sup>, जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया, और कुसावती<sup>96</sup> जहां उनकी मृत्यु हुई। अस्सी लोगों का मेरा दल पुरातन राजा राम के सूर्य राजवंश की राजधानी अयुते<sup>97</sup> से एक नाव पर सवार होकर शक्तिशाली फू-शुई के मार्ग से रवाना हुआ, जो पीली नदी से कम अविश्वसनीय नहीं थी। लेकिन इससे पहले कि मैं पहले स्थान पर पहुंच पाता, हमारी नाव को दस समुद्री डाकू नौकाओं के एक बेड़े ने पकड़ लिया। उन्होंने हमें घेर लिया और हमारे जहाज पर चढ़ गए। मेरे हाथ-पैर बांध दिए गए और मुझे एक सुनसान किनारे पर ले जाया गया।

समुद्री डाकूओं के सरदार ने अपने आदमियों को मुझे मारने-पीटने की अनुमति नहीं दी। उसने मुझे एक आदर्श मनुष्य के तौर पर देखा, जिसकी देवी दुर्गा को बलि दी जा सकती थी, जिनके बारे में उसका मानना था कि उन्हें रक्त से प्रसन्न किया जाना चाहिए। उन्होंने मुझे लकड़ी के एक बड़े टुकड़े के साथ बांध दिया और अनुष्ठानिक बलि के लिए तैयार किया। तभी अचानक तूफान आ गया। समुद्री डाकूओं को डर लगा कि देवी दुर्गा मेरी बलि देने की योजना बनाने के लिए उन पर अपना गुस्सा दिखा रही थीं। वे मुझे मारने के बजाय मेरे पैरों पर गिर पड़े। उन्होंने मुझे और मेरे आदमियों को मुक्त कर दिया, हमारे सामान लौटा दिए और सुधरने का वादा किया। बुद्ध ने मुझे एक बार फिर से बचा लिया था। मैं तो गिनती भी भूल चुका था कि मैत्रेय ने कितनी बार हस्तक्षेप किया था। इस बार उनकी कृपा से मैं पोलोयाका<sup>98</sup> पहुंच गया।

पोलोयाका में बहुत कम बौद्ध मठ थे। हर जगह सैकड़ों देव मंदिर थे। मैंने पूर्वी तट का दौरा किया, जो सफेद रेत से ढका हुआ था। इस क्षेत्र को उदारता की भव्य रंगभूमि के रूप में जाना जाता था और यहीं से सम्राट समय-समय पर अपने खजाने से धन-संपत्ति

का दान करते थे।

पोलोयाका से किआओशांगमी<sup>99</sup> का सफर मैंने घने जंगलों से होते हुए किया जहां जंगली हाथियों का निवास था। यहां हीनयान मठ खंडहर हो गए थे, लेकिन देव मंदिर फल-फूल रहे थे। लोग उच्च शिक्षित एवं सुसंस्कृत लग रहे थे।

किआओशांगमी से निकलकर मैं श्रावस्ती<sup>100</sup> पहुंचा, जो बुद्ध के समय में राजा प्रसेनजित की राजधानी हुआ करती थी। मैंने अंगुलिमाल स्तूप देखा, जिसे उस खूंखार आदमी ने बनवाया था, जिसने कई लोगों की हत्या की थी और उनमें से हरेक के शव की एक उंगली काटकर उसे गले में हार की तरह पिरोया था। जब अंगुलिमाल बुद्ध की मां को मारने वाला था, तो बुद्ध अपनी मां की जगह गए और अंत में अंगुलिमाल को पश्चाताप करने और भिक्षु बनने के लिए मनाने में कामयाब हो गए।

फिर मैंने बुद्ध से जुड़े सभी स्थलों का दौरा किया। मैं लुंबिनीवन के बगीचों में घूमा, जहां उनका जन्म हुआ था; मैं कपिलवस्तु<sup>101</sup> में उस स्थान पर गया जहां युवा राजकुमार ने चार संकेत देखे थे—बूढ़ा आदमी, बीमार आदमी, शव और साधु—जिन्होंने उसे अपने आध्यात्मिक पथ की तरफ जाने की राह दिखाई थी; मैं कुसावती के चार पेड़ों के नीचे बैठा, जहां बुद्ध ने अंतिम सांस ली थी; और मैंने इसिपतना के मृग उद्यान में ध्यान लगाया जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था।

उरुबेला काशी<sup>102</sup> से बमुष्किल पांच मील दूर था, लेकिन दोनों स्थानों में अंतर बहुत बड़ा था। काशी प्रकाश का शहर था और यहां हजारों देव मंदिर थे। विनाश के यिन्दु देवता की सौ फुट की एक विशाल मूर्ति शहर में दूर से दिखती थी। उनकी पूजा नग्न, राख से सने हुए संतों द्वारा की जाती थी, जिन्होंने सबसे कठोर तपस्या की थी। दूसरी ओर, इसिपतना शांतिपूर्ण, हलचल रहित और साधारण था। मैं वहां बुद्ध की उपस्थिति महसूस कर सकता था।

मैंने वैशाली<sup>103</sup> की यात्रा की, जहां बुद्ध के एक अनुयायी विमलकीर्ति ने ज्ञान के बोधिसत्व कहे जाने वाले मंजूश्री को बहस में हराया था; फिर पाटलिपुत्र<sup>104</sup> गया जो अशोक के राज्य की राजधानी थी। फाह्यान द्वारा इसका शानदार वर्णन किया गया था, लेकिन उनमें से कुछ भी अब नहीं बचा था।

जब मैं अंततः उरुबेला पहुंचा, तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं उसी भूमि पर हूं जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। मैंने पांच तपस्वियों के स्तूप का दौरा किया, वे ऋषि जिनका मानना था कि सत्य का एकमात्र मार्ग भूख से मरना था। मैंने निरंजना<sup>105</sup> नदी के तट पर प्रार्थना की, जहां बुद्ध ने स्नान किया था। मैं उस स्थान पर चिंतन करते हुए रुका जहां दो युवतियों ने बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति से पहले एक कटोरा उबला दूध दिया था। मैंने महाबोधि मंदिर की परिक्रमा की, जहां लोग दीपक-धूप जला रहे थे और फूल चढ़ा रहे थे। मैं उस बोधि वृक्ष के सामने झुक गया जिसके नीचे बुद्ध को चार महान सत्य का पता चला था और वे मोक्ष के आष्टांगिक मार्ग पर पहुंचे थे।

मैं भावुक हो गया और पेड़ के सामने जमीन पर गिर पड़ा। मेरे आंसू दो बिल्कुल अलग

कारणों से आए थे। मैं अब उसी स्थान पर था जहां बुद्ध को ज्ञान का प्रकाश मिला था। लेकिन मुझे इस बात का गहरा अफ़सोस हो रहा था कि मैं बुद्ध के समय में नहीं, बल्कि उस समय यिन्दु आया जब बौद्ध धर्म पहले से ही पतनशील था।

## 81

‘वे बंदर जैसे जीव कौन से थे?’ अनु ने उत्साहित होते हुए पूछा।

राव मुस्कराए लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। ‘सब्र रखो, बेटी,’ उन्होंने धीरे से पैसठ साल की अपनी बेटी को डांटा।

‘मैं पल्लव राजाओं का प्रत्यक्ष वंशज हूं जिन्होंने तीसरी से नौवीं शताब्दी तक अधिकांश दक्षिण भारत पर शासन किया था,’ उन्होंने पैम की ओर देखते हुए कहा। ‘तुम्हें यह पता था, है ना? इसलिए तुम जानती थी कि हाथ में पल्लव राजवंश का सिक्का लेकर मेरे सामने झुकने से मैं तुम पर भरोसा कर लूंगा।’

पैम ने संकोच के साथ हामी भरी। ‘देव ने मुझे आपके पल्लव संबंध के बारे में बताया था और मुझे आपकी मदद की ज़रूरत थी। मैंने यह भी सोचा कि आपकी सुरक्षा के लिए मुझे सिक्के के माध्यम से आप पर नज़र रखनी चाहिए।’

‘मैं समझता हूं। तुमने अपना काम अच्छे से किया। लेकिन अब मैं तुम्हें समझाता हूं कि कांची के पल्लव कलश चीनियों के पास कैसे पहुंच गए और आधुनिक युद्ध में उनका इस्तेमाल कैसे किया जा रहा है।

‘हम जानते हैं कि बमाहाओ नामक पहला कलश पल्लव राजा स्कंदवर्मन तृतीय ने चीनी यात्री फाह्यान को भेंट किया था। साठ साल बाद, दूसरा कलश बोधिधर्मा, जो स्वयं एक पल्लव राजकुमार थे, चीन ले गए। बोधिधर्मा ने नौ साल बाद शाओलिन में प्रवेश पाने के लिए शुल्क के रूप में कलश दिया था। इस कलश को शिपो कहा जाता था।’

‘लेकिन जिस संदूक को हमने अभी खोला है उसमें तीन कलश हैं,’ पैम ने कहा।

राव ने उसे प्यार से देखा। ‘एक और महान यात्री था। जैसा कि आप जानते हैं, उसका नाम ह्वेनसांग था। उसकी भारत यात्रा का घोषित उद्देश्य बुद्ध की भूमि की यात्रा करना और उन पांडुलिपियों को वापस ले जाना था जो चीनी बौद्ध धर्म में घुस चुकी गलत व्याख्याओं को स्पष्ट कर सकें। लेकिन उसका गुप्त उद्देश्य कांची की यात्रा करना और तीसरे कलश पिशिनू को वापस ले जाना था।’

‘और क्या वह सफल हुआ?’

‘फाह्यान के पूरे 233 साल बाद और बोधिधर्मा के 170 साल बाद, ह्वेनसांग वर्ष 645 में चीन लौटा। मित्रता के भाव के साथ पल्लव राजा नरसिम्हन प्रथम ने उसे एक जड़ी-बूटी औषधि उपहार में दी, जो चीनी सम्राट ताइज़ोंग को उनके राज्य को खतरे में डालने वाले बर्बर आक्रमणकारियों को हराने में मदद करने वाली थी। इस औषधि से युक्त कलश उन अलग-अलग खज़ानों में से एक था जिसे ह्वेनसांग चीन वापस ले गया था। ह्वेनसांग की बंदर के साथ यात्रा के बारे में बाद की कहानियों और मिथकों, जैसे जर्नी टू

द वेस्ट, में इस तथ्य की पुष्टि की गई कि वह “वानर शक्ति” से संबंधित था। आखिरकार, वह तीसरा कलश वापस ले आया था, जिसकी सामग्री अब पहले दो कलशों के साथ मिलाकर इस्तेमाल की जा सकती थी।

‘लेकिन इन कलशों में आखिर क्या विशेष सामग्री है?’ पैम ने पूछा। ‘और अगर वो चीनियों के पास है, तो फिर यहां इस मंदिर में ये सामग्री किस तरह से छिपी है?’

‘तुम्हारे सवाल के जवाब के लिए हमें लगभग 7,000 साल पहले रामायण के समय में जाना होगा। हम जानते हैं कि राम और रावण की सेना के बीच अंतिम युद्ध में, राम के भाई लक्ष्मण गंभीर रूप से घायल हो गए थे। वैद्य सुषेण ने हनुमान से कहा कि वे हिमालय की द्रोणगिरि पर्वतमाला पर जाएं और कई जड़ी-बूटियां लेकर आएँ जिनकी मदद से लक्ष्मण को स्वस्थ किया जा सके।’

‘हां, हम अपने माता-पिता और दादा-दादी से उस मिथक को सुनते हुए बड़े हुए हैं।’ राव ने थोड़े तीखे लहजे में कहा, ‘यह कोई मिथक नहीं है। उत्तराखंड के हिमालयी क्षेत्र के वर्तमान द्रोणगिरि गांव में एक पहाड़ है जिसकी स्थानीय लोग पूजा करते हैं। यह गांव लगभग 12,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और वहां तक पहुंचना मुश्किल है। आज भी ग्रामीणों ने हनुमान को उनके पहाड़ का रूप बिगाड़ने के लिए माफ़ नहीं किया है।’

‘क्या यह विज्ञान या पौराणिक कथाओं की क्लास है?’ पैम ने चुटीलेपन से पूछा।

राव ने उसकी बात को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा, ‘तीन सबसे महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियां विशल्यकरणी, संधानकरणी और संजीवनी थीं और हरेक की ज़रूरत अलग-अलग उद्देश्य के लिए थी। तीनों जड़ी-बूटियों में एक साथ ब्रह्मा, शिव और विष्णु की हिंदू त्रिदेवों की शक्ति थी। सृजनकर्ता, संहारक और संरक्षक।

‘फाह्यान की औषधि विशल्यकरणी, यूरेटोरियम अयापना से ली गई थी। यह मांसपेशियों की ताकत बढ़ाने और अस्थि मज्जा बनाने में सक्षम है, इस प्रकार यह निर्माता औषधि है। चीनियों ने इसे ब्रह्मा के स्थान पर ब्रह्माओ कहा।

‘बोधिधर्मा की औषधि संधानकरणी, सोनेरिला टिननेवेलिएन्सिस से ली गई थी। इसमें किसी दुश्मन को मारने के लिए आवश्यक शक्ति पैदा करने की क्षमता है; इस प्रकार, यह विध्वंसक औषधि है। चीनियों ने इसे शिव के बजाय शिपो कहा।’

‘हैनसांग की औषधि किसके लिए थी?’ पैम ने सवाल दागा।

‘क्या तुमने नेसस प्रभाव के बारे में सुना है?’

पैम ने अपने दिमाग पर काफी ज़ोर लगाया। उसने ये शब्द पहले भी सुने थे। और फिर उसे याद आया। पापा ने अपनी डायरी में जो नोट लिखे थे! एक नोट नेसस प्रभाव के बारे में था।

उसने राव की ओर सिर हिलाकर जवाब दिया कि उसने ये शब्द पहले भी सुने थे।

‘यह नाम ग्रीक पौराणिक कथाओं से आया है,’ राव ने कहा। ‘हेराक्लीज़ ने दुर्भावना से भरे हुए अधर्मी नेसस को मारने के लिए हाइड्रा के ज़हर वाला तीर चलाया था और उसे मारने में सफल रहा था। लेकिन नेसस का संक्रमित रक्त अंततः उसकी पत्नी डियानिरा

के माध्यम से हेराक्लीज़ तक पहुंच गया और इसने उसे भी मार डाला। नेसस प्रभाव दवाओं के उस ज़हर को बताता है, जो दवाएं आमतौर पर मदद करती हैं।’

‘मुझे इसके बारे में पता है,’ पैम ने कहा। ‘लेकिन इस मामले में नेसस प्रभाव कैसे काम करता है?’

‘जब कोई बमाहाओ और शिपो को मिलाता है, तो उसे न केवल बहुत ज़्यादा मज़बूती और ताक़त मिलती है, बल्कि ज़हर भी मिलता है,’ राव ने कहा। ‘यह मिश्रण का साइड इफ़ेक्ट होता है और इससे बचने का इकलौता तरीका है संजीवनी से प्राप्त तीसरी औषधि। सेलाजिनेला ब्रायोपेटेरिस, “संरक्षक” औषधि। हेक्सोज़ और प्रोटीन की ऊंची मात्रा के कारण यह स्तनधारियों में ऑक्सीडेटिव तनाव से अट्ठत्तर प्रतिशत तक लड़ सकता है।’

पैम को अपने पिता के नोट्स याद आये। सेलाजिनेला ब्रायोपेटेरिस का उल्लेख किया गया था। साथ ही ऑक्सीडेटिव तनाव, हेक्सोज़ और प्रोटीन भी।

‘चीनी इसे विष्णु के बजाय पिशिनू कहते थे,’ राव ने आगे कहा। ‘यह पिशिनू ही था जिसमें बमाहाओ और शिपो द्वारा उत्पादित विषाक्त पदार्थों से लड़ने की क्षमता थी, जिससे इनका इस्तेमाल करने वाले की ज़िंदगी बच सकती थी।’

‘चीनी इन तीन जड़ी-बूटियों को पाने में दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं?’ अनु ने पूछा। वह अब तक अपने पिता और पैम के बीच की बातचीत को धैर्यपूर्वक सुन रही थी।

‘तुम्हें यह याद रखना होगा कि इन तीनों जड़ी-बूटियों का उल्लेख न केवल रामायण में बल्कि महाभारत में भी किया गया है। महाभारत में हमें बताया गया है कि असुर गुरु शुक्राचार्य ने इनका इस्तेमाल उन असुरों को दोबारा जीवन देने के लिए किया था जिन्हें देवताओं ने मार डाला था। इन जड़ी-बूटियों के संयोजन ने पांडवों के पूर्वज ययाति को भी उनके शरीर की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को उलटने में मदद की थी। जैसा कि चीनी सम्राट लंबे समय से अमरता पाने के लिए अमृत की तलाश में थे। उन्होंने इसे पाने के लिए कई अन्वेषकों को भेजा था।’

‘तीन औषधियों ने मिलकर क्या किया?’ पैम ने पूछा। ‘इलाज? अलौकिक शक्ति? या अमरत्व? मेरा मतलब है, लक्ष्मण अमर तो नहीं थे।’

‘एक बार इस्तेमाल किया जाए तो, बमाहाओ-शिपो-पिशिनू का मिश्रण एक उपचारात्मक दवा है। लक्ष्मण के लिए इसने यही काम किया था। संयमित ढंग से इस्तेमाल करने और थोड़े समय में उचित अभ्यास के साथ, यह मिश्रण हनुमान जैसी अविश्वसनीय ताक़त देने की क्षमता रखता है। लंबे समय तक छोटी-छोटी खुराक में इस्तेमाल करने से यह उम्र बढ़ने को रोक सकता है, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि यह अमरता दे सकता है। लेकिन मध्यम अवधि और लंबे समय का इस्तेमाल वाकई में रक्त गुणसूत्रों में परिवर्तन ला सकता है।’

पैम ने सोचा, यही कारण है कि टूनिकेट के खून के नमूने में सैंतालीस गुणसूत्र थे—मानव के छियालीस और रीसस के अड़तालीस गुणसूत्रों के बिलकुल बीचों-बीच।

राव ने तुरंत पुजारी से कागज़ का एक टुकड़ा लेकर कुछ लिखा।

उपचारात्मक > उच्च खुराक > केवल एक बार

शक्ति > मध्यम खुराक > एक महीने तक प्रतिदिन एक बार

दीर्घायु > लंबे समय तक छोटी खुराक > कई सालों तक प्रतिदिन एक बार

‘यकीन करना मुश्किल है। लेकिन इसका उस वानर जनजाति से क्या संबंध है जिसने अभी-अभी आपको बचाया है?’ पैम ने पूछा।

‘जब हनुमान जड़ी-बूटियां लेकर लंका जा रहे थे, तो अनजाने में उनमें से कुछ जड़ी-बूटियां कांची और सत्यमंगलम के बीच घने जंगल में गिर गई थीं। आज जिन प्राणियों ने हमें बचाया, वे उस जनजाति के हैं जो उन जड़ी-बूटियों का सेवन करती हैं। एक खास मौसम होता है जब जड़ी-बूटियां उगती हैं और उनका इस्तेमाल साल के उस समय तक ही सीमित होता है। लेकिन यह उन लोगों को रीसस जैसी शक्ति और फुर्ती देने के लिए पर्याप्त है जो उन्हें खाते हैं।’

‘आपको यह कैसे पता?’ पैम ने पूछा।

‘तुम्हारे पिता की वजह से।’

## 82

‘मेरे पिता?’ पैम ने पूछा। ‘वो सेना में कर्नल थे! वो इन सबमें कैसे उलझ गए?’

राव ने उसके सवाल का जवाब अपने एक सवाल से दिया। ‘क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें कभी कोई अजीब गाना सुनाया है? जिसका कोई मतलब समझ नहीं आता था?’

‘हां, अक्सर,’ पैम ने कहा, उसे आश्चर्य हो रहा था कि राव को उस निजी मज़ाक के बारे में कैसे पता चला जो वो अपने पिता के साथ किया करती थी।

‘क्या यह बा-मा-को-की-जू-का-लो जैसा कुछ था?’

‘हां, हां!’ पैम ने उत्साह से कहा। ‘मैं हमेशा सोचती थी कि उन्होंने इसे बनाया था!’

‘उन्होंने इसे नहीं बनाया और यह बेमतलब भी नहीं था। तुम्हें थोड़ा पीछे ले चलता हूं। तुम्हारे पिता कर्नल किशन खुराना भारतीय सेना के हीरो थे। श्रीलंका में नियुक्त होने से कुछ समय पहले, उन्होंने दक्षिण भारत के जंगलों में उन्नत युद्ध प्रशिक्षण लिया था। सेना को यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत थी कि उनके जवान लिट्टे के क्रूर गुरिल्ला जंगल युद्ध के लिए तैयार रहें।’

‘हां, मुझे याद है कि मेरी मां ने मुझे मेरे पिता के कठिन प्रशिक्षण के बारे में बताया था। मैं इसके बारे में सुनकर ही डर गई थी।’

‘एक खास मौके पर, तुम्हारे पिता जंगल में खो गए थे। वो करीब एक हफ्ते तक लापता रहे थे। तुम्हें क्या लगता है वो उस समय कहां थे?’

‘मुझे नहीं पता,’ पैम ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘मुझे और मेरी मां को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अगर उन्हें जानकारी थी भी तो उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया।’

‘तुम्हारे पिता एक प्राचीन जनजाति के संपर्क में आ गए थे जो कांची और सत्यमंगलम के बीच घने जंगलों में रहती थी। उस जनजाति का मानव सभ्यता से कोई संपर्क नहीं था और पूर्व-नवपाषाण काल से ही वे अलग-थलग थे। आज तक, जनजाति की भाषा

बेहद आसान है जिसमें केवल सात व्यंजन और तीन स्वर हैं। एक प्रार्थना है जिसे वे नियमित रूप से पढ़ते हैं; यही वे शब्द हैं जो तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए गाते थे।’

‘पिताजी आपको यह सब क्यों बताएंगे?’ पैम ने संदेह जताते हुए पूछा।

‘हम दोनों को कविता का बहुत शौक था,’ राव ने कहा। ‘एक क्लब था जहां हम एक-दूसरे की रचनाओं का आनंद लेने के लिए नियमित रूप से मिलते थे। तुम्हारे पिता और मेरे अलावा एक तीसरा व्यक्ति भी हमारे साथ था, जो एक डॉक्टर था और हम दोनों का ही मित्र था। दरअसल, तुम्हारे पिता और मैं एक-दूसरे को उन्हीं की वजह से जान पाए थे।’

‘बातचीत के दौरान एक बार हमें पता चला कि पल्लव ग्रंथों में उल्लिखित जड़ी-बूटियां और जनजाति द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली जड़ी-बूटियां एक ही थीं।’

पैम उन सभी बातों को मन में बिठाने की कोशिश कर रही थी जो राव ने अभी कही थीं। ‘मेरे पिता ने आपको जनजाति के बारे में और क्या बताया?’ उसने पूछा।

‘वो संभवतः एकमात्र व्यक्ति थे जिसे जनजाति ने अपने गांव में आने की अनुमति दी थी। तुम्हारे पिता में कोई खास बात थी। जनजाति का मुखिया, जिसे सभी इकोअलिकुम कहकर पुकारते थे, और तुम्हारे पिता एक-दूसरे के दोस्त बन गए थे।’

‘इकोअलिकुम?’

‘तमिल शब्द इको का मतलब होता है अहंकार,’ राव ने बताया। ‘अलिकुम का अर्थ है विध्वंसक। तो इकोअलिकुम “अहंकार का नाश करने वाला” है। अहंकार का नाश करने वाला और कौन है, पैम?’

पैम को कोई अंदाज़ा नहीं था। उसने न जानने वाले अंदाज़ में कंधे उचकाए।

‘हनुमान शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। हन मतलब विनाशक और मान का मतलब अहंकार। इस प्रकार हनुमान अहंकार का नाश करने वाले भी हैं। इकोअलिकुम का नाम हनुमान के नाम पर रखा गया होगा।’

‘क्यों? हनुमान तो लक्ष्मण के लिए सिर्फ जड़ी-बूटियां लेकर आए थे। लक्ष्मण की शक्ति उन बूटियों से नहीं आई थी।’

‘क्या तुमने रसविनोद पढ़ा है, जो मैंने तुम्हें पढ़ने के लिए कहा था?’ राव ने पूछा।

‘अभी तक नहीं। मेरे पास समय नहीं था। क्या है वह?’

‘यह उड़िया कवि दिनकृष्णदास की सत्रहवीं शताब्दी की कृति है। यह हनुमान के गुणों और उस स्रोत के बारे में बात करती है जहां से वे गुण प्राप्त हुए थे। तुम प्रासंगिक अंश पढ़ना।’

‘ठीक है, लेकिन इकोअलिकुम का नाम ऐसा क्यों रखा गया?’

‘वानर जनजाति ने एक बार सोलहवीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के मुख्यमंत्री ताताचार्य की रक्षा की थी। यह संभव है कि इकोअलिकुम नाम न होकर एक उपाधि हो। यह उपाधि ताताचार्य द्वारा उस समय के आदिवासी मुखिया को प्रदान की गई हो। वो संभवतः इस जनजाति को हनुमान का वंशज या अवतार मानते हों। वास्तव में, उन्होंने ही हनुमान के सम्मान में इस मंदिर का निर्माण कराया।’

‘तो मेरे पिता ने आपके साथ काम किया?’ पैम ने पूछा।

‘हां। तीनों जड़ी-बूटियों के थोड़े से नमूनों और जनजाति द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली औषधि की थोड़ी मात्रा को छोड़कर, तुम्हारे पिता इकोअलिकुम से ज्यादा कुछ जानकारी नहीं ले पाए थे। लेकिन जब मैंने औषधियों का परीक्षण किया, तो वे बोधिधर्मा के प्राचीन पल्लव लेखों में लिखे गए औषधियों से मेल खा गए। जनजाति की शक्ति इस बात का प्रमाण थी कि वे औषधियां अपना काम करती थीं। तभी हमने औषधियों को दोबारा बनाने और बोधिधर्मा की प्रशिक्षण तकनीकों के साथ उनका इस्तेमाल करने पर काम शुरू किया। उन तरीकों से भारत के लिए विशेष सैन्य बल बनाने में सहायता मिलती। मैंने अपनी कुछ परीक्षण खुराकें अपनी बेटी को भी दीं। इसलिए उसकी ताकत असाधारण है।’

‘लेकिन आपको जड़ी-बूटियां कहां से मिलीं?’

‘अच्छा सवाल है। ज़ाहिर है हम उन्हें वानर जनजाति से नहीं ले सकते थे, क्योंकि वे उन्हें देते नहीं। हम उन्हें द्रोणगिरि से लाने का जोखिम भी नहीं उठा सकते थे। यह भूसे के ढेर में सुई ढूंढ़ने जैसा होता। इसलिए हमने हमारे पास मौजूद नमूनों को टिशू कल्चर से कई गुना बढ़ाने का विकल्प चुना। यह हमारे कार्यक्रम को शुरू करने के लिए पर्याप्त था।’

अनु बोली। ‘मैं अभी भी यह नहीं समझ पा रही हूं कि इतनी महत्वपूर्ण पहल क्यों बंद कर दी गई। यह भारत के लिए गेम चेंजर हो सकता था।’

राव ने उदासी के साथ कहा, ‘सत्ता में कोई ऐसा व्यक्ति था जो चीनियों का करीबी था। अगर नौकरशाहों ने हमारा कार्यक्रम बंद नहीं किया होता तो हम भारतीय सैन्य शक्ति को काफी हद तक बढ़ाने में सफल हो गए होते। इस कार्यक्रम को बर्बाद करने का काम काफी ऊपरी स्तर से हुआ था।’

यह कौन हो सकता था? पैम सोच में पड़ गई। मार्क चीनी मूल के एक दुकानदार से मिल रहा था, जिसका शायद विदेशी खुफिया एजेंसियों से संबंध था, यह बात उसके दिमाग में घूम रही थी। और यह भी कि वीटीके को जीपीएस सिक्के के बारे में उसके बताए बिना ही पता चल गया था। इसके अलावा, अगर प्रधानमंत्री, राव और उसके पिता के बीच काम करने के इतने हिमायती थे, तो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद कार्यक्रम को दोबारा शुरू क्यों नहीं किया गया? किसने फैसला लिया कि इस जांच के लिए मेरी ज़रूरत थी? क्या यह मुझे खत्म करने के लिए किया गया था?

‘क्या आपने कभी भी कार्यक्रम को अपने स्तर पर फिर से चलाने की नहीं सोची?’ पैम ने पूछा।

‘मुझे पता था कि अगर मैंने ऐसा किया तो मुझे खत्म कर दिया जाएगा,’ राव ने कहा।

‘देखो तुम्हारे पिता के साथ क्या हुआ।’

‘उन्हें क्या हुआ था?’ पैम ने पूछा। ‘क्या आप जानते हैं?’

‘कहीं से आकर लग गई गोली की बात तो सिर्फ दिखावा थी। तुम्हारे पिता मेरे कार्यक्रम के सबसे प्रबल और मुखर समर्थकों में से एक थे और इसके लिए मैं उन्हें

काफ़ी पसंद करता था। मेरी सबसे अच्छी यादें उनके साथ जुड़ी हुई हैं। मैंने अपने घर की सभी तस्वीरें हटा दीं क्योंकि उनमें से ज्यादातर में वो मेरे साथ था। शायद इसलिए...

पैम का गला भर आया। इतने सालों के बाद भी, उसका अपने पिता के बारे में सोचना उसके लिए गहरे आघात से कम नहीं होता था। उसने तुरंत विषय बदल दिया। 'आपको वे तीन कलश कैसे मिले जिन्हें हमने अभी निकाला था?'

'कलश इतिहास में कहीं खो गए थे,' राव ने समझाया। 'हां, मिश्रण के कुछ अंश फाह्यान, बोधिधर्मा और ह्वेन-त्सांग के साथ मित्रता की भावना के साथ उन्हें दिए गए थे, लेकिन उनकी अच्छी-खासी मात्रा पल्लव शासकों के पास थी। जब मैंने प्राचीन लेखों को देखा, तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सुरक्षा कारणों से विभिन्न स्थानों पर कलशों के कई सेट गाड़ दिए गए थे; यह सेट उनमें से केवल एक था। उनमें से कुछ गुमराह करने के लिए बनाए गए छलावे थे। कहने की ज़रूरत नहीं है, कई कलश सदियों से लगातार दक्षिण भारतीय राजवंशों की सुरक्षा में रहे, लेकिन प्राथमिक सेट तीन वानरों की सुरक्षा में था।'

'तीन वानर?'

'मुझे आश्चर्य है कि मैंने जो दस्तावेज़ तुम्हें दिया था उसे पढ़ने के बाद तुम उस निष्कर्ष पर नहीं पहुंची। इसमें चीन में औषधि ले जाने वाले तीन लोगों के संक्षिप्त यात्रा वृत्तांत और यू-जिन शी-सुई के प्रासंगिक उद्धरण शामिल थे, जिसमें इस्तेमाल और प्रशिक्षण के तरीकों, कलशों के संभावित स्थान और नेसस प्रभाव को दूर करने के साधनों का वर्णन किया गया था।'

'एक मिनट, यह सब उस दस्तावेज़ में था जो आपने मुझे दिया था? मुझे बताया गया कि यह केवल जर्नी टू द वेस्ट का तमिल-मैंडरिन संस्करण था!'

'बकवास,' राव ने कहा। 'जर्नी टू द वेस्ट की कुछ पंक्तियों का जिक्र सिर्फ बंदरों से संबंधों को समझाने के लिए किया गया था, बस इससे ज्यादा कुछ नहीं।'

पैम का दिमाग तेज़ी से चलने लगा था। जया ने उसे क्यों गुमराह किया था? क्या यह संभव है कि जया.. भेदिया है?

'चूंकि आप मैंडरिन जानते हैं,' उसने राव से कहा, '"जया" शब्द को मैंडरिन में क्या कहेंगे?'

'आसान है,' राव ने कहा। 'जया का अर्थ है जीत। और मैंडरिन में जीत के लिए शब्द है शेंगली।'

### 83

शिन्जियांग में एक सुंदर पहाड़ी की तलहटी में बनाई गई खूबसूरत इमारत को देखकर यह कहना नामुमकिन था कि यह एक पुनर्शिक्षा शिविर था। बेशक, सरकार इसे वोक्शनल ट्रेनिंग सेंटर कहना पसंद करती थी।

मुख्य द्वार के दोनों ओर क्लासिकल खंभों का एक बड़ा, घुमावदार छज्जा बना हुआ

था। सामने से देखने पर यह एक शिवावर को बजाय एक सार्वजनिक पुस्तकालय लगता था। लेकिन इसके पीछे कई इमारतें थीं, सभी चमचमाती हुई, सफेद और छह मंजिल ऊंची। उनके सामने सब्जियों के बगीचे और परेड मैदान थे। पूरे परिसर को ऊंची दीवारों, सुरक्षा बाड़, वॉचटावर, गार्ड रूम और निगरानी प्रणालियों के घेरे में रखा गया था।

केवल इससे जुड़े लोग ही जानते थे कि दरअसल यह एक एडवांस्ड जेल थी, और वे लोग यह बात बताने वाले नहीं थे।

एक समय, चीन में अलग-अलग जगहों पर ऐसे कई शिविर हुआ करते थे। लेकिन वे गुलाग-जैसे अमानवीय लेबर कैंप थे। ये कहीं ज्यादा सुधारी हुई जगहें थीं। यहां लोगों को काम कराते-कराते मारने के लिए नहीं लाया जाता था। उन्हें यहां लाया जाता था कि वे अपनी सोच बदल लें। यहां वैचारिक तौर पर लोगों का मत परिवर्तित किया जाता था। विडंबना यह है कि शिविर शिन्जियांग में स्थित था। यह वही इलाका था जहां से महान यात्री ह्वेन-त्सांग तांग साम्राज्य के जेड गेट को छोड़ने के बाद गुजरे थे। शिन्जियांग उस समय रेशम मार्ग के किनारे बसे इलाकों में अलग-अलग विचारधाराओं का केंद्र था। बुद्ध के मूल विचारों की खोज में निकले ह्वेन-त्सांग ने यहीं के रेगिस्तान में अपनी प्यास बुझाई थी, रेगिस्तान के निगरानी टावरों से निशाना बनाने वाले तीरों से खुद का बचाव किया था और गाओचांग के राजा द्वारा कैद किए जाने के बाद आज़ाद होने के लिए उससे लड़ाई लड़ी थी। शिन्जियांग का पूरा इलाका एक समय बौद्ध धर्मावलंबियों से भरा हुआ था, लेकिन आठवीं और नौवीं शताब्दी में तुर्क मुसलमानों ने इस क्षेत्र पर राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के बाद इसका इस्लामीकरण कर दिया था। खुद को ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट कहने वाले एक समूह के आज़ादी की मांग करने और आतंकी हमले करने के बाद यहां बड़े पैमाने पर चीनी शिकंजा कस दिया गया था।

बुज़ांग की निगरानी में कई शिविरों को एक-दूसरे में मिला दिया गया था। यह नज़रबंद लोगों को कम करने की इच्छा से नहीं बल्कि अपने बॉस, राष्ट्रपति को भ्रम में रखने के लिए किया गया था। शिविरों को जनता की नज़रों से दूर रखने की भी ज़रूरत थी। 1950 और 60 के दशक के दौरान सार्वजनिक रूप से नियंत्रण बनाए रखने के लिए नज़रबंदी एक रणनीति थी। ग्रेट लीप फॉरवर्ड और सांस्कृतिक क्रांति के दिनों में विशाल जेल फार्मों, या जेल कारखानों में हज़ारों वैसे लोगों को कैद करके रखा जाता था, जो राजनीतिक रूप से परेशानी पैदा करने वाले माने जाते थे। लेकिन नए शिविरों का मुख्य उद्देश्य शिन्जियांग के मुसलमानों, उइगरों को रखना था।

दमन आमतौर पर अमानवीय और दक्षता से किया गया था। दस लाख से ज्यादा मुसलमानों को बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के पुनर्शिक्षा शिविरों में कैद रखा गया था, जिनके पास कानूनी मदद पाने का कोई तरीका नहीं था। शिविरों के भीतर, कैदियों को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी पूरी निष्ठा रखने और इस्लाम के उन पहलुओं को छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता था जिन्हें कट्टरपंथ के रूप में देखा जा सकता है। उन्हें कोई व्यावसायिक कौशल सीखने के अलावा, साम्यवाद के गुणों की प्रशंसा

करना और मेंडारेन सीखना जरूरी था।

शिविरों के बाहर, शिन्जियांग में रहने वाले एक करोड़ दस लाख से ज्यादा उइगरों को अचानक पता चला कि मस्जिद में जाने या कुरान की आयतों के साथ टेक्स्ट मैसेज भेजने जैसी मामूली बातें भी उन्हें शिविर में पहुंचा सकती थीं। नए नियमों ने उन्हें लंबी दाढ़ी बढ़ाने, सार्वजनिक रूप से बुर्का या हिजाब पहनने, रमज़ान के दौरान रोज़ा रखने, हलाल मांस बेचने, शराब से परहेज़ करने और बच्चों को खुले तौर पर इस्लामी नाम देने से रोक दिया। विडंबना यह है कि फिलिस्तीन, कश्मीर और बोस्निया में हिंसा और कथित अन्याय के बारे में मुखरता से बोलने वाले, शायद ही किसी मुस्लिम राष्ट्र ने उइगरों के अधिकारों के लिए लड़ने की जहमत उठाई हो। उनमें से किसी में भी चीन की ताक़त से मुकाबला करने का हौसला नहीं था।

शिन्जियांग खुद लगातार निगरानी में रहता था। इस क्षेत्र को एक ग्रिड में तब्दील कर दिया गया था और हर वर्ग में लगभग 500 लोग रहते थे। सभी में एक पुलिस स्टेशन था जो नियमित रूप से चेहरे की पहचान करने वाले कैमरों, फिंगरप्रिंटिंग और पहचान पत्रों की जांच के माध्यम से निवासियों का सर्वेक्षण करता रहता था।

शिविर के अंदर, कई हजार दूसरे लोगों के साथ, लगभग साठ साल की एक महिला उन कामों को निपटा रही थी जो उसे दिन भर के लिए दिए गए थे। अलार्म हमेशा की तरह सुबह पांच बजे बज चुका था। सभी कैदियों को दी जाने वाली पतली नीली वर्दी पहनने से पहले उसे भी बाथरूम में हाथ-मुंह धोने के लिए कुछ मिनट दिए गए थे। नाश्ते में चाय और एक बन था। दिन के बाकी समय में, वह सब्जियां लगाती और उनकी देखभाल करती थी, दीवारों को रंगती थी, शौचालय साफ़ करती थी और बर्तन धोती थी। उसका बाकी बचा हुआ समय देशभक्ति के गीत गाने, कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा को याद करने और मेंडारिन सीखने में बीतता था।

उसने सेल वार्डन की ओर सावधानी से देखा। वार्डन काम करवाने वाली सख्त महिला थी, लेकिन कभी भी अमानवीय नहीं हुई थी। वार्डन ने उसे अपने बेटे को चिट्ठी लिखने की इजाज़त दी थी, हालांकि चिट्ठी में साम्यवादी व्यवस्था की तारीफ़ करना ज़रूरी था। अपनी चिट्ठी में उसने लिखा था, 'सोने का कमरा अच्छी स्थिति में है और गर्म पानी चौबीस घंटे आता है। हमारे पास साफ़-सुथरे बाथरूम, गर्माहट देने वाले फ़र्श और यहां तक कि एयर कंडीशनिंग का भी इंतजाम है। हमें भोजन, कपड़े, रहने का ठिकाना और निजी इस्तेमाल की दूसरी चीज़ें दी जाती हैं। शिक्षण सामग्री निःशुल्क है। मैं नहीं चाहती कि तुम मेरे बारे में चिंता करो क्योंकि मैं ठीक हूं। मेरी पिछली गलतियों के आधार पर, मुझे आसानी से पांच या दस साल की सज़ा दी जा सकती थी। इसके बजाय, अधिकारियों ने मुझे केवल वोकेशनल ट्रेनिंग के लिए भेजा। मैं किस्मत वाली हूं।' कोई भी तटस्थ व्यक्ति साफ़तौर पर बता सकता था कि चिट्ठी में सारी बातें लिखने के लिए उस महिला को समझाया गया था।

वार्डन की नज़र महिला पर पड़ी। 'तुम्हारी चिट्ठी से मदद मिली,' उसने समझाया। 'मैं अधिकारियों को यह समझाने में कामयाब रही कि तुम्हें एक हफ्ते के लिए घर भेज दिया जाना चाहिए।' महिला चौंक गई। उसने सोचा था कि उसे कभी पैरोल नहीं

मिलेगी। लेकिन वह नहीं जानती थी कि वह शिवरे में घुसपेठ करने वाली विदेशी खुफिया एजेंसियों की अप्रत्याशित लाभार्थी थी।

वार्डन ने महिला को एक तरफ आने का इशारा किया, जो निगरानी कैमरों की पहुंच से दूर था। 'तुम्हें कल एक हफ्ते के लिए घर भेज दिया जाएगा। उरुमक्री में अपने घर लौटना। अगले दिन तुम्हें अक्सू प्रान्त से नियमित पुलिस दौरे के लिए कॉल आएगा। पुलिस के अनुरोध के अनुसार अक्सू के लिए उड़ान भरने के लिए उरुमक्री के दिवोपु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर जाना और उड़ान के लिए चेक इन करना। अपने बोर्डिंग पास की एक तस्वीर लेना और इसे अक्सू पुलिस को भेज देना ताकि उन्हें पता चले कि तुम रास्ते में हो। लेकिन उस फ्लाइट में नहीं चढ़ना। ठीक उसी वक्त कज़ाकिस्तान के अस्ताना से होते हुए इस्तांबुल के लिए फ्लाइट जाएगी। इस पर सवार हो जाना। इस्तांबुल पहुंचने पर वहां तुम्हें वीज़ा मिल जाएगा। उसके बाद तुम्हारा ख्याल रखा जाएगा।'

'आप मेरी मदद क्यों कर रही हैं?' कैदी महिला ने पूछा। वार्डन ने कोई जवाब नहीं दिया।

वह सोच रही थी कि क्या यह उसे कुछ ऐसा करने के लिए उकसाने का जाल था, जिससे उसकी हिरासत की अवधि बढ़ जाएगी। क्या उसकी परीक्षा ली जा रही थी? लेकिन वह जानती थी कि उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था। जोखिमों से निपटना ही तो ज़िंदगी थी। यह एक ऐसा जोखिम था जो उसे उठाना ही था। उसने मन ही मन दुआ पढ़ी। अल्लाहुम्मा इन्नी अउदु बिका मिन ज़ावली...

## 84

साठ मील दूर से, चार भिक्षु मुझे नालंदा ले जाने के लिए उरुबेला आये। नालंदा एक विशाल और शानदार रूप से समृद्ध विश्वविद्यालय था जहां छात्र दूर-दूर के देशों जैसे गोगुरियो<sup>106</sup>, डैक्सिया<sup>107</sup>, पश्चिमी तुर्किक खगानाटे, मेंगु<sup>108</sup>, टुबो<sup>109</sup> और, बेशक, मेरे अपने चिना से आते थे। नालंदा के संकाय सदस्यों ने मेरे आने के बारे में पहले ही सुन लिया था, इसलिए मेरे लिए चार भिक्षुओं को भेजा गया था जो मुझे वहां ले जाने के लिए आए थे। मैं उनके साथ वापस विश्वविद्यालय पहुंचा। जैसे ही हम पहुंचे, अन्य सैंकड़ों भिक्षु और एक हज़ार अनुयायी पताकाओं, छत्र, फूल और धूप के साथ हमारे स्वागत के लिए आ गए। उन्होंने मेरे लिए जो गर्मजोशी और स्नेह दिखाया उससे मैं अभिभूत हो गया।

नालंदा के द्वार पर, लगभग 10,000 छात्रों और उनके शिक्षकों की भीड़ मेरी प्रतीक्षा कर रही थी, और आनुष्ठानिक घंटा बजाया गया। मुझे आदरणीय शीलभद्र से मिलना था। शीलभद्र वो महागुरु थे जिनका उल्लेख प्रभाकरमित्र ने मुझसे किया था। इसी कारण मैं इतनी दूर यात्रा करके आया था। लेकिन कोई भी उन आदरणीय व्यक्ति के सामने ऐसे ही नहीं जा सकता था। वहां परंपराओं का पालन किया जाना था। बीस भिक्षुओं ने मुझे सिखाया कि महागुरु के पास कैसे जाना था।

उनके प्रशिक्षण के आधार पर, मैं अपने हाथों और पैरों के बल रेंगकर शीलभद्र की ओर गया, उनके पैरों को चूमा और अपना सिर उनके सामने धरती पर लगाया, 'तुम्हारा उद्देश्य क्या है?' शीलभद्र ने धीरे से पूछा।

‘आपसे योग अभ्यास के चरण सीखना,’ मैंने उत्तर दिया। मैं आदरणीय से झूठ नहीं बोल सकता था, इसलिए मैंने कहा, ‘साथ ही मैं डि सैन सू चुआन बनने की भी आशा करता हूँ।’ मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि शीलभद्र की आंखों में आंसू आ गए। तब उन्होंने मुझे बताया कि वो एक दर्दनाक बीमारी से पीड़ित थे और अपना पार्थिव शरीर त्यागना चाहते थे। लेकिन एक रात, उन्होंने एक सपना देखा जिसमें उन्हें बताया गया कि चिना से एक भिक्षु उनके पास सीखने के लिए आएगा। उन्होंने अपनी मृत्यु टाल दी थी और अब मुझे विनम्रतापूर्वक अपने छात्र के रूप में स्वीकार कर लिया।

अब तक, मुझे यात्रा करते हुए आठ साल हो चुके थे। आदरणीय से मिलने के बाद, मुझे मेरा कक्ष दिखाया गया, जहां मैं उनके भतीजे के मेहमान के तौर पर रहने वाला था। ये कक्ष सम्राट द्वारा बनवाए गए विहार की चौथी मंज़िल पर थे और इनसे नालंदा के विशाल मैदानी क्षेत्र का सीधा दृश्य दिखता था, जो पेड़ों, झाड़ियों, कमल के तालाबों, मंदिरों और झीलों से भरा था। ईंट की एक विशाल दीवार ने पूरी परिधि को घेर रखा था जिससे नालंदा बाहरी दुनिया से कटा हुआ था। यहां की कुछ इमारतें इतनी ऊंची थीं कि कोई भी बादलों के ऊपर भी देख सकता था।

नालंदा मेरे प्रति अत्यधिक उदार था। हर दिन, मुझे 120 पान के पत्ते, बीस सुपारी, बीस इलायची, एक औंस कपूर, डेढ़ पाउंड महासली चावल, घी और अन्य खाद्य पदार्थ मिलते थे। समय का ध्यान रखने के लिए जल घड़ियों का इस्तेमाल किया जाता था। भिक्षुओं को स्नान करने की याद दिलाने के लिए हर सुबह घंटा बजाया जाता था और हज़ारों भिक्षु नालंदा के दस स्नान तालाबों में नहाने के लिए डुबकी लगाते थे।

विश्वविद्यालय काफी विशाल था, जिसमें आठ बड़े कक्ष, अनगिनत मंदिर, स्तूप, पुस्तकालय, बगीचे और 300 आवासीय कक्ष थे। सौ गांवों से प्राप्त राजस्व को इसके रखरखाव के लिए खर्च किया जाता था। छात्र यहां महायान और हीनयान बौद्ध धर्म, वेदों से प्राचीन ब्राह्मणवादी ज्ञान, संस्कृत व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शन, कानून, साहित्य, चिकित्सा, गणित और खगोल विज्ञान सहित कई विषयों को सीखते थे।

मुझे भ्रमण के लिए दो नौकर, एक पालकी और एक हाथी की सेवा का लाभ उठाने की पेशकश की गई थी। मैंने इन सुविधाओं का इस्तेमाल राजगह<sup>110</sup> की यात्रा के लिए किया, जो बुद्ध के समय राजा बिंबिसार की राजधानी थी। इस क्षेत्र में गृद्ध शिखर भी स्थित था, जहां बुद्ध ने कई उपदेश दिये थे। मैंने वह स्थान भी देखा जहां बुद्ध ने एक जंगली हाथी को वश में किया था, जिसे मदमस्त करने और उन्हें कुचलकर मारने के इरादे से शराब पिलाई गई थी। मैं बस फाह्यान के पद-चिह्नों पर चल रहा था, जो मुझसे पहले इस जगह पर आए थे।

अगले कुछ वर्षों में, मैंने न केवल शीलभद्र के अधीन रहकर अध्ययन किया, बल्कि

तर्कशास्त्र और संस्कृत व्याकरण के अपने ज्ञान में भी निपुणता हासिल कर ली। मैं वास्तव में भाग्यशाली था कि शीलभद्र से योगाचार को उसके शुद्ध रूप में सीख सका, जिन्होंने इसे असंग, वसुबंधु, दिगनाग और धर्मपाल सहित पिछले गुरुओं की एक लंबी शृंखला से प्राप्त किया था। मेरी मित्रता वज्र नामक एक जैन भविष्यवक्ता से भी हुई। कई लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखते थे, लेकिन मुझे उसके साथ हुई अपनी चर्चाएं ज्ञानवर्धक लगीं। वज्र कई राजघरानों के अच्छे संपर्क में था और उसने मुझसे कहा कि जब भी मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं मदद के लिए उस पर भरोसा कर सकता था। उसने मुझे एक पहेली को सुलझाने में भी मदद की जो अनसुलझी रह गई थी।

लेकिन हर समय, मैं सचेत था कि मेरे मिशन का दूसरा और उतना ही महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा होना बाकी था।

## 85

पैम कार में बैठी हुई थी और वह पुझल सेंट्रल जेल, चेन्नई जा रही थी, जहां पकड़े गए आदमी को भेजा गया था। रास्ते में, उसे रसविनोद का ऑनलाइन अनुवाद मिल गया था। कुछ ही मिनटों में उसे वह चीज़ मिल गई जो राव ने उसे बताई थी। दिनकृष्णदास के अनुसार, हिंदू देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति ने मिलकर हनुमान का रूप धारण किया था। राव हमेशा से मुझे यही बताने की कोशिश कर रहे थे। हनुमान जैसी शक्ति तीन अलग-अलग औषधियों से आई थी।

और इसीलिए उसके पिता ने त्रिदेव को समर्पित गायत्री मंत्र के नोट्स बनाए थे, लेकिन अंत हनुमान को समर्पित मंत्र के साथ होता था:

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे  
हंसा रुद्राय धीमहि  
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्  
ॐ नारायणाय विद्महे  
वासुदेवाय धीमहि  
तन्नो विष्णु प्रचोदयात्  
ॐ तत् पुरुषाय विद्महे  
महादेवाय धीमहि  
तन्नो रुद्रा प्रचोदयात्  
ॐ आजनेय विद्महे  
महा बलाय धीमहि  
तन्नो हनुमान प्रचोदयात्

उनसे कई मील आगे, पुलिस वैन चेन्नई की तरफ जा रही थी। गाड़ी के पिछले हिस्से में एक आदमी था जिसे हथकड़ी पहनाई गई थी। उसके पैरों में बेड़ियां थीं। वह अपनी

कैद को लेकर चिंतित नहीं दिख रहा था। इसके विपरीत लग रहा था कि उसे इस बात का पक्का भरोसा था कि उसके सरपरस्त उसे किसी भी खतरे या कैद से बाहर निकाल सकते थे।

पुलिस की दो जीप वैन के साथ थीं, एक आगे और दूसरी पीछे। ऊपर से निर्देश आये थे कि कैदी को सुरक्षित चेन्नई पहुंचाना था। यह एक घंटे चालीस मिनट का सफर था। कांची की उप-जेल तक उसे पहुंचाना आसानी से और जल्दी हो जाता, लेकिन उच्चाधिकारियों से उन्होंने कोई बहस नहीं की।

ड्राइवर लगातार आगे बढ़ रहा था। जब काफिला चेन्नई के बाहरी इलाके में पहुंचा, वह ममल्लपुरम में एक पुलिस चेकपॉइंट पर रुक गया। ड्यूटी पर मौजूद गार्ड ने जब देखा कि आदेश बहुत ऊंचे स्तर से थे तो उसने हाथ हिलाकर उन्हें आगे जाने का इशारा किया। वैन के ड्राइवर ने गाड़ी को फिर से चालू करने की कोशिश की, लेकिन इंजन चालू नहीं हुआ। तीसरी कोशिश में उसे पुराने इंजन की घरघराहट की आवाज़ सुनाई दी। तब तक सामने वाली पायलट जीप चौकी का गेट पार कर चुकी थी। वैन ड्राइवर ने क्लच दबाया और गाड़ी को पहले गियर में डाला। वह गेट से वैन को आगे निकालने लगा।

तभी, एक चमकदार काली मोटरसाइकिल ने उसका रास्ता रोक दिया। ड्राइवर ने काले हेलमेट और दस्ताने सहित पूरी तरह से काले कपड़े पहने हुए थे। बाइकर थोड़ी देर के लिए पुलिस वैन के सामने रुका और फिर ग्रेनेड से पिन खींच लिया। ड्राइवर ने वैन से बाहर कूदने की भरसक कोशिश की, लेकिन वह सेकंड से भी छोटे हिस्से से चूक गया। ग्रेनेड वैन के नीचे लुढ़का और चार सेकंड बाद फट गया, जिससे वैन और उसमें बैठे लोग हवा में उछल गए।

विस्फोट से पहले ही बाइकर फुर्ती दिखाते हुए छलावे की तरह वहां से गायब हो गया था। विस्फोट की आवाज़ मीलौं दूर तक सुनाई दी थी। चारों ओर क्षत-विक्षत शव पड़े थे। जब तक बचाव दल पहुंचा, केवल दो पुलिसकर्मी बचाए जा सके थे, जो घटनास्थल से थोड़ी दूरी पर थे। उनमें से एक का हाथ उड़ गया था जबकि दूसरे के शरीर में छुरे लगने से काफी खून बह रहा था। वैन और पीछे वाली पायलट जीप में सवार कैदी और पुलिसकर्मियों सहित छह लोग मारे गए थे।

पैम रसविनोद के रहस्योद्घाटन के बारे में सोच रही थी जब उसके पास वीटीके का फ़ोन आया। 'बुरी ख़बर है। काफिले पर हमला हुआ और हमारा कैदी मारा गया।'

पैम ने अपनी सांस अंदर की तरफ खींची। लानत है! उसे उम्मीद थी कि वो कैदी से पूछताछ कर जया को बेनकाब कर सकेगी। उसने मन ही मन में सोचा कि क्या उसे जया के बारे में अपना संदेह वीटीके को बताना चाहिए, तभी उसे याद आया कि वीटीके को जीपीएस सिक्के के बारे में उसके बताए बिना ही पता चल गया था।

कौन मेरे साथ है और कौन मेरे खिलाफ़ है? अगर मैं मार्क पर भरोसा नहीं कर सकती, अगर मैं वीटीके पर भरोसा नहीं कर सकती, अगर मैं जया पर भरोसा नहीं कर सकती... तो मैं किस पर भरोसा कर सकती हूँ? घमंडी और अहंकारी ठाकुर पर?

लेकिन अगर जया भेदिया है, तो मार्क नहीं हो सकता, है ना? लेकिन तब क्या अगर वो जया के साथ काम कर रहा हो? पापा की मौत कैसे हुई? कौन यह पक्का करने की कोशिश कर रहा था कि मैं हिरासत में लिए गए आदमी से पूछताछ न कर पाऊं? उसने एक बार फिर से अपने ड्राइवर को उसे घूरते हुए देखा। हर जगह पैसे लेकर काम करने वाले चीनी एजेंट मौजूद थे। क्या ड्राइवर भी उनमें से ही एक हो सकता है? वह हमेशा मुझे क्यों घूरता रहता है? वह हर किसी पर शक करने लगी थी। 'जेल नहीं जाना है अब,' उसने ड्राइवर से कहा। 'इसके बजाय मुझे हवाई अड्डे ले चलो।'

## 86

पैम को ऐसा लगा जैसे वो वहीं वापस आ गई थी जहां से उसने शुरुआत की थी। ज़िंदगी का पहिया घूमकर अपनी जगह लौट आया था।

वे कश्मीर हाउस में इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ हेडक्वार्टर के उबाऊ कॉन्फ्रेंस रूम में वापस आ गए थे। लेकिन इस बार, प्रतिभागी अलग थे। ठाकुर मौजूद थे, लेकिन साथ में थे वीटीके, राव और अनु। कॉन्फ्रेंस टेबल के ऊपर वह संदूक था जिसे संजीवीर्या हनुमान मंदिर से खोदकर निकाला गया था।

'सबसे पहले मैं प्रोफेसर राव से इस देश में उनके साथ किए गए व्यवहार के लिए माफी मांगता हूं,' ठाकुर ने कहा। 'मैं सेना का जवान हूं जिसने अपनी पूरी ज़िंदगी देश की सेवा में समर्पित कर दी है और मैं जानता हूं कि अगर आपका प्रोजेक्ट सफल होता तो कितना मूल्यवान होता।'

पैम बुरी तरह चौंक गई। ठाकुर ने कभी किसी से माफ़ी नहीं मांगी थी। भले ही उन्होंने कोई बहुत बड़ी गलती की हो, वो हमेशा किसी और को ही उसका कसूरवार ठहरा देते थे। इतने अहंकारी व्यक्ति को माफ़ी मांगते हुए देखना बहुत बड़ी बात थी।

'गंगा में अब काफी पानी बह चुका है, जनरल,' राव ने उदास होकर कहा। 'अब मेरी चिंता यह है कि हम अपने प्राचीन रहस्यों को कैसे बचा सकते हैं। हमारे पास ज्ञान और तकनीक थी जो अपने समय में दुनिया से कहीं आगे थी। संभवतः आज भी है।'

'हम खुशकिस्मत हैं कि पिछले दिनों में हुई घटनाओं की वजह से यह संदूक फिर से खोजा गया,' ठाकुर ने कहा। 'हमें वक्त नहीं गंवाना चाहिए। हमें जल्दी से अपनी नैनाबोलिक्स फॉर्मूलेट करनी चाहिए और किसी भी खतरे से बचने के लिए अपनी टुकड़ी को तैयार करना चाहिए।'

राव ने असहमति में सिर हिलाया। 'इन फॉर्मूलेशन का इस्तेमाल कभी भी लापरवाही से नहीं किया जाना चाहिए। जब बोधिधर्मा ने उनके इस्तेमाल की सलाह दी थी तब यह आहार, व्यायाम, ध्यान और निवारक प्रक्रियाओं से संबंधित निर्देशों की एक विस्तृत नियमावली के साथ था। इस मिश्रण की खुराक की मात्रा भी नतीजे पर असर डालती है। अपने लोगों को केवल यह मिश्रण खिला देना खतरनाक होगा, क्योंकि हम उनके प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं हैं। यही कारण था कि

हमने अकादमी की स्थापना की थी—यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी आवश्यक शर्तें पूरी की जाएं और सावधानियां बरती जाएं।’

ठाकुर का चेहरा लाल हो गया। उन्हें अपनी बात काटे जाने की आदत नहीं थी। उन्होंने कहा, ‘मैं यह बात बिल्कुल नहीं मानता। यह सावधानी से चलने का वक्त नहीं है। हमें तुरंत इन जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल करना चाहिए और चीनियों को मुंहतोड़ जवाब देने वाले जवान तैयार करने चाहिए, जो सीमा पर फिर से संगठित हो रहे हैं, जब हम ये सारी बातें कर रहे हैं।’

राव ने असहमति में कुछ और भी कहा, लेकिन ठाकुर की ज़ोरदार आवाज़ में वह दब गया। राव ने पहले भी भारतीय संस्थानों के साथ काम किया था और उन्हें उन पर भरोसा नहीं था। वो जानते थे कि अंत में ये लोग वही करेंगे जो उन्हें लगता है कि उन्हें करना चाहिए। उन्होंने ज़्यादा विरोध नहीं किया।

‘मुझे वाकई में इसकी कोई परवाह नहीं है कि कोई क्या सोचता है,’ ठाकुर ने अंत में कहा। ‘मेरी पहली वफादारी सीमा पर तैनात मेरे सैनिकों के प्रति है। हमारे पास तीनों तत्वों का इस्तेमाल करके नेसस प्रभाव पर काबू पाने की क्षमता है। हमें उसे तुरंत इस्तेमाल करना चाहिए।’

ठाकुर ने टेबल पर रखे संदूक को अपनी ओर खींचा, ढक्कन खोला और एक कलश को बाहर निकाला। उन्होंने कलश के ढक्कन को तोड़ दिया, जो मिट्टी और भूसे से बना था। ठाकुर के चेहरे पर पागलपन का भाव था। किसी की उनसे बहस करने की हिम्मत नहीं थी।

ढक्कन हटाने के बाद ठाकुर ने कलश के भीतर देखा। ‘यह खाली है!’ वो गरजे, उनका चेहरा गहरा लाल हो चुका था। वो राव की तरफ मुड़ा। ‘क्या आपने ये कलश खाली कर दिए हैं?’ उन्होंने आरोप लगाने के अंदाज़ में पूछा।

राव ने उसी कठोरता से जवाब दिया, ‘खुदाई के बाद से ही कलश आपके आदमियों के पास रखा था। कृपया बेबुनियाद आरोप नहीं लगाएं। लेकिन आपके सवाल का जवाब देने के लिए बता दूं कि हम जानते हैं कि कलशों के कई सेट अलग-अलग जगहों पर गाड़े गए थे। उनमें से कई खाली थे; ऐसा संभावित चोरों को गुमराह करने के लिए किया गया था। राजा और उनके प्रधानमंत्री को छोड़कर कोई नहीं जानता था कि असली सेट कहाँ पर थे।’

‘फिर हम कलशों की चिंता क्यों कर रहे हैं?’ ठाकुर ने पूछा। ‘हम जानते हैं कि इसी मिश्रण का उपयोग वानर जनजाति करती है। इसे उनसे छीन लेते हैं।’

‘इसे पाने की कोशिश करने के लिए आपको शुभकामनाएं। उन्होंने कई पीढ़ियों से हर मौसम में उन औषधियों का इस्तेमाल किया है। वे अजेय हैं। इसकी संभावना नहीं है कि आप उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर पाएंगे।’

‘अगर आप जानते थे कि ये कलश खाली थे, तो आप उन पर नज़र क्यों रख रहे थे?’

राव ने शांत लहजे में कहा, ‘लोगों को गुमराह करने के लिए। मुझे पता था कि मुझ पर नज़र रखी जा रही थी, लेकिन मुझे नहीं पता था कि कौन मुझ पर नज़र रख रहा था।’

भारत के सुरक्षा संस्थान? खुफिया एजेंसियां? विदेशी ताकतें? मैं बस इतना जानता था कि मुझे लोगों को उनके लक्ष्य से भ्रमित करना था। आज मुझे लगता है कि यह एक सही फैसला था।

ठाकुर ने पूछा, 'असली कलश कहां हैं?' ये शब्द सवाल से ज्यादा आदेश जैसे लग रहे थे।

राव ने ठाकुर से कहा, 'लोग पल्लवों को सिर्फ दक्षिण भारत का राजवंश समझने की गलती करते हैं। आप क्या सोचते हैं, जनरल?'

'मेरे पास पहेलियों के लिए समय नहीं है, प्रोफेसर राव। हमें असली कलश ढूंढने होंगे —और जल्द से जल्द।'

'यह कोई पहेली नहीं है। कंबोडिया के संस्थापक खम्बूराज पल्लव थे। कई वर्षों के बाद, पल्लव राजा सिम्हा विष्णु के छोटे भाई भीम को कंबोडिया का राजा बनाया गया था। आठवीं शताब्दी में, भीम के वंशज, नंदी वर्मन द्वितीय को पल्लव सिंहासन पर बैठाने के लिए कांची वापस लाया गया था।'

'आप क्या कहना चाह रहे हैं?' ठाकुर ने अधीरता से पूछा।

राव ने कहा, 'पल्लव साम्राज्य और खमेर साम्राज्य एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए थे। थोड़ा ध्यान से सोचिए। मंदिरों के गौरवशाही शहर अंगकोर का निर्माण किया ही क्यों गया था?'

## 87

बीजिंग में, कंबोडिया एक्सप्लोरेशन टीम के मुखिया ली से स्पीकर फ़ोन पर बात करते हुए बुज़ांग अपने ऑफिस में चारों ओर चक्कर काट रहा था। वह गुस्से में था। टीम बहाने बनाती जा रही थी। बुज़ांग सोच रहा था कि उन्हें वापस बुलाकर एक कतार में खड़ा करके गोलियों से उड़ा दिया जाए।

'मुझे पक्का यकीन है कि औषधि अंगकोर में हैं,' उसने फ़ोन पर गरजते हुए कहा। 'मेरे सामने बहाने मत बनाओ, मुझे नतीजा चाहिए!'

ली ने बुज़ांग को यह समझाने का प्रयास नहीं किया कि अंगकोर 'नोकोर' शब्द का स्थानीय रूप था, जो 'शहर' के लिए संस्कृत शब्द नगर से लिया गया था। जिस समय सीमा में काम करने के लिए कहा जा रहा था, उसमें पूरे शहर में खोज कर पाना असंभव था।

'हम इसकी अहमियत को पूरी तरह से समझते हैं, बुज़ांग,' ली ने सावधानी से भरे लहजे में कहा। 'मुझ पर भरोसा करें, हम कई रातों से सोए भी नहीं हैं। दरअसल परिसर का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जिसे लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग (LiDAR) तकनीक से जांचा नहीं गया हो। जहां सबसे अधिक संभावना थी, उन जगहों की भौतिक जांच की गई है, लेकिन हमें कुछ भी नहीं मिला। क्या यह संभव नहीं है कि हम जो अनुमान लगा रहे हैं, उसमें कोई गलती हुई हो? बमाहाओ, शिपो और पिशिनू यहां दबाए ही ना गए हों?'

‘मुझे यकीन है कि वे वहीं हैं,’ बुज़ांग ने बर्माशकल अपने गुस्से पर काबू पाते हुए कहा। ‘केवल एक ही दिक्कत है कि मैंने उन्हें ढूँढ़ने के लिए बेवकूफों की एक टीम भेजी।’

ली ने इस अपमान को बर्दाश्त कर लिया। इसके बजाय, उसने शांत लहजे में पूछा, ‘हम पक्के तौर पर कैसे कह सकते हैं कि औषधि अंगकोर में हैं?’

बुज़ांग ने जवाब दिया, ‘शेंगली ने हमारे साथ एक फ्लैश ड्राइव शेयर की है जिसमें प्रोफेसर राव का लिखा गया एक दस्तावेज़ है जब वो अपनी अकादमी बनाने की प्रक्रिया में थे।’

‘और?’

‘उस दस्तावेज़ में उन्होंने लिखा था कि मूल रूप से हनुमान से औषधि कैसे गिरी थी और पल्लवों ने कैसे उनका इस्तेमाल किया,’ बुज़ांग ने कहा। ‘उन्होंने ये भी लिखा था कि कई कलश अलग-अलग जगहों पर दबाए गए थे और उनका एक हिस्सा हमारे सम्राटों के साथ साझा किया गया था।’

‘लेकिन, बुज़ांग—’

‘राव ने बताया है कि कैसे बोधिधर्मा के यू-जिन शी-सुई ग्रंथ का इस्तेमाल औषधि के साथ संयोजन में किया जा सकता है और कैसे पिशिनू औषधि पहले दो के ज़हर को दूर कर सकती थी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वो जर्नी टू द वेस्ट की शुरुआती पैक्तियों को उद्धृत करते हैं लेकिन मूल रूप में थोड़े बदलाव के साथ।’

‘किस तरह?’ ली ने पूछा।

बुज़ांग ने दस्तावेज़ की कॉपी में से पढ़ना शुरू किया। ‘एक सौ दो हजार छह सौ साल पहले... ब्ला ब्ला ब्ला... ऊपर से मर्द और नीचे से प्लस, तीन बंदर और बीच में चमक।’ बुज़ांग ने गहरी सांस ली।

उसने कहा, ‘वे शब्द, ‘ऊपर से मर्द और नीचे से प्लस, तीन बंदर और बीच में चमक’, मूल उपन्यास में नहीं थे।’

और तभी ली के दिमाग में एक बात आई। ‘वे कलश अंगकोर वाट में कभी नहीं थे। लेकिन वे अंगकोर में थे!’ उसने चिल्लाकर कहा।

‘तुम्हारा मतलब क्या है?’ बुज़ांग ने गुराकर पूछा।

‘अंगकोर वाट के पास तीन मंदिर हैं और वे एक त्रिकोण में स्थित हैं,’ ली ने समझाया, उसकी आवाज़ में उत्साह साफ़ झलक रहा था। ‘नोम बोक, नोम बखेंग और नोम क्रॉम। इनका निर्माण अंगकोर वाट से सदियों पहले किया गया था और ये तीन अलग-अलग पहाड़ियों पर हैं।’

‘लेकिन इन मंदिरों का कलशों से क्या संबंध है?’ बुज़ांग ने पूछा।

ली ने कहा, ‘बोक शब्द का अर्थ प्लस है। और बखेंग का अर्थ है पौरुष या मर्दानगी। क्रॉम का मतलब नीचे है। तीनों मंदिर हिंदू त्रिदेव—ब्रह्मा, शिव और विष्णु के सम्मान में थे। शीर्ष पर बखेंग था जबकि बोक और क्रॉम आधार बनाते थे। ऊपर से मर्द और नीचे से प्लस, तीन बंदर और बीच में चमक। यह देखते हुए कि शक्तिवर्धक औषधि त्रिमूर्ति

के इन तीन पहलुओं से प्राप्त होते हैं, हमें बस इस त्रिकोण के केंद्र का पता लगाने की ज़रूरत है और वहीं पर हमें चमकता हुआ अमृत मिल सकता है।’

बुज़ांग ने राहत की सांस ली। वह जानता था कि ली सही कह रहा था। नोम बोक, नोम बखेंग और नोम क्रॉम बलुआ पत्थर के तीन मंदिर थे जो त्रिदेव—सृजन, विनाश और संरक्षण की तीन प्राथमिक शक्तियों को समर्पित थे। इनका निर्माण राजा जसोवर्णम प्रथम के शासनकाल में लगभग 910 में हुआ था। अधिकांश पर्यटक इस त्रिकोणीय रत्न को नज़रअंदाज़ कर देते थे क्योंकि यह सामान्य परिपथ से बहुत दूर स्थित था। इसके अलावा, नोम बोक तक जाने के लिए, 673 फुट ऊंची पहाड़ी की चौटी तक पहुंचने के लिए 633 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।

‘अंगकोर ज़्यादातर विष्णु से संबंधित है,’ ली ने कहा। ‘लेकिन ये तीन मंदिर तीनों शक्तियों—ब्रह्मा, शिव और विष्णु—से संबंधित हैं। यह अंगकोर का एकमात्र हिस्सा है जो इन तीनों को समर्पित है।’

पल्लव राजाओं के लिए सुदूर कंबोडिया में औषधि का अपना भंडार बनाए रखना तर्कसंगत होता, यह देखते हुए कि उनका और शासक परिवार के बीच खून का रिश्ता था। और अगर बमाहाओ, शिपो और पिशिनू से युक्त तीन कलश थे, तो वे कलश तीनों की पूजा करने वाले मंदिर परिसर के अलावा और कहां हो सकते थे?

## 88

मैं शीलभद्र के अधीन अध्ययन करते हुए दो वर्ष तक नालंदा में रहा। फिर मैंने उनसे यिन्दु के बाकी हिस्सों में घूमने जाने के लिए अनुमति मांगी। उन्होंने उदारतापूर्वक मुझे अनुमति दे दी लेकिन अनुरोध किया कि मैं चिना लौटने से पहले नालंदा वापस आऊँ। मैंने उनसे वादा किया कि मैं ऐसा करूंगा। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं चार साल और 3,000 मील की यात्रा के बाद नालंदा लौट पाऊंगा।

यिन्दु प्रायद्वीप के इस विस्तारित दौरे का एक आकर्षण यह था कि मैं संदेहवादी नागार्जुन, मेरे शिक्षक शीलभद्र के गुरु धर्मपाल और तर्कशास्त्री दिगनाग जैसे बौद्ध दार्शनिकों के जन्मस्थानों को देख सका।

अपनी यात्रा के दौरान, मैंने नालंदा के पूर्व में स्थित ईराना<sup>111</sup> के साथ-साथ पूर्वी समुद्र के सामने वाले क्षेत्र में समय व्यतीत किया। इस क्षेत्र में घने जंगल थे और यह हाथियों, काले तेंदुओं, गैंडों और भेड़ियों का घर था। लेकिन यह दस मठों और 4,000 से अधिक भिक्षुओं का भी घर था।

इसके बाद मैंने गाओहाटी<sup>112</sup> साम्राज्य की यात्रा की। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यहां से चिना के सी चुआन्लू की सीमा तक पहुंचने में केवल दो महीने लगेंगे, लेकिन ज़हरीले सांपों और हिसक जानवरों के कारण रास्ता जोखिम भरा था। गाओहाटी के लोगों के लिए कटहल का बहुत महत्व था और वे इसे बहुतायत में उगाते थे। यहां के राजा, कुमार, एक ब्राह्मण थे, लेकिन वे बौद्ध भिक्षुओं और ब्राह्मणों दोनों के साथ श्रद्धापूर्वक व्यवहार करते थे। लोगों ने मुझे बताया कि छह साम्राज्य<sup>113</sup> गाओहाटी के

पूर्व में स्थित थे।

दक्षिण की ओर जाते समय, मैं ताम्रलिप्ति<sup>114</sup> के बंदरगाह पर रुका जहां से फाह्यान ने चिना की वापसी की यात्रा शुरू की थी। यहां के लोगों ने मुझे बताया कि यिन्दु के सबसे दक्षिणी सिरे पर सिम्हाला<sup>115</sup> नामक एक द्वीप था। यह वह भूमि थी जहां सम्राट अशोक के पुत्र महेंद्र बौद्ध धर्म लाए थे। ऐसा कहा जाता था कि बुद्ध के एक दांत पर यहां एक मंदिर बनाया गया था और मैं इसे देखने के लिए बहुत उत्सुक था। ताम्रलिप्ति से समुद्र के रास्ते सिम्हाला जाया जा सकता था, लेकिन खराब मौसम और तेज़ समुद्री धारा इसे एक जोखिम भरी यात्रा बना देती थी। इसके बजाय, मुझे यिन्दु के सबसे दक्षिणी भाग तक सड़क मार्ग से जाने और फिर पथरीली पट्टिका<sup>116</sup> को पार करने की सलाह दी गई, जो सिम्हाला को यिन्दु से अलग करती थी।

मैंने यह सलाह मान ली और दक्षिण के राज्य उदरा<sup>117</sup> की ओर यात्रा शुरू की। महा समुद्री पत्तन<sup>118</sup> पर, मुझे लगा कि मैं सिम्हाला के मंदिर का टिमटिमाता प्रकाश देख सकता हूं, लेकिन मैं शायद गलत था क्योंकि वह हज़ारों मील दूर था। उदरा में मेरी नज़र पुष्पगिरि<sup>119</sup> मठ पर पड़ी, जहां सम्राट अशोक निर्मित सबसे पुराने स्तूपों में से एक मौजूद था। इसके बाद मैंने दक्षिण कोसल<sup>120</sup> में अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के बीच 'मध्यम मार्ग' के दर्शन का समर्थन करने वाले मध्यमिका स्कूल के संस्थापक नागार्जुन के घर को देखा। यहां का राजा जन्म से क्षत्रिय था, लेकिन उसकी बौद्ध धर्म में गहरी आस्था थी। उनका आधिकारिक संरक्षण उन सौ मठों में स्पष्ट देखा जा सकता था जो राज्यभर में फैले हुए थे और जिनमें 10,000 भिक्षु रहते थे।

अब मैं आंध्रदेश<sup>121</sup> की ओर चल पड़ा, जो दो शक्तिशाली नदियों<sup>122</sup> के बीच स्थित था। यह 'तर्क पर ग्रंथ' के लेखक दिगनाग का घर था, जो मैंने कश्मीर में पढ़ी थी। इसके बाद मैं धनकटका<sup>123</sup> गया, लेकिन यहां के मठ अधिकतर खाली थे। मुश्किल से बीस मठ इस्तेमाल में थे, और मैंने बरसात के मौसम का अधिकांश समय उन भिक्षुओं के साथ बिताया जो इनमें रहते थे, जिनकी संख्या लगभग 3,000 थी। मैंने पास के महान स्तूप<sup>124</sup> को देखने के लिए भी समय निकाला, जो अपनी उत्कृष्ट विहार नक्काशी के लिए जाना जाता था।

मैं द्रविड़<sup>125</sup> की ओर बढ़ा जहां से मैं पल्लवों की राजधानी और बौद्ध धर्म के एक मजबूत केंद्र कांसी<sup>126</sup> गया। कांसी संभवतः अपने गौरव के चरम पर थी। सैकड़ों देव मंदिरों के अलावा सैकड़ों महायान विहार और 10,000 से अधिक भिक्षु यहां पनप रहे थे। कांसी के आश्चर्यों में सम्राट अशोक का बनवाया गया सौ फुट ऊंचा स्तूप भी शामिल था। कांसी के लोग साहसी थे। वे ईमानदारी और सच्चाई के सिद्धांतों को अतिप्रिय मानते थे। उनमें से अधिकांश में शिक्षा के प्रति सम्मान था। इस शहर में कई गैर-बौद्ध भी रहते थे, लेकिन बौद्ध धर्म में किसी भी तरह की गिरावट नहीं दिखती थी।

कांसी जाने की मेरी इच्छा के पीछे एक विशेष कारण था। किआपिशी के भिक्षुओं के साथ मैंने जिस खज़ाने का पता लगाया था, उसमें एक तलवार थी जिस पर 'कांग-ज़ी'

शब्द अंकित था। मैंने मान लिया था कि इसका तात्पर्य सुगंधित भूमि गांधार से था। वज्र ने मुझे बताया था कि बंधक बनाए गए राजकुमार ने कांसी का जिक्र किया होगा, जिसे फूलों और सुगंध के शहर के रूप में जाना जाता था। निश्चित रूप से, इनके उच्चारण में समानता उल्लेखनीय थी। मैं जानता था कि शाओलिन के भिक्षुओं की कई शिक्षाएं महान कर्मयोगी बोधिधर्मा से आई थीं, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे कांसी के राजकुमार थे। मेरी अंतरात्मा मुझे कह रही थी कि डि सैन सू चुआन की मेरी पदवी केवल कांसी में मेरे किए गए कामों के माध्यम से ही आएगी।

मैं कांसी पहुंचा और जल्द ही मुझे महान पल्लव सम्राट नरसिंहवर्मन से मिलने का मौका मिला। राजा एक भव्य महल में रहते थे, जो पूरी तरह से लकड़ी और ईंट से बना था, पल्लव मंदिरों के विपरीत, जो पत्थर से बने थे। मैं केंद्रीय गलियारे से गुजरा जिसके दोनों ओर लकड़ी के विशाल स्तंभों की कतार थी। उन स्तंभों में नीचे की ओर पल्लव प्रतीक चिन्ह—शेरों की नक्काशी की गई थी।

आगे, राजा अति सुंदर आभूषणों से सुसज्जित, लकड़ी के एक निचले सिंहासन पर बैठे थे। उनके कानों में बेलनाकार कुंडल लटक रहे थे और उनकी छाती पर तिरछी पहनी गई कीमती पत्थरों से जड़ी एक मोटी सुनहरी पट्टी थी। उनके सिर पर एक छोटा सा मुकुट था जिनमें काफी सारे रत्न जड़े हुए थे और ताजे फूल भी लगे हुए थे। उनके पूरे शरीर पर आभूषण थे—उनका गले का हार, बाजूबंद, कलाईबंद और कधनी। उन्होंने कमर पर एक लंबा रेशमी कमरबंद लपेट रखा था जिसके सामने एक अर्ध-गोलाकार फंदा बना हुआ था। उनसे सकारात्मक ऊर्जा और गतिशीलता झलक रही थी।

राजा उदार थे और उन्होंने मेरे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया, लेकिन उनका ध्यान अपने कट्टर शत्रु चालुक्य राजा पुलकेशिन को हराने पर लगा हुआ था। मैं दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगा कि क्या मैं किसी तरह से उनकी मदद कर सकता था।

उस समय एक धर्मनिष्ठ बौद्ध कांसी में रह रहा था। सिंहाला का राजकुमार मानवर्मा, जिसे उसके राज्य से निर्वासित कर दिया गया था। मेरी उससे कई बार भेंट हुई क्योंकि मुझे उसके देश में जाकर दंत मंदिर को देखने में रुचि थी। लेकिन सिंहाला में खराब मौसम, अकाल और गृहयुद्ध की वजह से यह अब असंभव लग रहा था।

मानवर्मा और मैं अच्छे दोस्त बन गए और मैंने उसे यूं ही सुझाव दिया कि वह पुलकेशिन के खिलाफ लड़ाई में राजा नरसिंहवर्मन की सहायता करे। इसके बदले में मानवर्मा को अपना सिंहासन वापस पाने में राजा मदद कर सकते हैं। यह विचार उसे पसंद आया और उसने तुरंत ऐसे लोगों को एकत्र करना शुरू कर दिया जो व्यक्तिगत रूप से उनके प्रति निष्ठावान थे और नरसिंहवर्मन की सशस्त्र सेनाओं को और मजबूत कर सकते थे।

इसके बाद राजा ने मुझे एक और बार मिलने के लिए बुलाया और मुझसे सलाह मांगी कि क्या उन्हें पुलकेशिन पर आक्रमण करना चाहिए। मैंने उत्तर दिया, 'दार्शनिक लाओत्से कहते हैं कि शस्त्र अपशकुन के साधन हैं; वे राजपुरुष के साधन नहीं हैं, जो

उनका इस्तेमाल केवल उस समय करता है जब उसे इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। राजपुरुष शांति और स्थिरता को महत्व देते हैं।' नरसिंहवर्मन ने मेरी सलाह मानी और प्रतीक्षा की।

कुछ ही समय बाद, पुलकेशिन ने एक बार फिर कांसी पर कब्ज़ा करने की कोशिश की और पल्लवों और चालुक्यों के बीच युद्ध हुआ। इससे दोनों साम्राज्यों के बीच लंबे समय तक संघर्ष चला। नरसिंहवर्मन ने पुलकेशिन को कई युद्धों में हराया, जिनमें से एक युद्ध कांसी से सिर्फ बीस मील पूर्व में लड़ा गया था। उन्होंने उस जीत के बाद चालुक्य राजधानी वातापी<sup>127</sup> पर आक्रमण किया, जिसमें पुलकेशिन मारा गया। विजयी होने पर, उन्हें वातापिकोंडन, या 'जिसने वातापी पर विजय प्राप्त की' की उपाधि दी गई।

## 89

कंबोडिया की राजधानी नोम पेन्ह में, सिर पर स्ट्रॉ हैट लगाए एक चीनी आगंतुक संगकट वाट नोम क्षेत्र में अमेरिकी दूतावास के दरवाज़े पर पहुंचा। उसने विनम्रतापूर्वक राजनीतिक मामलों के राजनयिक से मिलने की इच्छा जताई। उसने ऐहतियातन अपने चेहरे का ज्यादातर भाग टोपी और धूप के चश्मे से छिपा रखा था। सुरक्षा गार्ड ने आगंतुक को संदेह भरी नज़रों से देखा। दुनियाभर में अमेरिकी राजनयिक प्रतिष्ठानों को जिन आतंकी खतरों का सामना करना पड़ा था, उसे देखते हुए गार्डों को उन आगंतुकों को अंदर नहीं आने देने के सख्त आदेश थे जिन्होंने पहले से कोई अपॉइंटमेंट नहीं लिया था।

दूतावास चार मंज़िला एक साधारण लेकिन सफेद रंग की इमारत थी जिसके चारों तरफ सुसज्जित लॉन था। आगंतुक जहां खड़ा था, वहां स्टील के दरवाज़ों की दरारों में से वह उस इमारत को देख सकता था।

‘मुझे माफ कीजिए, सर,’ गार्ड ने कहा। ‘मैं आपको दूतावास आईडी या अपॉइंटमेंट पास के बिना अंदर नहीं जाने दे सकता।’

‘अगर आप मुझे राजनीतिक मामलों के राजनयिक से मिलने नहीं देंगे तो मुझे मार दिया जाएगा,’ आगंतुक ने घबराई हुई आवाज़ में कहा। ‘मुझे अंदर आने की ज़रूरत नहीं है। क्या आप उन्हें मुझसे मिलने के लिए बाहर बुला सकते हैं?’

गार्ड ने अपनी बेल्ट पर लगे वॉकी-टॉकी को निकाला और उसमें बोलने लगा। ‘गेट पर राजनीतिक मामलों के राजनयिक से मिलने के लिए कोई खड़ा है,’ उसने कहा। ‘उसके पास कोई अपॉइंटमेंट पास नहीं है। उसका दावा है कि उसकी जान को खतरा है।’

दूसरी ओर से जो कुछ बोला गया, उसे गार्ड ने सुना। उसने अपने टू-वे रेडियो को एक तरफ किया और आगंतुक से कहा, ‘जिस सज्जन से आप मिलना चाहते हैं, वो एक सामाजिक कार्यक्रम में बाहर गए हैं। हालांकि, सांस्कृतिक अधिकारी आपसे मिलने के लिए बाहर आ रहे हैं। कृपया कुछ देर इंतज़ार करें।’

आगंतुक ने गाड़ को धन्यवाद दिया और थोड़ा हटकर एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। उसने अपने बैगी कार्गो पैंट से रूमाल निकाला और अपना चेहरा पोंछा। हालांकि, उसने अपनी टोपी और धूप का चश्मा लगाए रखा।

कुछ मिनट बाद, लाल चेहरे वाला एक नाटा अमेरिकी बाहर आया, जिसने ऐसी बुशर्ट पहनी थी, जो उसके लिए काफी छोटी थी। 'मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?' उसने पूछा। 'मैं यहां अमेरिकी दूतावास में सांस्कृतिक अधिकारी हूँ।'

'बाहर आने के लिए धन्यवाद,' आगंतुक ने कहा। 'दुर्भाग्य से, मुझे जो कहना है, वह केवल राजनीतिक मामलों के राजनयिक के साथ ही साझा किया जा सकता है।'

'केवल वही क्यों?' अधिकारी ने पूछा।

'क्योंकि वो यहां नोम पेन्ह में सीआईए के आधिकारिक प्रतिनिधि हैं।'

अधिकारी ने तुरंत जवाब में कहा, 'कृपया अंदर आइए और लॉबी में बैठिए। इस बीच, मैं उनसे फ़ोन पर संपर्क करने की कोशिश करूंगा।'

जैसे ही स्टील का गेट एक तरफ़ खिसका और आगे बढ़ा, आगंतुक ने गार्ड को धन्यवाद दिया। गेट के ठीक सामने एक बूथ पर उसकी तलाशी ली गई। फिर, सांस्कृतिक अधिकारी के साथ, वह मोटे भूरे ग्रेनाइट के खंभों की कतारों के बीच से होते हुए दूतावास में दाखिल हुआ। धातु और कांच के दरवाज़ों के बाईं ओर ग्रेनाइट पत्थर की एक पट्टी पर संयुक्त राज्य अमेरिका का एक बड़ा प्रतीक चिह्न लगा हुआ था। अधिकारी ने उसे आगंतुकों के क्षेत्र में एक सोफे पर बैठने के लिए कहा और सुरक्षा गार्ड को इशारा दिया, जो इस अजीब आदमी पर नज़र रखने के लिए आगे आ गया। आगंतुक ने दूतावास के अंदर के शांत और ठंडे वातावरण के बावजूद भी अपना धूप का चश्मा और टोपी नहीं उतारी थी।

लगभग पैंतालीस मिनट के बाद, राजनीतिक मामलों के राजनयिक आए। उन्होंने आगंतुक की ओर बढ़ते हुए अपना धूप का चश्मा उतारा और अपना हाथ बढ़ाया। आगंतुक अपनी कुर्सी से उठा और उसने उनसे हाथ मिलाया। 'मेरे ऑफिस में आइए, हम वहां बात कर सकते हैं,' राजनयिक ने आगे बढ़ते हुए कहा।

एक बार जब वे बैठ गए, तो आगंतुक को ठंडे पानी की एक बोतल दी गई, जिसे उसने आभार जताते हुए ले लिया। उसने अपनी टोपी और धूप का चश्मा उतारा और फिर अपना चेहरा पोंछते हुए साफ़ किया।

राजनयिक ने तुरंत ही उसे पहचान लिया। फोटो उनके पास पहले ही पहुंच गई थी।

पलभर की खामोशी रही, जो आगंतुक द्वारा अपनी बुशर्ट की जेब से अपना पासपोर्ट निकालने और राजनयिक की मेज पर रखने के पहले तक, उसकी झिझक को दिखा रही थी। 'मेरा नाम ली झोऊ है। मैं अंगकोर में एक विशेष चीनी खोजी अभियान दल का लीडर हूँ। मैं दिल्ली में मार्क रिचर्ड्स के साथ उनके एंटीक डीलर के माध्यम से संपर्क में हूँ। मिस्टर रिचर्ड्स ने आपको मेरे बारे में पहले ही बता दिया होगा। अगर अमेरिका मुझे पनाह देता है तो मैं आभारी रहूंगा।'

पैम, राव और अनु निराश होकर मीटिंग से निकल आए। जनरल ठाकुर से बहस करना अप्रिय और बेमतलब साबित हुआ था। वे पैम की कार के पास गए और अंदर बैठ गए। अचानक एक चौथे व्यक्ति ने पीछे का एक दरवाज़ा खोला और उनके साथ अंदर आ गया। 'हौज खास की ओर चलो,' वीटीके ने आदेश दिया। 'मैं बाद में समझाऊंगा।'

वे चुपचाप गाड़ी चलाते रहे और पुरानी टैंक के पास एक सुनसान सी जगह पर गाड़ी खड़ी कर दी। वीटीके राव की तरफ मुड़े। 'कितने लोग तथाकथित नेसस प्रभाव के बारे में जानते थे? यह सच कि दो प्राचीन औषधियां विषाक्तता पैदा कर सकती हैं और इसे एक तीसरी औषधि खत्म कर सकती है?'

'यह मुझे पता थी और हमारी हाल की चर्चाओं के कारण अब पैम और अनु को भी पता है,' राव ने जवाब दिया। 'यह बात पैम के पिता कर्नल किशन खुराना को भी पता थी।'

'क्या इसका जिक्र कहीं और किया गया था? किसी और के साथ बातचीत में? या किसी के साथ किसी भी तरह के पत्राचार में?' वीटीके ने पूछा।

राव ने जवाब दिया, 'मैंने पैम को जो दस्तावेज़ दिया था उसमें एक बार इसका जिक्र किया गया था।'

वीटीके ने कहा, 'उस दस्तावेज़ को पढ़ने वाली इकलौती शख्स रॉ की चीन और दक्षिण पूर्व एशिया डेस्क की प्रमुख जया थी। लेकिन इस जानकारी का इस्तेमाल जनरल ठाकुर ने तब किया जब हम लोगों की गरमा-गरम बहस हो रही थी। उसे इसके बारे में कैसे पता चला, जब तक जया ने उसे न बताया हो? और जया उसे क्यों बताएंगी? जब तक वे लोग एक साथ काम नहीं कर रहे हों?'

पैम बात करने से झिझक रही थी। वो सोच में पड़ गई थी कि क्या उसे वीटीके पर भरोसा करना चाहिए। आखिर उसे जीपीएस चिप के बारे में पता चल गया था। फिर भी पैम ने जोखिम उठाने का फैसला किया।

'जया ने ही मुझे भटकाने की कोशिश की थी,' उसने कहा। 'उसने मुझे बताया था कि दस्तावेज़ केवल जर्नी टू द वेस्ट का अनुवाद है। लेकिन जैसा कि अब पता चला है, इसमें उपन्यास के कुछ हिस्सों के अलावा और भी बहुत कुछ था।'

पैम कुछ देर रुकी। वो जानती थी कि उसे अपना डर हर हाल में निकालना होगा। 'आपको कैसे पता चला कि मैंने डॉ. राव को पल्लव काल का जो सिक्का दिया था, उसमें जीपीएस चिप थी?' उसने सीधे सपाट शब्दों में पूछा। 'मैंने किसी को नहीं बताया था। मुझे याद नहीं आ रहा है कि कभी मैंने आपसे इसका जिक्र किया था।'

वीटीके थोड़ा झिझके। वो समझ नहीं पा रहे थे कि राव और अनु के सामने उन्हें किस हद तक बात बतानी चाहिए।

पैम ने ललकारते हुए कहा, 'इन दोनों ने अपनी ज़िंदगी भारत के लिए काम करते हुए बिताई है और गद्दारों ने उन्हें इसके लिए सज़ा दी है। मुझे नहीं लगता कि उन्हें हमें

वफ़ादारों का साटोफ़ेकट देने की ज़रूरत है।’

वीटीके ने सहमति में सिर हिलाया। ‘अब हम जो भी बातचीत कर रहे हैं, वो यहीं तक रहनी चाहिए। इसके बाहर जाने के नतीजों के बारे में हम सोच भी नहीं सकते।’

गहरी सांस लेते हुए उन्होंने पैम से कहा, ‘तुमने उस जीपीएस चिप के बारे में किसी को बताया था। तुमने मार्क रिचर्ड्स को बताया। सीबीटीटी में मार्क की टीम ने ही तुम्हारे लिए चिप लगाई थी।’

‘और मार्क ने आपको बताया?’ खुद को ठगा हुआ महसूस करते हुए पैम ने पूछा।

उसे ठाकुर के साथ अपनी बातचीत याद आ गई जब उसने जनपथ में पुराने सामानों की दुकान के मालिक से मार्क की मुलाकात की तस्वीर पैम को भेजी थी। शक है कि चीनी मूल के दुकान मालिक के विदेशी खुफिया एजेंसियों से संबंध हो सकते हैं। मैं पक्का नहीं कह सकता कि मार्क को लेकर कोई समस्या है लेकिन साथ ही मैं तुम्हें यह भी नहीं कह सकता हूँ कि ऐसा नहीं है। अपने और उसके बीच कुछ दूरी रखो और उसे कोई नई जानकारी नहीं दो। क्या कोई ऐसा बचा था जिस पर वो भरोसा कर सकती थीं?

‘हां,’ वीटीके ने थोड़ा ज़ोर देकर जवाब दिया। ‘मार्क ने मुझे बताया था। इतना ही नहीं, उसने मुझे लाइव जीपीएस लोकेशन की सुविधा मुहैया करवाई जैसे उसने तुम्हें दी थी।’ वीटीके ने पैम के हताश चेहरे को देखा, फिर कहा, ‘इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए, यह देखते हुए कि मार्क मोसाद के लिए काम करता है। और मोसाद भारत और अमेरिका दोनों के साथ मिलकर काम करता है।’

सारे पर्दे अब खुलते जा रहे थे। पैम को अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकती हुई महसूस हो रही थी। ‘मोसाद?’ उसने पूछा।

‘भारतीय और इज़रायली खुफिया विभाग सालों से एक साथ काम कर रहे हैं,’ वीटीके ने कहा। ‘तुम्हें क्या लगता है कि मार्क को सीबीटीटी की मूल कंपनी एक्सटेक, जिसका मुख्यालय तेल अवीव में है, ने काम पर क्यों रखा था? और सीबीटीटी भारत सरकार के साथ शुरू किया गया ज्वाइंट वेंचर क्यों है? यह इज़रायल से भारत में उच्च प्रौद्योगिकी का एक गुप्त हस्तांतरण है। मार्क की कंपनी ने अतीत में डॉ. राव को नौकरी पर रखने की कोशिश क्यों की थी? ठीक इसी वजह से। यहां तक कि उन दिनों जब भारत और इज़रायल के बीच आधिकारिक संबंध नहीं थे, मोसाद और राँ एक साथ काम कर रहे थे। सच्चाई यह है कि मेरी शुरुआती ट्रेनिंग का बड़ा हिस्सा तेल अवीव में ही हुआ था।’

‘मैंने सोचा था कि मार्क कॉर्पोरेट जगत में जाने से पहले, यूएस मरीन और फिर सीआईए के साथ था,’ पैम ने धीरे से कहा।

‘बिल्कुल था। जब वह सीआईए में था, तो उसने थाईलैंड में एक युवा जासूस के तौर पर कुछ समय बिताया। दुर्भाग्य से, खमेर रूज, जिन्हें हाल ही में कंबोडिया से बाहर निकाला गया, ने खुद को थाईलैंड के जंगलों में बसा लिया था। अमेरिकी सार्वजनिक रूप से खमेर रूज की निंदा करते थे लेकिन निजी तौर पर उनकी मदद करते थे, बेहद होशियारी के साथ। एजेंसी को आगाह करते रहने के लिए खमेर रूज की

थाईलैंड शाखा में घुसपैठ करने में मार्क शामिल था। जब उन्हें पता चला कि मार्क एक घुसपैठिया और जासूस था, तो उसे पकड़ लिया गया और उनके एक शिविर में यातना दी गई। यहां से उसे मोसाद के एक जासूस ने बाहर निकाला। मार्क अपनी इस ज़िंदगी के लिए मोसाद का एहसानमंद है।

पैम को अब अपना सिर घूमता सा महसूस हुआ क्योंकि उसका मन इतनी सारी नई जानकारियों को स्वीकार करने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसने वीटीके को लेकर एक दांव और चलने का फैसला किया।

‘क्या आप जानते हैं कि जया और शेंगली नाम का मतलब एक ही है—जीत?’ उसने पूछा।

वीटीके का चेहरा देखने लायक था। पैम यह समझ नहीं पाई कि क्या यह इस नई जानकारी की प्रतिक्रिया थी या फिर उसके इस छोटी सी बात को खुद नहीं समझ पाने की खीझ थी।

‘इतने समय से वह मेरी नज़रों के सामने ही रही है,’ उन्होंने कहा, वो जैसे फुसफुसाकर बोलने लगे थे। ‘मैं इतनी छोटी सी बात क्यों नहीं समझ पाया?’

‘वह बहुत चालाक है,’ पैम ने कहा। ‘उसने मुझसे कहा कि मैं राव के दस्तावेज़ के बारे में किसी को न बताऊं क्योंकि वह जानना चाहती थी कि कोई छिपा हुआ कोड तो नहीं था। दरअसल, वह चाहती थी कि दस्तावेज़ पहले चीनी हाथों में पहुंचे और यह सुनिश्चित हो जाए कि कोई और मुझे उसके बताए गए विवरण का खंडन न करे।’ पैम ने कुछ सोचा, फिर पूछा, ‘यह चीनी मूल का दुकानदार कौन है जिससे मार्क मिला था?’

‘एक तस्कर। वह आमतौर पर प्राचीन वस्तुओं की तस्करी करता है, लेकिन कभी-कभी लोगों की भी तस्करी करता है। कंबोडिया, वियतनाम, थाईलैंड जैसे देशों और एशिया के ज्यादातर देशों में उसके बहुत दमदार संपर्क हैं। और एजेंसियों के लिए उसकी ऐसी अहमियत की वजह से कोई भी उसकी तस्करी पर रोक लगाने के लिए उसकी दुकान पर छापा मारने की जहमत नहीं उठाता। मार्क ने उससे बातचीत की क्योंकि हमें तीन चीनी नागरिकों को सुरक्षित रूप से देश से बाहर ले जाना था।’

‘कौन?’ पैम ने पूछा।

‘मुझे वैसे तो तुम्हें इस बारे में कुछ भी नहीं बताना चाहिए था। लेकिन मुझे लगता है कि आज हमें कुछ नियम-कायदों को छोड़ना होगा ताकि हम वास्तव में उस गड़बड़ी से बाहर निकलें जिसमें हम फंस गए हैं। हाल में जिस शख्स को हम तस्करी के ज़रिए चीन से बाहर निकालना चाहते हैं, वह है चीन के एडम और ईव परियोजनाओं का प्रमुख एर्किन चोंग।’

‘दल-बदल?’ पैम ने पूछा।

वीटीके ने हां में सिर हिलाया। ‘एर्किन शिन्जियांग का एक मुस्लिम उइगर है। वह शख्स काफी प्रतिभाशाली है और तमाम मुश्किलों के बावजूद उसने स्टैनफोर्ड में मास्टर और फिर डॉक्टरेट की डिग्री पूरा करने के लिए छात्रवृत्ति हासिल की। वह कभी भी चीन वापस नहीं गया होता, अगर बुज़ांग ने उस पर कोई दबाव नहीं डाला होता।’

‘कैसा दबाव?’ पैम ने पूछा।

‘उसकी मां को री-एजुकेशन कैंप में रखा गया था। एर्किन चीन की मानव इंजीनियरिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दोहरी रणनीतियों का एक प्रमुख हिस्सा है। जब चीन में सीआईए का नेटवर्क चीनी एमएसएस ने नेस्तानाबूद कर दिया, तो एर्किन को मोसाद के माध्यम से भर्ती किया गया था। विडंबना है कि एक मुसलमान की डोर अब यहूदियों के हाथ में थी!’

‘एर्किन अब कहां है?’ पैम ने पूछा।

‘उसे दक्षिण कोरिया के रास्ते तस्करी कर लाया गया है और लंदन में मोसाद-सीआईए के गुप्त ठिकाने पर रखा गया है। उसे जल्द ही अमेरिका भेज दिया जाएगा।’

‘और बाकी दो?’ पैम ने पूछा।

‘हमें एर्किन की मां को उस पुनर्शिक्षा शिविर से बाहर निकालना था जहां वह रह रही थी। उसके बिना वह टस से मस होने को तैयार नहीं था। हम उस कोशिश में सफल भी हुए हैं।’

‘तीसरा शख्स अंगकोर वाट खोजी अभियान मिशन का चीनी प्रमुख ली झोउ है। हमें डर था कि उसकी टीम पता नहीं क्या खोज निकालेगी। बाद में पता चला कि उन्हें कुछ नहीं मिला। लेकिन हम कोई खतरा नहीं उठा सकते थे। हमारे सैनिक मर रहे थे और हमें हालात सुधारने का कोई रास्ता निकालना था। जैसा कि हमने देखा, ऐसा करने के केवल तीन तरीके थे। पहला, चीन के वैज्ञानिक अनुसंधान में खलल पैदा करें। दूसरा, अंगकोर में उनका खेल बिगाड़ें। तीसरा, भारत में औषधि खोजें और उन्हें भारतीय सैनिकों के लिए इस्तेमाल करें। हमने तीनों संभावनाओं पर काम किया।’

पैम के दिमाग में एक साथ कई सवाल तैर रहे थे। ‘उस दिन, जब गोलीबारी हुई, मुझे मार्क पर संदेह था क्योंकि सीबीआई टीम ने मुझे बताया था कि गोलियों के चलने की दिशा से संकेत मिलता है कि मैं उसके निशाने पर मैं थी। मेरे मन में सवाल भी आया था कि क्या मार्क ने शूटर को उस जगह के बारे में बताया था जहां हम मिले थे।’

‘यह बकवास है,’ वीटीके ने कहा। ‘ठाकुर अपना अनौपचारिक खुफिया नेटवर्क चला रहा था। उसे पूरी जानकारी के लिए मुझ पर या राँ पर भरोसा नहीं था। तुम्हें जो बताया गया वह ठाकुर के आदेश पर, और कुमार के माध्यम से सीबीआई की गलत सूचना थी, ताकि तुम्हारा भरोसा मार्क से उठ जाए।’

वीटीके थोड़ी देर के लिए ररुका। उसने कहा, ‘लेनिनवादी लिबरेशन लीग तुम्हारे पीछे नहीं थी। दरअसल, चीनी इस उम्मीद में थे कि तुम कलश ढूँढ़ निकालोगी। इसलिए उन्होंने डॉ. राव, अनु और तुम पर लगातार निगरानी रखी। बुजांग चाहता था कि तुम्हें नहीं, मार्क को खत्म किया जाए क्योंकि उसके मरने पर चीन के भेद सुरक्षित हो जाएंगे।’

पैम चुप रही और इस आखरी जानकारी को भी पचा लिया।

‘क्या तुम जानती हो कि किसने सुनिश्चित किया कि तुम्हें यह मामला सौंपा जाए?’ वीटीके ने पूछा।

पैम ने जवाब दिया, 'जनरल ठाकुर ही थे जिन्होंने मुझे शुरू में सीओएससी की चर्चा में बुलाया था।'

'वह बस प्रधानमंत्री के निर्देशों का पालन कर रहा था। ठाकुर यह मामला तुम्हें सौंपने का इच्छुक नहीं था। ये प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने मेरे माध्यम से यह सुनिश्चित किया कि सीओएससी बैठक में सेना प्रमुख के ज़रिए तुम्हारा नाम आगे बढ़ाया जाए।'

'लेकिन पीएम को मेरी ज़रूरत क्यों होगी?'

'क्योंकि तुम कर्नल किशन खुराना की बेटी हो। वो जानते थे कि अगर कोई है जिस पर वो भारत में चीनी समर्थकों को बेनकाब करने का भरोसा कर सकते हैं और जो डॉ. राव को यहां ला सकता है, तो वो तुम ही होगी।'

राव पैम को देखकर मुस्कुराए। 'प्रधानमंत्री का अनुमान सही था। मैं कभी भी किसी और के साथ जानकारी साझा नहीं करता। तुम्हारे पिता मेरे लिए भाई के समान हैं—थे। अगर हम दोनों को योजना के अनुसार आगे बढ़ने की इजाज़त दी गई होती, तो भारतीय विशेष बल दुनिया के लिए ईर्ष्या का विषय होता। वास्तव में, मैंने तुम्हें कलशों का मूल स्थान भी बताया है—मेरे तीन बंदर जिनके नाम हैं बोक, बखेंग और क्रॉम। ऊपर से मर्द और नीचे से प्लस, तीन बंदर और बीच में चमक।'

पैम ने कहा, 'मैं बेवकूफ़ थी कि इसे समझ नहीं पाई। यहां तक कि जया ने भी आपके संदेश का गहरा अर्थ होने की संभावना की ओर इशारा किया था। उसे नज़रअंदाज़ करना मेरी मूर्खता थी।'

'यह दुश्मनों को मूल स्थान की जानकारी हासिल करने से रोकने के लिए था,' राव ने कहा। 'मैं वू चेंगेन के नक्शेकदम पर चल रहा था। जर्नी टू द वेस्ट में बंदर के किरदार को लाकर, वह भी इस तथ्य की ओर इशारा कर रहा था कि ह्वेनसांग के पास कुछ ऐसा था जो उसे बंदर जैसी ताक़त दे सकता था। शायद यही वजह थी कि यह किताब छद्म नाम से लिखी गई थी। यह दूसरों को, खासकर दुश्मन समझे जाने वाले लोगों तक, ज़्यादा जानकारी पहुंचने से रोकने का एक तरीका था।'

'भारत को बाहर से दुश्मनों की ज़रूरत नहीं है,' पैम ने कहा। 'अंदर ही बहुत हैं। जया की तरह।'

'और ठाकुर,' वीटीके ने कहा। 'केवल उसके जैसा सीनियर आदमी ही राव के कार्यक्रम को नुकसान पहुंचा सकता था। और वो इतना तेज़ था कि हमेशा चीन विरोधी छवि बनाए रखता था। अब भी, वो केवल उन कलशों को पाना चाहता था ताकि वो उनका इस्तेमाल चीनियों के लिए कर सके, हमारे भारतीय सैनिकों के लिए नहीं।'

'लेकिन अगर हमारे पास कोई औषधि नहीं होगी तो हम अपने सैनिकों को दूसरे हमले से कैसे बचा सकते हैं?' पैम ने पूछा।

'उसकी कोई ज़रूरत नहीं,' वीटीके ने जवाब दिया। 'एरिक चोंग की डीब्रीफ़िंग लंदन में शुरू हो गई है। चीनियों के पास केवल दो औषधियां हैं, तीसरी नहीं, इसलिए ईव कार्यक्रम किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाया है। जो लोग मौजूदा मिश्रण का सेवन कर रहे हैं वे नेसस प्रभाव से मर रहे हैं जिसकी हमने अभी चर्चा की थी। वैसे भी, चीनियों

को उस बंजर इलाके पर अपना कब्जा बनाए रखने में कोई दिलचस्पी नहीं है, जिसे उन्होंने हड़पा है। वे भारत को अपनी वैश्विक क्षमताओं के परीक्षण के लिए खेल के मैदान के तौर पर देख रहे हैं।’

‘उनके पास एडम प्रोग्राम के रोबोट भी हैं,’ पैम ने प्रतिवाद किया।

‘उस कार्यक्रम में काफी गड़बड़ियां हैं,’ वीटीके ने कहा। ‘बहुत सारी गड़बड़ियां हैं। भ्रम फैलाने वाली चुनिंदा खबरें ही कार्यक्रम में बड़ी सफलता हासिल करने का दावा कर रही हैं, जिन्हें लोक कराया जा रहा है। लेकिन यह चीनी राष्ट्रपति को चुप रखने के लिए बुजांग का कदम भर है। दोनों व्यक्तियों में गंभीर वैचारिक मतभेद हैं। इतना ही अपने आप में काफी है।’

## 91

जब मार्क से मिलने के लिए पैम अस्पताल आई तो उसे आईसीयू से एक प्राइवेट कमरे में शिफ्ट कर दिया गया था। वह गलियारे को पार कर सीबीटीटी कर्मियों से मिलीं, जो उसके ठीक होने के दौरान बारी-बारी से उस पर निगरानी रख रहे थे। पैम ने उन्हें दिल से शुक्रिया कहा और मार्क की सेक्रेटरी को तो गले भी लगाया, जो उसके इस तरह के उत्साह से थोड़ी अचंभित रह गई। फिर पैम ने दरवाज़ा खोला और मार्क के कमरे में चली गई।

एक नर्स मार्क की आईवी लाइन में बहाव की जांच कर रही थी। जब तक नर्स अपना काम खत्म करके कमरे से बाहर नहीं निकल गई, तब तक पैम और वो एक-दूसरे को चुपचाप देखते रहे।

जब पैम वहां खड़ी होकर उसे देख रही थी, तो उसे महान दार्शनिक खलील जिब्रान के शब्द याद आ गए कि एक नदी केवल समंदर में समा कर ही अपने डर से छुटकारा पा सकती है। जैसे ही वह समंदर में प्रवेश करेगी, उसे अहसास होगा कि यह अनुभव समंदर में समाने का नहीं, बल्कि समंदर बनने का है। पैम सोच रही थी कि क्या वो वैसी नदी बनने के लिए तैयार थी। काफी देर की चुप्पी के बाद उसने बोलना शुरू किया। ‘क्या तुम मेरी मुखबिरी कर रहे थे?’ उसने धीरे से पूछा।

मार्क ने हां में सिर हिलाया। ‘चीनियों को नहीं, केवल मोसाद और वीटीके को।’

‘क्यों?’

‘थाईलैंड में मेरे भयानक अनुभव के बाद से, जहां मुझे यातना दी गई, फिर मोसाद ने मुझे बचाया, मैं मोसाद के कई प्रोजेक्ट्स देख रहा हूं। इज़रायल के चीन के साथ मज़बूत सैन्य संबंध हैं, लेकिन वे भारत से भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं क्योंकि दोनों लोकतांत्रिक देश हैं जो इस्लामी कट्टरवाद से लड़ रहे हैं। मेरा एक उद्देश्य भारत-चीन शक्ति संतुलन को भारत के पक्ष में मोड़ना रहा है। राव को बाहर निकालने के लिए मुझे तुम्हारी ज़रूरत थी। इसके साथ ही, मुझे यह भी सुनिश्चित करना था कि तुम्हारी खोज चीनियों तक न पहुंचे। जया की वजह से मैं असफल रहा, लेकिन...’

‘लोकेन?’

‘चीनियों के पास पिशिनू नहीं है,’ मार्क ने कहा। ‘साथ ही हमने यह सुनिश्चित किया है कि एर्किन चोंग और उसकी मां उनके चंगुल से बाहर हो जाएं। हम ली झोऊ को भी बाहर निकालने में कामयाब रहे और उन्होंने हमें भरोसा दिलाया है कि अंगकोर में कोई औषधि नहीं मिली।’

‘तुमने अपने ऊपर मेरा भरोसा खत्म कर दिया, मार्क,’ पैम ने कहा। पैम को मार्क की आंखों में उदासी देखी। ‘और ऐसा कैसे है कि तुम्हें इस मामले से जुड़ी सारी ताज़ा जानकारी है?’

‘मैं तुम्हें बचाने की भी कोशिश कर रहा था, पैम। तुम किसी की भी मदद लेने को तैयार नहीं होती। छिपकर तुम्हारी हिफाजत करना आसान था।’

‘मुझे तुम्हारा अहसान नहीं चाहिए!’ उसने पलटकर जवाब दिया। इकलौता शख्स जो उसे इस तरह प्रभावित कर सकता था, वो मार्क था। ‘तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मुझे तुम्हारी आभारी होना चाहिए?’

‘तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। वीटीके के पास इस बात के अपने कारण रहे होंगे कि मैं तुम पर नज़र रखूं। जब तुमने अचानक मुझे अपनी जांच में मदद के लिए बुलाया, तो मैंने तुम्हारी हिफाजत का जिम्मा उठाया। कभी-कभी तुम्हें लगता था कि तुम पर नज़र रखी जा रही है। तुम पर लोगों की नज़र थी भी। न केवल ठाकुर और जया के बदमाशों की, बल्कि मेरे जासूसों की भी।’

‘उससे कैसे मदद मिली?’

‘देव को जया ने मार डाला। राव और अनु का अपहरण करने वाले गुंडे भी जया के आदमी थे। टुक विस्फोट में मरने वाले गुंडे को उसकी ही मालिक जया ने मरवा डाला। लेकिन तुम सुरक्षित हो। इसकी तो गिनती होनी चाहिए।’

देव मर गया? पैम को लगा कि वो भी उसकी मौत के लिए जिम्मेदार थी।

गहरी सोच में डूबी पैम जाने के लिए उठी।

‘मैं तुमसे प्यार करता हूं, पैम,’ जब वो दरवाज़े की ओर बढ़ी तो मार्क ने बुझी-बुझी आवाज़ में कहा।

वह रुक गई। उसका रोम-रोम वापस लौटना चाहता था और ज़िंदगी भर मार्क से प्यार करना चाहता था।

‘मैं भी तुमसे प्यार करती हूं, मार्क,’ उसने दरवाज़ा खोलते हुए कहा और बाहर चली गई। ‘बात बस इतनी है कि मैं कह नहीं सकती कि मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूं।’

## 92

आप मेरे और पल्लव साम्राज्य के मित्र रहे हैं,’ नरसिंहवर्मन ने कहा। ‘आपको जो चाहिए वह मांग लीजिए और वह आपको मिल जाएगा।’

‘हे राजन, मेरी केवल दो प्रार्थना है,’ मैंने उनके सामने खड़े होकर कहा। ‘पहली, आपकी जीत मानवर्मा की मदद से संभव हुई। कृपया उनका राज्य वापस जीतने में

उनकी मदद करें।’

‘यह किया जाएगा,’ नरसिंहवर्मन ने कहा। मुझे बाद में पता चला कि उन्होंने सिम्हाला पर दो बार आक्रमण किए; दूसरी बार में मानवर्मा को राजा के रूप में फिर से बैठाने में सफलता मिली।

‘और आपकी दूसरी प्रार्थना क्या है, हे विद्वान?’ राजा ने पूछा।

‘मेरे सम्राट, ताइज़ोंग, उत्तर से होने वाले बर्बर तुर्कों के हमलों को विफल करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाते हैं, लेकिन हमें आपकी सहायता चाहिए।’

‘कैसे?’

‘हमारे पास अमृत के दो तत्व हैं, बमाहाओ और शिपो, जो फाह्यान और बोधिधर्मा द्वारा हम तक लाए गए हैं। लेकिन तीसरा, पिशिनू, हमारे पास नहीं है,’ मैंने समझाया। ‘यदि आप मुझे तीसरे तत्व का कलश प्रदान करेंगे, तो इससे सम्राट को राज्य में स्थिरता लाने में मदद मिल सकती है।’

नरसिंहवर्मन ने एक पल के लिए इस बारे में सोचा और फिर कहा, ‘भविष्य में एक दिन, मेरे वंशज पीछे मुड़कर देखेंगे और जो मैं करने जा रहा हूँ उसके लिए मुझे मूर्ख कहेंगे। लेकिन नरसिंहवर्मन और ताइज़ोंग के बीच का संबंध सहयोग और मित्रता का होना चाहिए, शत्रुता और अविश्वास का नहीं। हमारे दोनों साम्राज्य अपने-अपने तरीके से महान हैं। हे भिक्षु, आपने औषधि वाला कलश अर्जित कर लिया है। पल्लवों के साथ मित्रता की भावना के साथ आपको औषधि मिलेगी। सुनिश्चित करें कि इसका प्रयोग बुद्धिमत्तापूर्ण किया जाए।’

मैंने राजा को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। अब जब मुझे वह वस्तु मिल गई जिसकी मैं इतने लंबे समय से तलाश कर रहा था, तो मैं हल्के दिल के साथ यिन्दु में अपनी बाकी यात्राएं पूरी कर सकता था। कांसी से, मैंने उत्तर की ओर यात्रा शुरू की और कोंकणपुरा<sup>128</sup> होते हुए यिन्दु के पश्चिमी तट पर क्षहरातापुरी<sup>129</sup> नामक समुद्री पत्तन की ओर प्रस्थान किया। वहां से, मैंने उस क्षेत्र का दौरा किया जिसे महाराष्ट्र<sup>130</sup> के नाम से जाना जाता था। मैंने वकाटक<sup>131</sup> में पत्थरों को काट कर बनाए गए गौरवशाली बुद्ध मंदिरों का दौरा किया और फिर मोहोलो<sup>132</sup> गया, जो भारत भर में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान<sup>133</sup> का घर था। उत्तर-पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए, मैं वल्लभी<sup>134</sup> प्रायद्वीप में भरुकच्छ<sup>135</sup> पहुंचा, जहां व्यापारी पश्चिमी स्त्रियों के देश<sup>136</sup> के साथ सोने, चांदी, तांबे, दुर्लभ मोती, रेशम और कालीन का व्यापार करते थे। फिर मैंने नालंदा लौटने के लिए यात्रा शुरू कर दी।

शीलभद्र मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मैंने अगले दो महीने एक भिक्षु के साथ अध्ययन करते हुए बिताए जो व्याकरण और तर्कशास्त्र में विशेषज्ञ माने जाते थे। बाद में, मैंने जयसेन से शिक्षा प्राप्त की जो एक विलक्षण व्यक्ति थे और बौद्ध ग्रंथों के गूढ़ अर्थों को समझाने-बताने में उत्कृष्ट थे। इसके बाद, मुझे नालंदा में थोड़े दिनों के लिए व्याख्याता और शोधकर्ता के पद की पेशकश की गई, लेकिन मैंने इनकार कर दिया।

क्योंकि मुझे पता था कि औषाधि के साथ चिना वापस जाना अधिक आवश्यक था।

एक रात मुझे एक भयानक सपना आया जिसमें मैंने देखा कि नालंदा बर्बाद हो गया था और इमारतों में से आग की लपटें उठ रही थीं। मैं जब उठा तब पसीने से तरबतर हो चुका था। मैं सोचने लगा कि मैंने जो सारा सामान एकत्र किया था, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण था शाओलिन के लिए कलश, उसे लेकर मैं चिना कैसे वापस लौटूंगा।

सुबह मैंने अपने जैन भविष्यवक्ता मित्र वज्र को ये बातें बताईं। उसने मुझसे चिंता नहीं करने को कहा। वह सम्राट हर्ष और राजा कुमार से मेरी सहायता करने के लिए अपने संपर्कों का इस्तेमाल करेगा। मैं किसी भी राजा को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था और उनसे मेरा कभी परिचय भी नहीं हुआ था। मैं सोच में पड़ गया कि वज्र कैसे यह काम करेगा।

मैं उस समय आश्चर्यचकित रह गया, जब कुछ ही समय बाद गाओहाटी के राजा कुमार ने मुझे अपने राज्य में आमंत्रित किया। मैं दक्षिण यिन्दु की अपनी यात्रा के दौरान पहले गाओहाटी गया था लेकिन उस यात्रा में राजा से भेंट नहीं हुई थी। यह अब एक आधिकारिक निमंत्रण था। हालांकि राजा सनातन धर्म मानते थे, फिर भी उन्होंने मेरा काफी ख्याल रखा और काफी सम्मान भी दिया। दो महीने से अधिक समय तक मैं राजधानी में काफी आरामदायक स्थिति में रहा।

सम्राट हर्ष के एक संदेश के कारण मेरी यह यात्रा छोटी हो गई। वो अभी-अभी साम्राज्य विस्तार के एक अभियान से लौटे थे और उन्हें पता चला था कि मैं गाओहाटी के राजा के साथ था। उन्होंने आदेश दिया कि मुझे तुरंत उनके पास भेजा जाए। राजा कुमार हर्ष के जागीरदार थे, इसलिए उन्होंने नावों का एक विस्तृत बेड़ा तैयार करवाया और मुझे अपने साथ ही पोलोयाका तक ले गए, जिसे वहां के निवासी प्रयाग कहते थे। हर्ष कुंभ मेला के बीच में थे, एक तीर्थयात्रा जिसमें दूर-दराज से लोग फू-शुई के पानी में डुबकी लगाने के लिए आते थे।

आधी रात को सम्राट मुझसे मिले, उनके साथ सैकड़ों लोग जलती हुई मशालें लिए हुए थे और कई अन्य लोग थे जो सुनहरे ढोल बजा रहे थे और इसकी ताल सम्राट के कदमों से मिल रही थी। उन्होंने हजारों लोगों को एक उत्सव में आमंत्रित किया था जिसमें उन्होंने अपने युद्ध के घोड़ों, हाथियों और सैन्य भंडार को छोड़कर अपनी सारी संपत्ति दान कर दी थी। सम्राट मेरे पास आए, मेरे सामने झुके, मेरे पैरों पर फूल बिखेरे और मेरी प्रशंसा में अपने लिखे कई छंद पढ़े। सम्राट ने इस तरह से मुझ पर इतना स्नेह और सम्मान बरसाया था।

कुछ हफ्तों के बाद, सम्राट हर्ष और राजा कुमार ने एक बड़े वाद-विवाद का आयोजन किया, जिसमें अठारह जागीरदार राज्यों के राजाओं, 3,000 बौद्ध भिक्षुओं और 3,000 यिन्दु और जैन विद्वानों और पुजारियों ने हिस्सा लिया। सम्राट हर्ष ने एक शानदार भोज दिया और प्रत्येक आमंत्रित शख्स को मूल्यवान उपहार दिए। मेरे मित्र वज्र को मुझे दोनों राजाओं के दरबार में लाने के लिए उचित पुरस्कार दिया गया।

हर्ष ने धर्म के मामले में अच्छा संतुलन बनाने का काम किया था। वो प्रतिदिन सूर्य पूजा के अनुष्ठान करने और शिपो की दैनिक प्रार्थनाओं में शामिल होने के साथ ही कई बौद्ध कार्यक्रमों की सहायता भी करते थे।

हर्ष ने मुझसे चिना के बारे में कई गहन प्रश्न पूछे। मुझे लगता है कि मैंने उनके और सम्राट ताइज़ोंग के बीच अच्छे राजनयिक संबंध सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### 93

सुबह के छह बजे थे जब उन्होंने दरवाजे की घंटी बजाई। ठाकुर अभी भी पजामे में ही थे। जैसे ही उनके अर्दली ने दरवाज़ा खोला, दर्जन भर कमांडो तूफान की तरह घर में घुस आए।

‘यह सब क्या है?’ वो चिल्लाए। उनके कप से चाय छलक गई और उनकी सिगरेट नीचे ज़मीन पर गिर गई। उनका चेहरा स्याह हो गया था। ठाकुर को इस तरह की कार्रवाई उनके खिलाफ होने की उम्मीद कतई नहीं थी।

कमांडो के मुखिया ने कहा, ‘आपको हमारे साथ आना होगा, सर।’

‘किसके निर्देश पर?’ ठाकुर ने जानना चाहा।

कमांडर ने शांत भाव से उसकी ओर देखा। ‘प्रधानमंत्री के निर्देश पर। वो जानना चाहते हैं कि आप अपनी पुरानी छवि खराब करने के अलावा देश को क्यों संकट में डाल रहे हैं।’

ठाकुर ने कहा, ‘मुझसे इस तरह बात करने के लिए मैं तुम्हें गोली मरवा दूंगा,’ लेकिन अब तक उनका अहंकार खत्म होने लगा था।

कमांडर की नज़रों के सामने ही ठाकुर को कपड़े बदलने की अनुमति दी गई। फिर वो बाहर इंतज़ार कर रही कार में बैठ गए। वो एक आम अपराधी की तरह दो अधिकारियों के बीच बैठ गए।

जैसे ही कार ने रफ्तार पकड़ी, ठाकुर साल 1962 के विचारों में खो गए। समुद्र तल से लगभग 14,000 फीट ऊपर काराकोरम पहाड़ों में भारत-चीन युद्ध चल रहा था। जिसका कारण था अक्साई चिन का विवादित क्षेत्र। भारत का कहना था कि यह कश्मीर का हिस्सा था, लेकिन चीन का दावा था कि यह शिन्जियांग का हिस्सा था। इसका तात्कालिक कारण था दलाई लामा का तिब्बत से भागकर भारत आना, जहां प्रधानमंत्री नेहरू ने उन्हें शरण दी थी।

युद्ध शुरू हो गया। भारत इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। युद्ध सिर्फ एक महीने तक चला, लेकिन 1,383 भारतीय सैनिक और 722 चीनी सैनिक मारे गए। हज़ारों घायल हुए। चीनियों ने लगभग 3,900 भारतीय सैनिकों को पकड़ लिया और कैद कर लिया। और इससे भारत को क्या मिला? कुछ भी नहीं। चीन ने अक्साई चिन पर कब्ज़ा कर लिया। अगर अमेरिका ने हस्तक्षेप की धमकी नहीं दी होती तो युद्धविराम भी नामुमकिन था।

जब ठाकुर को पकड़ा गया तब वो तेइस साल के युवा सौनेक थे। उन्हें और कई अन्य लोगों को तिब्बत में चोंग्ये मठ के पास युद्धबंदियों वाले एक शिविर में रखा गया था। चीनी अधिकारियों ने भारतीय सैनिकों की वफ़ादारी अपनी तरफ करने के लिए धमकी और प्यार से समझाइश, दोनों का इस्तेमाल किया। ठाकुर को एक बेहद छोटे और ठंडे कमरे में अकेला कैद करके रखा गया था और सिर्फ रेडियो पैकिंग का प्रसारण सुनने की छूट दी गई थी। उन्हें पढ़ने के लिए सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट साहित्य दिया जाता था। लेकिन खाना समय पर दिया जाता था, हालांकि हमेशा ही चावल और मूली खाने को मिलते थे। और उन्हें पहनने के लिए कपड़े भी दिए जाते थे। हर दिन, उनके चीनी सुपरवाइजर समझाते थे कि चीन की सरकार और उसकी नीतियां भारत की तुलना में बेहतर क्यों थीं।

धीरे-धीरे, उन्हें बंदी बनाने वालों ने उनके लिए तरह-तरह की सुविधाएं बढ़ा दीं—एक सिगरेट, नहाने के लिए गर्म पानी, कैंडी का एक टुकड़ा। लेकिन हर सुविधा के बदले में उनके साथ दो घंटे तक पूछताछ होती थी, जिनमें उन्हें बार-बार यह बताने के लिए कहा जाता था कि भारत की युद्ध की तैयारी कितनी खराब थी। 15,000 फीट की ऊंचाई पर भारतीय सैनिक जिम में पहनने वाले जूते पहने हुए थे। उनके पास तोपें, गोला-बारूद, हथियार और खाना खत्म हो गया था। प्रधानमंत्री नेहरू ने बिना कोई स्पष्टीकरण दिए भारतीय वायुसेना का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया था। भारतीय सशस्त्र बलों के वरिष्ठ कमांडरों के बीच तालमेल बहुत खराब था और इस वजह से ओछी राजनीति शुरू हो गई थी जबकि ध्यान युद्ध जीतने पर होना चाहिए था। नेहरू ने बार-बार चेतावनियों को नज़रअंदाज़ किया था और हमेशा एक गलतफहमी में रहे, और यह मानते रहे कि भारत और चीन भाई थे, दुश्मन नहीं।

धीरे-धीरे, ठाकुर का नज़रिया उस युवा और भोले सैनिक से अलग होने लगा था, जिसे एक नहीं जीती जाने वाली लड़ाई लड़ने के लिए भेजा गया था। हर दिन, उसे बंदी बनाने वाले उसे साम्यवादी चीन और माओ की महानता के बारे में बताते थे। 1963 में रिहा होने तक, ठाकुर को चीन के उद्देश्य से सहानुभूति हो चुकी थी। भारत-चीन संबंधों पर भी उनके विचारों में काफी बदलाव आया। उनका मानना था कि भारत सरकार ने चीन के साथ सीमा मुद्दे को गलत तरीके से संभाला था। उन्हें यकीन हो गया था कि अगर भारत ने स्थिति को बेहतर तरीके से संभाला होता तो चीन कभी भी भारत के साथ युद्ध नहीं लड़ता।

लेकिन चीनियों ने ठाकुर को एक बेहद अहम बात भी सिखाई थी: कभी भी अपनी सच्ची भावनाओं को किसी के सामने ज़ाहिर नहीं होने देना। वहां उसके एक मेंटॉर हमेशा ही याद दिलाते थे, 'जो आदमी अपनी बीवी से प्यार करने का खूब ढिंढ़ोरा पीटता है, वह आमतौर पर अपनी प्रेमिका से अधिक प्यार करता है, और जो समलैंगिकता के खिलाफ लड़ता है वह अपने गुप्त पुरुष प्रेमी के सामने ऐसा कभी नहीं करता।' अगर ठाकुर की मंशा पर संदेह होने लगता तो चीनियों के लिए वो किसी काम के नहीं होते। वो निजी तौर पर भारत में उनके आदमी होंगे लेकिन सार्वजनिक तौर पर उन्हें चीन विरोधी रुख अपनाना होगा। यही एकमात्र तरीका था जिससे साम्यवादी

उद्देश्य की मदद हो सकती थी।

अंत में ठाकुर सुरक्षित रूप से दिल्ली वापस आ गए। जंग जीतकर आने वाले हीरो की तरह नहीं, बल्कि उन कई बहादुर सैनिकों में से एक की तरह जिन्होंने अपने राजनीतिक रहनुमाओं की ढिलाई के बावजूद अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया था। उन्होंने अपने चीनी आकाओं की सलाह का अक्षरशः पालन किया, चीनी खतरे के बारे में लगातार प्रशासन को चेतावनी दी, पाकिस्तान और चीन के बीच रिश्ते बेहतर होने का पूर्वानुमान जताया और भारतीय तैयारियों की ज़रूरत को लेकर लगातार सार्वजनिक बयान दिए।

उसकी जुबान भले ही भारत के लिए बोलती थी, लेकिन दिल चीन के लिए धड़कता था।

## 94

जया गुनगुनाते हुए लोधी गार्डन में सुबह की सैर कर रही थी। यह एक ऐसा नियम था जो कभी बदलता नहीं था। अगर वो सफर कर रही होती, तो जगह बदल जाती, लेकिन उसकी दिनचर्या नहीं बदलती। दिन की हलचल शुरू होने से पहले यह उसका एकांत का समय होता था।

ज्यादातर दिनों में वो अकेली ही सैर करना पसंद करती थी। साथ में सैर करने वाले जाने-पहचाने चेहरे केवल सिर हिलाकर अभिवादन करते थे क्योंकि वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि वो बातचीत करना पसंद नहीं करती थी। साथ ही, उसके साथ पट्टे से बंधी एक डोबरमैन मादा डॉग भी होती थी। दवाओं की मदद से यौन संबंध के लिए तैयार की गई यही मादा डॉग, देव को खत्म करने के प्लान में, रांटवीलर का ध्यान भटकाने में काम आई थी।

जया की दिनचर्या तय थी। सुबह छह बजे उठना और एक मग चाय पीना। एक घंटे की सैर पर निकलने से पहले एक घंटे तक योगा करना। घर लौटना और दिन की पहली नॉन-फ़िल्टर कैमल सिगरेट पीते हुए अगले दो घंटे का वक्त देशभर के अखबारों को पढ़ते हुए बिताना। वो अपनी दिनचर्या के कारण तंदुरुस्त थी, इतनी तंदुरुस्त कि मोटरसाइकिल चलाने के साथ ज़रूरी दिशा में ग्रेनेड भी फेंक सके।

उसकी सैर के तीस मिनट बाद, सादे कपड़े पहने दो हट्टे-कट्टे अधिकारियों ने उसे रोक लिया। उनमें से एक ने कहा, 'आपको हमारे साथ आना होगा, मैडम। कोई तमाशा करने की कोशिश ना करें; यह इलाका हमारे लोगों से भरा हुआ है।'

'तुम कौन हो?' उसने पूछा, लेकिन उसे जवाब पहले से ही पता था।

वे गेट के ठीक बाहर खड़ी सुर्ख लाल रंग की मारुति तक गए। वो खुद जाकर अंदर बैठ गई, उसके होंठों पर प्रार्थना थी, उसके हाथ उसके गले के लॉकेट को पकड़े हुए थे। जो कोई भी उसे जानता होगा, उसे उसकी ये हरकत अजीब लगती, क्योंकि जया नास्तिक थी। उसके पिता मां दुर्गा के बड़े भक्त थे, लेकिन उनकी कैंसर की वजह से बहुत जल्दी मौत हो गई थी। जेएनयू में बिताए कई सालों ने जया के इस विश्वास को और मज़बूत कर दिया था कि भगवान आलसियों के लिए एक बहाना और कपटियों के लिए एक साधन मात्र थे। खुफियागिरी के काम में सालों बिताने के दौरान उसे दुनिया

को छिपो हुई घिनोनी हकीकत का पता चला था, जो धर्म के ताबूत में आखरी कोल साबित हुई थी।

भरी हुई कार में बैठी जया के दिमाग में खूबसूरत यादें घूमने लगीं। वो जेएनयू की एक छात्रा थी जो स्कूल ऑफ लैंग्वेज, लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज़ में मास्टर्स डिग्री की पढ़ाई कर रही थी। तब तक ठाकुर रक्षा प्रतिष्ठान में ऊंचे पदों पर आसीन हो चुके थे और सेनाध्यक्ष बनने के प्रमुख उम्मीदवार के रूप में उभर रहे थे। उन्हें भारत की रक्षा रणनीति के बारे में जेएनयू में व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया था। पहली पंक्ति में बैठी युवा महिलाओं में से एक जया थी, जिसकी आंखों में सपने पल रहे थे, जिसका मानना था कि उसूलों के बल पर कोई भी जंग जीती जा सकती थी।

तब तक, जेएनयू मार्क्सवादियों के गढ़ के रूप में जाना जाने लगा था। विश्वविद्यालय में राजनीतिक जीवन काफी अंदर तक पैठ बना चुका था और जब तक कोई यहां से डिग्री लेकर निकलता था, तब तक किसी न किसी तरह की राजनीति में गहरा विश्वास लेकर ही निकलता था। जया भी कोई अपवाद नहीं थी। व्याख्यान के बाद वो झिझकते हुए ठाकुर के पास उनका ऑटोग्राफ लेने के लिए पहुंची थी, जिसके बाद उन्होंने पास के एक रेस्तरां में एक-एक कप कॉफी पी थी।

ठाकुर पहले से ही शादीशुदा थे, लेकिन उन्हें अपने से बीस साल छोटी महिला से प्यार हो गया था। वे अपनी शामें ठाकुर के एक दोस्त के खाली गेस्ट हाउस में माओ, लेनिन, मार्क्स और एंगेल्स को पढ़ते हुए बिताने लगे। रातें भी उतनी ही यादगार थीं।

और तब ठाकुर की पत्नी को उनके अफेयर के बारे में पता चला था। उसने इस बात को सार्वजनिक करने और इस तरह सरकार-प्रशासन में उसके करियर की किसी भी संभावना को खत्म करने की धमकी दी। ठाकुर ने बीजिंग में अपने दोस्तों को चुपचाप खबर कर दी। चमत्कारिक ढंग से, ठाकुर की पत्नी की अगले दिन एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। जया रोते हुए अंतिम संस्कार में शामिल हुई और ठाकुर को सांत्वना दी। वे अब एक ऐसी टीम बन गए थे जिसे अलग नहीं किया जा सकता था; उनके रिश्ते पर मुहर एक कुर्बानी ने लगा दी थी। वे लोगों की नज़रों से दूर, जानकारी साझा करने के लिए लाल कोट पर अक्सर मिलते थे। कभी-कभी वे कार में प्यार भी किया करते थे। जया को ठाकुर ने उस चुनिंदा समूह में शामिल कर लिया था जो अगले कुछ दशकों तक भारत की गोपनीय बातों को चीनियों को बताता रहा। यह न केवल एक मुनाफ़े भरा पेशा था—शायद जोखिम भरा भी—बल्कि इसमें एक और संभावित इनाम था—भारत साम्यवादी रास्ते पर जा सकता था। जया की ज़रूरतें कम थीं और पैसे उसके लिए ज्यादा मायने नहीं रखते थे। उसके लिए उसके आदर्श और उसूल ही मार्गदर्शक बने रहे। इस बीच, ठाकुर रक्षा प्रतिष्ठान में इतने ऊपर चले गए थे कि ज़रूरत पड़ने पर भारतीय सेना के रास्ते में रुकावटें पैदा कर सकते थे।

जया ने मन ही मन एक प्रार्थना बुदबुदाई, उसकी आवाज़ कभी बढ़ती, कभी कम होती और वो बार-बार अपनी गर्दन में लटकी हुई लॉकेट को चूमती जा रही थी। अचानक, उसने लॉकेट को दांतों से काट लिया, जिसमें धातु की पतली परतों के बीच कांच की एक सीलबंद छोटी शीशी थी। शीशी में भरा हुआ पोटेशियम साइनाइड का गाढ़ा घोल

उसके मुंह में चला गया। जब तक आधिकारों उसे अस्पताल ले जा पाते, तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।  
इंकलाब जिंदाबाद।

## 95

बुज़ांग उस सुबह देर तक सोया था। चीन के दौरे पर आए हुए पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष के सम्मान में आयोजित आधिकारिक स्वागत समारोह देर तक चला था। बुज़ांग को पता था कि पाकिस्तान अपने आप में महत्वहीन था। यह तभी महत्वपूर्ण होगा, जब यह एक ऐसे संक्रमण में बदल जाए जो तेज़ी से फैले और अंत में भारत को खत्म कर दे।

वो इस बात से अनजान था कि सुबह के समय झोंगनन्हाई में एक गुप्त बैठक हुई थी। इसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और साथ ही राज्य परिषद के प्रमुख सदस्य शामिल थे। राष्ट्रपति के एक सहयोगी ने हेनान के डेंगफेंग काउंटी के अस्पताल में विशेष वार्ड की तस्वीरें साझा की थीं। ये ऐसी निराशाजनक तस्वीरें थीं जिनमें कतार से स्टील-फ्रेम वाले बिस्तरों पर अस्पताल के धारीदार गाउन पहने हुए कमज़ोर बूढ़े लोग पड़े हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे मरने का इंतज़ार कर रहे हों।

अस्पताल के गुप्त वार्ड में घुसने और एक डॉक्टर के पेन में लगे कैमरे का इस्तेमाल करके तस्वीरें लेने का काम बेहद सधे हुए तरीके से अंजाम दिया गया था। बुज़ांग का पूरा नियंत्रण इस जगह पर था और अगर डॉक्टर की ऐसी किसी हरकत का कभी पता चला होता तो डॉक्टर को मार दिया जाता।

सहयोगी ने बीजिंग में अनुसंधान प्रयोगशाला के वीडियो फुटेज चलाए। अनुसंधान केंद्र में लगे बड़े आकार के बोल्ट्स की मदद से सारी गतिविधियों को रिकॉर्ड करने और उनके दस्तावेज़ तैयार करने का काम किया था। फुटेज में दिखाया गया कि एक रोबोट अचानक अपना रूटीन काम बंद कर, पागल की तरह हरकत करने लगता है, जैसे कि वह गुस्से में हो। कॉन्फ्रेंस रूम में मौजूद लोगों ने देखा कि उसने दीवार पर अपनी मुट्ठियां जोर-जोर से मारी और इलेक्ट्रॉनिक दरवाज़े को लात मारकर खोलने की कोशिश की।

राष्ट्रपति ने कहा, 'मैंने उससे इन प्रयोगों को बंद करने को कहा था। मैंने उससे पुनर्शिक्षा शिविरों को भी बंद करने के लिए कहा था। लेकिन उसने नहीं सुना। अब उसके नतीजे यहां सब देख रहे हैं। हमारे 2,000 से ज़्यादा नौजवान बुज़ांग की वैज्ञानिक टीम द्वारा खिलाई गई प्राचीन औषधि की वजह से मौत के मुहाने पर पहुंच चुके हैं। हमारे शिविरों में लाखों मुसलमान हैं और हमारे लिए बाकी दुनिया को यह समझाना नामुमकिन हो रहा है कि इतने बड़े पैमाने पर लोगों को हिरासत में रखना सही कैसे ठहराया जा सकता है। सच कहूं तो, मैं उसके तौर-तरीकों से थक गया हूं।'

राष्ट्रपति ने टेबल के चारों तरफ बैठे लोगों की ओर देखा। उनमें बुज़ांग के तीन समर्थक भी शामिल थे, लेकिन किसी ने भी उसके पक्ष में नहीं बोला। कल रात, उनमें से हरेक को उनकी खुद की खुफिया फाइलें दिखाई गई थीं, तीन फाइलें जिन्हें राष्ट्रपति के सहयोगियों ने कड़ी मेहनत से रिसर्च करने के बाद तैयार किया था। बुज़ांग के पहले

समर्थक ने एक निमोण पारियोजना में करोड़ों कमाये थे; दूसरे पर लगातार अपने एसएंडएम सेशन (यौन संबंध बनाने का एक तरीका) के दौरान महिलाओं को चोट पहुंचाने के आरोप थे; और तीसरे की लापरवाही के कारण एक चीनी अरबपति के लिए उसके गलत समर्थन की वजह से हजारों लोगों की नौकरियां चली गई थीं। तीनों जानते थे कि सज़ा से बचे रहने का इकलौता तरीका था राष्ट्रपति का समर्थन करना, जिन्होंने उनकी गलतियों को नज़रअंदाज़ करने का वादा किया था। राष्ट्रपति के साथ उनकी बैठक में, उनमें से हरेक को रूजवेल्ट की मशहूर टिप्पणी का एक संस्करण बताया गया था: 'अगर आपने उनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया है तो फिर उनके दिल और दिमाग भी आपकी बात मानेंगे।'

राष्ट्रपति ने ठंडी सांस छोड़ी। 'इसमें कोई संदेह नहीं कि चीन और भारत के बीच संबंध जटिल रहे हैं। लेकिन हमें प्राचीन काल से दोनों देशों के बीच विचारों के अदुभत आदान-प्रदान को नहीं भूलना चाहिए। फाह्यान, बोधिधर्मा और ह्वेनसांग ने दिखाया कि हम एक-दूसरे को मज़बूत करने के लिए कितनी अहम भूमिका निभा सकते हैं। अगर अंग्रेज़ों ने मुख़तापूर्ण तरीके से हमारी आपसी सीमाएं नहीं तय की होती, तो आज के कई विवादों से बचा जा सकता था। हम दुनिया के दो सबसे ज्यादा आबादी वाले इलाके हैं, और हम दोनों देशों में दुनिया की पैंतीस प्रतिशत आबादी रहती है। और हां, विवाद भी होंगे। लेकिन क्या हम अपने मतभेदों को दूर करने व आगे बढ़ने के रास्ते नहीं खोज सकते? और क्या हमें ऐसा करने के लिए सुपर हीरो की ज़रूरत है? मेरे गुरु डेंग जियाओपिंग चाहते थे कि हम अपनी समस्याओं को समझदारी से हल करें।'

चीनी प्रधानमंत्री, जिन पर कम्युनिस्ट पार्टी के पुराने सदस्यों का भरोसा था, ने बोलना शुरू किया। 'हम आर्थिक और सैनिक ताक़त के मामलों में भारत से बहुत आगे हैं। हमें उन्हें अपना प्रतिद्वंद्वी समझना बंद कर देना चाहिए। भारत की प्रगति हमारे लिए अपनी आर्थिक प्रगति को और तेज़ करने का एक तरीका हो सकती है। सोचिए कि ऐसे संबंध क्या कर सकते हैं। हमें माओत्से तुंग बनाम डेंग जियाओपिंग के बारे में सोचना बंद करना होगा। इसके बजाय, हमें दोनों के विचारों में से सबसे अच्छी चीज़ें लेने और उन्हें लागू करने पर ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है।'

राष्ट्रपति ने कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई। 'जापानी तीन रहस्यमय बंदरों की बात करते हैं जो बुरा नहीं देखते, बुरा नहीं सुनते और बुरा नहीं बोलते। दुनिया भूल गई है कि यह धारणा सबसे पहले हमारे अपने कम्प्यूशियस से आई थी, जिन्होंने तीन नहीं, बल्कि चार तत्वों की बात की थी। चौथा था बुरा नहीं करना। मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि हम उस चौथे तत्व के अनुसार रहें।'

'क्या हमें वोटिंग करवानी चाहिए?' उन्होंने पूछा, एक बार जब उन्हें यकीन हो गया कि हर कोई उनके पक्ष में था।

बुज़ांग जब नींद में था, तब बैठक में मौजूद लोगों ने उसकी गिरफ़्तारी और उसे जेल में डालने के पक्ष में वोटिंग की।

मैंने अनुरोध किया कि मुझे घर लौटने की अनुमति दी जाए, लेकिन सम्राट हर्ष मुझे रोकने के लिए बहाने ढूंढ़ते रहे। अंत में, सम्राट को मानना पड़ा और उन्होंने मुझे यात्रा के दौरान एकत्र की गई सारी सामग्री वापस ले जाने के लिए एक सैन्य रक्षक दल, घोड़े और एक हाथी दिया। उन्होंने मेरी वापसी यात्रा में खर्च करने के लिए मुझे 3,000 सोने के सिक्के और 10,000 चांदी के सिक्के भी दिए। अन्य सभी खज़ानों के अलावा, मैंने सम्राट ताइज़ोंग के लिए शक्कर की गोलियां भी खरीदी थीं। मैंने भारी मन के साथ सम्राट से विदा ली, इस बात से अनजान कि मेरे वहां से जाने के ठीक चार साल बाद उनकी मृत्यु हो जाएगी।

मेरे पास समुद्री मार्ग से लौटने का विकल्प था जैसा कि फाह्यान ने किया था, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता था क्योंकि मैं बहुत अधिक अमूल्य खज़ाने ले जा रहा था। मेरे दल ने उसी मार्ग का प्रयोग करते हुए जलंधरा और तचाशिलो से होते हुए यिन्दु के उत्तर-पश्चिम से वापसी की यात्रा की, जिसका इस्तेमाल मैंने तेरह साल पहले किया था। जलंधरा में मेरे साथ सौ भिक्षु भी शामिल हो गए थे, जो एक बड़े यात्रा समूह की सुरक्षा चाहते थे। अतिरिक्त सावधानी के तौर पर, हमने यह सुनिश्चित करने के लिए एक अग्रिम दल भेजा कि मार्ग डाकुओं से मुक्त हो।

पोलोयाका से 900 मील की यात्रा करने के बाद, मेरा दल उत्तोकियाहांचा में यिन्दु नदी को पार करने के लिए नावों में बैठ गया। नावों में धर्मग्रंथों, मूर्तियों और उपहारों का अंबार लगा था। हाय! जैसे ही हम एक मील चौड़ी नदी के बीच में पहुंचे, वहां तूफ़ान आ गया। हमारी नावों में से एक पलट गई और पचास पांडुलिपियां और कई भारतीय पौधों की प्रजातियों के बीज वाले बोरे नष्ट हो गए। सौभाग्य से मेरे संग्रह का बड़ा हिस्सा, जिसमें कांसी से प्राप्त विशेष कलश भी शामिल था, सुरक्षित रहा। कियापिशी के राजा संयोग से कहीं समीप ही थे और जब उन्हें पता चला कि मैं यिन्दु से बीज ले जा रहा था, तो उन्होंने बताया कि जब कोई यिन्दु में मूल रूप से पाए जाने वाले बीज ले जाने की कोशिश करता है तो नदी क्रोधित हो जाती है। मैं दो महीने तक कियापिशी में रहा, और इस दौरान मैंने नष्ट पांडुलिपियों की प्रतियां प्राप्त कर लीं। जब मैं वहां था तो मुझसे मिलने मेरे एक पुराने मित्र आए, जिन्होंने मेरी बहुत अच्छी देखभाल की थी, कश्मीर के राजा। उनकी इस यात्रा के पीछे एक उद्देश्य था। हर्ष की तरह वो भी तांग साम्राज्य के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहते थे।

आखिरकार, मैंने 13,000 फीट की ऊंचाई पर कावाख्या दर्रा<sup>137</sup> होते हुए बर्फ़ीले पहाड़ों को पार किया। जब हमने शुरुआत की थी, तो घोड़ों और गधों के अलावा एक सौ कुलियों को मेरा कीमती सामान ढोने के काम पर लगाया गया था। दुख की बात है कि बर्फ़ीली हवाओं और फिसलन भरी ढलानों ने कुलियों को डरा दिया, इनमें से कई लोग यात्रा छोड़कर वापस भाग गए। और अब, मेरे कारवां में केवल सात पुजारी, बीस अनुयायी, एक हाथी, दस गधे और चार घोड़े रह गए। एंटोलापो<sup>138</sup> पहुंचने से पहले हमें कई दिनों तक जमे हुए कचरे, बर्फ़ के भराव और तेज़ हवाओं से जूझना पड़ा। वहां

तीन छोटे मठ थे, जहां हम कुछ दिनों के लिए रुके, और फिर हुआ के लिए निकले, जहां राजकुमार टाई, जिनकी शादी की व्यवस्था मैंने की थी, मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने बहुत अच्छा अतिथि सत्कार किया और हमारे दल के लिए रक्षक दल की व्यवस्था भी कर दी थी। हमारे साथ कुछ व्यापारी भी जुड़ गए थे।

हमने चिना के लिए जो रास्ता लिया वह वही नहीं था जो हमने तेरह साल पहले लिया था। समोकिन के लिए उत्तरी कारवां मार्ग की बजाय, हमने काशा<sup>139</sup> तक पहुंचने के लिए पो-त्सू नदी का अनुसरण करने का निर्णय लिया। नदी के ऊपरी मैदानी भाग में हम पोटोचंगना<sup>140</sup> राज्य में रुक गए क्योंकि पहाड़ी सड़कें हिमपात के कारण बंद थीं। अंततः हमने अधिक ऊंचाई पर बनी सड़कों से होते हुए अपनी यात्रा आरंभ की, जब तक कि हम ताज़े, गहरे-नीले पानी वाली विशाल ड्रेगन झील<sup>141</sup> तक नहीं पहुंच गए। इस झील के किनारों पर विशाल शतुरमुर्ग रहते थे। लेकिन काशा के रास्ते में लुटेरों ने हम पर हमला कर दिया था और मेरा शक्तिशाली हाथी एक नदी में गिर गया और डूब गया।

अंततः हम काशा पहुंचे, जो मरुद्यान वाला एक शहर था और रेशम मार्ग पर बेहद महत्वपूर्ण था। मैं बाज़ार में घूमा और बढ़िया ऊनी कालीन और बुने हुए कपड़े देखकर बहुत खुश हुआ। काशा तांग साम्राज्य का एक क्षेत्र था और उस पर चिना द्वारा नियुक्त प्रशासक राज करता था। काशा से मेरा दल यूटियन<sup>142</sup> के लिए रवाना हुआ जहां मैं लगभग सात महीने तक हीनयान मठ में रहा। यूटियन के लोगों को नाचना व गाना काफी पसंद था। उन्हें रेशम बुनाई में भी महारत हासिल थी, एक ऐसी कला जिसे चिना ने कई शताब्दियों तक सावधानीपूर्वक संरक्षित किया था, जब तक कि यूटियन के एक शासक ने चिना की राजकुमारी से शादी नहीं की। इस क्षेत्र में यिन्दु का गहरा प्रभाव था, इसके कई निवासी तचाशिलो से आने का दावा करते थे।

मुझे यूटियन में एक व्यापारी मिला जो चांग'आन की ओर जा रहा था। उसके माध्यम से मैंने सम्राट ताइज़ोंग को एक पत्र भेजा और उनसे क्षमा प्रार्थना की। मैंने उनसे कहा कि मैं एक राजभक्त प्रजा के रूप में लौट रहा हूं जिसने तांग साम्राज्य की महानता को दूर-दूर तक फैलाने में एक छोटी सी भूमिका निभाई है। मैंने इस तथ्य का भी उल्लेख किया कि मैं अपने साथ विशाल खजाना, और सबसे महत्वपूर्ण, शाओलिन मंदिर के लिए एक कलश लेकर आ रहा हूं।

सम्राट का जवाब मुझे तक पहुंचने में सात महीने लग गए। यह बहुत ही सकारात्मक और उत्साह बढ़ाने वाला जवाब था। मैंने राहत की सांस ली। अपने पत्र में उन्होंने लिखा कि उन्हें यह सुनकर खुशी हुई कि मैंने सुदूर देशों की कठिन यात्रा की है और मैं और भी अधिक बुद्धि और ज्ञान के साथ लौट रहा हूं। उन्होंने बताया कि मेरे लिए अतिरिक्त घोड़ों की व्यवस्था की गई है और यूटियन, शाओउ, शानशान<sup>143</sup> और चेमो<sup>144</sup> के अधिकारियों को मुझे चांग'आन तक पहुंचने में मदद करने का निर्देश दिया गया है।

दो सप्ताह बाद, पर्यटकों का एक दल कुड्डालोर ज़िले में चिदंबरम मंदिर घूमने गया। इन पर्यटकों में राव, अनु और पैम भी शामिल थीं।

यह पैम के लिए किसी रहस्य के खुलने जैसा था जब उसे पता चला कि उसका ड्राइवर मंदिर में टूर गाइड का भी काम करता था, जब वह अपनी कार में ग्राहकों को नहीं ले जाता था। उसे मंदिर का नक्शा बखूबी पता था। उसने उस तरह की शुरुआती जानकारी देने में समय बर्बाद नहीं किया जैसा वह आम पर्यटकों के साथ करता था। उसने 1,000 स्तंभों के विशाल कक्ष, विशाल जलाशय या 21,600 टाइलों से बनी सुनहरी छत का उल्लेख नहीं किया। न ही उसने नृत्य करते हुए शिव नटराज की गतिविधियों की जटिलताओं को समझाने में समय बर्बाद किया।

राव ने बिल्कुल साफ़ कह दिया था। ‘हमें पत्थर का वह खंड देखना है जो अंगकोरवाट का निर्माण करने वाले राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने चोल राजा कुलोत्तुंगा प्रथम को मंदिर की संरचना में शामिल करने के लिए भेजा था।’

उस मनहूस दिन के बाद से, जब राव और अनु का अपहरण कर लिया गया था और पैम उन्हें छुड़ाने के लिए अपने ड्राइवर के साथ संजीवीर्या हनुमान मंदिर पहुंची थी, ड्राइवर और राव के बीच एक विचित्र सी जान-पहचान बन गई थी। पैम को यह अजीब लगा, क्योंकि उसे लगता था कि ड्राइवर बहुत डरावना था।

‘हम पहुंच गए,’ ड्राइवर ने टूर गाइड के अपने अवतार में आते हुए कहा। उसने उनके लिए शिलालेख में लिखी बातों को तमिल में पढ़ा।

राव ने अनुवाद किया, ‘कम्बोज के राजा द्वारा हमारे राजा को भेंट किया गया यह पत्थर, हमारे राजा के निर्देशों के अनुसार, मंदिर के सामने के हिस्से में रखा गया था और बाद में मंदिर के पत्थर की दीवार के ऊपर की ओर सामने की पंक्ति में लगाया गया था।’

पैम के हाथ में एक हैंडहेल्ड LiDAR स्कैनर था, लेकिन वो ड्राइवर की उपस्थिति में इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहती थी। उसने उसे मिनरल वाटर की कुछ बोतलें लाने के लिए भेज दिया।

जैसे ही वह गया, पैम ने LiDAR डिवाइस की स्क्रीन के माध्यम से सूर्यवर्मन वाले पत्थर को देखा। राव और अनु ने इस प्रक्रिया को ध्यान से देखा। और कुछ ही मिनटों में उन्हें मनचाही चीज़ दिख गई! पत्थर भीतर से तीन जगहों से खोखला था। उनमें तीन कलश सुरक्षित रूप से लगे हुए थे।

‘असली कलश,’ राव ने धीरे से कहा। ‘पत्थर के इस खंड को नोम क्रॉम, नोम बखेंग और नोम बोक के तीन मंदिरों के बीच इनकी मूल जगह से निकाल लिया गया था। इसमें विष्णु औषधि सहित तीनों औषधियां शामिल हैं। चूंकि पत्थर का यह खंड—विष्णु का खज़ाना—पहले ही यहां ले आया गया था, इसलिए चीनी खोजकर्ता टीम कंबोडिया में कलश नहीं ढूंढ़ सकी।’

‘लेकिन क्यों?’ पैम ने पूछा। ‘उन्हें यहां क्यों भेजा गया?’

‘सूर्यवर्मन का शासनकाल परेशानियों से भरा था,’ राव ने समझाया। ‘उसके जीवन में

सैन्य कारवाइयों को शृंखला चल रही थी, विशेष रूप से दाईं वियत (आज का वियतनाम) के खिलाफ। तब तक, साम्राज्य भवन निर्माण को लेकर सूर्यवर्मन के पागलपन और उसके अत्यधिक अहंकार की कीमत भी चुका रहा था। अंगकोर वाट के निर्माण में हजारों दासों का इस्तेमाल किया गया था और राजा को हमेशा अपनी हत्या का खतरा सताता रहता था। सूर्यवर्मन को समझ आ गया था कि औषधि को कंबोडिया से निकालकर भारत वापस भेजना बुद्धिमानी भरा कदम होगा। इसलिए उन्होंने चोल राजा को यह शिलाखंड उपहार में दिया।

‘यह अविश्वसनीय लगता है,’ पैम बुदबुदाई।

‘खमेर राजाओं का प्रभुत्व द्रविड़ों के कारण था,’ राव ने कहा। ‘इन औषधियों ने खंबुजारराजा जैसे राजाओं को खंबुजादेस साम्राज्य स्थापित करने में सहायता की थी। छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में, इन औषधियों की मदद के बिना, सिंहा विष्णु के छोटे भाई भीम, सिंहासन के लिए कई प्रतिस्पर्धियों को जीतने में कभी सफल नहीं हो पाते। भीम के वंशज, नंदी वर्मन द्वितीय—जिन्हें पल्लव सिंहासन पर बिठाने के लिए कांची वापस लाया गया था—ने भी अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराने के लिए औषधि का इस्तेमाल किया था। औषधियों का संरक्षण खमेर और पल्लव राजाओं का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य था।’

पैम ने तुरंत LIDAR डिवाइस बंद की। ‘यह एक शिव मंदिर है,’ उसने राव से कहा। ‘आदर्श रूप से, क्या इस मंदिर में ब्रह्मा, विष्णु और शिव नहीं होने चाहिए क्योंकि हनुमान की शक्ति इन तीनों से प्राप्त होती है? हां, जैसा आपने मुझे बताया था, मैंने रसगोविंद के प्रासंगिक अंश पढ़ लिए हैं।’

‘लेकिन यहां तीनों के मंदिर हैं,’ ड्राइवर ने कहा, जो चुपचाप पानी की बोतलें लेकर लौट आया था। उसने पैम को एक बोतल दी और बात जारी रखी, ‘अंदर के प्रांगण में एक मंदिर है जिसमें ब्रह्मा और विष्णु दोनों की मूर्तियां हैं। इस अर्थ में, चिदंबरम उन कुछ मंदिरों में से एक है जहां हिंदुओं के त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा होती है।’

‘क्या आप हमारी बात सुन रहे थे?’ पैम ने संदेह जताते हुए पूछा। ड्राइवर के बारे में कुछ तो गड़बड़ था। वह छिपकर हमारी बात क्यों सुन रहा है?

राव ने अपना गला साफ़ किया। ‘मुझे लगता है कि मुझे तुम्हें कुछ बताना चाहिए, पैम,’ उन्होंने बहुत धीमी आवाज़ में कहा। ‘तुम्हें पहले ये बात नहीं बताने के लिए मुझे माफ़ करना...’

‘क्या?’ खलल पड़ने की वजह से थोड़ा खीझते हुए पैम ने पूछा।

‘वो शख्स जो तुम्हारा ड्राइवर है और अब तुम्हारा टूर गाइड है...’ राव ने बोलना शुरू किया।

‘हां?’ पैम ने बेसब्री से पूछा।

‘वो तुम्हारा पिता भी है।’

पैम सदमे में आ गई थी। वो समझ नहीं पा रही थी कि कैसे प्रतिक्रिया दे। जिस आदमी की वो ज़िंदगी भर पूजा करती रही, उसकी वास्तव में मौत ही नहीं हुई थी। पहले तो उसके मन में इस जानकारी से खुशी की लहर दौड़ गई, फिर तेज़ गुस्सा आ गया। उन्होंने पैम और उसकी मां को यह विश्वास क्यों करने दिया कि वो इस दुनिया में नहीं रहे? और जब उनकी मौत ही नहीं हुई थी तो उन्हें मृत कैसे लिख दिया गया? उन्होंने ऐसा क्यों किया था?

जब ड्राइवर ने अपना रे-बैन चश्मा और टोपी उतारी तो पैम ने उसे ध्यान से देखा। पहली बार उसने उसकी शक्ल अच्छी तरह से देखी। हां, उसने अपनी सामान्य खाकी बुशर्ट और पतलून पहन रखी थी, लेकिन वे करीने से इस्त्री किए हुए थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई फौजी उन्हें रखता है। उसकी खिचड़ी घनी दाढ़ी और मुँछ—यहां तक कि छोटी चोटी भी—बड़े करीने से छांटी गई थी। यह साफ़ था कि टोपी, धूप का चश्मा, घनी दाढ़ी, मुँछें और चोटी उसके चेहरे को लोगों की नज़रों से छिपाने के लिए इस्तेमाल की जा रही थीं।

वह पैम को देखकर मुस्कुराया। और पैम ने सम्मोहित होकर उसकी ओर देखा। पैम की मुस्कान, नाक, होंठ सब उसके पिता जैसे ही थे। पैम के गालों पर डिम्पल भी बिल्कुल उसके पिता जैसे थे। उन्होंने खुद को तंदुरुस्त रखा था, लेकिन यह साफ़ था कि वो पचपन-छप्पन साल के आसपास थे। यह उनकी उस उम्र से मेल खाती थी जब पैंतीस साल की उम्र में उनकी 'मौत' दर्ज की गई थी।

और फिर पैम पर जैसे कोई बचपना सवार हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे वो फिर से बच्ची बन गई हो और किसी ऐसी चीज़ की ज़िद कर रही थी जिसे केवल उसके पिता ही पूरी कर सकते थे।

‘आपने हमारी ज़िंदगी बर्बाद कर दी,’ वो चिल्लाई। ‘मां और मैं तब टूट गए थे जब हमें बताया गया कि आपकी मौत हो गई है। और इस पूरे दौरान, आप ज़िंदा थे! आपने एक बार भी अपनी बीवी और बेटी के बारे में या हम जिस नरक से गुज़रे, उसके बारे में नहीं सोचा।’

‘मुझे उम्मीद नहीं है कि तुम समझ पाओगी पैम,’ कर्नल खुराना ने डबडबाई आंखों के साथ कहा। ‘तुम्हारा नाराज़ होना जायज है। लेकिन सच तो यह है कि मेरे पास गायब हुए बिना तुम लोगों की जान बचाने का कोई रास्ता नहीं था।’

पैम को उनके जवाब में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वो आंगन में चली गई और एक खंभे पर टिककर बेकाबू होकर सिसकने लगी। वे उसके पीछे-पीछे गए।

‘क्यों?’ पैम ने पूछा, जब उसके पिता उसके सामने आए।

‘क्योंकि मैंने वानर जनजाति की खोज की थी,’ खुराना ने कहा। ‘और मेरे प्रिय मित्र राव और मैं उन पल्लव औषधियों को दोबारा तैयार करने में सफल रहे थे। यहां तक कि मैंने जनजाति की प्रार्थना का मतलब भी निकाल लिया था।’

‘कैसे?’ पैम ने पूछा।

‘ध्यान से सुनो,’ खुराना ने कहा और वे शब्द सुनाए जो उन्होंने उसे तब गाकर सुनाए थे जब वो छोटी थी।

बा-मा-को-की-जू-का-लो  
वी-नू-को-की-मू-पा-लो  
सी-वा-को-की-सू-पा-लो  
हा-नू-को-की-पू-दा-जो

‘उस गीत की हर पंक्ति की शुरुआत पर ध्यान दो,’ उन्होंने कहा। ‘बा-मा का तात्पर्य ब्रह्मा से है; वी-नू विष्णु को बताता है; सी-वा शिव हैं; और हा-नू हनुमान हैं। प्रार्थना स्पष्ट रूप से यही बता रही है कि हनुमान के गुण त्रिदेव से प्राप्त हुए थे। यह गायत्री मंत्र का जनजातीय संस्करण था, जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव और हनुमान को समर्पित था।’

‘लेकिन यह अभी भी साफ़ नहीं है कि आपको गायब क्यों होना पड़ा,’ पैम ने सवाल दागा।

‘मुश्किल यह थी कि ठाकुर, जया और चीनी किसी भी कीमत पर औषधि को पाना चाहते थे। मुझे पता था कि बहुत जल्दी मेरा अपहरण कर लिया जाएगा और संभवतः मुझे यातना भी दी जाएगी। सबसे बड़ा डर यह था कि वे लोग तुम्हारे और तुम्हारी मां के पीछे पड़ जाएंगे और फिर तुम लोगों का इस्तेमाल मुझसे फायदा उठाने के लिए करेंगे।’

‘आपके लिए खतरा प्रोफेसर राव के समान ही था, फिर भी वो गायब नहीं हुए।’

‘तुम सही कह रही हो,’ खुराना ने कहा। ‘लेकिन राव को वानर जनजाति की बस्ती के बारे में कुछ पता नहीं था, न ही वे वानर जनजाति और उनकी जड़ी-बूटियों तक पहुंचे थे। सभी चार तत्वों—कलश, ग्रंथ, वानर और उनकी जड़ी-बूटियों—की ज़रूरत थी। कलश इसलिए ताकि मूल पल्लव सूत्रों की जांच की जा सके; ग्रंथ ताकि औषधि को दोबारा तैयार किया जा सके; वानर ताकि जड़ी-बूटियों के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया जा सके; जड़ी-बूटियां ताकि पल्लव सूत्रों का मिलान हनुमान के समय के मूल पौधों के साथ कराकर जांचा जा सके। उन चार में से किसी एक के बिना, प्राचीन तकनीक को बड़े पैमाने पर फिर से सामने लाना असंभव होता। पल्लव ग्रंथ अनुपात, मात्रा या प्रक्रियाओं का वर्णन नहीं करते हैं। मैं वो ज़रूरी धुरी था जो इकोलिकम की मदद ले सकता था।’

‘और गोली?’ पैम ने पूछा। ‘अंतिम संस्कार?’

‘सब नाटक था। मैं उस नाव पर था और एक गोली चली, लेकिन वह गोली मेरे ही एक सहकर्मी, जहाज़ के डॉक्टर, ने चलाई थी। मुझ पर नहीं बल्कि हवा में। वे मुझे तुरंत अपने ऑनबोर्ड क्लीनिक में ले गए। जब जहाज़ बंदरगाह पर पहुंचा, तो मुझे एक टोकरे में छिपाकर बाहर ले जाया गया। शव परीक्षण रिपोर्ट दाखिल की गई, लेकिन वह भी फर्जी थी। जहाज़ के डॉक्टर ने मिलीभगत से सशस्त्र बल चिकित्सा परीक्षक के दफ्तर से फाइल गायब कर दी। किसी भी तरह के सवाल से बचने के लिए, एक विदुयत शवदाह गृह में एक सीलबंद ताबूत का “दाह संस्कार” किया गया। मेरा निजी

सामान डॉक्टर ने तुम्हारी मां को सौंप दिया था। इसके अलावा, चीनेयों और उनके गुर्गों को यह विश्वास दिलाने की हर संभव कोशिश की गई कि मैं वास्तव में मर गया हूँ।

‘मुझे कहना होगा कि डॉक्टर ने चौंकाने वाले तरीकों से आपकी मदद की थी,’ पैम ने कहा।

‘वो भी राव की तरह मेरा प्यारा दोस्त था। वो भी हमारे कवितापाठ वाले क्लब के सदस्यों में से एक था। और वो अभी भारत का प्रधानमंत्री है।’

पैम को संभलने में कई मिनट लग गए।

‘डॉक्टर ने इस घटना के बाद सेना से समय से पहले सेवानिवृत्ति का विकल्प चुना,’ राव ने बताया। ‘इसके बाद वो राजनीति में आ गया और इसमें आश्चर्यजनक रूप से अच्छा साबित हुआ। वो हमेशा से अच्छा भाषण देता था और काफी ज्यादा पढ़ता भी था। कविता के प्रति उसके शौक ने उसे भावनात्मक स्तर पर लोगों से जुड़ने में मदद की। अगले तीन दशक में, वो देश के सर्वोच्च पद पर पहुंच गया।’

‘लेकिन अगर उन्हें यह सब पता था तो उन्होंने आपके और कार्यक्रम के बारे में कुछ क्यों नहीं किया?’ पैम ने पूछा।

‘मैं लापता हो गया था। यहां तक कि पीएम को भी नहीं पता था कि मैं कहां हूँ। राव भी एकांतवास में चले गए थे और अपने कार्यक्रम को फिर से शुरू करने के इरादे पर विचार करने के लिए तैयार नहीं थे। प्रधानमंत्री को यह भी पता था कि सिस्टम में चीनी घुसपैठिये हैं और उन्हें बाहर निकालने की ज़रूरत है। इसलिए—वीटीके और मार्क की मदद से—वो तुम्हें एक नौसिखिए की तरह लाए, जिस पर वो भरोसा कर सकते थे। ऐसा नौसिखिया जो मुझे और राव को सिस्टम में वापस ला सकता था।’

‘और आपमें से किसी ने भी इस बात की परवाह नहीं की कि इस दौरान मेरे या मेरी मां के साथ क्या हुआ,’ पैम ने कहा। परिवार को इस तरह छोड़ देने की बात उसे अभी भी कचोट रही थी।

‘मेरी नकली मौत के बाद, तुम्हारी और तुम्हारी मां की मदद के लिए एक ट्रस्ट बनाया गया था। पीएम निजी तौर पर इसे देख रहे थे। बेशक, मैं शारीरिक रूप से तुम्हारी ज़िंदगी से गायब था, लेकिन मैं हमेशा अपने तरीके से तुम लोगों के साथ था। रक्षा प्रतिष्ठान में मेरे अपने लोग भी थे। जब मुझे बताया गया कि तुम चेन्नई आ रही हो, तो मैं तुम्हारा ड्राइवर बन गया ताकि मैं तुम्हारी हिफाजत कर सकूँ। मैं तुम्हें बार-बार देखना रोक नहीं पाता था। बहुत समय हो गया था। और मैं तुममें काफी हद तक खुद को देख पाता हूँ।’

पैम के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। खुराना झिझकते हुए आगे बढ़े, उन्हें पता नहीं था कि वो उनके आगे बढ़ने पर क्या प्रतिक्रिया देगी। लेकिन इससे पहले कि वो आखरी कदम उठाते, पैम उनके गले लग गई और एक बच्चे की तरह रोने लगी।

वो उन्हें फिर कभी गायब नहीं होने देगी। कभी नहीं।

खान मार्केट के अंदर बना कैफे टर्टल इस समय अपेक्षाकृत शांत था। मार्क और पैम एक कोने में विंडो टेबल पर बैठे थे। पैम को बुलाने के लिए मार्क ने लगातार कई बार कोशिशें की थीं। लेकिन असली कड़ी साबित हुए पैम के पिता।

‘जब मैं तुम्हारी जिंदगी में नहीं था, तो वेगावती ट्रस्ट नाम के फाउंडेशन ने तुम्हारी आर्थिक मदद करने के लिए कदम बढ़ाया था,’ खुराना ने कहा था। ‘तुम्हें क्या लगता है कि ट्रस्ट ने तुम्हें और तुम्हारी मां को विशेष रूप से मदद देने के लिए क्यों चुना था?’

पैम ने कहा, ‘मुझे बताया गया कि वे सेना की विधवाओं की मदद करते हैं।’

‘केवल एक परिवार की मदद की गई,’ खुराना ने कहा। ‘और वह परिवार हमारा था। इसे तुम्हारी और तुम्हारी मां की देखभाल के लिए राव, प्रधानमंत्री और मैंने बनाया था। इसके नाम से तुम्हारे दिमाग में घंटी ज़रूर बजनी चाहिए थी। वेगावती उस नदी का नाम है जिसके किनारे राव की अकादमी कांची में है। मार्क ने भी मदद की।’

पैम ने कहा, ‘मैं समझ गई कि हमारे लिए ट्रस्ट बनाया गया। लेकिन इसका मार्क से क्या लेना-देना है?’

‘मेरे गायब होने और राव के एकांतवास में चले जाने के बाद, ट्रस्ट की देखरेख पीएम कर रहे थे। अंत में उन्होंने यह जिम्मेदारी वीटीके और मार्क को सौंपी। मार्क हमेशा तुम्हारी देखभाल में लगा रहा है। सिर्फ सुरक्षा कवर के तौर पर नहीं।’

‘आप मार्क को जानते थे?’ पैम ने पूछा।

‘सीआईए के साथ कंबोडिया में मार्क के कार्यकाल के दौरान, राव और मैं एक खोजी मुहिम पर वहां गए थे। मार्क से हमें वीटीके ने ही मिलवाया था। हमें जल्द ही पता चल गया कि मूल कलश कई सौ साल पहले कंबोडिया से बाहर ले जाए गए थे। काफ़ी रिसर्च के बाद, हमें पता चला कि उन्हें चिदंबरम मंदिर में छिपाया गया था, लेकिन राव और मैंने फैसला किया कि इस जगह के बारे में किसी को भी नहीं बताना चाहिए, यहां तक कि मार्क या पीएम को भी नहीं। इसलिए मैं एक टूर गाइड बन गया: ताकि मैं इस पर नज़र रख सकूं।’

पैम ने महसूस किया कि उसकी नज़र उस शख्स पर टिकी थी जो लंबे समय से चुपचाप उसका ख्याल रख रहा था। दोनों चुपचाप अपनी कॉफी के घूंट लेते रहे और खिड़कियों से सड़क के उस पार पेड़ की कतारों को देखते रहे।

मार्क ने अचानक कहा, ‘एर्किन कल अपनी मां से मिला।’ उसने अपने फ़ोन पर एक तस्वीर दिखाई जिसमें मां और बेटे को गले मिलते हुए दिखाया गया था। तस्वीर किसी अनजान जगह पर ली गई थी। उसने आगे एक वीडियो दिखाया जिसमें एर्किन की मां अपने बेटे का हाथ पकड़कर दुआ कर रही थी।

अल्लाहुम्मा इन्नी अउदु बिका मिन ज़ावली निमतिका

वा ताहव्वुली ‘आफ़ियातिका,

वा फुजाअति निकमतिका,

वा जामी‘इ सखातिका।

‘या अल्लाह, मैं तेरे उपकारों के घटने, सुरक्षा के ख़त्म होने, तेरे अचानक सज़ा देने

और उन सभी चीज़ों के खिलाफ़ जो तुझे नाराज़ करती हैं, तेरी पनाह में आने की इजाज़त मांगता हूँ।’

पैम मुस्कुराई। ‘ली झू के बारे में क्या ख़बर है?’ उसने पूछा।

‘वह इज़रायल चला गया। उसे उम्मीद है कि मोसाद उसके परिवार को चीन से बाहर निकालने में उसकी मदद कर सकता है।’

‘जनपथ पर चीनी दुकान मालिक के साथ तुम्हारी क्या चर्चा हुई थी? ठाकुर ने मुझे जो तस्वीर दिखाई थी, उसमें तुम्हें उससे हाथ मिलाते हुए और फिर गंभीर चर्चा करते हुए दिखाया गया था।’

‘जैसा कि मुझे याद है मेरे शब्द ये थे, “मैंने इस मामले पर चर्चा की है। और ज़ाहिर तौर पर हम शर्तों से सहमत हैं। बुज़ांग इन लोगों को हमारी तरफ़ आने से रोकने के लिए सब कुछ करेगा। हालांकि, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ये काम हो जाए”।’

‘ठीक है। आगे क्या होगा?’ पैम ने पूछा।

‘भारत-चीन संबंधों में कुछ तनाव रहेगा। लेकिन मुझे लगता है कि दोनों पक्षों के राजनीतिक नेतृत्व को अंततः यह समझने की ज़रूरत होगी कि दोनों देशों को एक-दूसरे के उद्देश्यों को नुकसान पहुंचाने की बजाय एक साथ काम करने से ज़्यादा फायदा होगा।’

‘और चीनी सूचना नेटवर्क और कार्यक्रम?’

‘जया मर चुकी है। ठाकुर हिरासत में हैं। उसके ज़रिए वीटीके यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या और जासूस भी हैं। तुम्हारे माता-पिता खुशी-खुशी फिर से मिल गए हैं जबकि राव तुम्हारे पिता के साथ काम करने के लिए फिर से साथ हो गए हैं। कल उनकी पीएम से मुलाकात हुई थी। चिदंबरम में रखे गए कलश निकाले जा रहे हैं और विशेष बल कार्यक्रम फिर से शुरू हो रहा है।’

‘वानर जनजाति का क्या होगा?’

‘हमें उन पर नज़र रखने के अलावा उन्हें परेशान करने की ज़रूरत नहीं है। क्या यह सबसे अच्छी चीज़ नहीं है जो हम कर सकते हैं—उन्हें और उनके जीने के तरीके को उनके हाल पर छोड़ दें?’

पैम ने हां में सिर हिलाया। ‘हालांकि, मुझसे ये सारे राज़ छुपाने के लिए मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूंगी,’ उसने कहा।

‘क्या तुमने कभी फ्रांसिस बेकन के बारे में सुना है?’ मार्क ने पूछा।

‘वो कौन हैं?’

‘कौन थे,’ मार्क ने सही किया। ‘वो एक अंग्रेज़ राजनयिक थे जिन्होंने इंग्लैंड के अटॉर्नी-जनरल और लॉर्ड चांसलर के रूप में काम किया। उन्होंने एक बार कुछ ऐसा कहा था जो हम सभी जासूसों पर लागू होता है।’

‘क्या?’

“‘जो कोई राज़ रखना चाहता है उसे इस बात को भी राज़ ही रखना चाहिए कि उसके पास कोई राज़ है,’” मार्क ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा। ‘और राज़ की बात हो रही है

तो...'

‘हां?’

‘सबसे बड़ा राज यह है कि मैंने रिटायर होने का फैसला कर लिया है। अगले साल मैं पचास का हो जाऊंगा और मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने एक पूरी ज़िंदगी जी ली है।’

‘अब क्या करोगे तुम?’

‘गोवा में एक छोटा सा कॉटेज खरीदूंगा। उस सीफूड ज्वॉइंट पर फिर से खाना खाऊंगा, हिप्पियों के साथ मलाना क्रीम ज्वॉइंट शेयर करूंगा, ढेर सारी स्ट्रॉबेरी डाकरी और फेनी पिऊंगा, एक्स्ट्रा मेपल सीरप के साथ वैफल बनाऊंगा...’

‘और?’

‘समंदर के किनारे आलसियों की तरह ज़िंदगी बिताऊंगा। और तुमसे शादी करूंगा। अगर तुम अब भी मुझे चाहती होगी।’

## 100

चांग'आन में मेरा नायक की तरह स्वागत किया गया। यिन्दु की मेरी चमत्कारी यात्रा का समाचार हर तरफ फैल गया था और चांग'आन भर गया था, इसकी सड़कें जिज्ञासु आगंतुकों से लबालब भरी हुई थीं। भिक्षुओं का एक बड़ा समूह उन सभी सामानों को ले जाने में मदद करने के लिए आया था जो मैं अपने साथ लाया था। एक शोभा यात्रा निकाली गई। हमारी यात्रा रेड बर्ड स्ट्रीट से शुरू हुआ और ग्रेट हैप्पीनेस मॉनेस्ट्री पर खत्म हुई। जिस रास्ते से हम गुज़रे, उस रास्ते पर विद्वान, भिक्षु, अधिकारी और उत्साहित नागरिक कतार में खड़े थे, हम पर फूल और इत्र छिड़क रहे थे। पूरे मार्ग पर मुझे अभियान के लिए बधाई देने वाली पताकाएं लगी हुई थीं।

जब मैंने उन भिक्षुओं की संख्या देखी जिनकी ज़रूरत सभी सामानों को ले जाने की थी, तो मैं भी आश्चर्यचकित रह गया। मैं बुद्ध की हड्डियों के टुकड़े और सात मूर्तियां, जिनमें से कुछ सात फीट ऊंची थीं और चंदन, सोने और चांदी सहित विभिन्न सामग्रियों से बनी थीं, लेकर आया था। मेरी शोभा यात्रा में यिन्दु की अलग-अलग लिपियों में ताड़ के पत्तों की 657 पांडुलिपियां भी थीं। ये 520 संदूकों में थे और इनमें 224 महायान सूत्र, कई हीनयान ग्रंथ, तर्कशास्त्र की छत्तीस रचनाएं और व्याकरण की तेरह रचनाएं शामिल थीं।

सम्राट पूर्वोत्तर में एक सैन्य अभियान पर थे, लेकिन वो चाहते थे कि मैं उनकी दूसरी राजधानी डोंगडु में आऊं। वो डोंगडु के फीनिक्स पैलेस में मुझसे मिले और गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया। विशाल ज्वलंत महल के दरबार में उनसे हुई भेंट की यादें मेरे दिमाग में घूम गईं। मुझे याद है कि मैं क्यूई-शू स्थिति में उनके सामने घुटने टेक रहा था और मुझे उठकर उनके पास आने का आदेश दिया गया था। मुझे याद आया कि वो मेरे कानों में फुसफुसा रहे थे, ‘किन शी हुआंग की मूर्खता का समाधान चाहिए।’ अब, उनकी आंखें पूरी तरह खुली थीं और मुझे पता था कि वो पहेली के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस पहेली के कारण उन्होंने अनौपचारिक रूप से यिन्दु की मेरी यात्रा की

अनुमति दी थी, हालांकि उन्होंने सार्वजनिक रूप से इससे इनकार किया था। मैंने उनसे कहा, 'किन शी हुआंग की मूर्खता यह सोचना है कि अमरत्व किसी शक्तिवर्धक औषधि का परिणाम हो सकती है। हां, बमाहाओ-शिपो-पिशिनू किसी के जीवन के कई वर्ष बढ़ा सकता है, लेकिन आत्मा की अमरता हम सभी में पहले से ही मौजूद है। बस हम इसे देख नहीं पाते।'

सम्राट मुस्कुरा दिए। वो मेरी यात्रा के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे और उन सभी देशों के बारे में जानना चाहते थे, जहां मैं गया था। वो मेरे द्वारा तय की गई दूरियों से आश्चर्यचकित रह गए थे। मैंने उन्हें समझाया कि उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई है और उस कारण ही मेरा अभियान संभव हो सका। वो साम्राज्यों, राजाओं, जलवायु, भोजन, परंपराओं, लोगों, संस्कृतियों, इतिहास और धर्मों के बारे में मेरे वर्णन से मंत्रमुग्ध हो गए थे। कई बार उनके दरबारियों और बहनोई ने उन्हें याद दिलाया कि सेना उनकी प्रतीक्षा कर रही है, लेकिन उन्होंने उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया। वो बस यिन्दु से लाई गई शक्कर की गोलियों को चूसते हुए मेरी यात्रा की कहानी सुनना चाहते थे।

अचानक वो उठे और बाहर की तरफ चल दिए और मुझे अपने पीछे आने को कहा। उनके सलाहकारों ने सोचा कि सम्राट सैनिकों का निरीक्षण करने के लिए तैयार थे। लेकिन नहीं, वो माउंट सॉन्ग की यात्रा करना चाहते थे। उनके लिए जल्दी-जल्दी वहां स्थित शाओलिन मठ की यात्रा की व्यवस्था की गई। उन्होंने मुझसे अपनी शाही पालकी में अपने साथ चलने को कहा, जो एक दुर्लभ सम्मान था। उन्होंने कहा, 'मैं आपका कोई सम्मान नहीं कर रहा हूं। मैं बिना किसी रुकावट के कुछ घंटे चाहता हूं ताकि मैं आपके असाधारण अभियान को पूरी तरह से समझ सकूं।'

जब हम शाओलिन पहुंचे, तो भिक्षुओं ने सम्राट का औपचारिक स्वागत किया, जो पहले से ही जानते थे कि मैं कौन हूं और वहां क्यों आया था। वे तुरंत हमें बोधिधर्मा की छाया गुफा के पीछे गुप्त कमरे में ले गए। सामने तीन चबूतरे थे जिन पर दो कलश रखे हुए थे। हरेक के सामने जलती अगरबत्तियां रखी हुई थीं। पहले चबूतरे पर 'बमाहाओ' नाम लिखा था। इसमें वह कलश था जिसे फाह्यान चिना लाए थे और जिसे श्वेताश्व मंदिर में रखा गया था, फिर कई वर्षों बाद शाओलिन में स्थानांतरित कर दिया गया था। दूसरे चबूतरे पर 'शिपो' लिखा था और उस पर वह कलश रखा हुआ था जिसे बोधिधर्मा ने शाओलिन के भिक्षुओं को उन्हें दाखिला देने पर भेंट किया था। तीसरे चबूतरे का नाम 'पिशिनू' रखा गया था, लेकिन वह खाली था। शाओलिन के भिक्षुओं ने बड़ी सावधानी और अनुष्ठान के साथ मेरे लिए गए कलश को इस तीसरे चबूतरे पर रखा और उसके सामने अगरबत्तियां जलाई।

फिर सम्राट मेरी ओर मुड़े। मैं झट से उनके सामने घुटनों के बल बैठ गया। शाओलिन के दो वरिष्ठतम भिक्षु उनके दाईं और बाईं ओर खड़े थे। सम्राट ने मुझसे कहा, 'आपने फाह्यान और बोधिधर्मा की तरह हमारे लोगों को गौरवान्वित किया है। अब आप डि

सैन सू चुआन—तीसरे पात्र हैं।

## प्राचीन स्थानों के नाम और उनके आधुनिक नाम—फुटनोट संख्याओं के साथ

- अधिष्ठान: श्री नगर, आधुनिक श्रीनगर, कश्मीर, भारत। 83  
अकिनी: यांकी, चीन के शिन्जियांग में आधुनिक करासहर के साथ मेल खाता है। 33  
आंध्रदेश: भारत में आधुनिक आंध्र प्रदेश राज्य। 121  
एंटीलापो: अंदाराब, अफगानिस्तान के बगलान प्रांत के दक्षिणी भाग में स्थित है। 138  
एंक्सी: चीन के गांसु प्रांत में आधुनिक गुआझोउ। 21  
अयुते: अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत। 97  
भरूकाचा: भारत के गुजरात में आधुनिक भरूच। 134  
चंद्रभागर: चिनाब नदी, पंजाब की प्रमुख नदियों में से एक, पाकिस्तान और भारत में बहती है। 84  
चांग'आन: चीन के शान्क्शी प्रांत में आधुनिक शि'आन। 11  
चे-शिह: आधुनिक ताशकंद, उज़्बेकिस्तान। 40  
चेमो-चेरचेन: चेरचेन, चीन के शिन्जियांग में टकलमकान रेगिस्तान के दक्षिण-पूर्वी इलाके में एक नदी नखलिस्तान शहर। 144  
चेनलियू: चीन के हेनान प्रांत में कैफेंग काउंटी, कैफेंग का एक शहर। 3  
चिनाभुक्ति: भारत के पंजाब में आधुनिक फ़िरोज़पुर। 86  
चिना: चीन। 6  
कॉन्गलिंग: पामीर के पहाड़; तियान शान, काराकोरम, कुनलुन, हिंदू कुश, सुलेमान और हिंदू राज पर्वतमाला के साथ हिमालय के जंक्शन पर स्थित है। 35  
कॉन्गलिंग दर्रा: किर्गिस्तान और शिन्जियांग, चीन के बीच बेडल दर्रा। 37  
डाकिन: रोम। 12  
डैक्सिया: तोखारा- अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान के हिस्से। 107  
लाल रेत का रेगिस्तान: आधुनिक कज़ाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान में किज़िलकुम रेगिस्तान। 45  
धनकटका: भारत के आंध्र प्रदेश में आधुनिक विजयवाड़ा। 123  
डोंगडु: चीन के हेनान प्रांत में आधुनिक लुओयांग। 1  
द्रविड़: आधुनिक तमिलनाडु, भारत। 125  
फोहो नवविहार: अफगानिस्तान में वेलायत-ए-बल्ख। 56  
फू-शुई: गंगा नदी, भारत। 55  
गांधार: आधुनिक पेशावर घाटी, काबुल घाटी, स्वात और चित्राल। 43  
गाओचांग: चीन के शिन्जियांग में आधुनिक काराखोजा। 29

- गाओहाटी: भारत में आज का असम राज्य जिसकी राजधानी गुवाहाटी है। 112
- गशुन गोबी शामो: चीन और मंगोलिया में गोबी रेगिस्तान। 26
- गोगुरियो: कोरिया 106
- ग्रेट प्योर झील: पूर्वी किर्गिस्तान में आज की इस्सिक कुल झील। 39
- महान समुद्री पत्तन: भारत के ओडिशा में आज की पुरी। 118
- महान स्तूप: भारत में विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश के करीब अमरावती स्तूप। 124
- हांतेंगगेली फेंग: माउंट खान टेंगरी, तियान शान रेंज का हिस्सा। 38
- दिव्य पर्वत: चीन के शिन्जियांग में तियान शान पर्वत। 28
- हेक्सी जूलांग: चीन के गांसु प्रांत में हेक्सी कॉरिडोर। 16
- हुआंग हे: पीली नदी, चीन की दूसरी सबसे लंबी नदी। 2
- हुओ: अफगानिस्तान में आज का कुंदुज़। 49
- हुओयानशान: चीन के शिन्जियांग के तियान शान पहाड़ों में ज्वलंत पर्वत, बलुआ पत्थर की पहाड़ियां। 30
- हुसेकिआलो: हुश्कारा मठ - यह गांव अभी भी, बारामुला के दक्षिण-पूर्व में दो मील की दूरी पर, बेहट नदी के किनारे उस्कर के रूप में मौजूद है। 81
- ईराना: आज के बांग्लादेश और भारतीय राज्य पश्चिम बंगाल के इलाके। 111
- लौह द्वार: समरकंद और बल्ख के बीच संकीर्ण दर्रा। 48
- इसिपताना: सारनाथ मृग उद्यान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत। 95
- जलंधर: आधुनिक जलंधर, पंजाब, भारत। 54
- जियांग्लिंग: आधुनिक जिंगझोउ, हुबेई, चीन। 5
- कांसी: भारत के तमिलनाडु में आधुनिक कांचीपुरम। 126
- कानोकुशे: कान्यकुब्ज, आज का कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत। 92
- कांटोलो: प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप, आज के अफगानिस्तान और पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में एक प्राचीन राज्य, गांधार का हिस्सा। 69
- कपिलवस्तु: नेपाल के लुम्बिनी क्षेत्र में आधुनिक तिलौराकोट। 101
- काशा: आधुनिक काशगर, शिन्जियांग, चीन। 139
- काशी: आज का वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत। 102
- कश्मीरा: आज का कश्मीर, भारत। 53
- कावाख्या दर्रा: खवाक दर्रा, हिंदू कुश रेंज से उत्तरी अफगानिस्तान तक पंजशीर घाटी के मुहाने के पास। 137
- कियाओशांगमी: कौशांबी, आधुनिक मंझनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत। 99
- कियापिशी: प्राचीन कपिसि, अफगानिस्तान में आधुनिक बगराम। 60
- कोंकणपुरा: भारत की पश्चिमी तटरेखा। 128

- क्षहरतापुरी: भारत के महाराष्ट्र में आधुनिक मुंबई। 129
- कुभा नदी: अफगानिस्तान में काबुल नदी। 64
- कुसी: इसे कुचा (या कुषाण) भी कहा जाता है, चीन के शिन्जियांग में आज का अक्सु 34
- कुलु-तू: कुलांत पीठ, या भारत के हिमाचल प्रदेश में आज के कुल्लू-मनाली। 88
- कुनलुन शान: तिब्बती पठार के उत्तरी किनारे पर कुनलुन पर्वत। 36
- कुसावती: कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत। 96
- पश्चिमी महिलाओं का देश: होर्मुज़ द्वीप, ईरान। 136
- लिआंगजू: चीन के गांसु प्रांत में आधुनिक वुवेई। 20
- लुंबिनीवन: लुंबिनी, नेपाल। 93
- महाराष्ट्र: भारत में आज का महाराष्ट्र राज्य 130
- मेंगु: मंगोलिया। 108
- मेंगु घास की भूमि: मंगोलिया के घास के मैदान। 17
- मोहोलो: भारत के मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र। 132
- बंधकों का मठ: काबुल, अफगानिस्तान के उत्तर में शोटरक मठ। 62
- मोटुलो: भारत के उत्तर प्रदेश में आज का मथुरा। 91
- माउंट सॉन्ग: चीन के हेनान प्रांत में पर्वत। 8
- नकालोहो: नगरहारा, अफगानिस्तान में आज का जलालाबाद। 63
- निरंजना नदी: भारत के बिहार और उत्तर प्रदेश में फल्गु नदी। 105
- पाटलिपुत्र: आज के पटना के नज़दीक, बिहार, भारत 104
- चमकते प्रकाश का स्थान: आज का बामियान, अफगानिस्तान। 58
- पो-त्सु नदी: अमु दरिया नदी (या ऑक्सस नदी), जो अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान से होकर बहती है। 50
- पोलोमेनकुओ: ब्राह्मणों की भूमि, भारत के लिए इस्तेमाल होने वाला एक और वाक्यांश। 67
- पोलोयका: प्रयाग, आज का इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत। 98
- पोटोचांगना: बदख्शां का ऐतिहासिक क्षेत्र जिसमें अब उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान, पूर्वी ताजिकिस्तान और चीन में ताशकुर्गन काउंटी के कुछ हिस्से शामिल हैं। 140
- पु-हो: उज़्बेकिस्तान में आधुनिक बुखारा। 47
- पुलुशापुलो: आधुनिक पेशावर, जो पाकिस्तान में है, यह नाम संस्कृत के 'पुरुषपुरा' या 'पुरुषों के शहर' से लिया गया है। 70
- पुष्पगिरि: भारत के ओडिशा के जाजपुर जिले में लांगुडी पहाड़ियों में स्थित है। 119
- किंगहाई पठार: तिब्बती पठार। 18

- राजागहा: राजगृह, भारत के बिहार में आज का राजगीर। 110  
सकाला: पाकिस्तान में आज का सियालकोट। 85  
समोकिएन: उज़्बेकिस्तान में आज का समरकंद। 46  
संतों का आसन: पाकिस्तान में खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के हरिपुर जिले में जौलियन मठ। 79  
छाया गुफा: अफगानिस्तान में चरार बाग गांव के पास। 68  
शांगडांग: चीन के दक्षिणपूर्व शांक्शी प्रांत में आज का चांगज़ी शहर। 4  
शानशान: टकलामकान रेगिस्तान के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित साम्राज्य। 143  
शाझोउ: चीन के गांसु प्रांत में आज का डुनहुआंग। 24  
शी नदी: सीर दरिया नदी, जिसे यूनानी जैक्सर्टस नदी के नाम से जानते हैं, आज के उज़्बेकिस्तान और कज़ाकिस्तान से होकर बहती है। 44  
सिचुआन लू: आज का सिचुआन प्रांत, चीन। 9  
सिघ कोह: परवान प्रांत को बामियान प्रांत से जोड़ने वाला शिबर दर्रा। 59  
रजत पर्वत: चीन के शिन्जियांग में अर्गु टैग शृंखला। 32  
सिम्हाला: आज का श्रीलंका। 115  
बर्फ़ीले पर्वत: हिंदू कुश पर्वत जो अफगानिस्तान से होते हुए उत्तरी पाकिस्तान और ताजिकिस्तान और चीन तक फैले हुए हैं। 57  
दक्षिण कोसल: भारत में आज के छत्तीसगढ़ और ओडिशा के हिस्से। 120  
जंगली घोड़ों का झरना: गोबी रेगिस्तान में आज का नन्हू नखलिस्तान। 27  
स्रावस्ती: भारत के उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती ज़िले में आज का भिंगा शहर। 100  
सुईये: किर्गिस्तान में आज का टोकमोक। 41  
सुपोफ़ास्तु नदी: सुभावस्तु, आधुनिक स्वात नदी। 73  
ता-मी: उज़्बेकिस्तान में अफ़ग़ानिस्तान की हेरातन सीमा के पास आज का टर्मज़। 51  
ताएर: आज की गुआज़ू काउंटी में सौयांग शहर के खंडहर। 22  
तचाशिलो: तक्काशिला, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावलपिंडी के पास आज का तक्षशिला। 75  
तकलामगन शामो: चीन के दक्षिण-पश्चिम शिन्जियांग में टकलामकान रेगिस्तान। 19  
तमोसुफ़ना: जलंदर के पास तमसवन मठ। 87  
ताम्रलिप्ति: तमालुक, भारत के कोलकाता से 41 मील दक्षिण पश्चिम में। 114  
ग्रेट डैगन झील: पामीर पर्वत में ज़ोर्कुल झील, जो अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान के बीच की सीमा पर बहती है। 141  
पथरीली पट्टिका: भारत और श्रीलंका के बीच पाक जलडमरूमध्य। 116  
छह साम्राज्य: आधुनिक म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम। 113

- दो शक्तियां: कृष्णा नदी और गोदावरी नदी। 122  
हज़ार बुद्ध गुफाएं: चीन के शिन्जियांग में आधुनिक बेज़ेक्लिक गुफाएँ। 31  
टुबो: तिब्बत। 109  
टर्फन: चीन के शिन्जियांग में आज का टर्फन। 14  
उदकखंड: पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आधुनिक मुज़फ़्फराबाद। 72  
उद्रा: आधुनिक ओडिशा, भारत। 117  
उरुबेला: बोधगया, बिहार, भारत। 94  
उतोकियाहांचा: आधुनिक हुंड, पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के स्वाबी जिले का एक छोटा सा गांव। 74  
वैशाली: भारत के बिहार का तिरहुत प्रमंडल। 103  
वकाटक: औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत में अजंता की गुफाएं। 131  
वल्लभी: भारत में आज का गुजरात। 135  
वराहमूला: झेलम नदी के किनारे बारामूला शहर, श्रीनगर, कश्मीर, भारत से नीचे की ओर। 82  
वातापी: भारत के कर्नाटक में आधुनिक बादामी। 127  
विपासा नदी: भारत के पंजाब में व्यास नदी। 89  
वितस्ता नदी: झेलम नदी, जो उत्तरी भारत और पूर्वी पाकिस्तान से होकर बहती है। 80  
पश्चिमी तुर्किक खगनाते: आज के कज़ाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान के इलाके और किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और रूस के कुछ हिस्से। 42  
ज़िला: ग्रीस। 61  
ज़ियू: पश्चिमी क्षेत्र, युमेन दर्रे से आगे का इलाका। 15  
यांगचेंग: चीन के हेनान प्रांत में आज का डेंगफेंग। 10  
याज़ू: एशिया। 13  
येनमौना नदी: उत्तर भारत में यमुना नदी। 90  
यिन्दु: भारत। 7  
यिन्दु दर्रा: पाकिस्तान में खैबर दर्रा। 71  
यिन्दु नदी: सिंधु नदी, जो लद्दाख, गिलगित-बाल्टिस्तान, कश्मीर और पाकिस्तान से होकर बहती है। 65  
यिज़ू: चीन के शिन्जियांग में आज का हामी नखलिस्तान। 25  
युमेन गुआन: युमेन दर्रा या जेड गेट जो चीन के गांसु प्रांत के डुनहुआंग के पश्चिम में स्थित है। 23  
युटियन: आधुनिक होटन, शिन्जियांग, चीन। 142

## संदर्भ

मैं हमेशा उन किताबों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, वीडियो और वेबसाइटों की एक बड़ी सूची देने की कोशिश करता हूँ जिनका इस्तेमाल मैंने अपनी कहानी को आगे बढ़ाते समय किया है। इनमें से कुछ स्रोतों में ऐसे विचार भी हो सकते हैं जो कहानी के विपरीत हों। भारत शृंखला की किसी भी किताब का उद्देश्य आगे की खोज के लिए एक शुरुआती बिंदु देना है। मुझे उम्मीद है कि मेरे पाठक और ज़्यादा जानकारी जुटाने के लिए स्रोतों की इस सूची का उपयोग करेंगे।

1. *Buddhist Centre—Hsuan Tsang*, [https://thebuddhistcentre.com/system/files/groups/files/week\\_4\\_-\\_hsuan-tsang\\_xuanzang.pdf](https://thebuddhistcentre.com/system/files/groups/files/week_4_-_hsuan-tsang_xuanzang.pdf).
2. *Buddhist Records of the Western World*, Samuel Beal [https:// www.wisdomlib.org/south-asia/book/buddhist-records-of-the-western-world-xuanzang/d/doc220262.html](https://www.wisdomlib.org/south-asia/book/buddhist-records-of-the-western-world-xuanzang/d/doc220262.html).
3. *China Buddhist Encyclopedia—Xuanzang*, <http://www.chinabuddhismencyclopedia.com/en/index.php/Xuanzang>.
4. *Da Mo Zu Shi—Master of Zen—Bodhidharma*, [https://www.youtube.com/watch?v=GQik8m\\_Z8fo](https://www.youtube.com/watch?v=GQik8m_Z8fo).
5. *Empires of the Silk Road: A History of Central Eurasia from the Bronze Age to the Present*, Christopher I. Beckwith, Princeton University Press, 2011.
6. *Encyclopaedia of Ancient Indian Geography, Volume 1*, Subodh Kapoor, Genesis Publishing, 2002.
7. *Futuristic Sci-Fi Military Technologies That Already Exist*, Himanshu Sharma, <https://listverse.com/2019/06/10/10-futuristic-sci-fi-military-technologies-that-already-exist/>.
8. *Gayatri Mantras of the Several Gods* [http://www.hindupedia.com/en/G%C4%81yatri\\_Mantras\\_of\\_Several\\_Gods](http://www.hindupedia.com/en/G%C4%81yatri_Mantras_of_Several_Gods).
9. *Great Tang Dynasty Record of the Western Regions*, Edited by Bianji, Translated by Li Rongxi, BDK America, 1996.
10. *Hanuman: Valour, Wisdom, Humility and Devotion*, APN Pankaj, Prabuddha Bharata Vol. 113 No. 10, 2008, [https:// advaitaashrama.org/pb/2008/102008.pdf](https://advaitaashrama.org/pb/2008/102008.pdf).
11. *Incredibly Futuristic Weapons and Modern Fighting Vehicles*, Adrian Willings, <https://www.pocket-lint.com/gadgets/news/142272-28-incredible-futuristic-weapons-showing-modern-military-might>.
12. *India-China Doklam Standoff*, Gopal Sharma, Sumit Enterprises, 2018.
13. *Indian Herb 'Sanjeevani' (Selaginella bryopteris) Can Promote Growth and Protect Against Heat Shock and Apoptotic Activities of Ultra Violet and Oxidative Stress*, Nand K. Sah, Shyam Nandan P. Singh and others, Department of Biotechnology, Madhav Institute of Technology and Science, Gwalior, 2005, [https://www.researchgate.net/publication/7580332\\_Indian\\_herb\\_'Sanjeevani'\\_Selaginella\\_bryopteris\\_can\\_promote\\_growth\\_and\\_protect\\_against\\_heat\\_shock\\_and\\_apoptotic\\_activities\\_of\\_ultra\\_violet\\_and\\_oxidative\\_stress](https://www.researchgate.net/publication/7580332_Indian_herb_'Sanjeevani'_Selaginella_bryopteris_can_promote_growth_and_protect_against_heat_shock_and_apoptotic_activities_of_ultra_violet_and_oxidative_stress).
14. *Influence of Caste System in Clothing—Medieval South India Before Sultanates*, Purushu Arie, 2018, <https://purushu.com/2018/08/influence-of-caste-system-in-clothing-medieval-south-india-before-sultanates.html>.
15. *Intervention in Sri Lanka: The IPKF Experience*, Gen. Harkirat Singh, Manohar Publishers,

## SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

2007.

16. *Isolated Tribes*, <https://www.sciencemag.org/tags/isolated-tribes>.
17. *Journey to the West*, Wu Cheng'en, Edited and translated by Anthony C. Yu, University of Chicago Press, 2012.
18. *Journey to the West: A Play*, Mary Zimmerman, Northwestern University Press, 2011.
19. *Kaoboy's of R&AW: Down Memory Lane*, B. Raman, Lancer Publishers, 2009.
20. *Mahabalipuram: Costumes and Jewellery*, Gift Siromoney, Madras Christian College Magazine, Vol. 39, April 1970, [https://www.cmi.ac.in/gift/Archeaology/arch\\_jewellery.htm](https://www.cmi.ac.in/gift/Archeaology/arch_jewellery.htm).
21. *Maritime History of India*, Rear Admiral K. Sridharan, Publications Division of Ministry of Information and Broadcasting, 2017.
22. *Monkey: Folk Novel of China*, Wu Ch'engen, Translated by Arthur Waley, Evergreen Books by Grove Weidenfeld, 1994.
23. *Naga Story: First Armed Struggle in India*, H.C. Chandola, Promilla/Bibliophile South Asia, 2012.
24. *Ocean of Churn: How the Indian Ocean Shaped Human History*,
25. Sanjeev Sanyal, Penguin Random House India, 2017.
26. *On Yuan Chwang's Travels in India 629-645 AD*, Thomas Watters, London Royal Asiatic Society, 1904.
27. *Pallavas Kingdom: Origin and Life under the Pallavas* <http://www.historydiscussion.net/history-of-india/the-pallavas-kingdom-origin-and-life-under-the-pallavas/2535>.
28. *Pallavas*, G. Jouveau-Dubreuil, Translated by S. Swaminadha Dikshitar, Asian Education Services, 1995.
29. *Prisoners of War*, Sam Cowan, <https://www.recordnepal.com/wire/prisoners-war/>.
30. *Real Tripitaka and Other Pieces*, The Arthur Waley Estate, Routledge, 2013.
31. *Sanjivani Quest: An Uttarakhand Village Hasn't Forgiven Hanuman for Defacing Their Holy Mountain*, Mrinal Pande, <https://scroll.in/article/812802/the-sanjivani-quest-an-uttarakhand-village-hasnt-forgiven-hanuman-for-defacing-their-holy-mountain>.
32. *Shadow Image in the Cave—Discourse on Icons*, Eugene Wang, [https://www.academia.edu/5911631/The\\_Shadow\\_Image\\_in\\_the\\_Cave\\_Discourse\\_on\\_Icons](https://www.academia.edu/5911631/The_Shadow_Image_in_the_Cave_Discourse_on_Icons).
33. *Shaolin Kung-fu's Indian Connection*, Aditi Shah, <https://www.livehistoryindia.com/snapshots-histories/2019/02/20/shaolin-kung-fus-indian-connection>.
34. *Silk Road During the Tang Dynasty*, <http://factsanddetails.com/china/cat2/sub90/entry-5441.html#chapter-4>.
35. *Silk Road Encyclopedia*, Jeong Su-Il, Seoul Selection, 2016.
36. *Silk Road Explorers*, htt sub8/.
37. *Silk Road Journey with Xuanzang*, Sally Hovey Wriggins, Westview Press, 2004.
38. *Sino-Indian Relations: A Tale of Two Asian Giants—Historical Analysis of Discord and 1962 Border War, Cooperation, Competition, Conflict, 2017 Doklam Standoff, Unresolved Territorial Dispute*, Daniel Godkin, US Government, Kindle Edition, 2019.
39. *Special Features of the Popularization of Bodhidharma in Korea and Japan*, Beatrix Mecsi, Institute of East Asian Studies IV (XX) Elte University Budapest, 2016, [https://www.researchgate.net/publication/297755673\\_Special\\_Features\\_of\\_the\\_Popularization\\_of\\_Bodhidharma](https://www.researchgate.net/publication/297755673_Special_Features_of_the_Popularization_of_Bodhidharma).
40. *Story of Angkor*, Jame DiBiasio, Silkmorm Books, 2013.

## SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

41. *Story of the South Indian Prince Bodhidharma Who Founded Zen Buddhism and Shaolin Kung Fu*, <https://m.dailyhunt.in/news/india/english/wittyfeed+india-epaper-witty/the+story+of+the+south+indian+prince+bodhidharma+who+founded+zen+buddhism+and+shaolin+kung+fu-> newsid-65206509.
42. *Sunnah: The Book of Supplications*, <https://sunnah.com/riyadussaliheen/17/14>.
43. *Temples of The Pallavas in Kanchipuram District: A Historical Study*, V. Purushothaman, Department of History Pachaiyappa College Chennai, 2016, <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/180609>.
44. *Thondaimandalam: Costumes and Jewellery*, G. Siromoney, 1973, [https://www.cmi.ac.in/gift/Archeaology/arch\\_thondai.htm](https://www.cmi.ac.in/gift/Archeaology/arch_thondai.htm).
45. *Three Wise Monkeys: Mizaru, Kikazaru and Iwazaru*, Ivana Andonovska <https://www.thevintagenews.com/2017/06/03/priorityrwmizaru-kikazaru-iwazaru-three-wise-monkeys/>.
46. *Tracking Bodhidharma: A Journey to the Heart of Chinese Culture*, Andy Ferguson, Counterpoint, 2012.
47. *Transgenic Rhesus Monkeys Carrying the Human MCPHI Gene Copies Show Human-like Neoteny of Brain Development*, Lei Shi, National Science Review, Vol. 6, Issue 3, May 2019, <https://doi.org/10.1093/nsr/nwz043>.
48. *Travel Records of Chinese Pilgrims Faxian, Xuanzang and Yijing—Sources for Cross Cultural Encounters Between Ancient China and Ancient India*, Tansen Sen, Education About Asia Vol. 11 No. 3, 2006, [http://afe.easia.columbia.edu/special/travel\\_records.pdf](http://afe.easia.columbia.edu/special/travel_records.pdf).
49. *U.S. Ground Forces Robotics and Autonomous Systems (RAS) and Artificial Intelligence (AI): Considerations for Congress*, Feickert Andrew, Library of Congress, 2018, <https://www.hsdl.org/?abstract&did=819279>.
50. *Uyghurs: Strangers in Their Own Land*, Gardner Bovington, Columbia University Press, 2010.
51. *Where Hanuman Stands Alone*, <http://aalayamkanden.blogspot.com/2012/02/where-hanuman-stands-alone.html>.
52. *Xuanzang and Bodhidharma: Pilgrimage and Peace-building in Buddhist China and India*, Ian S. McIntosh, International Journal of Religious Tourism and Pilgrimage Vol. 4 Issue 6 Article 14, 2016, <https://pdfs.semanticscholar.org/8d9e/a04aaa453b9c20b6cedd3c7387fbca5c2cf5.pdf>.
53. *Xuanzang's Journey to India*, Chang Zheng, China Intercontinental Press, 2010.
54. *Xuanzang's Pilgrimage*, CCTV English, [https://www.youtube.com/watch?v=AVEJzp4h\\_MY](https://www.youtube.com/watch?v=AVEJzp4h_MY).
55. *Xuanzang's Record of the Western Regions*, Translated by Samuel Beal, <https://depts.washington.edu/silkroad/texts/xuanzang.html>.
56. *Zen Teaching of Bodhidharma*, Red Pine, North Point Press, 1987.

- . चीन के हेनान प्रांत में आज का लुओयांग।
- . पीली नदी, चीन की दूसरी सबसे लंबी नदी।
- . चीन के हेनान प्रांत में कैफेंग काउंटी, कैफेंग का एक शहर।
- . चीन के दक्षिणपूर्व शांक्सी प्रांत में आधुनिक चांगज़ी शहर।
- . आज का जिगज़ीऊ, हुबेई, चीन।
- . चीन
- . भारत
- . चीन के हेनान प्रांत में स्थित पहाड़

- . चीन में आज का सिचुआन प्रांत
- . चीन के हेनान प्रांत में आज का डेंगफेंग
- . चीन के शांज़ी प्रांत में आज का ज़ियान
- . रोम
- . एशिया
- . चीन के शिन्जियांग में आज का तुर्पान
- . पश्चिमी क्षेत्र, युमेन दर्रे से आगे का इलाका।
- . चीन के गांसु प्रांत में हेक्सी कॉरिडोर।
- . मंगोलिया के घास के मैदान।
- . तिब्बती पठार
- . चीन के दक्षिण पश्चिम शिन्जियांग में टक्लामकान रेगिस्तान।
- . चीन के गांसु प्रांत में आधुनिक वुवेई।
- . चीन के गांसु प्रांत में आज का गुआझू।
- . आधुनिक चीन के गुआझू काउंटी में सौयांग शहर के खंडहर।
- . युमेन दर्रा या जेड गेट, चीन के गांसु प्रांत में डुनहुआंग के पश्चिम में।
- . चीन के गांसु प्रांत में आधुनिक डुनहुआंग।
- . चीन के शीन्जियांग में आधुनिक हामी।
- . चीन और मंगोलिया में गोबी रेगिस्तान।
- . गोबी रेगिस्तान में आज का नान्हू नखलिस्तान।
- . शिन्जियांग, चीन में तियान शान पहाड़।
- . शिन्जियांग, चीन में आज का काराखोजा।
- . चीन के ज़िन्जियांग के तियान शान पहाड़ों में धधकते पहाड़, बलुआ पत्थर की पहाड़ियां।
- . चीन के ज़िन्जियांग में आज की बेज़ेक्लिक गुफाएं।
- . चीन के शीन्जियांग में अर्गु टैंग रेंज।
- . यान्क्वी, चीन के शिन्जियांग में आज के करासार के साथ मिलता-जुलता है।
- . कुचा (या कुशान) भी कहलाता है, शिन्जियांग, चीन में आज का अक्सु क्षेत्र
- . पामीर पर्वत, तियान शान, काराकोरम, कुनलुन, हिंदूकुश, सुलेमान और हिंदू राज पर्वत श्रृंखला के साथ हिमालय के जंक्शन पर स्थित हैं।
- . तिब्बती पठार के उत्तरी किनारे पर कुनलुन पर्वत।
- . बेडल दर्रा, किर्गिस्तान और शिन्जियांग, चीन के बीच।
- . माउंट खान टेंगरी, तियान शान रेंज का हिस्सा।
- . पूर्वी किर्गिस्तान में आधुनिक झील इस्सिक कुल।
- . आधुनिक ताशकंद, उज़्बेकिस्तान।
- . किर्गिस्तान में आधुनिक टोकमोक।
- . आधुनिक कज़ाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान और किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और रूस के कुछ हिस्से।
- . आज की पेशावर घाटी, काबुल घाटी, स्वात और चित्राल।
- . सीर दरिया नदी, जिसे यूनानी जैक्सर्टस नदी के नाम से जानते हैं, आधुनिक उज़्बेकिस्तान और कज़ाकिस्तान से होकर बहती है।
- . किज़िलकुम रेगिस्तान, आधुनिक कज़ाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान में।
- . उज़्बेकिस्तान में आधुनिक समरकंद।
- . उज़्बेकिस्तान में आधुनिक बुखारा।
- . आयरन गेट, समरकंद और बलख के बीच एक संकीर्ण दर्रा।
- . अमु दरिया नदी (या ऑक्सस नदी), जो अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान से होकर बहती है।
- . आधुनिक कुंदुज़, अफगानिस्तान।
- . उज़्बेकिस्तान में अफगानिस्तान की हेरातन सीमा के पास टर्मेज़
- . सिकंदर महान

- . आधुनिक कश्मीर, भारत
- . आधुनिक जलंधर, पंजाब, भारत
- . गंगा नदी, भारत
- . अफगानिस्तान में वेलायत-ए-बल्ख
- . हिंदू कुश पर्वत जो अफगानिस्तान से होते हुए उत्तरी पाकिस्तान और ताजिकिस्तान और चीन तक फैला हुआ है।
- . आधुनिक बामियान, अफगानिस्तान
- . शिबार दर्रा, परवान प्रांत को बामियान प्रांत से जोड़ता है।
- . प्राचीन कपिसि, अफगानिस्तान में आधुनिक बगराम।
- . ग्रीस
- . शोटरक मठ, काबुल, अफगानिस्तान के उत्तर में।
- . नगरहारा, अफगानिस्तान में आधुनिक जलालाबाद
- . अफगानिस्तान में काबुल नदी
- . सिंधु नदी, जो लद्दाख, गिलगिट-बाल्टिस्तान, कश्मीर और पाकिस्तान से होकर बहती है।
- . ऋग्वेद
- . ब्राह्मणों की भूमि
- . अफगानिस्तान के चरार बाग गांव के पास।
- . गांधार का हिस्सा, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम भाग में एक प्राचीन राज्य; आधुनिक अफगानिस्तान और पाकिस्तान।
- . पेशावर, पाकिस्तान में है, जो संस्कृत के 'पुरुषपुरा' या 'पुरुषों का शहर' से निकला है।
- . पाकिस्तान में खैबर दर्रा।
- . पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में मुज़फ्फराबाद
- . शुभवस्तु, आज के समय की स्वात नदी
- . आज के समय का हुंड, पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के स्वाबी ज़िले का एक छोटा सा गांव।
- . तक्कसिला, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावलपिंडी के पास आज के समय का तक्षशिला।
- . चाणक्य, अर्थशास्त्र के लेखक।
- . पाणिनि, अष्टाध्यायी के लेखक।
- . चरक, आयुर्वेद के जनक।
- . पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के हरिपुर जिले में जौलियन मठ।
- . झेलम नदी, जो उत्तरी भारत और पूर्वी पाकिस्तान से होकर बहती है।
- . झेलम नदी के किनारे बारामूला शहर, श्रीनगर, कश्मीर, भारत से नीचे की तरफ।
- . हुशकारा मठ। बारामूला से दो मील दक्षिण-पूर्व में बेहट नदी के तट पर यह गांव अभी भी उस्कार के रूप में मौजूद है।
- . श्री नगर, आज के समय का श्रीनगर, कश्मीर, भारत।
- . चिनाब नदी, पाकिस्तान और भारत में पंजाब की प्रमुख नदियों में से एक है।
- . आज के समय का सियालकोट, पाकिस्तान।
- . पंजाब, भारत में आज का फिरोजपुर।
- . जलंधर के पास तामसवन मठ।
- . हिमाचल प्रदेश, भारत में कुलंत पीठ, या आज के समय का कुल्लू-मनाली।
- . पंजाब, भारत में ब्यास नदी।
- . उत्तर भारत में यमुना नदी।
- . उत्तर प्रदेश, भारत में आज का मथुरा।
- . कान्यकुब्ज, आधुनिक कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत।
- . लुम्बिनी, नेपाल
- . बोधगया, बिहार, भारत
- . सारनाथ मृग उद्यान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
- . कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत
- . अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।
- . प्रयाग, आधुनिक इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

- . कौशांबी, आधुनिक मंझनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।
- . भारत के उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में आधुनिक भिन्ना।
- . नेपाल के लुम्बिनी क्षेत्र में तिलौराकोट।
- . वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।
- . भारत के बिहार का तिरहुत प्रमंडल
- . आधुनिक पटना, बिहार, भारत के निकट
- . फल्गु नदी, जो बिहार और उत्तर प्रदेश में है।
- . कोरिया
- . तोखारा-अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान के हिस्से।
- . मंगोलिया
- . तिब्बत
- . राजगृह, आधुनिक राजगीर, बिहार, भारत।
- . बांग्लादेश और आज के भारत का पश्चिम बंगाल
- . भारत में आज का असम जिसकी राजधानी गुवाहाटी है।
- . आधुनिक म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम
- . तमालुक, भारत के कोलकाता से इकतालीस मील दक्षिण पश्चिम में।
- . आधुनिक श्रीलंका।
- . पाक जलडमरूमध्य, भारत और श्रीलंका के बीच।
- . आधुनिक ओडिशा, भारत।
- . आधुनिक पुरी, ओडिशा, भारत।
- . भारत के ओडिशा के जाजपुर जिले में लांगुडी पहाड़ियों में स्थित है।
- . भारत में आज के छत्तीसगढ़ और ओडिशा के हिस्से।
- . भारत का आधुनिक राज्य आंध्र प्रदेश।
- . कृष्णा नदी और गोदावरी नदी।
- . भारत के आंध्र प्रदेश में आज का विजयवाड़ा।
- . अमरावती स्तूप, भारत के आंध्र प्रदेश में विजयवाड़ा के करीब।
- . भारत में आज का तमिलनाडु।
- . भारत के तमिलनाडु में आज का कांचीपुरम।
- . भारत के कर्नाटक में आज का बादामी।
- . भारत की पश्चिमी तटरेखा।
- . भारत के महाराष्ट्र में आज की मुंबई।
- . आज का महाराष्ट्र, भारत।
- . अजंता की गुफाएँ, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत।
- . भारत के मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र।
- . कवि कालिदास, जो चौथी या पांचवीं शताब्दी में उज्जैन में रहते थे।
- . भारत के गुजरात में आज का भरूच।
- . आज का गुजरात, भारत।
- . होर्मुज़ द्वीप, ईरान।
- . खवाक दर्रा, हिंदू कुश रेंज से उत्तरी अफगानिस्तान तक पंजशीर घाटी के शीर्ष के समीप।
- . अंदाराब, अफगानिस्तान के बगलान प्रांत के दक्षिणी भाग में स्थित है।
- . आधुनिक काशगर, शिन्जियांग, चीन।
- . बदख्शा का ऐतिहासिक क्षेत्र जिसमें अब पूर्वोत्तर अफगानिस्तान, पूर्वी ताजिकिस्तान और चीन में ताशकुर्गन काउंटी के कुछ हिस्से शामिल हैं।
- . पामीर पर्वत में ज़ोर्कुल झील, जो अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान के बीच की सीमा पर बहती है।
- . आज का होटन, शिन्जियांग, चीन।
- . तकलामाकन रेगिस्तान के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित साम्राज्य
- . चेरचेन, चीन के शिन्जियांग में तकलामाकन रेगिस्तान के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर एक नखलिस्तान शहर।

## अनुवादक के बारे में

अनुवादक धीरज कुमार अग्रवाल मीडिया प्रोफेशनल हैं और मुंबई में रहते हैं। पत्रकारिता और संचार में आपका 18 वर्षों से अधिक का अनुभव है। साथ ही साहित्य सृजन से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। आप करीब बीस अंग्रेजी किताबों का हिंदी में अनुवाद कर चुके हैं। इनकी लिखी कविताओं का एक संग्रह 'शाम अभी बाकी है' के नाम से ई-बुक के रूप में प्रकाशित हो चुका है। इसके अतिरिक्त पर्सनल फाइनेंस, बिजनेस और इकोनॉमी से जुड़े मुद्दों में गहरी पकड़ है और कई वेबसाइटों के लिए नियमित लेखन करते रहे हैं।

प्रथम प्रकाशन 2024

हार्पर हिन्दी

(हार्परकॉलेंस पब्लिशर्स इंडिया) द्वारा प्रकाशित 2024

बिल्डिंग नं. 10, टावर A, 4th फ्लोर,

डीएलएफ साइबर सिटी, फेज II, गुरुग्राम 122002, भारत

[www.harpercollins.co.in](http://www.harpercollins.co.in)

कॉपीराइट लेखक © अश्विन सांघी 2020, 2024

P-ISBN: 9789362138804

E-ISBN: 9789362137517

लेखक इस पुस्तक का मूल रचनाकार होने का नैतिक दावा करता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए सभी विचार, तथ्य और दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं और प्रकाशक किसी भी तौर पर इनके लिए ज़िम्मेदार नहीं है।

टाइपसेटिंग : निओ साफ्टवेयर कन्सलटेंट्स, प्रयागराज (इलाहाबाद)

मुद्रक : थॉमसन प्रेस (इंडिया) लि.

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंध या खुले किसी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होती हैं। इस सन्दर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने के प्रति अपनाने, इसका अनुदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी तथा रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

ऐसे ही दुर्लभ उपन्यास ( Novel ) ,

प्रेरणादायक पुस्तक

( Motivational Book ) ,

प्रीमियम बुक , प्रीमियम मैगजीन ,

और अन्य सभी तरह के ,

कहीं पर भी ना मिल पाने वाले

उपन्यास

और साहित्य को पढ़ने के लिए हमारे

टेलीग्राम ग्रुप और चैनल में

अवश्य जुड़े ।

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से

आप हमारे ग्रुप और चैनल

में जुड़ सकते हैं

<https://t.me/hindilibrary>

<https://t.me/requestbookpdf>

SEARCH TELEGRAM @HINDILIBRARY

चैनल में जुड़ने के लिए

लिंक पर Click करें👉👉👉

[https://t.me/books\\_request](https://t.me/books_request)

English Books 📖📖

[https://t.me/Google\\_Ebooks](https://t.me/Google_Ebooks)